

अढीद्रीपना नकशानी हकीगतनुं पुस्तक.



एमां जंबूद्वीप, लवणसमुद्र, धातकीखंड, कालोदसमुद्र,
अने पुष्करार्द्ध द्वीपसंबंधि शाश्वतापदार्थोंनुं सविस्तर वर्णन

तथा

चोवीश दंफकें स्थिति आदिक पांत्रीश द्वार प्रमुख

अनेक प्रकारना बूटा बोलोनो समावेश करेखो ठे.

ए ग्रंथ

समस्त निश्चयार्थ जिज्ञासु एवा सम्यग्दृष्टि जनोने वांचवा धारवाना
खपमां आववा योग्य जाणी.

श्रावक, श्रीमसिंह माणके.

जाणजी माया सारु श्रीमती काल सभा जैन पुस्तक

रतनगढ़ (राजस्थान)

श्रीमुंबापुरीमध्ये.

निर्णयसागर नामक मुद्रालयमां बालकृष्ण रामचंद्र घाणेकर पासे

मुद्रित कराव्युं ठे.

MEGHI HIRJI & CO., BOOK-SELLERS

566, Pylahani, BOMBAY.

द्वेषणी हीरजीर्वा शके १८३१ संवत् १९६५ सने १९०९.

५६६, पाचवकी-सुनी.

आ पुस्तकने छपाववा संबंधी सर्व हक छपावनारें पोताने खाधीन राख्यो ठे.

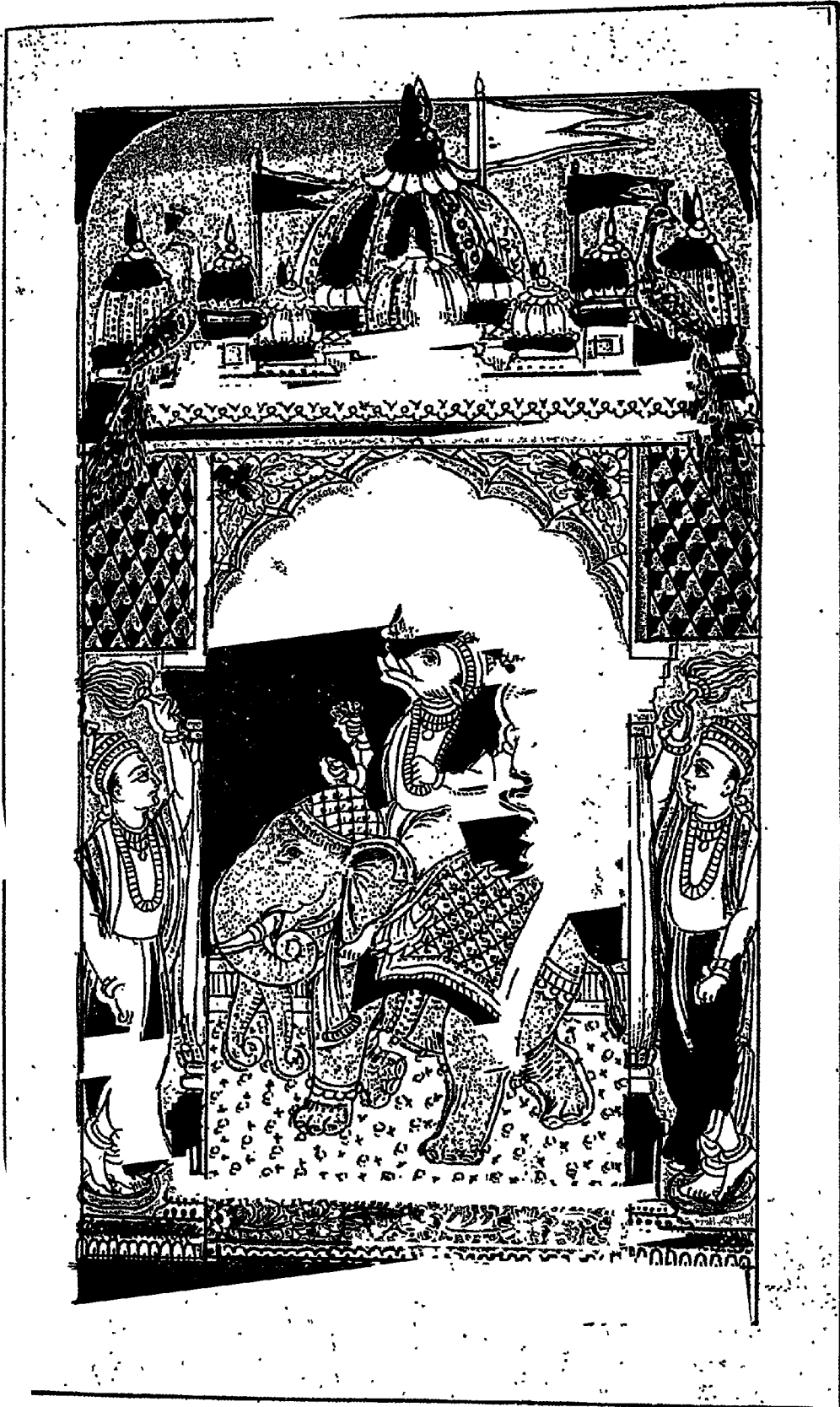
अनुक्रमणिका.

| क्रमांक. | पृष्ठांक. | क्रमांक. | ८१ |
|---|-----------|---------------------------------------|-----|
| १ असंख्याता द्वीपसमुद्रनुं प्रमाण.... | १ | १९ विजयनी बत्रीश नगरीनां नाम.... | ६८ |
| २ जंबूद्वीपनां संक्षेप परिध्यादि. | १ | २० सीतासीतोदा अने वननुं वर्णन... | ६९ |
| ३ अढीद्वीपमां कया कया पदार्थं ते. | २ | २१ जंबूद्वीपना योजननो शरवालो | ७० |
| ४ अढीद्वीप मांहेला शाश्वता पदार्थो एकतालीश बोले संक्षेपे कव्या. | २ | २२ तीर्थकर चक्रवर्तीनी उत्पत्ति. | ७१ |
| ५ जंबूद्वीपनी जगतीनुं वर्णन. | २० | २३ नीलवंत पर्वत वर्णन. | ७१ |
| ६ विजयदेवनी राजधानीनुं वर्णन.... | २९ | २४ रम्यक्रयौगलिकक्षेत्र वर्णन. | ७१ |
| ७ जरतक्षेत्र वर्णन. | ३५ | २५ रुक्मिपर्वत वर्णन.. | ७२ |
| ८ जरतमां अयोध्यानुं प्रमाण. | ३६ | २६ हैरण्यवंत यौगलिक क्षेत्र. | ७२ |
| ९ वैताल्य पर्वत वर्णन. | ३७ | २७ शिखरी पर्वत वर्णन. | ७२ |
| १० उत्तरार्द्ध जरतवर्णन. | ४० | २८ बार आरानुं स्वरूप. | ७३ |
| ११ चूह्वहिमवंत पर्वत पद्मद्रहादिक.... | ४० | २९ गंगासिंधुना बिलनुं स्वरूप. | ७५ |
| १२ गंगा सिंधु तथा प्रपात कुंम. | ४२ | ४० चंद्र सूर्यनुं स्वरूप. | ७७ |
| १३ हिमवंत युगलक्षेत्र वर्णन. | ४५ | ४१ परिधिनो गणित तथा यंत्र. | ८१ |
| १४ महाहिमवंत पर्वत वर्णन. | ४५ | ४२ गणितपदना हीसाव तथा यंत्र | ९१ |
| १५ हरिवर्षे यौगलिक क्षेत्र वर्णन. | ४७ | ४३ जीवा गणित अने यंत्र. | ९२ |
| १६ निषेध पर्वत वर्णन. | ४८ | ४४ इक्कुकरवानी समजण.... | ९६ |
| १७ नदी, डह, कुंम वर्णन. | ५० | ४५ धनुष्य गणित उपाय तथा यंत्र.... | ९६ |
| १८ महाविदेह क्षेत्र वर्णन. | ५४ | ४६ वाहाकरणविधि तथा यंत्र. | ९६ |
| १९ गजदंतगिरि वर्णन. | ५४ | ४७ प्रतर करवानी विधि तथायंत्र.... | १०० |
| २० उत्तरकुरुक्षेत्र वर्णन. | ५५ | ४८ घनगणित करवानो विधि. | ११२ |
| २१ उत्तरकुरु मांहेला डहनुं वर्णन | ५७ | ४९ घनगणित यंत्र स्थापना. | ११४ |
| २२ जंबू वृक्ष वर्णन. | ५८ | ५० इक्कु प्रमुखना सिद्धांक. | ११४ |
| २३ देवकुरुक्षेत्र वर्णन. | ६० | ५१ जिब्हा प्रमुख गणितनी गाथा.... | ११५ |
| २४ मेरुपर्वत वर्णन. | ६१ | ५२ लवणसमुद्रनो अधिकार. | ११७ |
| २५ जद्रशालादि चार वननुं वर्णन | ६२ | ५३ लप्पन्न अंतरद्वीप वर्णन. | १२१ |
| २६ तीर्थकर जन्माजिषेकनी शिला | ६६ | ५४ धातकीखंडनुं वर्णन | १२३ |
| २७ महाविदेहना बत्रीश विजय. | ६६ | ५५ कालोद समुद्रनुं वर्णन. | १२८ |
| २८ वद्दास्कार पर्वत वर्णन.... | ६७ | ५६ पुष्करार्द्ध द्वीपाधिकार. | १२८ |
| | | ५७ बीजा द्वीप नदी पर्वतादिक. | १२९ |

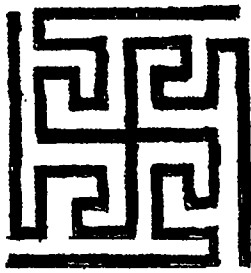
| क्रमांक. | पृष्ठांक. | क्रमांक. | पृष्ठांक. |
|--|-----------|--|-----------|
| ५८ ब्रह्माक्षेत्रोनां प्रमाण.... | १३० | तथाविमानोनी लंबाश् आदिक. | १७८ |
| ५९ मनुष्यक्षेत्रमां पर्वत संख्या. | १३१ | ८१ समुद्रोना पाणीना स्वाद | १८० |
| ६० मनुष्यक्षेत्रथी वाहिर कया पदा. र्थ नथी? ते कया ठे.... | १३१ | ८३ देवोना शरीरना प्रमाणनो यंत्र. १८१ | |
| ६१ नंदीश्वर, रुचक अनेकुंमलद्वीप. १३३ | | ८४ त्रायस्त्रिं शकादि देवो तथा वाण व्यंतरेंद्रोना चिन्ह, वर्णादिक.... | १८३ |
| ६२ अहीद्वीपमां मनुष्य संख्या. | १३३ | ८५ प्रतरे प्रतरे त्रिखूणादिक, विमा. १८३ | |
| ६३ चोवीश दंमकनां नाम. | १३६ | ८६ विमानोने आधार, चिन्ह, पृथ्वी पिंरु, त्रिखूणादिकविमान संख्या, किद्विषिदेवोनां आयुष्यादि यंत्र. १८५ | |
| ६४ शरीरादिक पांत्रीश द्वार एमां अ द्वयवहुत्वद्वारना अष्टाणु बोल ठे. १३८ | | ८७ लोकांतिक देवोनुं स्वरूप. | १८८ |
| ६५ चोवीश दंडक मांहेला प्रत्येक दं रुके शरीरादिक पांत्रीश द्वार | १४७ | ८८ वैमानिक देवोने अवधिज्ञान.... | १८९ |
| ६६ जवनपति देवोनुं स्वरूप. | १६४ | ८९ नारकीना आयुष्यनो यंत्र. | १९० |
| ६७ दश निकायनां नामादिकयंत्र | १६५ | ९० नारकीनो पृथ्वीपिंरुादिक यंत्रो. १९३ | |
| ६८ जवनपति व्यंतर देवीनुं आयु.... | १६६ | ९१ नारकीने घनोदध्यादि आधार. १९८ | |
| ६९ जवनपतिना इंद्र तथा जवन | १६६ | ९२ ठ प्रकारना पदयोपमनुं स्वरूप. १९९ | |
| ७० व्यंतर देवोनुं स्वरूप. | १६६ | ९३ शो प्रकारना रत्नोना जेद. | २०२ |
| ७१ ज्योतिषी देवोनुं स्वरूप. | १६८ | ९४ कया कया जीव नरकमां जाय. २१२ | |
| ७२ ज्योतिषी तथा वैमानिकायु. | १६९ | ९५ कया मनुष्य कयी गतिमां जाय. २१३ | |
| ७३ लोकपालनुं आयु तथा प्रतरे प्रत रे आयु कहेवा माटे उपाय. | १७१ | ९६ चक्रवर्तिना चौदरत्न स्वरूप. | २१४ |
| ७४ चारे निकायनी अग्रमहीषी तथा वैमानिकनो प्रतर संख्या यंत्र | १७४ | ९७ सिद्धिशिल्पा स्वरूप पूर्व संख्या. २१५ | |
| ७५ प्रतरे प्रतरे उत्कृष्टायुनो यंत्र | १७५ | ९८ तीर्थकरादित्रेवीश पदवीनां नाम. २१५ | |
| ७६ वैमानिकना त्रिखूणादि विमान.... | १७६ | ९९ उत्सेधादि अंगुलनुं स्वरूप. | २१६ |
| ७७ सौधमेशाने देवीनी उत्पत्ति. | १७८ | १०० जूदी जूदी योनियोनो विचार.... | २१७ |
| ७८ देवोना सर्व प्रकार केटला ठे.... | १७८ | १०१ उपक्रमादिक आउखानुं स्वरूप. २१८ | |
| ७९ जवनपतिनां आचरण चिन्हादि. १७८ | | १०२ अद्वारनात्रानां नाम. | २१९ |
| ८० अहीद्वीपगत चंद्र सूर्य संख्या.... | १७८ | १०३ अशुभध्याननां त्रेशठ स्थानक. २२० | |
| ८१ ज्योतिषीना विमानवाहक देवो | | १०४ उपदेश रत्नकोष ठहोतेरजेद | २२३ |
| | | १०५ न जाणे न आदरे न पावे इ त्यादि अष्टजंगीनुं स्वरूप. | २२४ |

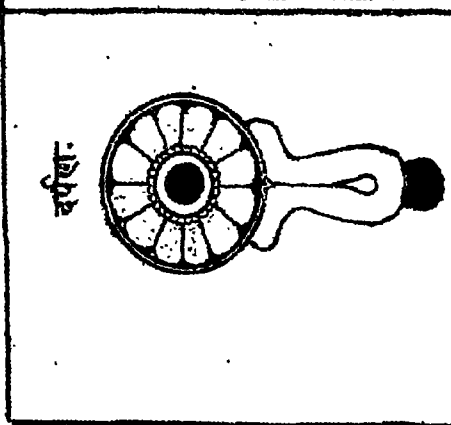
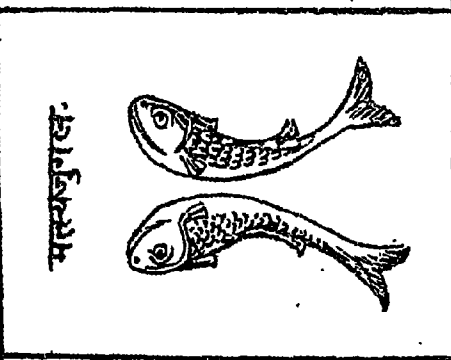
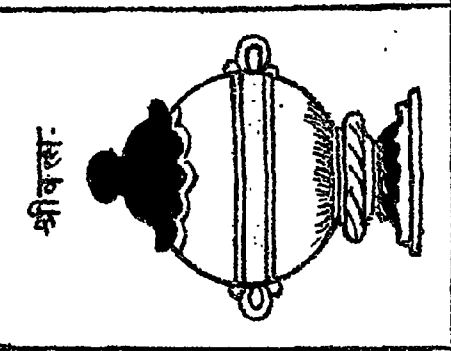



उपरोधी प्रसिद्ध कर्नाट शा. श्रीमसाह माणक भाडवी मुंबई.

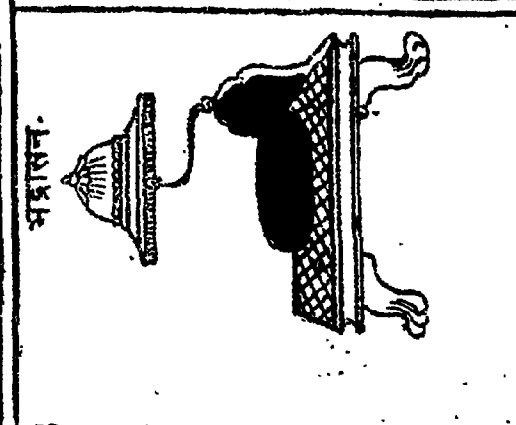
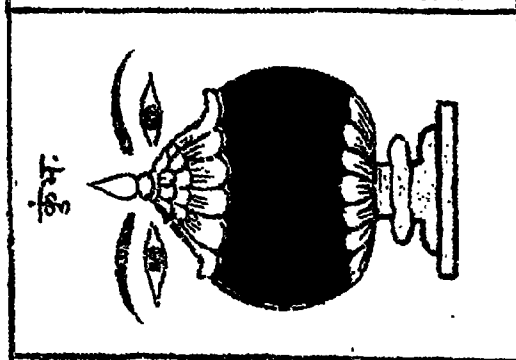
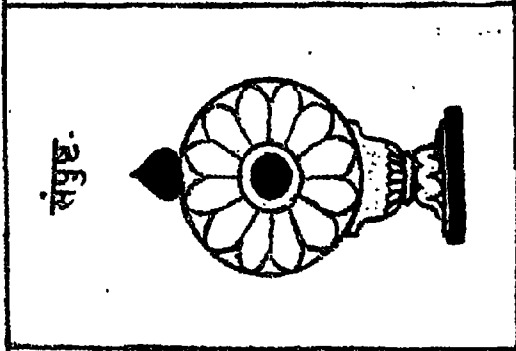


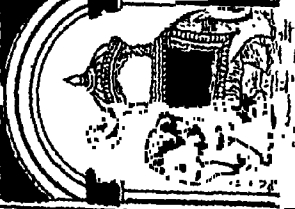




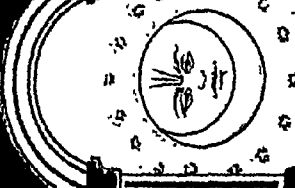
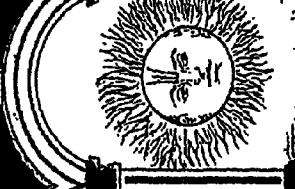
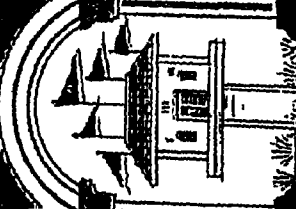
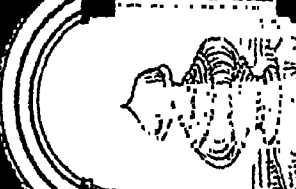



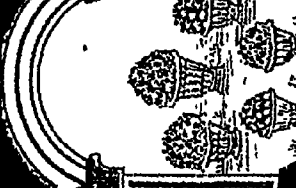
श्रीऋषभमंगलीकर्यम्

नवावर्तः




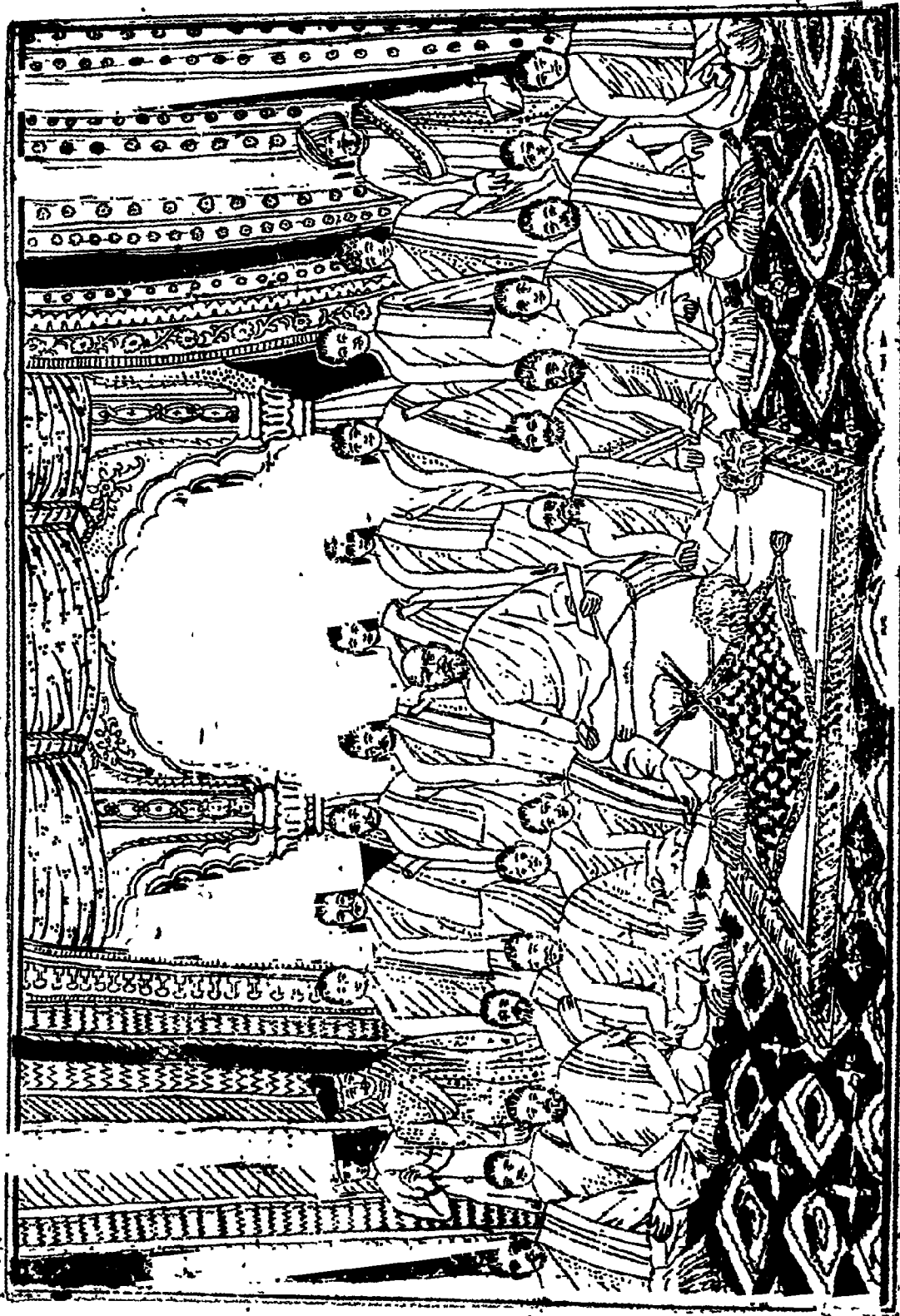
स्वस्तिकः




| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|--------|---|--------|---|----------|--|------------|---|--------------|---|---------|---|----------|---|----------|---|--------|---|----------|--|---------------|---|--------------|---|---------------|
|  | १ तसि. |  | २ यमस. |  | ३ सिं.क. |  | ४ लक्ष्मी. |  | ५ ईश्वरीगणा. |  | ६ यं.क. |  | ७ स्वयं. |  | ८ ईश्वर. |  | ९ उलस. |  | १० मं.क. |  | ११ देव विमान. |  | १२ रत्नरासी. |  | १३ अग्निशिखा. |
|---|--------|---|--------|---|----------|--|------------|---|--------------|---|---------|---|----------|---|----------|---|--------|---|----------|--|---------------|---|--------------|---|---------------|

श्री वीरेश्वर देवर्षी गान्धर्वीने यशोदत्तस्य धर्मनां आवेतनोश्चि आलेण्युं छे.

न्यायभोगि विश्वीमवात्सा रामजी आनंदविजयजी महाराज.



(श्री-सं-५)

श्रीवर्द्धमान स्वामिने नमो नमः

अथ

॥ अढीद्वीपनां नकशानो विचार प्रारंभः ॥

एक राज प्रमाण तिष्ठो लोक ठे तेमां असंख्याता द्वीप अने असंख्याता समुद्र ठे, ते सर्वमां जंबूद्वीप आद्यमां ठे अने स्वयंजु रमण समुद्र अंतमां ठे. ए सर्व द्वीप मली संख्याये अढीसागरोपम अर्थात् पच्चीश कोनाकोनी उद्धार पद्योपमनां जेटलां समय थाय तेटलां ठे, ते संस्थान थकी एकज आकारे ठे अने विस्तार पणे अनेक प्रकारनां ठे एटले प्रथम द्वीपथी प्रथम समुद्र द्विगुणो ठे तैथी बीजो द्वीप बमणो ठे तैथी बीजो समुद्र बमणो ठे तैथी त्रीजो द्वीप बमणो ठे एरीते सर्वे द्वीपसमुद्र विस्तारे एकेकथी बमणा बमणा पहोल पणे ठे, सुप्रशस्त वस्तुनां जेवां जेवां नाम ठे तेवां तेवां नामे ए द्वीप समुद्र ठे ते वली एकेका नामे करी पण असंख्याता असंख्याता ठे जेम आ मध्यनो जंबूद्वीप ठे तेम एज जंबूने नामे बीजा पण असंख्याता द्वीप ठे.

ते सर्व द्वीप अने समुद्रने अंच्यतर एटले तिर्यक्लोकना मध्यवर्ति आ जंबूद्वीप ठे. ते बरुा द्वीप समुद्रनी अपेक्षाये सर्वथकी न्हानो ठे एमां जंबू सुदर्शन नामे वृद्ध ठे तेमाटे एनुं जंबू एवुं नाम ठे. ए जगति सहीत प्रमाणांगुले करी एक लाख योजन लांबो पहो लो ठे, थालीने आकारे, कमलना डोडाने आकारे, तैलना पुडला करीये ते जेवा गोल होय तेवा आकारे, पूरण चंद्रमाने आकारे, तथा रथना पद्माने आकारे गोल ठे.

एनी त्रणलाख शोलहजार बशे सत्तावीश योजन, त्रणकोश, एकशो अष्टावीश धनुष्य, तेर अंगुल, पांच यव, एक जू, एक लीख, चार बाल, वली एक बालनां शाठ जाग करीये ते मांहेला सात जाग तथा वली ते शाठीया एक जागनां एकशठ जाग करीये ते मांहेला दशजाग उपर एटली परिधि ठे शेष सर्व असंख्याता जंबूद्वीप चूनीने आकारे जाणवा अने असंख्याता कोरा कोरी योजननां लावा पहोला ठे, ए प्रथम जंबूद्वीप जे ठे ते बीजा सर्वे असंख्याता द्वीप अने समुद्रे करी वीटेलो ठे.

जेम जंबूद्वीप जगती सहीत एकलाख योजननो ठे तेम एने फरतो लवण समुद्र ठे ते जगती सहीत बे लाख योजननां विस्तार बालो ठे तेमज लवण समुद्रने फरतो धा तकी खंड ठे ते जगती सहीत चार लाख योजन ठे तथा धातकी खंरुने फरतो का लोद समुद्रने ते जगती सहीत आठ लाख योजन ठे तथा कालोद समुद्रने फरतो पु फंकरवर द्वीपठे ते पूरणतो शोल लाख योजन ठे परंतु ते मांहेलुं आठलाख योजन प्र

अढीछीपना नकशानी हकीगत.

माण अरुद्धीप मानुष्योत्तर पर्वते करी वींटेहुं ठे ते माहे मनुष्यनी वस्तिठे अने बाहे रनो अरुद्धीप मनुष्यनी वस्तिथी शून्य ठे माटे पुष्करवर छीपनो अरुद्धाग अढीछीपनी गणतिमां लीधोठे तेथी एनुं पुष्करारुद्धीप नाम राख्युंठे.

एरीते एक लाख योजन जंबूछीपनां तथा बे लाख पूर्व अने बे लाख पश्चिमनां मली चार लाख योजन लवण समुद्रनां मेलवतां पांच लाख योजन थया तेनी साथे पूर्व धातकीनां चार अने पश्चिम धातकीनां चार मली आठ लाख योजन धातकीखंरुनां मेलवतां तेर लाख योजन थया. तथा तेनी साथे पूर्व कालोद समुद्रनां आठलाख अने पश्चिम कालोद समुद्रनां आठ लाख मली शोल लाख योजन कालोद समुद्रनां मेलवीये तेवारे उंगण्छीश लाख योजन थाय तेनी साथे पुष्करवरछीपारुद्धनां पूर्व पश्चिमनां आठ आठ लाख मली शोल लाख योजन मेलवीये तेवारे पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढीछीप थाय ठे तेमां मनुष्यनी वस्ती ठे.

ए अढी छीप प्रमाण मनुष्यक्षेत्रनुं पूर्वोक्त रीते पूर्व पश्चिम विष्कंज पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण ठे तेमज दक्षिणोत्तर विष्कंज पण पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण ठे तेमां जे जे शाश्वता पदार्थो रह्याठे तेना चित्र आ पुस्तकने विषे सामान्य प्रकारे देखाड्याठे. तिहां प्रथम पूर्व पश्चिमनां पीस्तालीश लाख योजन आवीरीते पूराणा ठे. पुष्करारुद्ध छीपनां पूर्व अने पश्चिम ए बे बाजुनां मानुष्योत्तर पर्वत पास

| | |
|---|--------|
| आवेला महोटा बे वन मुख ठे ते प्रत्येक ११६७७ योजननां ठे. | २३३७६ |
| पुष्करारुद्धमां बे बाजुनां बेवना वत्रीश विजयठे ते प्रत्येक विजयनुं विष्कंज १९७९४ योजननुं ठे तेने वत्रीश विजय साथे गणता सरवाले. | ६३३४१६ |
| पुष्करारुद्धमां शोल वक्षस्कारा पर्वत ठे ते प्रत्येक पर्वत बे बे हजार योजननांठे | ३२००० |
| पुष्करारुद्धनी बार अंतरनदी प्रत्येक पांचसो योजन प्रमाणे गणतां योजन. | ६००० |
| पुष्करारुद्धनां बे मेरुनां बे वन प्रत्येके ४४०९१६ योजन प्रमाणे गणतां योजन. | ७७१७३३ |
| पुष्करारुद्धनां माहेली बाजुनां समुद्र तरफनां बे बाजुनां बे वनमुख जगतीनां योजन बाद करतां प्रत्येक ११६७६ योजन प्रमाणे गणतां योजन. | २३३५२ |
| अढीछीपमां एक जंबूछीपनी, बीजी लवण समुद्रनी, त्रीजी धातकी खंरुनी अने चोथी कालोद समुद्रनी ए चार जगती पूर्वदिसीनी अने चार जगती पश्चिमदिसीनी एम बे बाजुनी मली जगती आठ ठे अने पुष्करारुद्धछीपने फरतो मानुष्योत्तर पर्वतठे, तेनी जगती जिहां छीप पूरण थायठे तिहांठे माटे ते गणी नथी शेष आठ जगती प्रत्येक बारबार योजन प्रमाणे गणतां. | ए६ |

अढीछीपना नकशानी दकीगत.

३

| | |
|--|-------------------|
| कालोद समुद्रनां एकेकी बाजुनां आठ लाख योजन प्रमाणे बे बाजुनां. | १६००००० |
| धातकी खंरुनां बे बाजुनां चार वनमुखठे तेमांथी एकेका बाजुनां बे बे वन मुखें जगति बाद करतां ११६६४ योजन रुंध्या ठे. | २३३२७ |
| धातकी खंरुनी बे बाजुनी बत्रीश विजयनां प्रत्येक विजयें (६६०३)योजन उपर एक योजननां आठ जाग करीये तेवा त्रख जाग रुंध्या ठे. | ३०७३०० |
| धातकी खंरुनां बे बाजुनां शोल वद्वस्कार पर्वत प्रत्येक हजार योजननां ठे. | १६००० |
| धातकी खंडनी बार अंतर नदीनां प्रत्येकें अढीसो अढीसो योजन गणतां. | ३००० |
| धातकी खंडनां बे बाजुनां बे मेरुनीपासे जद्रशाल वननां एकेक बाजुनां ३२५१५० योजन प्रमाणे गणतां योजन. | ४५०३१६ |
| खवण समुद्र एकेकी बाजुनां बे बे लाख गणतां बे बाजुनां योजन. | ४००००० |
| जंबूछीपनो वनमुख एकेक बाजुनी जगतीनां बार बार योजन बाद करतां बाकी ३९१० योजन प्रमाणे गणतां बे बाजुनां योजन. | ५०२० |
| जंबूछीपनां प्रत्येक एकेकी विजयनां ३२१२ योजन अने एक योजननां आठ जाग करीये तेवा सात जाग उपर एवा शोल विजयठे. यद्यपि जंबूमां विजयतो बत्रीशठे पण पूर्व पश्चिम आश्रयी बे बे विजयनो एकेक जाग गणतां आ ठेकाणे शोल विजय हिसाबमां गणवा एजरीत धा तकीखंडे तथा पूष्करार्द्धमां पण जाणवी. | ३५४०६ |
| जंपूछीपनां आठ वद्वस्कार पर्वत पांच पांचशो योजन प्रमाणे गणतां. | ४००० |
| जंबूछीपनी ठ अंतरनदी सवासो सवासो योजन प्रमाणे गणतां योजन.... | ७५० |
| जंबूछीपनो मेरु तथा जद्रशाल वननां योजन | ५४००० |
| सरवाले अढीछीप संबंधी पूर्व पश्चिमनां योजन. | ४५००००० |
| हवे दक्षिणोत्तर विष्कंज ४५००००० लाख योजन आवी रीते पूराणा ठे. | |
| पुष्करार्द्धमां बे तरफनां बे इच्छुकार पर्वत प्रत्येक गति सूधां आठ लाखयो ० | १६००००० |
| कालोदधीनां एकेक बाजुनां आठ आठ लाख योजन प्रमाणे गणतां: | १६००००० |
| धातकीखंरुनां इच्छुकारपर्वत एकेकी बाजुनां चारलाख योजनजगती सूधांठे. | ०००००० |
| खवण समुद्रनी एकेकी बाजुनां बेबे लाख योजन प्रमाणे गणतां- | ४००००० |
| दक्षिण जतरार्द्ध तथा दक्षिण ऐरवत्तार्द्ध एकेकाना ३२९ योजन अने एक योजनना ओगणीश जाग करीये ते मांहेला त्रण जाग उपर ठे. | ४५० ^{१६} |
| जरतक्षेत्र मांहेला वैताढ्यनां पच्चाश योजन. | ५० |
| ऐरवतक्षेत्र मांहेला वैताढ्यनां पच्चाश योजन. | ५० |

| | | | | | |
|--|------|------|------|------|-----------------------|
| दक्षिण जरतार्कनी अयोध्यानगरी पोहोल पणे नव योजन ठे.... | | | | | ए |
| उत्तर ऐरवतार्कनी अयोध्यानगरी पोहोल पणे नव योजन ठे. | | | | | ए |
| उत्तर बाजुनां जरतार्कनां योजन. | | | | | २३८) $\frac{3}{16}$ |
| दक्षिण बाजुये ऐरवतार्कनां योजन- | | | | | २३८) $\frac{3}{16}$ |
| चुल्लहेमवंत पर्वत पोहोल पणे योजन. | | | | | १०५२) $\frac{12}{16}$ |
| शिखरी पर्वतनां पोहोल पणे योजन. | | | | | १०५२) $\frac{12}{16}$ |
| हेमवंत क्षेत्र युगलीयानुं पोहोल पणे योजन. | | | | | २१०५) $\frac{4}{16}$ |
| एरन्यवंत क्षेत्र युगलीयानुं पोहोल पणे योजन. | | | | | २१०५) $\frac{4}{16}$ |
| महाहिमवंत पर्वत दक्षिणोत्तर पहोल पणे योजन. | | | | | ४२१०) $\frac{10}{16}$ |
| रूपी पर्वत दक्षिणोत्तर पहोल पणे योजन. | | | | | ४२१०) $\frac{10}{16}$ |
| हरिवर्ष क्षेत्र युगलीयानुं दक्षिणोत्तर पहोल पणे योजन. | | | | | ८४२१) $\frac{9}{16}$ |
| रस्यक् क्षेत्र युगलीयानुं दक्षिणोत्तर पहोल पणे योजन. | | | | | ८४२१) $\frac{9}{16}$ |
| निषध पर्वत दक्षिणोत्तर पोहोल पणे योजन. | | | | | १६८४२) $\frac{2}{16}$ |
| नीलवंत पर्वत दक्षिणोत्तर पोहोल पणे योजन. | | | | | १६८४२) $\frac{2}{16}$ |
| देव कुरुक्षेत्र युगलीयानुं दक्षिणोत्तर पोहोल पणे योजन | | | | | ११८४२) $\frac{2}{16}$ |
| उत्तर कुरुक्षेत्र युगलीयानुं दक्षिणोत्तर पोहोल पणे योजन. | | | | | ११८४२) $\frac{2}{16}$ |
| मेरु पर्वतनी दक्षिणोत्तर विष्कंज. | | | | | १०००० |
| सरवाले अढीद्वीपनां दक्षिणोत्तर योजन संख्या. | | | | | ४५००००० |

॥ अथ एकतालीश बोलें अढीद्वीप व्याख्यान उपदेश ॥

॥ प्रथम इष्टदेवने नमस्काररूप मंगलाचरण ॥

॥ श्लोक ॥

श्रीवर्द्धमानाख्यविभुं यजामि, सुरासुरैःसेवितपादपद्मम् ॥

तस्योपदेशामृतपानपीना, नरा ज्जवाब्धिं विषमं तरंति ॥ १ ॥

हवे अढीद्वीपनी व्याख्या करेठे. जंबूद्वीपची मांडीने मानुष्योत्तरपर्वत लगे अढीद्वीप समयक्षेत्र कहेवायठे. एमां जे कांइ शाश्वता पदार्थ, नित्यपदार्थ, ध्रुवपदार्थ, अथ स्थितज्ञावे ठे ते संक्षेपची एकतालीश बोलें करी कहीये ठैये.

१ प्रथम बोलें खांडुआनुं प्रमाण कहेठे. लाख योजननुं जंबूद्वीपठे तेना १ए०) खांडुआ आय, ते आवी रीते. प्रथम एक खांडुआ जरत क्षेत्रनो जाणवो, तेवाज वे खां

कुआ चुह्वहेमवंत पर्वतना, तथा चार खांकुआ हेमवंतनामे युगलीयानां क्षेत्रनां, तथा आठ खांडुआ महाहेमवंत पर्वतना, तथा शोल खांडुआ हरिवास युगलीयानां क्षेत्रनां तथा बत्रीश खांकुआ निषध पर्वतना. एरीते जरत क्षेत्रीशी मांकीने निषध पर्वत लगे त्रेशठ खांडुआ थया. तेवाज त्रेशठ खांकुआ ऐरवंत क्षेत्रीशी मांकीने नीलवंत पर्वत लगे थाय अने चोशठ खंडुक प्रमाणे महाविदेह क्षेत्रठे एम सरवाले मली एकशो नवुं खांकुआनुं जंबूद्रीप ठे. ते एकेको खांडुर्ज (५२६) योजन अने एक योजननां उगणीश जाग करीये तेवा ठ जाग उपर एटला प्रमाणनो जाणवो, तेने एकशो नेवुंये गुणतां बराबर एक लाख योजन दक्षिणोत्तर जंबूद्रीपनां थाय, तेनी यंत्र स्थापना ॥

खंडुक. क्षेत्रादिकोनां नाम.

- १ जरतक्षेत्रनो खंडुक एक.
- २ चुह्वहेमवंतपर्वतनां खंडुक बे.
- ४ हेमवंतयुगलीयानुंक्षेत्र खंडुक चार.
- ७ महाहेमवंतपर्वत खंडुक आठ.
- १६ हरिवासयुगलक्षेत्रनां खंडुक शोल.
- ३३ निषधपर्वतना खंडुक बत्रीश.

- ६४ महाविदेहक्षेत्रनां खंडुक चोशठ.
- ३३ नीलवंतपर्वतनां खंडुक बत्रीश.
- १६ रम्यकक्षेत्रयुगलीयानुं खंडुक शोल.
- ७ रूपीपर्वतनां खंडुक आठ.
- ४ ऐरन्यवंतक्षेत्रयुगलीयानुंखंडुक चार.
- २ शिखरीपर्वत खंडुक बे.
- १ ऐरवतक्षेत्रनो खंडुक एक.

२ बीजा बोखे योजन प्रमाण कहेठे. जंबूद्रीपनां दक्षिण दरवाजाशी मांकीने चुह्व हेमवंत पर्वतनां ऋषजकूट पर्यंत (५२६) योजन अने ठ कला प्रमाणे जरतक्षेत्रठे. तथा १०५२) योजन ने बारकला प्रमाणे पहोलो हिमवंत पर्वतठे. तथा २१०५) योजन ने पांच कला प्रमाणे पहोलो हेमवंतयुगलक्षेत्र ठे. तथा ४२१०) योजन ने दश कला प्रमाणे पहोलुं महाहिमवंत पर्वतठे. तथा ७४२१) योजन अने बे कला प्रमाणे पहोलुं हरिवास युगलीयानुं क्षेत्रठे. तथा १६७४२) योजन अने बे कला प्रमाणे पहोलो निषधपर्वतठे. एज प्रमाणे ऐरवतक्षेत्रीशी मांकीने नीलवंतपर्वत लगे पण मर्यादा जाणवी अने निषधपर्वतशी मांकी नीलवंत पर्वत लगे ३३६७४) योजन अने चार कला उपर एटलुं महाविदेहक्षेत्र पहोलुंठे सरवाले उत्तरदक्षिण जंबूद्रीपनां एक लाख योजन थया तेनुं यंत्र.

क्षेत्रादिकनां नाम. पहोलाइयो० कला.

| | | | |
|--------------------|------|------|---------|
| जरतक्षेत्र. | ५२६ | | ६ |
| चुह्वहेमवंतपर्वत | | १०५२ | १२ |
| हेमवंतयुगलक्षेत्र. | | २१०५ | ५ |
| महाहिमवंतपर्वत. | | ४२१० | १० |

क्षेत्रादिकनां नाम. पहोलाइयो० कला.

| | | | |
|-------------------------|-------|------|---------|
| नीलवंतपर्वत. | १६७४२ | | ३ |
| रम्यकक्षेत्र युगलीयानुं | ७४२१ | | १ |
| रूपी पर्वत. | | ४२१० | १० |
| ऐरन्य वंतयुगलक्षेत्र. | २१०५ | | ५ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------|------|-------|------|---|-------------|------|-------|------|----|
| हरिवर्षयुगलक्षेत्र | | ८४२१ | | १ | शिखरीपर्वत | | १०५२ | | १२ |
| निषधपर्वत | | १६८४२ | | २ | ऐरवतक्षेत्र | | ५२६ | | ६ |
| महाविदेहक्षेत्र | | ३३६८४ | | ४ | | | | | |
| | | | | | | | ३३१५९ | — | १७ |

६६८४२—२ सरवाले (१०००००)

३ त्रीजे बोले गणीत पद कहे ठे. सातसें क्रोड, नेतुंक्रोड, षपन्नलाख, चोराणु हजार, उपर दोढसो योजन कांइक अधिकुं एटलुं जंबूछीपनुं गणीत पद ठे.

४ चोथे बोले परिधि कहे ठे. त्रणलाख शोख हजार बसें सत्तावीश योजन, त्रण कोश, एकशो अठ्ठावीश धनुष्य अने तेर अंगुल जाजेरा एटली जंबूछीपनी परिधि जाणवी. तथा पंदरलाख एक्यासी हजार एकसो उंगणचालीश योजन किंचित उणालवण सी मुद्रनी परिधि जाणवी. तथा एकतालीश लाख दश हजार नवसें ने एकशठ योजन एटली धातकी खंरुनी परिधि जाणवी. तथा एकाणु लाख सीतेर हजार बसें पांच योजन कांइक विशेषाधिक एटली कालोदधीनी परिधि जाणवी तथा एक क्रोड बैतालीश लाख त्रीशहजार बसें उंगणपच्चास योजन एटली अच्यंतर पुष्करारुनी परिधि जाणवी.

५ पांचमें बोले पूर्वथी दक्षण, दक्षणथी पश्चिम, पश्चिमथी उत्तर द्वार द्वारनुं अंतर कहे ठे. उंगणाएसी हजार बावन योजन एक कोश पंदरसें बत्रीश धनुष्य अने त्रण अंगुल एटलो जंबूछीपना दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो. तथा त्रणलाख, पंचाणु हजार बसें अंसी योजन ने एक कोश एटलो लवण समुद्रनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो तथा दशलाख सत्तावीश हजार सातसें पांत्रीश योजन अने त्रण कोश एटलुं धातकी खंरुना दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो. तथा बावीश लाख बाणु हजार बसें बैतालीश योजन अने त्रण कोश एटलो कालोदधीनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो. अने पुष्करारुनां दरवाजा नथी पण आखो पुष्करछीप शोखलाख योजननो तेना दरवाजा ठे परंतु अरुंछीपनां दरवाजा नथी, प्रत्येक छीप समुद्रनी परिधिना योजननो चोथो जाग करी तेमांथी द्वारनां बारणानां सामाचार योजन उठा करतां जेटला योजन बाकी रहे तेटलुं दरवाजा दरवाजानुं अंतर जाणवुं. तथा जंबूछीपनां चार दरवाजानां नाम आ प्रमाणेठे. एक पूर्वे विजय, बीजो दक्षिणे विजयवंत, त्रीजो पश्चिमे जयवंत, चोथो उत्तरे अपराजित. ए चार दरवाजाने नामे ए दरवाजाना चार द्वारपालना पण एहीज नाम ठे, जंबूनो कोट मूलमां पोहोलो बार योजन ठे तथा मध्यजागे पोहोलो आठ योजनठे अने उपर पोहोलो चार योजनठे तथा सबे दरवाजा आठ योजन उंचा ठे अने चार योजन पहोल पणे बारणा ठे. एकेक कोरनी वे बाजु बारशा

ख ठे. जंबूछीपना दरवाजाने साहामा चारे कोरे दोरी ठंट सर्व असंख्याता छीप स मुझनां दरवाजा ठे ते सर्वछीप समुझोना दरवाजानां नाम एना एहिज जाणवा.

६ ठठे बोले वर्षधरक्षेत्र कहेठे. एक जरत, बीजो हेमवंत युगलक्षेत्र, त्रीजो हरिवास युगलक्षेत्र, चौथो ऐरवंतक्षेत्र, पांचमो ऐरण्यवंत युगलक्षेत्र, ठठो रम्यकयुगलक्षेत्र, अने सातमो माहाविदेह क्षेत्र ए सात जंबूछीपमां तथा धातकीखंरुमां एथी बमणा चौदवर्ष धर क्षेत्र ठे अने पुष्करार्द्धमां पण धातकीनी पेरे चौद वर्षधर ठे सर्व मली अढी छी पमां पांत्रीश वर्षधर क्षेत्र ठे, एनी लंबाइ पोहोलाइनां प्रमाण आगल कहेरो.

७ सातमे बोले वर्षधर पर्वत कहे ठे एक हेमवंत, बीजो महाहेमवंत, त्रीजो निषध, चौथो शिखरी, पांचमो रूपी. ठठो नीलवंत, अने सातमो मेरु ए सात जंबूछीपमांठे अने धातकी खंरुमां ए थकी बमणा चौद ठे. ते सर्व जंबूछीपना वर्षधर प्रमाणे उंचा ठे पण लंबाइमां चार चार लाख योजनठे हवे पोहोलापणो कहेठे. बे हेमवंत अने बे शि खरी ए चार पर्वत बे हजार एकसो पांच योजन अने ५ जाग, तथा बे महा हेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत आठ हजार चारशो एकवीश योजन अने १ जागठे. तथा बे निषध अने बे नीलवंत ए चार पर्वत तेत्रीश हजार ठशें चोराशी योजन उपर ४ जाग ठे. हवे पुष्करार्द्धमां पण जंबूछीपथी बमणा वध्या तेवारे चौद पर्वत थया ते सर्वे लंबाइमां आठ लाख योजन प्रमाणेठे अने पोहोलाइमां जेटला ठे ते कहेठे. बे हेम वंत तथा बे शिखरी ए चार पर्वत चार हजार बशें दश योजन अने १० जाग ठे. त था बे महाहेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत शोल हजार आठसैं बेंतालीश योजन उपर २) जाग ठे. तथा बे निषध अने बे नीलवंत मली चार पर्वत शकशठ हजार त्रणसैं अकशठ योजन उपर ७ जाग ठे.

हवे पांच मेरुनो उंचपणो तथा पहोल पणो कहेठे. प्रथम जंबूछीपनो मेरु एक हजार योजन धरतीमां उंडो ठे अने नवाणुं हजार योजन उपर उंचो ठे सरवाले लाख योजन उंचो ठे मेरुना मूलना हेठला ठेहेरुथी समञ्जतल पृथ्वी एक हजार योजन उंची ठे. तथा समञ्जतलथी बली पांचशें योजन उंचुं नंदनवन ठे. तथा नंदनवनथी शाडा बाशठ हजार योजन उंचुं सोमनस वनठे. तथा सोमनसवनथी ठत्रीश हजार योजन उंचुं पंरुक वनठे. एरीते एक लाख योजन उंचपणानां थया अने उपर चालीश योज न उंची चूलीका ठे ते चोटली सरखी ठे ए मेरुनो उंचपणो कह्यो. हवे पोहोलापणो कहेठे. मूल धरतीमां दशहजार ने नेवुं योजन उपर एक योजननां अगीयार जाग क रीये तेवा दस जाग एटहुं पोहोला पणेठे. पंठी त्यांथी प्रदेशे प्रदेशे घटतां घटतां संम न्तल आगल बराबर दशहजार योजननो पहोल पणे थयो ठे. तथा नंदनवन पासे

(एण्ण५४) योजनं अने एकं योजननां अगीआर जाग करीये तेवा ठ जाग उपर एट्ठुं पोहोळ पणे ठे तथा सोमनसवन आगळ (४२७२) योजन उपर अगीआरीआ आठ जाग एटलो मेरुनो विष्कंज ठे. तथा पंडूकवन पासें १००० योजन मेरुनो विष्कंज ठे. हवे धातकी खंडनां बे मेरु तथा पुष्करार्ऊनां बे मली चार मेरु प्रत्येके एक हजार योजन धरतीमां ठे अने चोरासी हजार योजन उपर ठे, ते मली पंच्यासी हजार योजन उंचपणे ठे ए चारे मेरु उपर चूलिका नथी एम अढीछीपमां ३५ वर्षधर पर्वत ठे.

७ आठमे बोळे अढीछीपमांहेला शाश्वता पर्वतनी संख्या कहेठे. तिहां प्रथम जंबू छीपनां पर्वतो कहेठे. सात वर्षधर पर्वत पूर्वे कह्या ते जाणवा अने चोत्रीश वैताढ्य पर्वत ठे. ते आवी रीते. एक चरतक्षेत्रनां मध्यनो, बीजो ऐरवत क्षेत्रना मध्यनो, तथा बत्रीश विजय महाविदेहना तेमां बत्रीश वैताढ्य ठे. एवं चोत्रीश वैताढ्य थया, तथा चार युगलीयानां खेत्रनी वचमां चार गोल वृत्त वैताढ्य ठे. तथा कुरु खेत्रना यमक, सम क, चित्र अने विचित्र ए चार तथा नीलवंतनां बे गजदंता अने निषधनां बे गजदंता मली चार गजदंत पर्वत तथा निषधने हेठल पांचकुंरुनी बे पासे १०० कंचनगिरि ठे अने नीलवंत हेठल पांच कुंडनी बे पासे १०० कंचनगिरि ठे, मलीने बसो कंचनगिरि ठे. तथा महाविदेहमां पूर्वपश्चिमनां मली शोल वस्कारा पर्वत ठे. ए सर्वमली ३६९ पर्वत जंबू छीपमां थया. एथकी बमणा ५३० धातकी खंडमां ठे. तेनी साथे बे इच्छुकार जेळीये तेवारे ५४० थाय. तथा धातकी खंरु प्रमाणे पुष्करार्ऊनां पण ५४० पर्वत जाणवा. तथा लवणसमुद्रमां चारदिसिनां वेळंधर अनुवेळंधर देवोनां आठ पर्वत मांहे जेळीये ते वारे सरवाळे १३५७ शाश्वता पर्वत अढीछीपमां ठे.

ए नवमे बोळे अढीछीपनां शाश्वता कूट कहेठे:- तिहां प्रथम जंबूछीपमां ३६९ पर्वत ठे, ते उपर जे कूट ठे ते कहेठे. तेमां ३४ वैताढ्य उपर प्रत्येके नव नव कूट गणतां ३०६ थया. तथा हिमवंते अगीआर, महाहेमवंते आठ, निषधे नव, शिखरीये अगी आर, रूपी पर्वते आठ कूट, नीलवंते नव कूट, तथा बे गजदंते नव नव, अने बे गजदंते सात सात मली चार गजदंताना बत्रीश कूट, तथा शोल वदस्कार पर्वते प्रत्येके चार चार कूट गणतां ६४ थाय तथा मेरु पर्वतनां नवकूट ए रीते सरवाळे एकशठ पर्वतना ४६७ कूट थया अने यमकादि चार तथा वृत्तवैताढ्य चार एवं आठ पर्वत उपर कूट नथी तथा धातकी खंडमां एथकी बमणा ९३४ अने पुष्करार्ऊमां पण ९३४, मली ३३३५, कूट अढीछीपमां ठे.

१० दशमे बोळे चक्रवर्ति जिहां पोतानुं नाम लखे तेने कृषककूट कहीये. ते जंबू छीपमां बत्रीश विजयनां नीलवंत पर्वत पासे शोल कूट ठे, तथा निषध पर्वत पासे

अढीछीपना नकशानी हकीगत.

ए

शोल कूट ठे मलीने बत्रीश थया. तथा जरतक्षेत्रना हिमवंत पासे एक कूटठे अने ऐरवत क्षेत्रना शिखरी पर्वत पासे एक कूटठे. एरीते सरवाले चोत्रीश ऋषचकूट जंबू छीपमां ठे अने ए थकी बमणा अरुशठकूट धातकी खंरुमां ठे तथा अरुशठ कूट पुष्करार्द्धमां ठे सरवाले अढीछीपमां १७० ऋषच कूटठे.

११ अगीआरमे बोले त्रण खंरु साधीने वासुदेव जेने उपाडे तेने कोटी शिद्धा क हीये ते शिद्धा जंबूछीपमां चोत्रीशठे तथा धातकी खंरुमां एथकी बमणी अरुशठ अने पुष्करार्द्धमां पण अडशठ मली अढीछीपमां १७० कोटी शिद्धाठे.

१२ बारमे बोले प्रत्येक वैताढ्य पर्वत दीठ तिमिश्रा अने खंरु प्रपात एवी बे बे गु फाउठे ते जंबूछीपमां चोत्रीश वैताढ्यनी अडशठ गुफाठे, धातकीमां अडशठ वैताढ्य नी एकशो बत्रीश अने पुष्करार्द्धमां पण एकसो बत्रीश मली अढीछीपमां ३४० गुफाठे.

१३ तेरमे बोले बिह्वनी संख्या कहेठे;—प्रथम जंबूछीपमां जरतक्षेत्रनी गंगा अने सिंधु ए बे नदीनां बहोतेर बिह्व तथा ऐरवत क्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवतीनां बहोतेर बिह्व तेमज बत्रीश विजयमां पण प्रत्येक विजयनी गंगा अने सिंधु ए बे नदीनां बहोतेर गणतां २३०४ बिह्व महाविदेहमांठे सरवाले जंबूछीपमां २४४० तथा धातकी खंरुमां ४०६ अने पुष्करार्द्धमां पण ४०६ सरवाले अढीछीपमां १२२४० बिह्व ठे.

१४ चौदमे बोले मागधादि तीर्थनी संख्या कहेठे;—तिहां प्रथम जंबूछीपमां मागध, वरदाम अने प्रजास ए त्रण तीर्थ चक्रवर्त्ति साधेठे. तेमां जरतनां त्रण तीर्थ दक्षणद रवाजे समुद्रमांठे, अने ऐरवतनां त्रण तीर्थ उत्तर दरवाजे समुद्रमांठे, एवं ठ थयां तथा पूर्व महाविदेहनी शोल विजयठे तेमां साहामा साहामी आठ आठ विजय वच्चे सीता नदीमां साहामा साहामा त्रण त्रण तीर्थ गणतां शोल त्रिक अडतालीश तीर्थ सीता नदीमां अने पश्चिम महाविदेहनी शोलविजय तिहां साहामा साहामी आठ आठ विजय वच्चे सीतोदा नदीमां साहामा साहामी त्रण त्रण तीर्थ गणतां शोल त्रिक अडतालीश तीर्थ सीतोदा नदीमां ठे मली ठनुं तीर्थ महाविदेहमां थया तेनी साथे पूर्वोक्त जरत ऐरवतनां ठ मेलवीये तेवारे १०२ तीर्थ जंबूछीपमांठे, तेथी बमणा २०४ धातकी खंडनां अने २०४ पुष्करार्द्धनां मली अढीछीपमां ५१० तीर्थ ठे.

१५ पंदरमे बोले खंरुनी संख्या कहेठे;—तिहां पांच जरत, पांच ऐरवत, अने पांच महाविदेहने बत्रीश विजये गणतां एकशोने शाठ थानक थाय तेनी साथे पूर्वोक्त पांच जरत अने पांच ऐरवतनां दश स्थानक मेलवतां १७० थानक अढीछीपमां थाय ते प्रत्येक थानकमां ठ ठ खंडठे तेवारे एकसो सीतेरने ठए गुणतां १०२० खंरु थयां तेमां जंबूमां २०४ धातकीमां ४०० अने पुष्करार्द्धमां ४०० जाणवा.

१६ शोलमे बोले ठ खंरुमां बत्रीश हजार देश होयठे. माटे एकंदर देश संख्या कहेठे:—तिहां जंबूछीपमां एक चरत बीजो एरवत अने बत्रीश विजय मली चोत्रीश थानक ठ ठ खंड वाला ठे ते प्रत्येक थानकमां ३२००० देश गणतां १०००००० देश जंबूछीपमां ठे तथा २१७६००० देश धातकी खंरुमां ठे तथा २१७६००० देश पुष्करा र्दमां ठे सरवाले अढीछीपमां ५४४०००० देश ठे.

१७ सत्तरमे बोले ठ खंडमां पांच अनार्य खंरु अने एक आर्य खंड तिहां आर्य खंरु मां अयोध्या नगरीठे, तेनी संख्या कहेठे:—जंबूमां चोत्रीश अयोध्या, धातकीमां अडशठ अयोध्या अने पुष्करार्दमां अडशठ मली एकसो सीतेर अयोध्या अढीछीपमांठे अने आर्यखंरु पण एकशो सीतेरठे. ते आयोध्या नगरी बार योजन लांबी अने नव योजन पहोली होय सबेनी एज मर्यादा जाणवी. तिहां जे आर्यखंड होय तेमां धर्म होय तीर्थकर, गणधर, चक्री, बलदेव, वासुदेव प्रमुख त्रेशठ शिलाका पुरुष आर्य खंरुमां उपजे, मोक्ष गमन होय अने पांच अनार्यखंरुमां धर्म न होय, सर्व म्बेठ होय.

१८ अठारमे बोले कया खंरुमां केटला देश होय ते कहेठे:—तिहां ठ खंरुमां मली ३२००० देश होय तेमां पांच अनार्यखंरुमां प्रत्येके ५३१० देश होय अने ठछा आर्य खंडमां ५३२० देश होय तेमां साढा पचीश देश आर्य अने बीजा अनार्य देश जाणवा. ए रीते अढीछीपना सर्वे खंरुमां देशनी मर्यादा जाणवी. एमां ५३१० देश पांच अनार्य खंरुमां लखेलाठे. परंतु ५३३६ देश गणतां ३२००० देशनो हीसाब मखेठे. पण एक प्रतमां तथा एक पट्टमां उपर कहेली रीते लख्युं ठे. ते प्रमाणे में पण अहीं लख्युं ठे.

१९ उंगणीशमे बोले विद्याधर तथा आजियोगीक देवनी श्रेणीयो वैताढ्य दीठ कहेठे— तिहां प्रत्येक वैताढ्य दीठ त्रण त्रण कांडठे तेमां जूमीथी दश योजन प्रथम कांडठे तेने दक्षण पासे पचाश नगर अने उत्तर पासे साठ नगर विद्याधरनां ठे एवी बे बे श्रेणी वैताढ्ये लेवी तेवारे जंबूछीपमां चोत्रीश वैताढ्यनी अडशठ श्रेणी, तथा धातकीमां १३६ अने पुष्करार्दमां १३६ मली ३४० श्रेणी विद्याधरनीठे. हवे वैताढ्यनां प्रथम कां र्थी वली दश योजन उंचो बीजो कांडठे तिहां दक्षण उत्तर बे पासे आजियोगिक देवोनी बे श्रेणीठे तेथी पूर्वोक्तरिते एनी पण ३४० श्रेणी अढीछीपमांठे ए बेहुनी श्रेणी एकठी करीये तेवारे ६०० श्रेणी अढीछीपमांठे.

२० बीशमे बोले ड्रह संख्या कहेठे:—तिहां प्रथम जंबूछीपमां शोल ड्रहठे ते देखाडेठे प्रथम हेमवंत पर्वते पद्मड्रहठे, बीजो महाहिमवंते महापद्मड्रहठे, त्रीजो निषधपर्वते तिगिष्ठिड्रहठे, चोथो शिखरीपर्वते पुंडरिक ड्रहठे, पांचमो रूपीपर्वते महापुंरुकि ड्रह ठे, ठछो नीलवंत पर्वते केशरीड्रहठे, ए प्रकारे ठ ड्रह तो पर्वतोनी उपरेठे. हवे दश ड्रह

बीजा देखाडेते. तिहां निषधपर्वत उपरथी सीतोदा नदी पृथ्वी उपर पडेते ते प्रथम डहथी बीजा, त्रीजा, चोथा अने पांचमां डहमां पडेते तिहां पहेलो निषधडह, बीजो देवकुरुडह, त्रीजो सुरप्रजडह, चोथो सुलसडह अने पांचमो विद्युत्प्रज डह ए पांच डह मूकी पढी आगल चालीठे माटे ए पांच डह जाणवां. तेमज नीलवंतपर्वत उपरथी सीतानदी धरती उपर पडेते ते प्रथम डहथी बीजा, त्रीजा, चोथा, पांचमांमां पकीने आगल चाली ते पांच कुंडडहनां नाम कहेते प्रथम नीलवंतडह, बीजो उत्तरकु रुडह, त्रीजो चंद्रडह, चोथो ऐरवत डह, पांचमो माध्यवंतडह एरीते ए दस डह धरती उपरते ते पूर्वोक्त ठ साथे मेलवतां शोल डह जंबूछीपमांठे अने तेथी बमणा बत्रीश डह धातकी खंडमां ठे तथा बत्रीश डह पुष्करार्डनां मली अढीछीपमां ७०, डह ठे.

११ एकवीशमे बोले डहनी देवी देव कहेते:-प्रथम हेमवंत पर्वते पद्मडह ठे. एनां मध्यनां एक मुख्य महोटा कमल पाठल बीजा लघु कमलनां ठ वलयठे, तनां १२०५०१२० एटला लघुकमल तेणे वीट्युं थकुं महोडुं कमलठे ते उपर श्री देवी रहेते ए पद्मडह उंडो दस योजन, पहोलो पांचसें योजन अने लांबो एक हजार योजनठे उपर श्रीदेवी रहेते ते जुवनपतिदेवोनी जातिठे, हवे बीजो महाहिमवंत पर्वते महा पद्मडहठे ते पचाश योजन उंडो, हजार योजन पहोलो अने बे हजार योजन लांबोठे, तेना मध्यना एक मुख्य महोटा कमल पाठल लघु कमलोना बार वलयठे. तेनां २४१००२४० एटला लघु कमलें वीट्युंठे ते उपर ह्रीदेवीनो निवासठे. त्रीजो निषध पर्वते तिगिछिडहठे तेनुं मध्यनुं मुख्य कमल चोवीश वलये वीट्युंठे तेमां ४७२००४७० एटला लघु कमलठे तिहां श्रीदेवीनो निवासठे एनुं एक पढ्यायुंठे, ए डह दश यो जन उंडो, बे हजार योजन पोहोलो अने चार हजार योजन लांबोठे. हवे ऐरवतके त्रथी शिखरी पर्वत उपर पुंरुरिक डहठे. ते हिमवंतना पद्मडहनी मर्यादायेते एमां लक्ष्मीदेवीनो निवासठे एनुं एक पढ्यायुंठे. पांचमो रूपी पर्वते महापुंरुरिक डहठे ते महाहिमवंत पर्वतना महापद्मडहनी मर्यादायेते एमां बुद्धिनामे देवीनो निवासठे एनुं एकपढ्यायुंठे. ठगो नीलवंत पर्वते केशरीडहठे ते निषधपर्वतना तिगिछिडहनी मर्या दायेते एमां कीर्तिदेवीनो निवासठे तेनुं एकपढ्यायुंठे ए ठ डह पर्वतो उपरते तेनी देवी उं कही. हवे पृथ्वी उपरनां दश कुंरुडहठे तेमां देवताउंनां निवासठे तथा जे रीते प र्वत उपरे लक्ष्मी देवीनी संकलना कही तेम देवकुरु उत्तरकुरुमां महोडुं जंबूवृद्धाठे ते पण एटलेज लघु जंबूवृद्धे करी वीटेलुंठे ते आगल लखशुं. एरीते जंबूमां ठ देवी तथा दश देवता, धातकीमां एथी बमणा बार देवी ने वीश देवता, पुष्करार्डनां पण बार देवीने वीश देवता मली अढीछीपमां डहनिवासी त्रीसदेवी अने पच्चाश देवता जाणवा.

३२ बावीशमे बोले अढीछीपनी नदीउं कहेठे:-सर्व मली जंबूछीपमां १४५६००० नदीठे. तेमां मूलमां चौद महानदीठे. तिहां जरतक्षेत्रमां गंगा अने सिंधु, ऐरवतमां रक्ता अने रक्तवति ए चार महानदीनो चौद चौद हजार नदीनो परिवारठे. तथा हेमवंत युग लीयानां क्षेत्रमां रोहिता अने रोहितांसा तथा ऐरण्यवंत युगलीयानां क्षेत्रमां रूपकुला अने सुवर्णकुला ए चार महानदी अछावीश अछावीश हजार नदीने परिवारठे. एवं आठ थइ तथा हरिवास युगलीयानां क्षेत्रमां हरिकंता अने हरिसलीला तथा रम्यक युगलीयानां क्षेत्रमां नरकंता अने नारिकंता एवं चार महानदी ठपन्न ठपन्न हजार नदीने परिवारेठे एवं बार थइ. तथा पूर्व महाविदेहमां सीता अने पश्चिम महाविदेहमां सीतोदा ए बे महानदीओनो मली १०६४००० नदीनो परिवारठे. एवं चौद महानदी जंबूछीपमां थइ तेमां प्रथमनी बार नदीनो हीसाब तो प्रगटठे अने सीता सीतोदानी संख्या लखेठे:-नीलवंत पर्वतथी नीकलीने पूर्व महाविदेहमां सीतानदी गइ, तेणे बे बाजुये आठ आठ विजय कीधी तेवारे शोल विजयनी गंगा अने सिंधु ए बे बे गणता बत्रीश नदी थइ अने ठ अंतरनदी ठे. एरीते अडत्रीश महा नदी थइ ते प्रत्येकनो चौद चौद हजार नदीनो परिवार गणतां ५३२००० नदी पूर्व महाविदेहनी सीता महानदीमां पने ठे अने एज प्रमाणे निषध पर्वतथकी सीतोदानदी निकली ते पश्चिम महाविदेहमां गइ. तिहां पण अडत्रीश महानदीनो परिवार ५३२००० नदीनोठे सरवाले १०६४००० नदी थइ, तेनी साथे पूर्वोक्त बार महानदीनी परिवार चूत ३९२००० नदी मेलवीये तेवारे १४५६००० नदीओ जंबूछीपमां थाय अने एथकी बमणी धातकी खंठमां १९१२००० तथा पुष्कराऊंमां पण १९१२००० सरवाले अढीछीपमां ९२०००० नदीठे.

३३ त्रेवीशमे बोले नदीनी लंबाइ पोहोलाइ आदिक कहेठे:-जरतनी बे अने ऐरवतनी बे नदी एवं चार नदी मूले सवाठ योजन अने पठी वधती वधती समुद्र प्रवेशे साडाबाशठ योजन पोहोलीठे. तथा हेमवंत युगल क्षेत्रनी बे अने ऐरण्यवंत युगल क्षेत्रनी बे एवं चार नदी मूले साका बार योजन अने समुद्र प्रवेशे सवासो योजन पोहोलीठे. तथा हरिवास युगल क्षेत्रनी बे अने रम्यक युगल क्षेत्रनी बे एवं चार नदी मूले पच्चीश योजन पहोली अने समुद्र प्रवेशे अढीसो योजन पहोली ठे तथा सीता अने सीतोदा ए बे नदी मूले पच्चास योजन पहोली अने समुद्र प्रवेशे उंकी विजयमां पनी तिहां पांत्रशो यो जन पहोली ठे तथा धातकी खंठमां अने पुष्कराऊंमां पण संख्याये जंबूछीप थकी बमणी बमणी नदी ठे तेनी लंबाइ पहोलाइ पण एज रीते जाणवी.

३४ चौवीशमे बोले जंबूछीपमां देवकुरुक्षेत्रमां एक महोटा जंबूछीपनी पाठल लडु

जंबूवृक्षनां ठ वलयडे तेनी संख्या एक कोड, बीस लाख, पचाश हजार, एकशोने बीशडे तेणेकरी जंबूवृक्ष वींठ्युंते ते उपर अणाढीयो देव वसेडे. एम उत्तरकुरुमां साढमली वृक्षडे तेनी पण एज रीते मर्यादाडे तेना उपर गरुड देवतानो निवासडे. तथा धातकी खंडमां बे देवकुरुडे तेमां बे महोटा साढमली वृक्षडे तेनी पाठल बार वलय लघु साढमली वृक्षनांडे तेनी संख्या १४१००१४० एटला साढमली वृक्ष वींठ्याडे तेना उपर पण गरुड देव रहेडे. तथा धातकी खंडना बे उतरकुरुमां बे महोटा महा धावकीना वृक्षडे ते प्रत्येक लघु धावडी वृक्षनां बार वलये करी वींठ्याडे तेनी संख्या १४१००१४० ठे तेना उपर सुदर्शन अने प्रीयदर्शन देवनो निवास ठे तथा पुष्करार्क्षनां महाविदेहनां बे देवकुरुमां बे महोटा साढमली वृक्षडे ते लघु साढमली वृक्षनां चोवीश वलये करी वींठ्याडे तेनी संख्या ४८१००४८० नी ठे ते महोटा वृक्ष उपर गुरु देवतानो निवास ठे तथा पुष्करार्क्षनां उत्तर कुरुमां एक महोटा पद्मवृक्षडे तेपण चोवीश वलये वींठ्योडे तेनां उपर पद्मदेवनो निवासडे, तथा पुष्करार्क्षना पश्चिम महाविदेहनां उत्तरकुरुमां मुख्य महापद्म वृक्ष पण चोवीश वलये वींठ्योडे तेनी संख्या पूर्वपरे जाणवी. तेनाउपर पुंरिक देवनो निवासडे. ए मुख्यवृक्ष सर्वे वेदिका अने वनखंमे सहीतडे तेनो पीठ पांचशे योजन पोहोली अने बार योजन उंचोडे ते वृक्षो उपर देव निवासनां स्थान तथा श्री जिन जुवनडे ए सर्व वृक्ष रत्नमय पृथ्वीकायनां ठे शाश्वताडे.

८५ पच्चीशमे बोले जंबूद्वीपमां एकेकी विजय वरकारा पर्वत लगे पोहोली १११३॥ योजनडे अने नीलवंत पर्वतथी सीतानदी लगे तथा निषध पर्वतथी सीतोदा नदी पर्यंत १५६९१ योजन अने उपर बे कला एटली लांबीडे तथा धातकी खंडमां एकेकी विजय ६०३ योजन उपर एक योजननां शोल जाग करीये तेवा ठ जाग एटली पोहोलीडे अने शोले विजय १५३६५४ योजन पोहोली ठे तथा पुष्करार्क्षनी एकेकी विजय १९९९४ योजन पोहोली अने शोले विजय ३१६९०० योजन पोहोली ठे.

१६ ढवीशमे बोले जंबूद्वीपमां महाविदेहनी बार अंतरनदी एकशो पच्चीश योजन पोहोलीडे तथा धातकी खंडमां अंतरनदी अढीसो योजन पोहोली ठे अने पुष्करार्क्षमां अंतरनदी पांचशे योजन पोहोली ठे.

१९ सत्तावीशमे बोले जंबूद्वीपमां वरुष्कारा पर्वत ५०० योजन उंचा अने पोहोला ठे तथा धातकी खंडमां वरुष्कारा हजार योजन उंचा अने पोहोला ठे तथा पुष्करार्क्षमां वरुष्कारा बे हजार योजन उंचा अने बे हजार योजन पोहोलाडे.

१० अष्टावीशमे बोले जंबूद्वीपमां दरवाजा आगल पूर्व पश्चिमतुं एकेकुं वनमुख ज.

गति सूधां १९११ योजननुं ठे अने धातकी खंरुमां एकेकुं वनमुख ११६७७ योजन त तथा पुष्करार्कमां एकेकुं वनमुख ११६७७ योजन ठे.

१९ उंगणत्रीशमे बोले जंबूद्वीपमां चद्रशालवन ११७००० योजन लांबुं ठे तथा धा तकी खंडमां एकेकुं चद्रशालवन मेरुपर्वतसहित ११७१५७ योजन लांबुं ठे अने पु ष्करार्कमां एकेकुं चद्रशालवन ४४०९१६ योजन लांबुं ठे.

३० त्रीशमे बोले वीश गजदंतगिरिनुं विचार कहेठे. तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां निषध पर्वतथी बे गजदंता पर्वत निकल्या ते मेरुपर्वत तरफ चाल्या तेमां प्रथम सोमनस गजदं तो धोलेवर्णे ठे ते अन्निकूणमां वल्यो बीजो विद्युत्प्रज्ञ गजदंतो राते वर्णे ठे ते नैऋत कूणमां वढ्यो तथा नीलवंतपर्वतथी बे गजदंता नीकल्या ते मेरुपर्वत तरफ चाल्या तेमां प्रथम गंधमादन गजदंतो पीले वर्णे ठे ते वाव्य कूणमां वढ्यो, बीजो माध्यवंत गज दंतो नीले वर्णे ठे ते इशान कूणमां वल्यो; एम चार गजदंता जाणवा. ए चारे गजदंता ३०११९ योजन ने ठ कला लांबा ठे अने निषध तथा नीलवंतथी निकल्या तिहां धर तीथी चारसे योजन उंचा ठे पठी वधता वधता मेरुपर्वतनी पासे पांचशे योजन उंचा थया ठे तथा धांतकी खंरुमां पूर्व पश्चिम मलीने बे मेरु पर्वतठे माटे तिहां आठ गज दंताठे तिहां प्रथम जंबूद्वीपनी परे बे बे मली चार गजदंता ३५६११९ योजन लांबाठे अने बीजा बे बे मली चार गजदंता ५६९१५९ योजन लांबाठे तथा पुष्करार्क द्वीपमां पण बे मेरुठे माटे तिहां आठ गजदंताठे तेमां पण आगली तरफनां धातकीनी परे बे बे मली चार गजदंता १६१६११६ योजन लांबाठे अने पाठली तरफना बीजा बे बे मली चार गजदंता १०४३११९ योजन लांबाठे ए सर्वे गजदंता मेरु तरफ जतां प्रथम उंचाइमां चारसे चारसे योजन ठे अने ठेठेठे मेरुनी पासे पांचसे योजन उंचाइमां ठे.

३१ एकत्रीशमे बोले इह्नुकार पर्वतनो विचार कहेठे. तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां इह्नु कार पर्वत बिलकुल नथी अने धातको खंरुमां बे इह्नुकारठे तेणे वचमां पडीने बे बे जरत अने बे बे ऐरवत कस्याठे ते लांबपणे चार चार लाख योजन ठे अने उंचा पां चशे योजनठे तथा पोहोळ पणे एक हजार योजनठे ते उपरे एकेको जिनप्रसाद ठे तथा पुष्करार्क द्वीपमां पण बे इह्नुकारठे तेणे पण वचमां पनी बे बे जरत अने बे बे ऐरवत कस्याठे. ए लांब पणे आठ आठ लाख योजनठे अने उंचपणे पांचशे योजन ठे तथा पोहोळा एकेक हजार योजन ठे एना उपर पण एकेकुं श्रीजिनप्रासाद ठे अढीद्वीपनां चित्रामणमां जगतीनां दरवाजा पर्यंत लाल रंग जरेठे पण तिहां दरवाजानी जगा राखवी जोइये. दरवाजाना अंतर पर्यंत ठे. इहां (इह्नुके०) सेलडी तेनो सांगो जेवो लांबो थाय तेनां सरखा ए पर्वत पण लांबा ठे, माटे एनुं इह्नुकार एतुं नाम ठे.

३१ बत्रीशमे बोले जंबूढीपमां ऋरत क्षेत्र तरफ हिमवंत युगल क्षेत्रमां शब्दापाती वृत्तवैताढ्यठे अने हरिवास युगल क्षेत्रमां गंधावती वृत्तवैताढ्यठे तथा ऐरवत क्षेत्र ऋणी ऐरण्यवत युगल क्षेत्रठे तेमां वक्रटापाती वृत्तवैताढ्यठे तथा रम्यक् युगल क्षेत्रमां मा ढ्यवंत वृत्तवैताढ्यठे. ए चार जंबूढीपमां ठे. तथा एथकी बमणा एज नामे धातकी खं डमां आठ वृत्तवैताढ्यठे तथा पुष्करार्द्धमां पण आठ वृत्तवैताढ्यठे. सरवाले अढीढी पमां वीश वृत्तवैताढ्यठे ते सर्वे पालाने आकारे गोलठे. मूल तथा उपरे एकेक हजार योजन पोहोला ठे अने उंचा पण एकेक हजार योजन ठे.

३३ तेत्रीशमे बोले जंबूढीपनां देवकुरुमां यमक अने समक ए बे अने उत्तरकुरुमां चित्र विचित्र ए बे मली चार पर्वतठे अने धातकी खंरुमां ए थकी बमणा आठ ठे तथा पुष्करार्द्धमां पण आठ ठे. सरवाले अढीढीपमां वीश पर्वतठे ते सर्वे एकेक हजार योजन उंचाठे.

३४ चोत्रीशमे बोले जंबूढीपमां निषध पर्वतनी नीचे सीतोदा नदीने बे पासे थइने एकसो कंचनगिरिठे तथा निलवंत पर्वतने नीचे सीता नदीने बे पासे थइने एकसो कंचन गिरिठे एरीते बशो कंचनगिरि जंबूढीपमांठे तेथकी बमणा चारसो कंचनगिरि धातकी खंरुमांठे तथा चारसो कंचनगिरि पुष्करार्द्धमांठे सरवाले अढीढीपमां एक हजार कंचन गिरिठे तेनां उपर तिर्यकजंजक देवताना निवासठे ए सर्व पर्वत शो शो योजन उंचाठे.

३५ पांत्रीशमे बोले जंबूढीपमां ऋरतनी दिसाये पहेलुं हेमवंत युगल क्षेत्रठे तथा ऐरव तनी दिसाये पहेलुं ऐरण्यवंत युगल क्षेत्रमां त्रीजो आरो वत्तेंठे त्यांना मनुष्यनुं एक गाउ प्रमाण शरीर ठे एक पढ्योपम आयुठे अने चोथ ऋक्त एकांतरें आमला प्रमाणे आहार कढपवृद्ध आपेठे एने पृष्ट करंडक चोशठठे, अपत्यपालना ७७ दिवस करे अने अपत्य एटले दीकरा दीकरी जेवारे ओगण्याएंसी दिवसनां थाय तेवारे मातापिता म रण पामीने देवलोकमां जाय. हवे ऋरत तरफ हरिवास क्षेत्र अने ऐरवत क्षेत्रनी तरफ रम्यक् क्षेत्र ए बे युगलक्षेत्र मध्ये बीजो आरो वत्तेंठे. ए युगलीयानुं बे गाउ शरीर अने बे पढ्यायुठे १२७ पृष्ट करंकीठे, उठजक्तठे, चोसठ दिवस अपत्य पालना करी माता पिता स्वर्गे जाये. इहां हरिवास क्षेत्रमां उपजेओ वनमाला नामे राजानो जीव युगलीयो हतो तेने वीराशालवीनो जीव किद्विषियो देव थयो तेणे क्रोध वसे ए युगलियाने नरकमां मो कलवा सारुं हरिवासथी उपाकीने चंपानगरीये मूकथो अने बे पढ्योपमनुं आयु तो डीने ते समयना आयु प्रमाणे आउखुं कखुं तेने राज्ये बेसाडी मद्य मांस कुकर्म शीख वीने नरके मोकदयो ए अठेरुं थयुं ए हरिवास क्षेत्रनां जाव कख्या. हवे आ तरफ निषध पर्वतनी नीचे देवकुरुक्षेत्र अने पेहेली तरफ नीलवंत पर्वतनी नीचे उत्तरकुरु क्षेत्र ए बे युगल क्षेत्रमां पहेलो आरो वत्तेंठे. ए युगलीयानुं त्रण गाउ शरीर अने त्रणप व्यायुठे

३५६ पृष्ठकरंतीठे जंगण पचास दिवस अपत्य पावना करे, तूवर प्रमाणे कल्प वृद्धनो आहार, अठमजक्त एटले चोथे दिवसे आहार करे ए युगलीयानां पुण्य प्रजावे दस जा तना कल्पवृद्ध आहारादिक सर्व वंठित पूरण करेठे. ए वृद्धमां एवो स्वजावजठे पण देवता पूरता नथी. ए सर्वे युगल जडिक स्वजाव वाला ठे एमां क्रोध नथी मात्र ठीक बगासी उधस करतां एनुं मरण थाय. ए रीते जंबूछीपमां युगलीयाना ठ क्षेत्रठे तेथी बमणा बार क्षेत्र धातकी खंडमांठे तथा वार पुष्करार्द्धमांठे, ते सर्वना सरखा जावठे सरखी रीत मर्यादठे सरवाले अढीछीपमां त्रीश युगलीयानां क्षेत्रठे.

३६ ठत्रीशमे बोले ठपन्न अंतरछीपनो विवरो कहेठे:—जंबूछीपमां आपणी तरफ हिम वंत पर्वत अने ऐरवतनी तरफ शिखरी पर्वत ए वे पर्वते जंबूछीपनां कोट उपरथी पर्वत दीठ चार चार दाढा नीकलीठे ते विदिशी तरफ वलीठे लवण समुद्रनां पाणी थी लंची देखायठे अढीयोजन लंची तथा आठ हजार चारसे योजन लांबी ठे ए आ ठे दाढा अधर चाली गइठे ते एकेकी दाढा उपर सात सात अंतरछीपठे तेवारे आठ दाढानां ठपन्न अंतर छीप थया. ए उपर युगलीया मनुष्य वसेठे तेनुं आठसे धनुष श रीर ठे एक पटयोपमनो असंख्यातमो जाग आयुठे. ए युगलीया मरणपामीने जवन पत्यादिक देवोमां जइ उपजेठे. ए ठपन्न अंतरछीपमां त्रीजा आराना ठेडा सरखा जा वठे एटले जेवो नाजिराजानो पिता ठठो कुलकर हतो ते वखत जे जाव वर्तता हता ते प्रमाणेना जाव सर्वकाले तिहां वत्ते ठे ते जाव फरे नही.

३७ शाम्त्रीशमे बोले महाविदेह क्षेत्रमां चोथो आरो वत्तेठे. पांचसे धनुष शरीर मा न. पूर्वकोटी वर्ष आयु, नित्य आहार तथा जंबूछीपना विदेहमां चार तीर्थकरठे, तेमां पूर्वविदेहना वनमुख समीप आठमी पुष्कन्नवती विजयमां पुंरुरिकिणी नयरी तिहां सीमंधरनामे विहरमान ठे तथा पश्चिम विदेहना वन पासे पच्चीसमी वप्राविजय अ ने विजया नगरी तिहां श्रीयुगमंधर वीजा विहरमान ठे, तथा पूर्वविदेहना वनमुख समीप नवमी वडविजय अने सूसीमा नयरी तिहां बाहुस्वामी त्रीजा विहरमान ठे तथा पडिमविदेहना वनमुख समीप चोवीसमी नलीना वती विजय अने अयोध्यान गरी तिहां चोथा सुबाहु नामे विहेरमान तीर्थकरठे, ए रीते जंबूछीपमां चार तीर्थक रठे तथा धातकी खंरुमां वे मेरु अने वे महाविदेहठे तेमां चार तीर्थकर पूर्व महावि देहमां अने चार तीर्थकर पश्चिम महाविदेहमां एरीते आठ तीर्थकर ठे तथा पुष्करा र्द्धमां पण वे मेरु अने वे महाविदेहठे माटे तिहां पण पूर्वविदेहमां चार तीर्थकर अने पश्चिमविदेहमां चार तीर्थकर मली आठ ठे. सरवाले अढीछीपमां वीश विहर मान तीर्थकर ठे. जेवीरीते जंबूछीपमां आठमी, पच्चीशमी, नवमी अने चोवीशमी विज

ये अनुक्रमे चार तीर्थकरठे तेवीरीते धातकीखंन अने पुष्करार्द्धमां पण विजय अने न गरी तेटलामीज कहेवी अने तेनां नाम पण तेना तेहीज जाणवा.

जरतक्षेत्रमां सत्तरमा श्रीकुंथुनाथ अने अठारमा श्रीअरनाथने अंतराले ए अढी छीप मांहेला वीशे तीर्थकरनो जन्म एक समयेज थयलो ठे अने श्रीमुनिसुव्रत तथा श्रीनमिनाथ जगवाननां अंतराले एकसमयेज ए वीशे तीर्थकरे दीक्षा लीधी हती ते एक हजार वर्ष पर्यंत ठग्नस्थावस्थाये दीक्षा पालीने एक समये वीशे तीर्थकर केवल ज्ञान पाम्या ठे. हमणा ए वीशे जिन केवली ठे ते आवती चोवीसीमां सातमा आठ मा तीर्थकरनी वच्चे एक समयेज वीशे तीर्थकर मोक्षपुरीये पधारशे. सर्वेने चोरासी चो रासी गणधरठे, चोरासी चोरासी लक्ष पूर्व आयुठे, पांचसे पांचसे धनुष प्रमाणे श रीर मान ठे. एकेकाने दश दश लाख केवलीनी संख्याठे, शो शो कोडी साधु मुनिराज ठे, सो सो कोनी साधवीठे. ए प्रकारे वीशे विहरमान जिननां बे क्रोरु केवलीठे, बे हजार क्रोरु साधु ठे, अने बे हजार क्रोरु साधवी ठे. ए वीश विजयमां सदा एकेक तीर्थकर ने सहचारी बीजा चोरासी चोरासी तीर्थकर होय, तेमां एक तो केवलज्ञाने संहित होय अने बाकीनां त्र्यासीमां कोइ राजा, कोइ युवान, कोइ बालक, एरीते होय, ए सर्वे चोरासी लक्ष पूर्वने आजखे होय. अने जेवारे चोरासीमो तीर्थकर मोक्ष सधावे तेवारे त्र्यासीमां तीर्थकरने केवलज्ञान ऊपजे तेवारे ते चोरासीमो कहेवाय. ते वखते वली ए कनो जन्म थाय. एरीते चोरासीनी परंपरा सहचारीठे इहां कोइ कहेसे जे एक क्षेत्रमां एकथी बीजो तीर्थकर, चक्रवर्ति, बलदेव, वासुदेव न होय तो एक क्षेत्रमां चोरासी तीर्थकर केम संजवे? तेनो उत्तर वृद्ध परंपरा वनील एम कहेठे जे, ए वीश विजयनां शाश्वता जाव एमजठे पढी केवलीगम्य !! इहां जघन्य काले वीश तीर्थकर होय ते ए केको तीर्थकर एकेक लक्षपूर्वनो थाय तेवारे बीजा तीर्थकरनो जन्म थाय तथा गर्ज मांहे होय. एम चोरासी लक्ष पूर्वना आयु मध्ये त्र्यासी तीर्थकरबीजा थाय तेने वीश गुणां करतां १६६० थाय अने मूलना वीश विहरमान होय. सरवाले जघन्य काले १६७० तीर्थकर होय अने जेवारे १७० तीर्थकर उत्कृष्ट विचरता होय तेवारे पांच ज रत तथा पांच ऐरवतनां मली दश बाद करता बाकी १६० तीर्थकर पांच विदेहनी वि जयना ते प्रत्येकने त्र्यासीये गुणतां १३३७० थाय तेनी साथे विहरमान १७० जेलीये तेवारे १३४५० एटला तीर्थकर उत्कृष्ट काले होय. इति विदेहजिन संख्या विचार स मासः अहीं सुधी जंबूछीपनो विचार कखो.

३७ आमन्त्रीशमे बोले लवण समुद्रनो अधिकार कहेठेः—सर्व मली असंख्याता समु द्रठे, ते सर्वे धुरथी मांडीने ठेहेमा पर्यंत हजार हजार योजन उंडाठे अने मात्र एक ल

વણ સમુદ્ર માત્રાચે માત્રાચે ડંડો થતો થતો જેવારે જંબૂઢીપથી પંચાણુ હજાર યોજન સમુદ્રમાં જણ્યે અને ધાતકી લંઢથી પણ પંચાણુ હજાર યોજન સમુદ્રમાં આવીચે તિહાં મધ્યનાગે હજાર યોજન ડંઢોઢે, ં સમુદ્ર ગોતીર્થ કહીચે, આ ઢેકાણે હજાર યોજન ડંઢો, દશ હજાર યોજન પહોલ પણે અને શોલ હજાર યોજન ડંચો કોટની પરે દગ માલો ઢે. શોલ હજાર યોજન પાણી ડંચો ચઢેલોઢે તે ડપર બે ગાઢની વેલ બે વાર ંક અહોરાત્રમાં ડંચી ચઢે ઢે ં પાણી શીરીતે ડઢેલે ઢે તે કહેઢે:—

પૂર્વે વઢવામુલ, દક્ષણે કેયૂપ, પશ્ચિમે યૂપ, અને ડત્તરે ંશ્વર ં ચાર મહોટા પાતાલ કલશાઢે તે લાલ યોજન ડંચા લાલ યોજન પેટમાં પોહોલા અને દશ હજાર યોજન મુલ પોહોલું, દશ હજાર યોજનની પઢગી, ંક હજાર યોજન કલશની ઢીકરી જાઢી ઢે. તથા ૩૩૩૩૩ યોજન કલશામાં હેઠલ વાયુઢે અને ૩૩૩૩૩ યોજન મધ્યનાગે વાયુ પાણીઢે તથા ૩૩૩૩૩ યોજન ડપર પાણીઢે, તે મધ્યના વાયુને યોગે ડઢલેઢે. ં ત્રણસે તેત્રીશ યોજન ત્રણ ઢેકાણે લલ્યાઢે તેના ડપર પણ ંક યોજનનો ત્રીજો ત્રાગ અધિક લેવો.

હવે પૂર્વનો મહોટો કલશ અને દક્ષણના કલશને વચ્ચે તથા દક્ષણનાને પશ્ચિમના કલશ વચ્ચે તથા પશ્ચિમના ને ડત્તરનાં કલશ વચ્ચે ૨૧૫—૨૧૬—૨૧૭—૨૧૮—૨૧૯—૨૨૦—૨૨૧—૨૨૨—૨૨૩—ૂવી સંલ્યાચે ં નવ નવ પંક્તિ લઘુ પાતલ કલશનીઢે તેવારે સર્વ મલી ચારે પંક્તિના કલશ ંઢઢ ઢે. ં લઘુ કલશ દશ હજાર યોજન ડંઢા ઢે. તથા મધ્યમાં પોહોલા પણ તેટલાજઢે અને ંક હજાર યોજનનું મુલઢે, ંક હજાર યોજન પઢ ગીઢે સો સો યોજનની ઢીંકરીઢે, ૩૩૩૩ યોજન હેઠલ વાયુઢે ૩૩૩૩ યોજન મધ્ય ત્રાગે વાયુ અને પાણી ઢે, ૩૩૩૩ યોજન ડપર પાણી ઢે, ં લઘુ કલશની માંઢેથી પાણી ડ ઢલે ઢે તે લવણ સમુદ્રની વચ્ચો વચ્ચ પાણીનો ગોલ કોટ બંધાયઢે.

ં ચાર મહાકલશના અધિષ્ઠાતા પૂર્વે કાલ, દક્ષણે મહાકાલ, પશ્ચિમે વેલંબ અને ડત્તરે પ્રજંજન ં ચાર ઢેવઢે, શોલ હજાર યોજનના દગમાલની ડપર બે ગાઢની વેલ વધેઢે તેને ઢાલવાને જંબૂઢીપની દશા ત્રણી બેતાલીશ હજાર ઢેવતાઢે. તથા વેલ ડપર શાઠ હજાર ઢેવતાઢે તથા ધાતકીની ઢિસાચે વેલ ડપર બહોત્તરે હજાર ઢેવતા ઢે. સરવાલે વેલંધર અનુવેલંધર ંટલે ઢિસાના અને વિઢિસાના મલીને ૨૭૫૦૦૦ ઢેવતા ઢે.

હવે ં ઢેવતાનાં નિવાસ કહેઢે:—જંબૂઢીપના ઢરવાજાથી ચાર ઢિસાચે તથા ચાર વિ ઢિસાચે બેતાલીશ બેતાલીશ હજાર યોજન જણ્યે તિહાં વેલંધર અને અણુવેલંધર નાગરા જાના આઠ પર્વતઢે. તેના નામ કહેઢે ૧ પૂર્વે ગોશુત્રપર્વત અને ગોશુત્ર ઢેવ ઢે. દક્ષણે ઢિગ ત્રાસ પર્વત અને શિવ ઢેવતા. ૩ પશ્ચિમે સંલનાત્ર પર્વત અને સંલ ઢેવતા. ૫ ડત્તરે દગસીમી પર્વત, અને માણોસલ ઢેવતા. ૫ ંશાનકોણે કર્કોટક પર્વત અને કર્કોટક ઢેવતા, ૬ અ

द्विकोणे विद्युत्प्रज्ञ पर्वत अने कर्दम देवता. ७ नैऋतकोणे कैलाश पर्वत अने कैलाश देवता ८ वाव्यकोणे अरुणप्रज्ञ पर्वत अने अरुणप्रज्ञ देवता. ए आठे पर्वत (१०११) योजन नीचे पहोलाठे अने ४१४ योजन ऊजेरा उपर पहोलाठे तथा सर्वे ११११ योजन उंचा ठे तेमां पूर्वादि चार दिसाना अनुक्रमे १ कनकमय, २ अंकरत्नमय, ३ रूपामय, ४ स्फाटिकमय जाणवा. तथा चार विदिसाना सर्व रत्नमयठे. जंबूद्वीपची बेतालीश हजार योजन जश्ये ते स्थानके ३०९ योजन उपर पंचाणुआ पीस्तालीश जाग एटली जलवृद्धिठे. तथा ४४१ योजन उपर पंचाणुआ दश जाग एटला पर्वत उंचाठे तथा ९६९ योजन उपर पंचाणुआ चालीश जाग एटला जंबूद्वीपजणी उघामा देखायठे. तथा ९६३ योजन उपर पंचाणुआ सीत्तोतेर जाग एटला शिखा जणी उघाडा देखायठे.

तथा मेरुपर्वतची पश्चिम दरवाजाची बार हजार योजन समुद्रमां जश्ये तिहां लवणना अधिष्ठातानो गौतमद्वीप सुस्थितदेवनोठे. ते गौतमद्वीपने बे पासे जंबूद्वीपनां बे सूर्यनां बे द्वीपठे तथा लवणनी सीखानी आणी तरफनां बे सूर्य तेना बे द्वीपठे. एरी ते चार सूर्यनां चार द्वीप गौतमद्वीप पासेठे. ए गौतमद्वीप सूधां पांचे द्वीप बार बार हजार योजन लांबा अने पहोला ठे.

तथा मेरुपर्वतची पूर्वदिसिये जगतीनां दरवाजाची बार हजार योजन लवणसमुद्रमां जश्ये तिहां जंबूद्वीपनां बे चंद्र तथा लवणनी सीखानी आणी तरफनां बे चंद्र एवं चार चंद्रमाना चार द्वीपठे.

एजरीते पश्चिमदिसे सिखानी पेढीतरफ लवणनां बे सूर्य अने धातकीना ठ सूर्य मढी आठ सूर्यनां आठ द्वीपठे तथा पूर्वदिसाये शिखानी पेढीतरफ लवणसमुद्रनां बे चंद्र अने धातकीनां ठ चंद्र एरीते आठ चंद्रनां आठ द्वीपठे. ए लवण समुद्रमां पांचसे योजननां मत्सठे तथा लवणनी सिखामां जे ज्योतिष चक्रचालेठे तेना विमानदिगस्फाटिकरत्ननांठे. लवणाधिकारः

३९ उगणचालीशमे बोले कालोदधिनो विचार कहेठे. ते कालोदधी प्रथम दरवाजाची साहामा दरवाजा लगे आठ लाख योजन पोहोलोठे अने एक हजार योजन उंचा ठे, गोतीर्थ नथी, वेल नथी, दरवाजेची पूर्वपश्चिमे बेतालीश हजार योजन जश्ये तिहां कालनामे देव, पश्चिमे महाकालदेव, ए बे समुद्र अधिष्ठायक देवना द्वीपठे तथा पश्चिमे बार हजार योजन जश्ये तिहां कालोदधिनां एकवीश सूर्यना एकवीश द्वीपठे, तेमज पूर्वे बार हजार योजन जश्ये तिहां कालोदधिनां एकवीश चंद्रमाना एकवीश द्वीपठे ए समुद्रमां सातसे योजनना शरीर वाला मत्सठे. एना पाणीनो खाद पीवा सरखो ठे तथा धातकी खंरुना सूर्य चंद्रना द्वीप सर्वे पाणीची बे कोश उघाडा ठे.

४० चालीशमे बोले पुष्करार्कद्वीपनी वस्तु लखीये ठेये. पुष्करार्क शोल लाख योजन

पहलो ठे, तेना मध्यमां मानुष्योत्तर पर्वत पड्यो तेथी एना बे जाग थया ठे. तेमां आ गलां जागना आठ लाख योजनमां मनुष्यनी वस्ती ठे अने पहली तरफनां आठ लाख योजनमां सून्यक्षेत्रे.

४१ एकतालीशमे बोले मानुष्योत्तर पर्वत बेठा सिंहने आकारेठे, पुष्करद्वीपनां मध्य जागे वलयाकारे पड्यो ठे, हेठल एक हजारने बावीश योजन पहोलोठे अने मध्यमां सातसे त्रैवीश योजन पहोलोठे तथा उपर चारसे चोवीश योजन पहोलो ठे अने उंचो तो बेलंधर पर्वत जेटलो १७२१ योजनठे तथा चूमीमां चोथो जाग उंचोठे. एनी माहेली परिधि १४२३०२२४ योजन अने मानुष्योत्तरथी बाह्य परिधि १४२३२७१३ योजन ठे. ए टलीज परिधि सिद्ध सिखानी पण जाणवी. ए सिद्ध सिखा अने अढीद्वीप बेहु बरो बरठे. ए अढीद्वीपरूप मनुष्य क्षेत्रमां नव वानां होय तेना नाम कहेठे. १ नदी, २ डह ३ मेघ, ४ गज्जारव, ५ अग्नी, ६ तीर्थकर, ७ गणधर आदि मनुष्य तेना, ७ जन्म, ८ मरण ए रात्रि दिवस ए नव वानां होय ए प्रमाणे संक्षेपथी अढीद्वीपनां जाव जाणवा.

हवे एज अढीद्वीप संबंधि कांश्क विशेष विचार कहीये ठैयें.

ए अढीद्वीपना मध्यमां प्रथम जंबूद्वीप आवेलोठे, माटे ते जंबूद्वीपनो वली जूदो पट वनाव्योठे तेपण ए पुस्तकनी साथेठे ए सर्व द्वीप अने समुद्र ते जगतीये करी वींटे खाठे माटे प्रथम जगतीनो वर्णन करीये ठैयें. प्रत्येक प्रत्येक द्वीप अने समुद्र पद्मवर वैदिकाये करी सहीत ठे अर्थात् सर्वद्वीप अने समुद्रने चोकफेर पद्मवर वैदिका ठे अने सर्व पद्मवरवैदिकाउने केडे तथा आगल बे वाजु वन खंरु पण ठे.

अथ जगती वर्णन.

तिहां प्रथम जंबूद्वीप महोटा नगरना गढने आकारे वज्रमय जगतीये करी चारे वाजु वींटेखोठे. ते कोट आठ योजन उंचोठे तथा बार योजन नीचे धरतीना मूलमां पहोलोठे. पठी जेम जेम उंचा चकीये तेम तेम अनुक्रमे पोहोलाइनुं विस्तार घटतां घट तां जेवारे एक योजन उंचा चकीये तेवारे अग्नीश्वर योजन पोहोलो थाय, बे योजन चरुतां दश योजन पोहोलो थाय, त्रण योजन चरुतां नव योजन पोहोलो थाय अने जेवारे चार योजन उंचा चकी कोटना मध्यजागने विषे आवीये तेवारे आठ योजन पोहोल पणे थाय. एम थावत् आठ योजन चडीने कोटनी उपर जश्ये तेवारे चार योजन पोहोल पणे थायठे. ए कोट उंचु करेलुं गायनुं पूंठडुं तेने आकारे ठे. जेम गायनुं पूंठ मूलमां जाडुं होय अने पठी उतरतां उतरतां पातलुं होय तेम जगती पण धर तीनां मूलमां जाडी ठे अने पठी उपर चडतां चरुतां पातली थती गइ ठे.

ते जगती सर्व प्रदेशे वज्ररत्नमयते, मणिरत्ननी चीतते, वैडूर्य रत्नमय थांजाते, लोही ताक्ष रत्नमय खीला ते, ठतमां सोना रूपाना पाटीया ते, आकाशनी पेरेआठी ते, सुकोम लते, घसीते, मांजी कोमल करेदीते, रज रहीत ते, मल रहित ते, कर्दम रहीतते, ठाया आवर्ण रहित शोचा वाली ते, निरूपघात कांतीवाली ते, उद्योत सहित ते, जोवा योग्य ते, मनोहर आंखने देखवा योग्य जोवावालाने मनोझ ते, प्रतिबिंब जेमां पडे एवी जगती ते. कलश, मंगल, तोरण, विजय, प्रसावणीया, वेदिका, सिंहासण, जरोखा, जादी ए सर्व रत्नमय रमणीक ते. ते जगती उपरे जंबूद्रीपनी पासे एक जादीये करी चोक फेर सर्व दिसे वींटाणी ते एटले हीयारखी ते. ते जादी अर्द्ध योजन उंच पणे ते, पांचसे धनुष्य पहोली जाडपणे ते, सर्व रत्नमय ते, निर्मल ते, सुकुमाल ते, यावत् देखवा योग्य ते, मनोहर ते, एनुं प्रथम आंकवालुं चित्र पहेला पृष्ठमां ते.

ते जगती महोटा गवाक्षोना वलय तेणे करी सर्वदिशिये चारे बाजुये वींटेकी ते. ते सर्वे गोख रत्नमय ते. एकेको गोख बे बे कोश उंच पणे ते अने पांचशे पांचशे धनुष पहोळ पणे ते तथा अर्द्धो कोश लांब पणे ते. आठा निर्मल ते. यावत् प्रति रूप ते. ए गवाक्षनुं चित्र बीजा आंकवालुं आ पुस्तकना प्रथम पृष्ठ मध्ये आपेलुं ते, तिहांथी जोवुं. एवा गवाक्ष सर्व लवण समुद्रनी पासे जगतीनां मध्यजागमां चोफेर जाणवा.

हवे ते जगतिनी उपरली चूमिनां मध्यजागने विषे चोफेर फरति एक महोटी पद्म वरवेदिका देवताउने क्रीमा करवानुं स्थानक ते. ते उंचपणे अर्द्ध योजन ते अने पांच शे धनुष्य पहोळ पणे ते. जेटलो जगतिनां मध्यजागे परिधि ते ते प्रमाणे परिधि पणे ते, सर्व रत्नमय ते, जगती समान जगती सरखी फरती ते, तेनी वज्ररत्नमय चूमि ते. चूमिजागथी उंचा नीकट्या जे प्रदेश ते सर्व वज्ररत्नमय ते. अरिष्ट रत्ननां मूळ पग थालीया ते, वैडूर्य रत्ननां थांजा ते, शोना अने रूपानां पगथालीयानां पाटीयां ते, वज्र रत्ननी संधीपूरी ते, एटले बे पाटीआनो संबंध जोरुवो तेने संधी कहीये. वली पद्माने थानके पण संधि समजवी, पाटीआवच्चे जे खीलीउं ते ते लोहिताक्ष रत्ननी ते. तिहां नवनवा प्रकारनां मनुष्यनां युग्म शरीर ते. ते मनुष्यनां जोरुवालुं रूप नवनवा प्रकारनां मणिरत्नमयते. तेमज मनुष्यना एकाकी रूप पण ते. तथा ए रूपना युग्म ते. तेनां अंकरत्न मय देस ते. ज्योतिरसा रत्नमय वांस नाबे अने जमणे बे पासे बांध्या ते अने वंसनी खीली विशेष रूपानी पाटली वंसनी उपर ते तेना उपरे शोनानी ढांकणी ते ते उपर वली वज्ररत्ननी निविरु ढांकणी ते ते उपरे सर्वस्वेतरूपामय आठादन ते एवी पद्मवरवेदिका ते.

ते पद्मवरवेदिकाये एक सुवर्णनी माला, एक घूघरनी माला, यावत् मोतीनी मा ला, एक कमलनी माला, ते पण सर्व रत्नमय पीला सूवर्णमय दाम समूहे करी तेणे

करी सर्वेदिशे सहीत ठे, ते माळाने रक्तसुवर्णना फूमकाठे, सोनाने प्रकारे सहीत ठे, नव नवा प्रकारनां मोती अने रत्न तेना हार अने अर्कहार तेणेकरी शोजित थकी लग्गा रेक मांहोमांहें वेगली रही ठे ते पूर्व, पश्चिम, दक्षिण अने उत्तरनो मंदमंद वायरो तेणे कंपती थकी, लंबती थकी, जणजणाट प्रमुख शब्द करती थकी, कान अने मनने गम ता एवा शब्दने चोकफेर पूरती थकी शोजती थकी रहे ठे, तथा जिहां जिहां एक युगल ठे तेने स्थानके बीजा पण घणा घोळानां युगल, हाथीनां युगल, मनुष्यनां युगल, किन्न रनामा व्यंतरदेवोनां युगल, किंपुरुषनां युगल. महोरगनां युगल, गांधर्वनां युगल, वृ षजनां युगल इत्यादिक सर्व युगल रत्नमयठे, निर्मलठे, सुकुमलठे, यावत् प्रतिरूप ठे, तेमज ते ते स्थानके घणा घोळानां रूपनी पंक्तिठे ठे ते पण पूर्ववत् यावत् प्रतिरूप ठे तेमज वली घोळानां मैथुननां रूप एटले छी सहीत रूप पणठे तथा ते ते स्थानके घणी पद्मलता, नागवृक्षनी लता, अशोकवृक्षनी लता, चंपकवृक्षनी लता, आमृवृक्षनी लता, जाय विशेष वृक्षनी लता, मचकुंदलता, श्यामलता प्रमुखठे. ते नित्ये फळी फूली थकी मंजरे करी सहीतठे. ते सर्व रत्नमयठे. यावत् प्रतिरूपठे. तथा ठामे ठामे घणां रत्न मय अक्षतना स्वस्तिकठे इत्यादि एनो विशेष वर्णन सर्व जीवाजिगमादि सूत्रोष्ठी जोवुं-

हवे एनुं पद्मवरवेदिका एवुं नाम ठे तेनुं हेतु कहेठे:—ए वेदिकामां ठामे ठामे एटले वेदिकाने विषे, वेदिकानां पासाने विषे, वेदिकानां पाटियानां माथाने विषे, वेदिकानां पुटांतरने विषे, थांजाने विषे, थांजानां पासाने विषे, थांजाने माथे, थांजानां पुटांतरने विषे, खीलीने विषे, खीलीनां मूखने विषे, खीलीनां पाटीयाने विषे, खीलीनां पुटांतरने विषे, खीलीने पासे, खीलीना पासाने स्थानके, खीलीनां पद्मनां अंतने ठामे, एवा एवा स्थानके घणा उत्पल तथा सूर्य विकाशी कमल यावत् लाखपाखरीनां कमल ते सर्व रत्नमयठे महोटा वर्षाकालनां जल राखवानां स्थानक तथा उत्र सरिखा मोहोटा क मल प्रमुख ते सर्व पद्मवरवेदिकाने विषे रत्नमय ठे ते सारुं पद्मवरदिका एवो नाम ठे ए शास्वतीठे. ए पद्मवरवेदिकानुं चित्र त्रीजा आंकवाळुं प्रथम पृष्ठमां ठे.

ते पद्मवरवेदिकानी पूर्व पश्चिम दिसाये बे बाजुये बे वनखरुठे ते देशे उंणा बे यो जन अर्थात् अढीसे धनुषे उंणा बे योजन चक्रवाल पणे पोहोला ठे. एटले जगतीनी उपर पांचशे धनुषनी वेदिका पोहोलीठे अने वेदिकानी बाहेरली समुद्रनी तरफनी बाजुनुं वन बे योजनमां अढीशे धनुष उंणुं ठे तथा वेदिकानी जंबूद्वीपनी तर फनी बाजुनुं वन पण बे योजनमां अढीशे धनुष उंणुं ठे. ए सरवाले जगती उप रनी चूमी चार योजन पोहोळ पणे पूर्वे कहीठे तेटली थइ. हवे ते बे बाजुनां वन जगती समान परिधिपणे फरता ठे. तेनी कृष्णवर्णे नीली शोजाठे ते वननी सूमी चा

मरुताना पुढा सरखी सम ठे. तथा आरीसानो तलो, हथेढीनोतलो, चंढ्रमानुं मंरुल, सूर्यनुं मंडल, घेटानुं चर्म, वृषजनुं चर्म, वराहनुं चर्म, सिंहनुं चर्म, वाघनुं चर्म, ढागनुं चर्म, ढीपमानुं चर्म, ते समान जूमीनो तलो ठे. तथा ते वनमां नाना प्रकारनां काला, पीला, धोला, राता, नीला एवा मणिरत्ननां तृणठे तेनो मनोङ्ग शब्दठे, मनोङ्ग रूप ठे, तिहां चार दिसानो वायरो लागे तेवारे ते तृण मांढोमांढे आफले ठे तेना योगे करी तेमांथी ढत्रीश राग रागणी आलाप्या जेवा शब्दनी ध्वनी उठेठे, जाणे वत्रीशबद्ध नाटक थतो होय, जाणे ढत्रीश वाजां वाजतां होय, जाणे गंधर्व देवता राग करताहोय, तेवा शब्द उठे ठे. तथा ते वनने विषे ठामे ठामे घणी लघु वाव्य, गोलवाव्य ते पुष्करणी, तथा गुंजाळिका ते ढांकेढी वाव्य, लांबी वाव्य, तेमज एक उले होय तेने पंक्ति कहीये एवी सरनी पंक्ति, तथा एकनुं पाणी बीजामां आवतुं होय तेने सरसर पंक्ती कहीये तथा कूपनी पंक्ति ए सर्व सुकुमालठे, रत्नमय तेना कूलठे, रूपामय कूल कांठाठे, वक्रमय पाषाणेकरी तेनां पासा बांध्याठे, सुवर्णमय तेनां तळीयाठे, वैदूर्यरत्नमय अने स्फाटिकमय तेनां तटना समिपनां प्रदेशठे, सुवर्ण अने शुद्धरजतमय तेनी वेळु ठे, सुखे प्रवेश करवा योग्यठे, सुखे उत्तरवा योग्यठे, नवनवा प्रकारनां रत्ने करी तीर्ठि जीत बांधीठे, चोखुणी ठे, सरखो तटठे, अनुक्रमे नमतुं नमतुं जलनुं स्थानकठे, जिहां गंजीर शीतल जलठे, ते ठेकाणे विसमृनाल नामे नीला कमल तेना पत्रेकरी वढी घणा उत्पल, कुमुद, नलिनि कमलजाति, आदिक अनेक जातिना कमल तेणे करी सहीतठे, ते कमलोने जमरा प्रमुख जोगवेठे, निर्मल पाणीये करी ते वाव्यो पूरण जरेढीठ ठे, तेने विषे मत्स, काचवादिक अतिघणा जमेठे, तथा अनेक पढीओना युगल मैथुन क्रीडा करेठे तथा ते प्रत्येक वाव्य पद्मवरवेदिका अने वनखंडेकरी सहीत ठे.

केटलीक वाव्य प्रमुखनां मदिराना सरखा पाणीठे, केटलीकनां वारुणीवर समुद्रनां सरखा पाणीठे, केटलीकनां गोलुग्ध सरखा पाणीठे, केटलीकनां घृतसरखा पाणीठे, केटलीकनां शेलडीनां रस सरखा पाणीठे, केटलीकनां अमृत सरखा पाणीठे, केटलीकनां स्वजाविक पाणी समान पाणीठे, ते वावी जोवा योग्यठे. इत्यादिक ए वावी कूपादिकनो वर्णन घणोठे ते जीवाजिगमादि सूत्रथी जाणवो. तथा फल, फूल, पत्र, आंवा, नीबू, दासीम, जंजेरी प्रमुख सर्व पदार्थ ते वनने विषे रत्नमय जाणवा.

हवे ते वनने विषे ठाम ठाम घणा उत्पाद पर्वतठे, जिहां व्यंतर प्रमुख देवता क्रिया करवा निमित्तें आवी जवधारणीय वैक्रिय शरीरे करी क्रीडा करेठे. ते पर्वतने विषे स्फटिक रत्ननां मंरुप, तथा मंचक, दगमाल प्रासाद विशेष, स्फटिकना प्रासाद, हींढोला खाट, पढीने बेसवाना ठाम इत्यादिक सर्व रत्नमयठे तथा हंस, क्रौच, गुरुड प्रमुखने आ

કારે જુદા જુદા જાતનાં અનેક સિંહાસન પ્રમુખઢે, ઘરીતે વાવઢીઢ, તોરણ, પુતઢીયો, મેહેલ ં સર્વ રત્નમય ઢે. ઢ ં ઋતુમાં સર્વ સ્થલે દેઢવાયોગ્ય રમણીક ઢે.

તથા તે વનઢંડને વિષે ઠામ ઠામ કેઢીનાં ઘર, લતાનાં ઘર, અવસ્થાન ઘર, પૃઢન ઢ્લાન કરવાના ઘર, પ્રસાઢન ઘર ઢ્લ્યાઢિક અનેક જાતીનાં ઘરઢે, તેમજ ઘણા જાય આ ઢિક ફૂલોનાં મંરુપઢે. તથા ડત્તમ સઢ્યા અને આશનને સ્થાનકે પૃથ્વી શિલ્લાના પટઢે; તિહાં ઘણા વ્યંતરિક દેવો અને દેવાંગનાઢ વસેઢે, વિશ્રામ કરેઢે, સૂવેઢે, બેસેઢે, નિષિઢ્યા કરેઢે, પાસું પાલઢેઢે, રમેઢે, ઢ્હિત સુઢ ડોગવેઢે, ક્રીઢા વિનોદ કરેઢે, મૈથુન સેવા કરેઢે પૂર્વ ડવના આઢારેઢા સુઠ્ઠતઢ્રી ડપાર્જન કરેઢા કલ્યાણકારી શુઢકર્મ તેનાં શુઢવિપાક ફલ ડોગવતાં ઢકાં પ્રત્યેકે વિઢરેઢે. ંમાં ંટલું વિશેષ જે માંહેઢા પાસાનાં વનઢંડ માં તૃણ નઢ્રી. તૃણવિનાનો જાણવો. ઢ્લ્યાઢિક વન સંબંધિ સંઢેપ અધિકાર કહ્યો.

અથ ધારવર્ણનં

હવે ં જંબૂઢ્રીપનાં ઢરવાજાની સંઢ્યા કહેઢે. ંક પૂર્વઢિસે વિજયનામે ઢાર ઢે તેનો વિજયદેવ નામે પોઢીઢઢે. બીઢો ઢક્ષણઢિસે વિજયંત નામે ઢાર ઢે તેનો વિજયંત નામે દેવરઢ્ઢક ઢે. ત્રીઢો પશ્ચિમઢિસે જયંતનામે ઢાર ઢે તેનો જયંતનામે દેવ રઢ્ઢક ઢે. ઢો ઢો ડત્તરઢિસે અપરાજિત નામે ઢાર ઢે તેનો અપરાજિત નામે દેવ રઢ્ઢક ઢે. ંરીતે વિજયાઢિ ઢાર અનુત્તર વિમાનને નામે ઢાર ઢરવાજાનાં પણ નામ કહ્યા ઢે.

તિહાં મેરૂપર્વતને પૂર્વઢિસે પીસ્તાઢીશ હજાર ડોજન જઢ્યે તેવારે જંબૂઢ્રીપની પૂર્વઢિ સીને ઢેહેઢે. લવણ સમુઢ્રની પૂર્વઢિસિની પશ્ચિમઢિસે સીતામહાનઢીની ડપરે વિજયનામે ઢરવાઢો ઢે, તે આઠ ડોજન ડંઢોઢે, ઢાર ડોજન પહોલોઢે, અને ઢાર ડોજન લાંબપણે પ્રવેશ પણેઢે, તથા બે વાઢુઢે ંકેક કોશની બારસાંઢની ઢીંત સ્વેતવર્ણેઢે, તેનું શિઢર શોનાનું ઢે, તિહાં હાઢ્રી, મૃગ, વૃષઢ, અશ્વ, મનુષ્ય, મગરમઢ, પંઢી, સર્પ, કિઢ્ઢરનામા વ્યંત રદેવ, રુઢુઢીવ, ગેઢા, ઢમરીઢાય, વનહસ્તિ, વનલતા, પઢ્ઢલતા પ્રમુઢ ઢિત્રામે કરી ઢુઢ્ઢ ઢે. ઢંઢ ડપર ડત્તમ વેઢિકા તેણેકરી સઢીતઢે, વિઢ્યાઢરના ઢુગલનાં આકારે કરી તે ઢંઢ ઢુઢ્ઢ ઢે, હજારોગમે સૂર્યનાં કિરણો ઢકી પણ અધિક પ્રકાશવાન ઢે, દેઢીપ્ય માનઢે, ઢઢુને ઢોવા ઢોગ્યઢે, સુઢકારી ફરસઢે, સઢ્રીક રૂપઢે.

વઢ્ઢરત્નમય તેનું ઢૂમી ઢાગઢે, અરિષ્ટરત્નમય પગથાઢીયાનાં મૂલઢે, વૈઢુર્યરત્નમય ઢં ઢઢે, સુવર્ણેકરી સઢીત ંવા ડત્તમ પંઢવર્ણા મણિરત્ન તેણેકરી ઢૂમિતલ બાંઢ્યુંઢે, હંસ ગર્ઢરત્નનો ડંબરો બાંઢ્યુંઢે, ગોમેઢરત્નનાં નીઢલા ઢોઢલાઢે, અને ડલાલોઢે, લોઢીતાઢ્ઢ રત્નમય બાર શાઢઢે, જ્યોતિરસા રત્નમય બારણાનાં ડપરલા ઢાંપણાઢે, વૈઢુર્યરત્નમય

कमाम्बे, वज्ररत्नमय पाटीयानी सांधि जमीठे, लोहीताक्ष रत्नमय बेपाटीया वच्चें खी लीठे, नवनवा मणीमय चणीयारा ठे, वज्ररत्नमय जोगलठे, अने जोगलनो ठाम पण वज्ररत्नमय आवर्त्तन पीठिकाठे, जिहां उदालो बेशे ते ठाम जाणवो, अंकरत्नमय द्वा रना बे पासाठे, एवा आंतरा रहीत निवम अचंग कमाड ठे.

ते द्वारने बेहुपासे बेसवाना चोखूणा उंटलाठे, तेनी पासे पण त्रण त्रणनी ठपन्न पं क्ति एवा १६७ लांवा उंटलाठे, तिहां नाना प्रकारनां मणिरत्नमय सर्पनां रूपठे, द्वारने बे पासे लीलाये करी सहीत एवी पुतलीठे, वज्ररत्नमय शिखरठे, रूपामय उपरलो पीठठे, सर्व सुवर्णमय चंडुवाठे, नाना प्रकारनां मणिरत्नमय जालपिंजर गवाक्षठे, मणिमय उपर लो वंशठे, लोहिताक्षरत्नमय उपरलो प्रतिवंशठे, रूपामय चौमठे, आदसरनां खागा अने बीजा पण जे खागाठे ते सर्व अंकरत्नमयठे, ज्योतिरसा रत्नमय वंशने वलाठे, ज्योतिरसा रत्नमय अनेक खापठे, ते उपरे रूपामय पीठठे, ते वच्चें सुवर्णमय पातली ठोतीठे, ते वच्चें सूक्ष्म तृण समान आढादन ढांकणी रूपठे, ते उपरे वली सर्व स्वेत रूपामय आढादनठे, अंकरत्नमय पक्षवाधाठे, सुवर्णमय शिखरठे, ते उपरे सुवर्णमय श्रुजिकाठे, ते द्वारनो उपरलो जाग सर्व स्वेतदक्षणावर्त्त संखनोठे जेम निर्मल दहीना दरुवां, गायनुं दूध, समुद्रनां फीण, रूपानापूज, एना सरखो उज्वल पोलनो प्रकाशठे, तिलकरत्न तथा अर्द्धचंद्र तेणेकरी सहीत एवा अनेक चित्रामणठे, नाना प्रकारनी रत्नम य मालाये करीने ते द्वारनां मुख शोजितठे, बाहेर अने मांहे सुकुमालठे, पोल मध्ये सो नानी वेलु पाथरी ठे, तेनुं शुजफरसठे, सश्रिकरूप ठे, जोवा योग्य ठे, यावत् प्रतिरूपठे.

हवे ते विजयनामा द्वारना बे पाशे बे उंटलाठे तेमां चंदने चर्चित बे बे कलशठे, ते कलश उत्तम कमल उपरे थाप्या ठे, सुगंधित उत्तम पाणीये करी प्रतिपूरण जस्य्या ठे, ते कलशने वावनां चंदननां ठांटा कीधाठे. गलाने विषे राता सूत्रनां दोरा बांध्या ठे, कमलनां ढांकणाठे, ए कलश प्रमुख सर्व रत्नमयठे, निर्मलठे. सुकुमालठे, यावत् प्र तिरूपठे, महोटा महोटा महेंद्र कुंजसमान ते कलश कह्या ठे.

ते द्वारने बे पासे उंटले बेसवाने स्थानके बे बे नागदंता सरिखा खीलाठे, ते नागदं ताने विषे घणी मोतीनी माला, लंबायमान हेमनी माला, गवाक्षने आकारे रत्ननी माला अने घूघर माल प्रमुख वलगाकीठे, तेणे करी सहीतठे, कांश्क उंचाठे, सन्मुख निकळ्या ठे, त्रिहा जिन प्रदेशने विषे रूनीपरे रह्या ठे, नीचें सपर्पनां अर्द्ध आकार समानठे, सपर्पिंरु संस्थाने संस्थितठे, सर्व रत्नमयठे, निर्मलठे, यावत् प्रतिरूपठे, एवा महोटा नागदंता हाथीनां दांत समानठे, ते नागदंताने विषे घणा कृष्णसूत्रें बांधी तेमज नीले सूत्रें, लालसूत्रें, पीलेसूत्रें, यावत् स्वेतसूत्रें बांधी एवी लंबायमान फूलनी मालानां समूह वलगाड्याठे, ते

मांलाउने सोनानां फूमकाठे, सोनानी पानडीये मंजितठे, नाना मणिरत्न विविध प्रकारना हार अने अर्द्धहार तेणे करी सहीतठे, यावत शोचाये अत्यंत शोचता थका रहेठे.

ते नागदंता उपरे बीजा बे नागदंताठे ते मोतीनी मालाये करी शोचितठे तेनो वर्णन पूर्वपरे जाणवो, ते नागदंताने विषे घणा रत्नमय शीकाठे, ते शीकाने विषे घणी वैडुर्यरत्नमय धूपघटीठे, ते धूपघटी कृष्णागर, कुंदरुक तेने धूपेकरीने घम घमाय मान गंधने उत्कृष्ट पणे करी मनोहर ठे, सुगंध गंधे करी गंधवंत ठे, गंधनी वाती रूप उदार मनने गमती मनोहर नासिका अने मनने सुख उपजावे एवी गंधे करी ते प्रदेश प्रत्ये सर्व दिसे चोफेर पूरती थकी अत्यंत शोचती थकी यावत् रहेठे.

ते विजयनामे द्वारने बे पासे बे चोतराने विषे बेठकने विषे बे बे पूतली कही ठे, पूतली ललितांग लीलावंत लीलाये सहित रूडे प्रकारे थापीठे, जळे अलंकारे अलंकृतठे, ते पूतलीने नवनवा आकारनां वस्त्रठे, नवनवा प्रकारनी फूलनी माला कंठे पेहेरीठे, जेनो कटी प्रदेश मुष्टीये ग्राह्यठे, जेना शिखर सरिखा युगल वृत्ताकारे उंचा पुष्ट मांसे युक्त एवा पयोधरठे, नेत्रनां खूणा राताठे, केश कालाठे, कोमल निर्मल जला लक्षण सहित प्रशस्त संवस्थोठे ठेको जेनो एवा मस्तकनां केशठे, किंचित् अशां कवृद्धने आश्रितठे शरीर जेनो, नावे हाथे ग्रहीठे अशोकवृद्धनी शाखा जेणे, किंचित् अर्द्ध कटाक्ष तेनी चेष्टाये करी देवता प्रमुखने लूसती थकी, चक्षुने विलोकवे करी माहोमांहे जाणीये खिसना करती थकी एवी ते पूतली पृथ्वीकायमयठे, शाश्वतेचावे ठे, तेनुं चंद्रमा समान मुखठे, चंद्रमा सरखो मनोहर विलासठे, अर्द्धचंद्रमा समान निह्वारठे, चंद्रथकी अधिक सोम्यदर्शनठे, उटकापातनी पेरे उद्योत करतीठे, मेघनी बीजली थकी सूर्य देदीप्यमान ठे तेशी पण देदीप्यमान अधिकतर प्रकाश वालीठे. शोल श्रृंगारने आकार तेणे करी मनोहर वेष ठे, जोवा योग्य ठे, यावत् प्रतिरूपठे, ते पूतली तेजे करी अत्यंत अत्यंत शोचती थकी रहेठे.

ते विजयनामा द्वारने बे पासे बे उंटलाने विषे बे बे जालीना कटक समूहठे, ते जाल कटक सर्व रत्नमयठे, यावत् प्रतिरूपठे, तथा ते द्वारने बे पासेना बे उंटलाने विषे बे बे घंटा कहीठे ते जंबूनंद रत्ननीठे, वज्र रत्नमय लालठे, नाना मणिमय घंटाना पासाठे, सुवर्णमय सांकलठे, रूपामय रासडीठे, ते घंटानो उघस्वरठे, मेघनां सरिखो स्वरठे, हंसनां सरिखो स्वरठे, कौंचनां सरिखो स्वरठे, तथा बार वाजानां समूहनो स्वर तेने नंदीस्वर कहीये तेना सरखो स्वरठे अने तेना सरखो घोषठे, सिंहना सरखो स्वरठे, सिंहनां सरखो घोषठे, मीठो स्वरठे, मीठो घोषठे, जलो स्वरठे, जला स्वरनो घोषठे, ते स्थानकनां प्रदेश उदारठे, मनोह्र स्वरठे, कान अने मन तेने सुखनो करनार एवे शब्दे यावत् रहेठे.

विजय द्वारने बे पासे बे उंटले बे बे वनमाला कहीठे. जेमां पत्र, पुष्प, फल, अंकूरा अने साखा एकठा गुंथ्यां होय तेने वनमाला कहीये ते वनमाला नाना प्रकारनां फूल, लता, टिसी, अंकूरा तेणे करी सहीतठे, जमरा प्रमुख जीवे जोगवती थकी सोजाय मान मनोहरठे, जोवा योग्यठे, प्रतिरूपठे, ते प्रदेशे गंधे करी पूरती थकी यावत् रहेठे,

ते विजयद्वारने बे पासे उंटलाने विषे वली बे बे चोखूणा उंटलाठे ते चार योजन लांबा अने पोहोलाठे, बे योजन जाऊ पणेठे, सर्व वज्र रत्नमय निर्मलठे यावत् प्रतिरूप ठे ते उंटला उपरे प्रत्येके प्रत्येके प्रासादावतंसक ठे, ते चार योजन उंचपणेठे तथा बे यो जन लांब पणे अने पहोल पणेठे, ते प्रासादावतंसक सन्मुख नीकली सर्व दिसे प्रसार पामेदी एवी प्रजा तेणे करी जाणीये कांती खीलाती रहेती नथी? एवाठे, विविध विविध प्रकारनां मणिरत्ननी जांते करी विचित्रठे, विजय अने विजयंति ध्वजा वायरे करी कंपि तठे, ढत्र अने ते उपर ढत्र तेणे करी सहीतठे, ते प्रासादनां शिखर अत्यंत उंचाठे, आ काश तलने उलंघे ठे, ते जुवननी जींते जालीठे, तेनी शोजाने अर्थे रत्न जड्यांठे, करं कीयामां जडीत रत्न राख्या होय ते जेवा शोजे तेवा ते रत्न शोजेठे, मणी अने सुवर्णनां शिखरठे, विकश्वर शतपत्र तथा पौंरुकीक कमल तथा तिलक वृद्ध प्रमुख रत्नमय तथा अर्द्धचंद्र इत्यादिकनां स्वरूप द्वारने विषे ठे, नाना प्रकारनी मणिमय माला तेणे करी ते प्रासादनुं द्वार शोजितठे, ते प्रासाद मांहे अने बाहेर सुकमालठे, तेमां सुवर्णनी वेडु पाथरीठे, तेनो सुखकारी फरसठे, सश्रीक मनोहररूपठे, जोवा योग्य, यावत् प्रतिरूपठे.

ते प्रत्येके प्रत्येके प्रासादावतंसकने मध्ये घणुंक सम मनोहर चूमि जागठे, ते जेम मुरज नामा ढोलनो तलो ते समानठे, यावत् मणिये करी उपशोजितठे, मणिनो गंध वर्ण फरस पूर्वली परे जाणवो, तेमध्ये चंद्रोदय अने पद्मलता प्रमुखठे, यावत् सामलि का नामे वनस्पति प्रमुखनां चित्रामणठे, ते सर्व सुवर्णमयठे, निर्मलठे, यावत् प्रतिरूपठे.

ते सम मनोहर चूमिजागनां मध्यदेश जागने विषे प्रत्येके प्रत्येके मणिमय पिठिका चोतरा रूपठे, ते एक योजन लांब पणे अने पोहोल पणेठे, अर्द्ध योजन जाऊ पणे, सर्व रत्नमयठे, यावत् प्रतिरूपठे.

ते मणिपीठिकानी उपर प्रत्येके प्रत्येके सिंहासन ठे ते सिंहासननां पगथालियानां अधःप्रदेश सुवर्णमय, रूपामय सिंहासनठे, सुवर्णमय पगथालीयाठे, नवनवा रत्नमय पादपीठठे, जंबुनंद रत्नमय गात्रठे, वज्र रत्नमय संधि पूरितठे, नवनवा रत्नमय सिंहासननुं त लीउंठे, ते सिंहासन हस्ति, मृग, वृषजादिनां चित्रामणे युक्तठे, मणिरत्नमय पादपीठठे, तेनां उपर कोमल मसरुनुं नूतन सीतल स्पर्शे सहीत सिंहनी केसरा समान एवुं

वस्त्र ढांक्युंढे तथा जला उंढान रूप राते वस्त्रें करी पाद पीठ ढांक्याढे, तेनो मृग-चर्म, रू, पर, माखण अने अर्क समान कोमल फरसढे.

तथा ते सिंहासन उपरे प्रत्येके प्रत्येके विजयद्रुष्य चंडुवाढे, ते चंडुवा संख, मच कुंद. पाणीनां फूसारा, अमृत, समुद्रना फेण सरखा स्वेतवर्णेढे, ते सर्वे वस्त्र रत्नमयढे तथा ते विजयद्रुष्यने मध्यदेश जागे प्रत्येके प्रत्येके वज्र रत्नमय अंकूस रूपढे, ते अंकूसने विषे कुंज समान मोतीनी मालाढे, ते माला पासे वढी तेथकी अर्क स्वरूपे कुंज समान मोतीनी मालाये करी सर्व दिसे चोक फेर परिवरीढे, ते मालाने सोनानां फूसकाढे, सुवर्णने प्रकारे शोजितढे, ते प्रासादावतंसक उपरे घणा आठ आठ मंगलीकढे, तथा द्वारने बे पासे बे उंढले बे बे तोरणढे, ते तोरण आगल बे बे पुतलीढे, तथा बे बे नागदंता ढे, ते नागदंताने मोतीनी माला लगानीढे, तेम ते नागदंताने विषे घणीज कृष्णसूत्रें बंध फूलनी मालानां समूह यावत् रहेढे, तथा ते तोरणने आगल घोमाने आकारे बे बे युग्मढे, तथा वावीनी पंक्ति, मैथुन ते स्त्रीसहीतरूप, बे बे पद्मलता ढे. तथा अक्षत स्वस्तिकढे, तथा उत्तम कमल उपर चंदने चर्चित कलश थाप्याढे, तथा बे बे जंगार कमल उपर थाप्याढे, तेनां मत्तहाथीनां मुख समान आकार ढे.

ते तोरणने आगले बे आरीसाढे, ते आरीसानो घर सुवर्णमयढे, वैदूर्य रत्नमय आरीसा जालवानी मूंठीढे, वज्र रत्नमय हाथोढे, अनेक मणिमय शंखलाये वेष्टित शोजितढे, अंकरत्नमय खाप एटले रूप जोवानुं ठामढे, तेनी ढायाये करी सर्व देखाय, अनुबंध सहीत ढे, चंद्रमंरुल सरखा ढे, मोटा अर्ककाय समान ढे.

ते तोरणनी आगल वज्रनी नाजी समान थालढे, ते थाल स्फटिक समान त्रण्य वार ढड्या शाली मध्यनां तंडुल मूसले करी खांड्या एवा तंडुले करी जस्या थका रहेढे, ते चोखा अने थाल सर्वे जंबूनंद रत्न मयढे. मोहोटा मोहोटा रथनां पद्म समान ते थाल ढे. ते तोरणनी आगल बे बे पात्रीढे, ते निर्मल पाणीये करी प्रतिपूरणढे, अनेक प्रकारना पंचवर्ण फूलेकरी प्रतिपूर्ण समानढे, तथा बे बे सुप्रतिष्ठक जाजन विशेषढे. ते अनेक प्रकारनां पूजाना उपकरणे करी जस्याढे, सर्व उंषधीये प्रतिपूर्णढे. तथा बे बे मनोगुलिका पीठिकाढे, तेने घणा सोनामय रूपामय पाटीयाढे, ते पाटीयाने विषे घणा वज्रमय नागदंताढे, ते नागदंताने विषे घणा रूपामय शीकाढे. ते तोरणनी आगल बे बे आश्चर्यकारी रत्ननां करंढीयाढे, तथा बे बे ह्यकंढे, यावत् बे बे वृषजने आकारे तोडला ढे, इत्यादिक घणा पदार्थो ढे. तेनुं विशेषे वर्णन जीवाजिगमथी जोड लेवो.

विजय द्वारने विषे चक्र, मृग, गरुड, बगला, पीठ, ढत्र, शकुनी पंखी, सिंह, बलद,

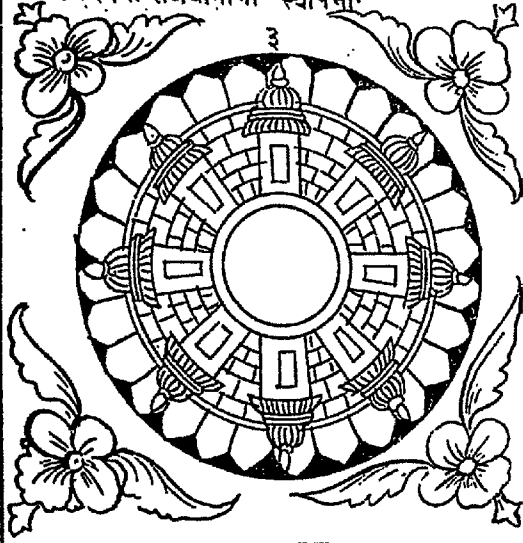
जगतीनी स्थापना तथा विजयादि चार
दरवाजांनी स्थापना.



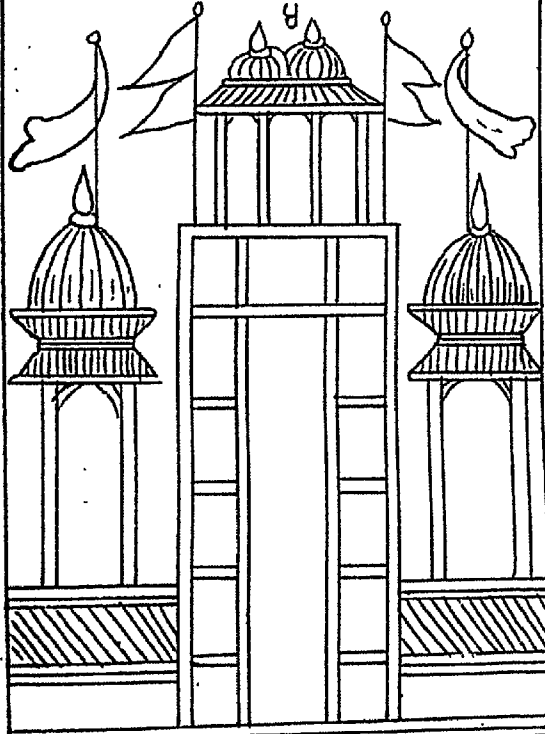
जंबुद्वीपना विजयछारनी पांचमी भूमिनी स्थापना
तथा देवोनी स्थापना.



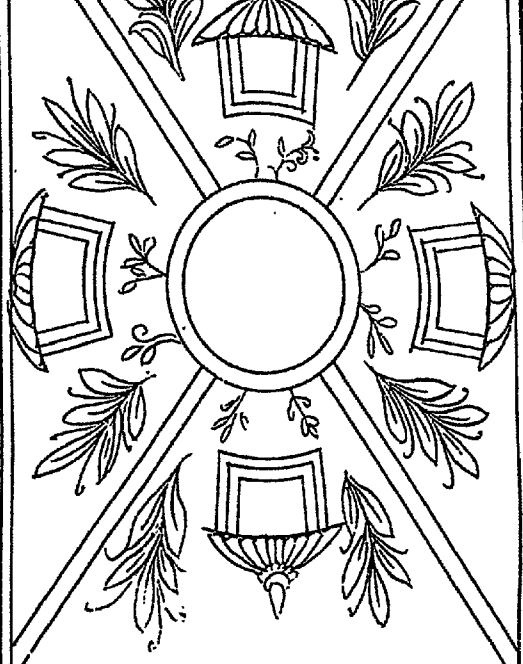
विजयदेवनी राजधानीनी स्थापना



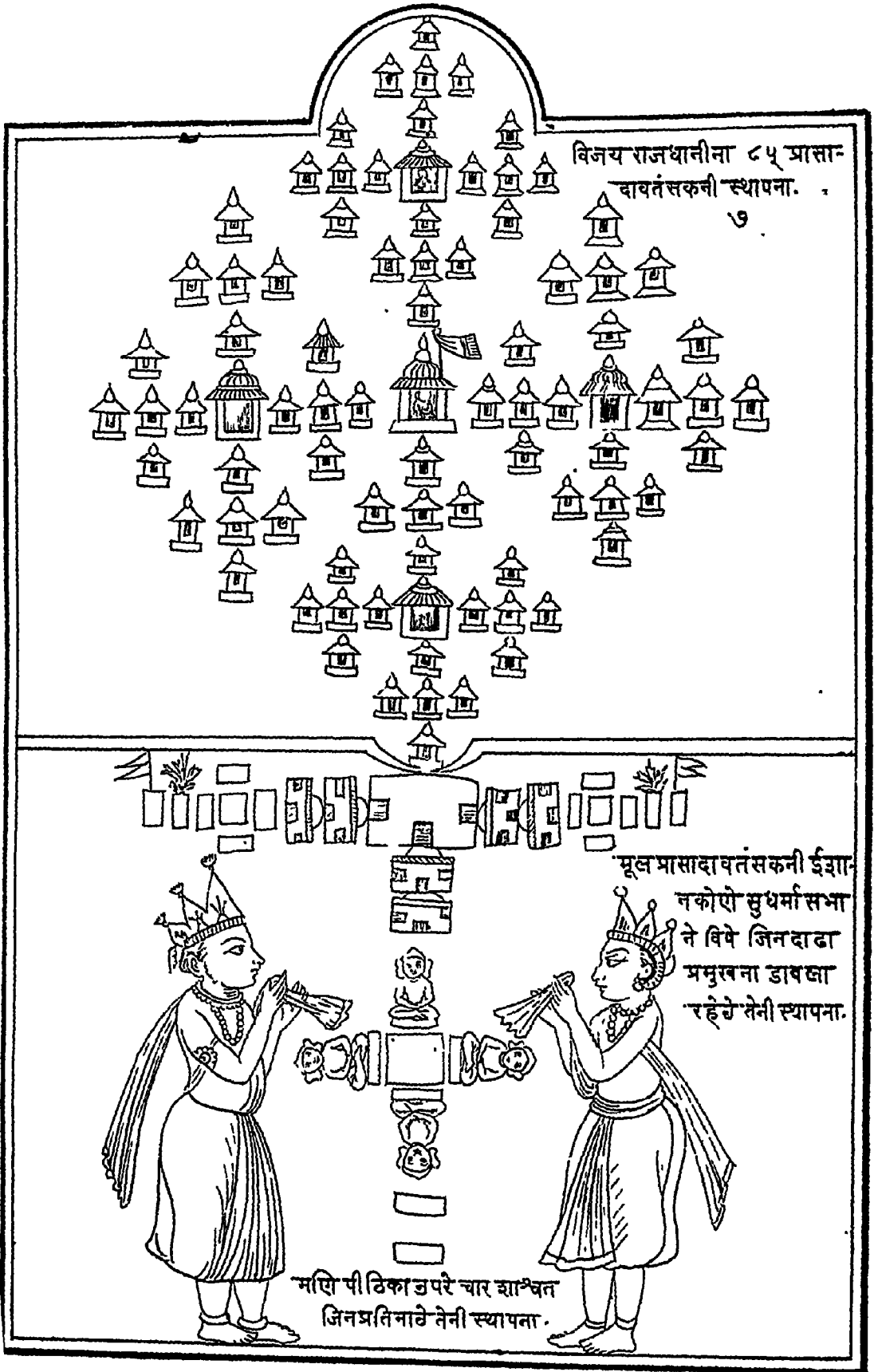
विजयराजधानीना द्वारनी स्थापना



विजय राजधानीनी चारे दिशाना चार वनखंड अन्ने चार
भासा दापुतसकनी
स्थापना ५



वनखंडमना भासादावतंसकना मध्य भागने विषे अश्रीकादिवनखंड
ने नामे बसवारा देवोना भद्रासन छे तेनी स्थापना



विजय राजधानीना ८५ प्रासादावतंसकनी स्थापना.

७

मूल प्रासादावतंसकनी ईशा-
नकोणो सुधर्मासभा
ने विषे जिनदादा
प्रमुखना डाबळा
रहेणे तेनी स्थापना.

मणि पीठिकाउपरे चार शाश्वत
जिनप्रतिनाणे तेनी स्थापना.

१०

१० भाषाचक्रनामा चैत्यर्थम्

मणिपीठिका.

सिंहासन.

मणिपीठिका

लघुपहेल ध्वज.

सुधर्मासभायै फूलमाला, शीका, नागदंतानी स्थापना.

११

पुस्तकसभा.

श्रीभूपकसभा

अलंकारसभा

पुष्करणीवाद्य

सिधायतन.

१२

विजयादिहरना आंतानी स्थापना

१३

सामान्य जंबू दीपनी स्थापना.

स्वेत चउदंता हस्ति ए दस मोहेलां एकेकना चिन्हे करी युक्त एकशो ने आठ आठ ध्वजाउं ठे, तेवारे ए दशेना चिन्हे युक्त सर्वमल्ली १००० ध्वजाउं विजयद्वारे ठे.

विजय द्वारनी नव चूमिठे. ते मध्यमा पांचमी चूमिने विषे एक मोहोदुं सिंहासन ठे, ते सिंहासननी वाव्यकूणें अने उत्तरदिसे तथा इशानकूणें विजय देवतानां चार ह्जार सामानिक देव तेना चार हजार जद्रासनठे, ते सिंहासननी पूर्वदिसे विजय देवतानी चार अग्रमहीषीना परिवार सहित चार जद्रासनठे, तथा अग्निंकूणें विजय देवतानी अर्ज्यंतर परखदानां आठ हजार देवता तेनां आठ हजार जद्रासनठे, तथा दक्षिणदिसे विजयदेवतानी मध्य परखदानां दशहजार देवतानां दशहजार जद्रासनठे, तथा नैरुतकूणें विजयदेवतानी बाहेरली परखदानां चारहजार देवतानां चारहजार जद्रासन ठे, ते मूल सिंहासनथी पश्चिमदिसे विजयदेवतानां सात कटकनां धणीना सात जद्रासनठे, तथा सिंहासननी पूर्वादिक चार दिसाये प्रत्येके चार चार हजार जद्रासन ठे. तेविजयदेवताना आत्मरक्षक देवो शोल हजारठे, तेना चारेदिसिये मल्ली शोल हजार जद्रासनठे, अवशेष आठ चूमिने विषे प्रत्येके प्रत्येके जद्रासन कह्या ठे ते सामानिकादिक देवो योग्य सिंहासन परिवार रहित कह्याठे.

तथा उपरला पोल उपरे शोल प्रकारनां रत्ने करी शोजितठे, तथा घणा आठ आठ मंगलीकठे, तथा उपरे घणा कृष्ण चामर ध्वजा ठे, सर्व रत्नमयठे. तेमज घणा ठत्राति ठत्र प्रमुख पूर्वपरे जाणवा. ए विजयनामे द्वारे विजयनामे देवता महर्किक, महाकांति नो धणी, महाअनुजावनो धणी, एकपट्योपमने आउखे वसेठे, तेना चार हजार सामानिक देवता, चार अग्रमहीषी परिवार सहित, त्रण परखदानां देवो, सात कटकनां धणी, शोल हजार आत्मरक्षक देवता प्रमुख बीजा पण घणा विजया राजधानीनां रहेनारा देवता अने देवांगना प्रमुख ठाकुर पण देवता संबंधीया जोग जोगवता थका विचरे ठे तेथी ए विजय द्वारनुं विजय एतुं शाश्वतुं नामठे.

हवे ए विजयनामा द्वारनां विजयनामे देवतानी विजया नामे राजध्यानी ते एज विजय द्वारने पूर्व दिशाये तिर्हा असंख्याता छीप अने समुद्र मूकी जश्ये तिहां बीजो जंबूछीपनामे छीप आवेठे तेमध्ये चार हजार योजन अवगाही जश्ये तिहां ए विजय देवतानी विजया नामे राजधानीठे.

ते विजयानामे राजधानी चार हजार योजन लांवपणें तथा पहोलपणें अने (३९०००) योजन कांश्क विशेषाधिक एटली तेनी परिधि फरतीठे. ते राजधानी एक प्राकारे एटले गढे करी सर्व दिसे चोक फेर वींटीठे, ते गढ साडा सारुत्रीश योजन उंचोठे, मूलमां शारुवार योजन पाइये पहोलोठे, मध्यमां सवा ठ योजन पहोलपणें ठे तथा

उपर त्रण योजन अने अर्द्धगाळ पोहोळ पणेढे एटवे मूलमां विस्तार पणेढे, मध्ये सांकडोढे, उपर पातलोढे, बाहेरे गोलढे, मध्ये चोखूणोढे, गायना पूंढने संस्थाने सं स्थितढे, सर्व सुवर्णमयढे, निर्मलढे, यावत् प्रतिरूपढे, ते गढ नाना प्रकारनां पंचवर्णा कोसीसाये करी शोजितढे, ते कोसीसा अर्द्धगाळ लांबपणे ढे, पांचसे धनुष पहोळ पणे ढे, देसोन अर्द्धकोश उंचपणे ढे.

विजया राजधानीने एकेकी दिसिये सवासो सवासो बारणाढे, एम चारे दिसिनां मळी पांचसे दरवाजाढे. ते प्रत्येक दरवाजो साडीबासठ योजन उंच पणेढे, सवाएकत्रीश योजन पहोळपणेढे, सवाएकत्रीश योजन प्रवेशढे, स्वेतढे, उत्तम सुवर्णमय शिखर श्रुजिकाढे, तिहां हाथी मृग इत्यादि चित्रामणनो अधिकारसर्व विजय द्वारनीपरे जाणवो.

तथा एकेक द्वारे सत्तर चूमिढे ते चंडुआ तथा पद्मलता प्रमुख चित्रामणे करी युक्तढे, तथा तेने विषे सिंहासन कव्हाढे इत्यादिक तथा बे पासेना बे उंटला तथा बे बे चो खूणा उंटला तथा प्रासादावतंसक इत्यादिक वातो सर्व जीवाजिगम सूत्रथी जोवी.

विजया राजधानीने पूर्वादि चार दिसाये चार वनखंरुढे ते आवी रीतेः—पूर्व दिशाये आशोपालव अशोकवनढे, दक्षिणदिसे सडसडो सप्तवर्ण वनढे, पश्चिमदिसे चंपक वनढे, अने उत्तरदिसे आम्रवनढे, ते वनखंरु कांश्क ङाफेरा बार हजार योजन लांब पणे ढे, पांचसे योजन पोहोळ पणेढे, प्रत्येके प्रत्येके गढे करी सहीतढे, एनी कृष्णशोचाढे ए म यावत् तिहां घणा व्यंतरिक देव देवांगनाळ विसामो करेढे इत्यादि सर्व पूर्वपरे कहेवुं तथा चार वनमां चार प्रासादावतंसक ढे तेमां तेवेज नामे चार देवता परिवार सहीत रहेढे तेमज माहेळी चूमिनो वर्णन इत्यादि अधिकार सर्व जीवाजिगमसूत्रथी जाणवुं.

विजया राजधानीनां मध्य देशजागने विषे एक पडथार रूप चोतरोढे. ते बारसो योजन लांबपणे अने पहोळ पणेढे, ३७९५ योजन कांश्क विशेषाधिक फरतोढे, अर्द्धकोश जाडपणेढे, सर्व जंबूनंद रत्नमयढे, ते चोतरो एक पद्मवरवेदिका अने वन खंरु तेणेकरी सर्व दिसे चोकफेर वींटांणोढे, पद्मवरवेदिकानो वर्णन अने वनखंरुनो वर्णन पूर्वपरे जाणवो. ते वनखंरु देसोन बे योजन फरतुं परिधिये पहोळुंढे. चोतरां समान फरतुंढे. ते चोतराने चारदिसे चार पगथालीयाढे, पगथालीयाने आगळे प्र त्येके प्रत्येके तोरण ढे, ठत्रातिठत्र ढे.

ते चोतराना मध्यजागने विषे एक मूल प्रासादावतंसकढे, ते सामाबाशठ योजन उंचोढे, अने सवाएकत्रीश योजन लांबो तथा पहोळोढे, तेना मध्यजागने विषे वळी एक मणिमय पीठिका चोतरोढे, ते मणिपीठिका एक योजन लांबी पहोळीढे, अर्द्ध यो जन जाड पणेढे, तेनी उपर एक महोडुं सिंहासनढे, ते सिंहासननो वर्णन सर्व परि

वार सहीत जाणवो. ते मूल प्रासादावतंसक वली बीजा चार प्रासादावतंसके सर्व दिसे चोफेर व्यासठे. ते चार प्रासाद सवा एकत्रीश योजन उंचपणे ठे, तथा साडा पंदर योजन अने अर्द्धगाज लांबा अने पहोला ठे, ते एकेको प्रासादावतंसक वली बीजा चार चार प्रासादावतंसके सर्व दिसे चोफेर व्यासठे. ते प्रासाद साडापंदर योजन अने अर्द्धगाज उंचपणे ठे, तथा पोणा आठ योजन अने पा गाज लांबा पहोला ठे. वली ते प्रत्येक प्रासादावतंसक वली बीजा चार चार प्रासादावतंसके सर्व दिसे व्यासठे. ते प्रासाद पोणा आठ योजन उपर पा गाज उंचा ठे, अने साडासातसे धनुषे उंणा चार योजन लांबा अने पहोला ठे, ए सर्व मली ८५ प्रासाद थाय ते आवी रीते. एकतो मध्य प्रासाद, तेने चार दिसाये चार प्रासाद ते एकेकानी पठवाडे वली चार चार प्रासाद अने वली ते एकेकानी पाठल चार चार प्रासाद एवं ८५ थाय; एनुं पांचमा आं कनुं चित्र आ पुस्तकनां त्रीजा पृष्ठमांठे ते जोवुं.

हवे ते मूल प्रासादावतंसक अकी ईशान कोणे विजय देवतानी सुधर्मा नामे सजा ठे, ते साडा बार योजन लांबी, सवा ठ योजन पहोली, अने नव योजन उंचपणे ठे, अनेक थांजाना शङ्कना तेणे करी सहीतठे, उंचा थंज उपरे वज्र रत्नमय उपरली कुंजरी ठे. तिहां प्रधान रचित तोरण अने पुतली ठे, मनोज्ञ संस्थाने संस्थित ठे, वैदूर्य रत्नमय थंजठे, नव नवा प्रकारनां रत्न सुवर्ण मणि प्रमुखे सहीत निर्मल विस्तार पणे अत्यंत समनिविरु आश्चर्यकारी मनोहर धरती तलठे, हाथी, मृग, वृषज, अश्व, मनुष्य, मगरमत्स, पंखी, सर्प, किन्नरदेव, गेंगो, चमरिगाय, वनहस्ति, वनलता, विद्याधरना युगल, पद्मलता प्रमुखनां चित्रामणठे, सूर्यना सहस्र किरणशी पण अधिक तेजठे, पंचवर्णा घंट अने ध्वजाये करी शोजितठे, चंद्रुआ तथा तोरणे करी सहीतठे, बावनां चंदन रस सहीत नीलुं रक्तवर्णे तेना ठामे ठामे हांथा दीधाठे, स्थानके स्थानके बावना चंदनना कलश मूक्याठे, फूलनी मालानां समुदाय, पंचवर्णा रस सहीत सुगंधि फूल तेना ठाम ठामने विषे पूंजठे, कृष्णागर कुंदरुक प्रमुखनो धूप तेने मघ मघाटे करी मनोहर गंधठे, अपसराना समुदाये करी ते सजा संकीर्णठे, देवतानां वाजित्र जे मृदंगादिक तेना स्वरे सहीतठे, तेना त्रण दिसिये त्रण द्वारठे, ते द्वार प्रत्येके वे वे योजन उंच पणे ठे अने एक योजन पहोल पणे ठे, तेद्वोज प्रवेश ठे एटले चींतनुं जामपणुं जाणवुं. ते प्रासादनी उपर स्वेत उत्तम सुवर्णनां शिखरठे, यावत् वनमाला पर्यंत द्वारनुं वर्णन पूर्वपरे जाणवुं.

ते द्वारने आगल प्रत्येके प्रत्येके मुखमंरुपठे, ते सामाबार योजन लांब पणे अने सवा ठ योजन पहोल पणे ठे, कांश्क जाजेरा वे योजन उंचपणे ठे, ते मंडप अनेक थंजे

केरी सहीतवे, तिहां चंद्रोदय अने चूचिजागनी वर्णन पूर्वपरे जाणवुं, ते प्रत्येक मुख मंरुप उपर आठ आठ मांगलिक ठे.

ते मुखमंडप आगले प्रत्येके प्रत्येके प्रेक्षाघर मांडवाठे, ते पण तेटलाज लांबा प होलाठे. ते प्रेक्षाघरना मध्यजागने विषे प्रत्येके चोखूणा वज्र रत्नमय चोतराठे, ते चो तराना मध्यजागे मणिपीठिकाठे, ते एक योजन लांबी पोहोली अने अर्द्ध योजन जाडीठे ते प्रत्येक मणिपीठिका उपरे एकेक सिंहासन ठे.

तथा ते प्रेक्षाघर मंडप आगले त्रण दिसे त्रण मणिपीठिका कहीठे, ते बे योजन लांबी पोहोली अने एक योजन जाऊपणे ठे, ते प्रत्येक मणिपीठिका उपरे चैत्यथूचठे ते चैत्यथूचने आगले त्रण दिसिये प्रत्येके मणिपीठिका ठे, ते प्रत्येक मणिपीठिका उपर चैत्यवृद्ध ठे, हवे ते चैत्यवृद्धने आगले जे त्रण दिसे त्रण मणिपीठिकाठे ते प्रत्येक कना उपरे महेंद्रध्वजठे, ते हजारो गमे न्हानी ध्वजाउण करी सहीतठे, तेना उपरे आठ आठ मंगलीकठे, एनुं चित्र ठछा आंकनुं त्रीजा पृष्ठमां जोवुं.

ते महेंद्रध्वजने आगले त्रण दिसायें त्रण नंदापुष्करणी ठे, ते साडाबार योजन लांबी अने सवा ठ योजन पडोलीठे, दस योजन उंचीठे, ते पुष्करणी प्रत्येके प्रत्येके पद्मवर वे दिकायेकरी तथा वनखंडे करी सहीतठे, ते प्रत्येक पुष्करणीने त्रण दिसे त्रण पगधालीयाठे.

सुधर्मासत्राये ठ हजार मनोहर चोखूणा उंटला ठे, तेमां पूर्वदिसे बे हजार पश्चिमदिसे बे हजार, दक्षिणदिसे एक हजार अने उत्तरदिसे एक हजार ठे, ते उंटलाने विषे घणा सुवर्णमय अने रूपामय पाटीयां ठे, ते पाटीयांने विषे घणावज्रमय नागदंताठे, ते नागदंताने विषे घणा कृष्णादि पांच जातना सूत्रे बरू एवी फूलनी मालाना समुदाय ठे, ते मालाना सुवर्णना फूमका ठे.

सुधर्मासत्राये ठ हजार गोमानशीका सय्यारूप स्थानक लांबा उंटलाठे, तेमां पूर्व दिसे बे हजार, पश्चिमदिसे बे हजार, दक्षिणदिसे एक हजार, अने उत्तरदिसे एक हजार. ते गोमानसीकाने विषे घणा सुवर्ण अने रूपामय पाटीया ठे. यावत् वज्र रत्नमय नागदंताने विषे घणा रजतमय शीकाठे, ते शीकाने विषे घणी वैदूर्यरत्नमय धूप घटीठे, ते कृष्णागरु, कुंदरुक, लोबान प्रमुखे करी सहीत ठे.

ते सुधर्मासत्राना मध्यने विषे एक महोटी मणिपीठिका ठे. ते बे योजन लांबी अने पडोलीठे, तथा एक योजन जाड पणेठे तेनी उपर मानवक नामे चैत्यथंचठे, ते सामासात योजन उंचो अने अर्द्धकोश चूमिमां उंचोठे, अर्द्धकोश विष्कंज पणेठे, ठ हांसठे, ठ संधीठे, ठ स्थानके शोजितठे, ते माणवकथंच उपरे दोढ योजन जश्ये अने हेठे दोढ योजन मूकीये तिहां मध्ये साडाचार योजनमां घणा सुवर्ण अने रूपामय

पाटीयांठे, तिहां घणा वज्र रत्नमय नागदंताठे, ते नागदंताने विषे रूपामय शीकाठे, ते शीकाने विषे वज्रमय गोल वृत्ताकारे दाबडाठे ते दाबमाने विषे घणा तीर्थकरनी दाढाठे तेणेकरी सहीत थका रहेठे, ते दाढा विजयदेवताने अने बीजा पण घणा व्यंतरिक देव अने देवांगनाने अर्चवा योग्यठे, वांदवा योग्यठे, चंदनादिके पूजवा योग्यठे, वस्त्रादिके सत्कार करवा योग्यठे, सन्मान एटले बहुमान करवा योग्यठे, कल्याण कारी, मंगलकारी देव संबंधी चैत्यनी परे सेवा करवा योग्यठे, देवता ते दाढा नी सेवा केवल मुक्तिना निमित्तें करे ठे.

ते माणवक नामा चैत्यशंजनी पूर्वदिसे एक महोटी मणिपीठिकाठे, ते बे योजन लांबी अने पोहोलीठे, एक योजन जाड पणे ठे, तेनी उपर एक महोदुं सिंहासन ठे.

माणवक चैत्यशंजनी पश्चिम दिसे एक महोटी मणिपीठिकाठे, ते एक योजन लांबी अने पोहोलीठे, अर्द्धयोजन जाड पणेठे, तेनी उपर एक महोटी देव शय्याठे, ते देव शय्याने ईशानकृणे एक महोटी मणिपीठिका ठे, ते एक योजन लांबी पोहोली ठे, अने अर्द्ध योजन जाड पणेठे, तेउपर एक पूर्वला महेंद्रध्वजनी अपेहाये नाहानो एवो महेंद्रध्वजठे, ते शामासातयोजन उंचोठे अने अर्द्धकोश पोहोल पणेठे, ते लघु महेंद्र ध्वजने पश्चिमदिसे विजयदेवतानो चोप्याल नामे हथीयारनो जंमार ठे.

ते सुधर्मा सजा थकी इशान कृणे एक महोदुं सिद्धायतनठे ते सिद्धनुं देहरुं शामा वार योजन लांब पणेठे, अने सवाठ योजन पोहोल पणेठे, नव योजन उंच पणेठे, तेना मध्यजागे एक महोटी मणिपीठिकाठे, ते बे योजन लांबी पोहोलीठे अने एक योजन जाड पणेठे, ते पीठिका उपरे एक महोटो देवठंदो एटले गंजारोठे, ते बे यो जन लांबो पोहोलो अने एक योजन उंच पणे ठे, ते गंजाराने विषे तीर्थकरनी एक शोने आठ प्रतिमाठे, ते उंचपणे तीर्थकरनी काया प्रमाणेठे एटले लघु सात हाथ प्र माण अने उत्कृष्ट पांचशे धनुष प्रमाणे शरीर वाली एवी प्रतिमा थापी रहेठे ते ज गवंतनी प्रतिमाने पूंठे प्रत्येके प्रत्येके उत्र धारकनी प्रतिमा कहीठे ते लीला सहीत उत्र धरती थकी रहेठे तथा ते जिनप्रतिमाने बे पासे प्रत्येके प्रत्येके बे चामर धारकनी प्रतिमाठे ते चामरने लीला सहीत वीजती थकी रहेठे तथा ते प्रत्येक प्रतिमाने आ गळे बे बे नागदेवतानी प्रतिमा, बे बे यक्षदेवतानी प्रतिमा, बे बे शूत देवतानी प्रति मा, बे बे कुरुधार देवविशेषनी प्रतिमा एवी आठ प्रतिमा ते विनये करी नमती पगे लागती थकी हाथ जोरती थकी एवीथकी रहेठे ते प्रतिमा सर्व रत्नमयठे ते जिनप्रति माने आगळे १०८ घंटठे, १०८ चंदने चर्चित कलशठे, १०८ जंगार, १०८ आरीसा, १०८ थाल. १०८ पात्री, १०८ सुप्रतिष्ठक जाजन विशेष, १०८ मनोगुप्तिका पीठ विशेष

ष, १०८ वात करंडक भृंगार विशेष, १०८ मनोहर रत्न करंरुक, १०८ हयकंठके जाजन, यावत् १०८ वृषज कंठक जाजन विशेष, १०८ फूलनी चंगेरी, यावत् १०८ पूंजणीनी चंगेरी, १०८ यावत् फूलना समूह, १०८ सुगंधि तेलना डाबना, १०८ धूपकमुढा इत्यादिक पूजानां उपकरण थाप्या थका रहेते, ते सिद्धायतन उपर घणा आठ आठ मंगलीक ते, ठत्रातिठत्र ते, ते सिद्धायतननां शिखर शोल प्रकारनां रत्ने करी शोजित ते.

ते सिद्धायतनने इशानकूणे एक महोटी उपपात सजा कहीते ते विजय देवताने उपजवानुं स्थानकते, ते जेवी सौधर्मा सजा कही तेवीज ए सजा पण जाणवी.

ते उपपात सजाने इशानकूणे एक महोटी डहते ते सामाबार योजन लांबपणे ते, सवाठ योजन पोहोल पणे ते, दश योजन उंमो ते ते डह पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे सहीत ते, ते जेवो नंदा पुष्करणीनो वर्णन सूत्रांमां कहीते तेवोज शोचा आश्रयी एतुं पण वर्णन जाणवुं ते डहने इशानकूणे एक महोटी अजिषेक सजा कही ते, ते जेवी सौधर्मा सजा कही तेवी जाणवी तेना मध्यजागे एक महोटी मणिपीठिका ते, ते एक योजन लांबी पोहोली अने अर्द्ध योजन जाऊ पणेते, ते मणिपीठिका उपरे एक मोहोटी सिंहासनते, तेने विषे विजय देवताना अजिषेक करवानां जाऊ थाप्या थका रहेते.

ते अजिषेक सजाने इशानकूणे एक महोटी अलंकार सजा कहीते ते अजिषेक सजा सरखी जाणवी. तिहां विजय देवता आचुषण पहेरे ते जिहां विजय देवतानां घणा उत्तम आचुषणनां ठाम आचुषणे जह्या थकां तिहां थाप्यां थकां रहेते.

ते अलंकार सजाने इशानकूणे एक महोटी व्यवसाय सजाते, जिहां विजय देवता पुस्तकरत्न वांचेते ते व्यवसाय सजा अलंकार सजा सरखी जाणवी. तिहां विजय देवतानुं पुस्तकरत्न थाप्युं थकुं रहेते, ते पुस्तकरत्ननां अरिष्टरत्नमय पाठां ते, रूपामय पानाते, अरिष्टरत्नमय अक्षरते, राता सुवर्णमय दोरा ते जेणे करी पुस्तक परोश्ये. तथा नवनवी मणिमय गांठिते, गांठे पानुं नीकले नही, वैडूर्यरत्नमय स्याहीनो खनीउंते ते खडी याने राता सुवर्णनी शांकलते, ते खडीयानुं अरिष्टमय ढांकणुते, ते खनीया मध्ये अरिष्टरत्नमय स्याही ते, वज्ररत्नमय लखवानी लेखणुते, अरिष्टरत्नमय अक्षरते, ते पुस्तकमां केवल धर्मशास्त्र ते, ए सर्व पांचे सजानुं चित्र एकसाथेज आलेख्युं ते.

ते व्यवसाय सजाने इशानकूणे एक महोटी नंदापुष्करणी कही ते तेनुं वर्णन डहनी पेरे जाणवुं ते नंदापुष्करणीने इशानकूणे एक महोटी बलिपीठ ते जिहां बलिपिंरु मूके ते बलिपीठ उंटलारूप जाणवुं ते वे योजन लांबो अने पोहोलो ते तथा एक योजन जाऊ पणे ते, आंही सुधी विजय राजधानीनो अधिकार संक्षेपशी पूरण थयो-हवे ए विजय देवता जेवारे उपजेते तेवारे श्रीजिनप्रतिमानी पूजा प्रमुख केवा के

वा प्रकारनी शुभ करणीउं करेठे तेनो अधिकार श्रीजीवाजिगम सूत्रमां सविस्तर ल खेलेठे तिहांथी जाणी देवो ए जंबूद्वीपनां प्रथम द्वारनो अधिकार संक्षेपथी कह्यो.

हवे विजयंत नामा बीजा द्वारनो अधिकार कहेठे:—मेरु पर्वतने दक्षिणदिसे पीस्ता क्षीश हजार योजन वेगळुं जंबूद्वीपनी दक्षिण दिसिने अंते विजयंत नामे बीजुं द्वारठे तेनो अधिकार सर्वे विजयद्वारनी परे जाणवो, परंतु एटळुं विशेष जे एनो अधिकारी विजयंत नामे देवताठे तेनी राजधानी दक्षिण दिसे विजया राज्यधानी जेवीं ठे.

हवे जयंत नामा त्रीजा द्वारनो अधिकार कहेठे:—मेरु पर्वतनी पश्चिमदिसे पीस्त क्षीश हजार योजन वेगळुं जंबूद्वीपने पश्चिमदिसिने अंते सीतोदा महानदीनी उपरे जयंत नामे त्रीजुं द्वारठे तेनो अधिकार पण विजयद्वार सरखो जाणवो. इहां जयंतनामे देवता ठे तेनी राजधानी पश्चिमदिसे विजयराजधानीनां सरखी जाणवी.

हवे चोथुं अपराजित नामे द्वार कहेठे:—मेरु पर्वतने उत्तरदिसे पीस्ताक्षीश हजार योजन वेगळुं जंबूद्वीपनी उत्तरदिसिने अंते अपराजितनामे चोथुं द्वार कहुंठे ते विजयद्वार सरखुं जाणवुं इहां अपराजित देवताठे तेनी राजधानी पूर्वोक्त द्वीपनी उत्तर दिसे विजयराजधानी सरखी जाणवी. ए चारे दरवाजानां चारे देवतानी राजधानी अहीथी असंख्यातमे जंबूद्वीपे चार दिसाये जाणवी. ए चारे दरवाजानां स्वामी तथा सामानिक देवता तेनुं आयु एक पद्योपमनुं जाणवुं. इति द्वार वर्णन समाप्त.

॥ अथ जरतक्षेत्र वर्णन प्रारंभ ॥

हवे ए जंबूद्वीपमां जरतक्षेत्र नामे वर्ष (वास) कया स्थानकेठे ते कहेठे चुह्वहेम वंत नामे वर्षधर पर्वत तेथकी दक्षिणदिसे अने दक्षिणदिसे जे लवण समुद्र तेथकी उत्तरदिसे तथा पूर्वदिसे जे लवण समुद्र तेथकी पश्चिमदिसे अने पश्चिमदिसे जे लवण समुद्र तेनी पूर्वदिसे ए अवकासने वच्चे जंबूद्वीपने विषे जरतनामे क्षेत्रठे जेने विषे शूका वृक्षना वृषा घणाठे तथा बोरनी बावल प्रमुखनां कांटा घणाठे तथा उंची नीची विष म जूमि घणी ठे तथा दुर्गमस्थानक घणाठे, पर्वत घणाठे, जैरवजाप घणाठे, पाणीना प्रपात घणाठे, पाणीना निज्जरणा घणाठे, खारु घणीठे, गुफा, नदी, डह, रूख, गुहा, गुदम, नवमालिका प्रमुख पद्मलतादि वेलनी, कोहली, अटवी, उजारु, स्वापद हिंसक जीव व्याघ्रादिक, चोर, तस्कर, स्वदेशथी उपना उपद्रव, परकटकनां करेळां उपद्रव, दुर्जिक, जिद्दाचरने जिद्दादुर्लभ मळे, दुकाल, पाखंकी जिनमार्गना उहापक, कृपण, खोची, सातश्रुति, इत्यादिक सर्व वाना जाणवां तथा राजा पण लोकने बहु दुःखना देनार, रोग घणा, संक्षेप घणा, वारंवार संक्षेप, दंरु, आकराकर प्रमुख घणाठे.

ए पूर्वदिसे अने पश्चिमदिसे लांबुठे, उत्तर अने दक्षणे पहोलुंठे, उत्तरदिसे पद्वयंकने संस्थाने संस्थितठे, दक्षणदिसे धनुषना पुठला जागने संस्थाने संस्थितठे तथा त्रिधा पूर्व दक्षण अने पश्चिमे लवण समुद्रने फरश्याठे तथा जे गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदीये करी तथा बैताढ्य पर्वते करी ठजागे वेहेचाणो ठे एटले एना ठ खंड थया ठे.

जंबूढीपनो विष्कंज एक लाख योजननो ठे तेने एकसोने नेवुंमे जागे एटले (५३६) योजन अने एक योजनना ओगणीश जाग करीये एवा ठ जाग उपर एटलुं विष्कंज पणे जरत क्षेत्र ठे एनां मध्य जागने विषे बैताढ्य पर्वतठे ते जरत क्षेत्रने एक दक्ष णारुंजरत अने वीजो उत्तरारुं जरत, एवा बे जागे वेचतो थको रह्यो ठे.

तिहां बैताढ्य पर्वतने दक्षणदिसे जे लवण समुद्र तेने उत्तरदिसे, अने पूर्वदिसे जे लवण समुद्र तेने पश्चिमदिसे अने पश्चिमदिसे जे लवण समुद्र तेने पूर्वदिसे दक्षणारुं जरतठे ते पूर्वदिसे पश्चिमदिसे लांबो अने उत्तर दक्षिणदिसे पहोलो अरुं चंडने आकारे ठे, पूर्व, दक्षण अने पश्चिम ए त्रण दिसे लवण समुद्रने फरश्याठे, गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदी तेणे त्रण जागे वेहेच्योठे, ते बशे आडत्रीश योजन अने एक योजननां उंगणीश जाग करीये तेवा त्रण जाग उपर, एटलो पहोलपणे दक्षणारुं जरतठे, दक्ष णारुं जरतने अंते उत्तरदिसे धनुषना पणठनी परे जीवाठे. ते पूर्वपश्चिम लांबी बे ठेठेठे लवण समुद्रने फरसी रहीठे ते जीवा पूर्वपश्चिमे लांबपणे ९९४८ योजन अने उपर उंगणीसीया वार जाग ठे ते जीवानुं धनुषदक्षिणदिसे ९९६६ योजन उपर उंगणीसीयो एक जाग कांश्क जाजेरो परिधिपणे कहुं ठे ए जरतारुंनुं चित्र जोडुं हवे दक्षण जरत मांहे अयोध्यानगरीनुं प्रमाण कहेठे.

दक्षणारुं जरतनां मध्यखंडनी वच्चमां बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली एवी अयोध्या (त्रिनिता) नगरीठे ते लवण समुद्रथी अने बैताढ्य पर्वतथी एकशो चौद योजन अने उपर एक योजननां उंगणीश जाग करीये तेवा अगीआर जाग एट ले आंतरेठे केमके दक्षणारुं जरतनां मध्यखंडनो विस्तार बशे आडत्रीश योजन अने त्रण कलाठे तेमांथी अयोध्यानो विस्तार नव योजन काहाकीये तेवारे बशे उंगणत्री श योजन अने त्रण कला रहे तेनुं अरुं करीये तेवारे ११४ योजन उपर अगीआर कला थाय तेटली लवणसमुद्र अने बैताढ्य पर्वतथी वेगली अयोध्या नगरी जाणवी.

हवे मागधादि त्रण तीर्थ कया स्थानके ठे ते कहे ठे.

चक्रवर्तिने वसवर्ति जरत, ऐरवत अने वत्रीश विजय मली चोत्रीश क्षेत्र चक्रवर्ति नां ठे तेनी जे गंगा, सिंधू तथा रक्ता अने रक्तवती ए चार जरत ऐरवतनी नदीउं तेने समुद्रमां प्रवेश करतां तथा विजयनी नदीउंने सीतोदा तथा सीतानदी मांहे प्रवेश क

रतां एटले जे स्थानके जरत तथा ऐरवतनी नदीउ समुद्रमां प्रवेश करे तथा जे स्था नके बत्रीश विजयनी नदीउ सीतानदी अने सीतोदानदी मांहे प्रवेश करे ते स्थानक विशेष नदी सागर संगम उत्तम स्थानक कहियेतिहां दक्षणाई जरतमां एक पूर्वदि सिधे मागध तीर्थठे बीजुं पश्चिमदिसिधे प्रजास तीर्थठे तथा ए बे तीर्थनां वच्चमां एक वरदाम तीर्थठे. एरीते जरत क्षेत्रमां त्रण तीर्थ ठे तेमज ऐरवतमां तथा बत्रीश विजय मां पण प्रत्येके त्रण त्रण तीर्थ गणतां सरवाले जंबुद्वीपमां एकशोने बे तीर्थ ठे.

॥ अथ वैताड्यपर्वत वर्णन ॥

हवे जरतक्षेत्रमां पूर्व पश्चिमे लांबो अने उत्तर दक्षणे पोहोलो वैताड्यनामे पर्वतठे ते पच्चीश योजन उंचो ठे अने पच्चीश योजननो चौथो जाग सवाठ योजन चूमी मांहे ठे ए अढीद्वीपमां एक मेरुवीना बीजा सर्वपर्वत जेटला उंचपणे होय तेनो चौथो जाग धरतीमां होय तथा पच्चाश योजन पोहोल पणेठे तेनी बाहू पूर्व पश्चिमदिसे ४०० यो जन अने उपर एक योजननां श्योगणीसीया शोल जाग लांबपणे ठे, तेनी जीवा पणठ उत्तरदिसे १०७२० योजन उपर उंगणीसीया बारजाग लांबपणे ठे तथा तेनुं धनुष्य दक्षणादिसे १०७४३ योजन उपर उंगणीसीया पंदरजाग परिधिपणे रुचकनामे जे ग्रीवानुं आजरण तेवा संस्थाने ठे ए पर्वत सर्व रजतमय रूपमयठे अने स्फाटिकनी परे सुकोमल ठे यावत् जोतां थकां प्रतिबिंब देखाय माटे प्रतिरूप ठे.

ते दक्षण अने उत्तर ए बे पासे बे पद्मवर वेदिकाये करी अने बे वनखंडे करी सर्वदिसे चोकफेर वीड्यो ठे, ते पद्मवरवेदिका अर्क योजन उंचपणे अने पांचशे धनुष्य पोहोल पणे ठे. तथा पर्वत जेटली लांब पणे ठे अने वनखंड कांशुक उणा बे योजन पोहोल पणे ठे. तथा पद्मवरवेदिका जेटला लांबा ठे, तेनी काला वर्ण काली कांति ठे.

वैताड्यने पूर्व पश्चिमदिसे बे गुफाठे ते उत्तर दक्षणे पच्चाश योजन लांबीठे, अने पूर्वपश्चिमे मांहेली कोरे पोहोली बारयोजन ठे, आठ योजन उंच पणे ठे, तथा आठ योजन उंचा अने चार योजन पोहोला तथा चार योजन प्रवेश एवा दक्षण अने उत्तरने सन्मुख वज्ररत्नमय निवरु एवां बे बारणा तेना कपाटे करी ढांकी ठे तथा निरंतर अंध कार अने तिमिश्र तेषेकरी सहीतठे, चंद्र सूर्यादिकनी ज्योति रहीत मार्गठे एवी पश्चिमदिसे तिमिश्रागुफा अने पूर्वदिसे खंडप्रपाता मली बे गुफाठे तेना विषे कृतमाल अने नृत्यमाल एवे नामे बे देवता एक पट्योपमना आयुवाला बसेठे तथा ते गुफाने विषे उम गा अने निमगा एवी बे नदीठे ते त्रण त्रण योजन विस्तारेठे ते नदीउ पर्वत मांहेला जे महोटा पाषाण ते मांहेथी निकलीने महोटी नदी जे गंगा सिंधु प्रमुख ठे ते मांहे गमन

કરેઢે તે બે નઢી વચે વૈતાઢ્ય પચ્ચાશ યોજન માંઢેલા પચ્ચીશમું અને ઢવીશમું એ બે યોજનનું આંતરું ઢે. તે ગુફાની બેઢુ બાજુની ઝીંતને વિષે ચક્રવર્તિ જે થાય તે બે બે સાઢામા સૂર્યમંડલ સરલા કાંકિણિ રલનાં ડંગણપચ્ચાશ માંફલા અજુઆલું કરવા માટે લખેઢે તે પ્રત્યેક મંફલ ડત્સેઢાંગુલે કરી પાંચશે ઢનુષ્યનું ઢે. તથા વલી એ ગુફા પ્રમાણાંગુલે કરી બાર યોજન પોઢોલી ઢે તથા એકેકા માંડલાને વચ્ચમાં એકેક યોજનનું આંતરુંઢે. તથા માંડલાને નીચે અને ડપર સર્વ થઢને આઠ યોજન ગુફા ડંચીઢે. તેમાટે પોઢો લપણે બાર યોજન પ્રકાશ કરેઢે અને મંડલને આંતરે એકેક યોજન પ્રકાશ કરેઢે. તથા ડંચ પણે આઠ યોજન પ્રકાશ કરેઢે. એ માંડલા વચ્ચે પાસે એકેક યોજનને આંતરે ગોમુત્રિકાને આકારે કરતાં એક ઝીંતે ચોવીશ મંડલ થાય અને બીજી ઝીંતે પચ્ચીશ મંડલ થાય તેમાં સિંઢુનઢી પાસે તિમિશ્રા નામે ગુફાઢે તે ગુફામાંઢેથી ચક્રવર્તિ ઢે ઢ્ઢણ મધ્ય ડંફથી ડત્તર મધ્ય ડંફમાં પ્રવેશ કરેઢે અને ડત્તરમધ્ય ડંડને સાધી ત્યાંથી પાઢો વલતાં ઢુષઝકૂટને વિષે પોતાનું નામ લખીને ગંગાનઢી પાસે જે બીજી ડંડપ્રપાતા નામે ગુફાઢે તેમાંથી થઢને ઢ્ઢણ ઝરત માંઢે પાઢો વલે તથા ચક્રવર્તિ જિઢાં સુધી જીવતો ઢોય તિઢાં સુધી તે ગુફાડનાં કમારુ ડઘાઢા રહેઢે.

ઢવે પૂર્વોક્ત વનડંડને બે પાસે ઢશ ઢશ યોજન ડંચા જઢ્યે તિઢાં બે વિઢ્યાઢરની શ્રેણીઢે તે ઢશ ઢશ યોજન પઢોલ પણે ઢે અને પર્વત જેટલી લાંબ પણે ઢે તે બે પાસે બે પઢ્યવરવેઢિકા અને બે વનડંડે કરી ચોકફેર વીંટીઢે એનું લંબાઢ તથા પઢોલાઢ આઢિકનું વર્ણન પૂર્વલી પરે જાણવું તિઢાં ઢ્ઢણઢિસીની જે વિઢ્યાઢરની શ્રેણી ઢે તેને વિષે વિઢ્યાઢરોના ગગનવલ્લઝ પ્રમુખ પચ્ચાસ મઢોટા નગર રાજઢાની રૂપઢે. અને ડત્તર ઢિસીની જે વિઢ્યાઢરની શ્રેણીઢે. તેને વિષે વિઢ્યાઢરોનાં રથનુપુર ચક્રવાલ પ્રમુખ સાઠ મઢોટા નગરાવાસ રાજઢાની રૂપઢે એરીતે બે શ્રેણીનાં મલી એકસોને ઢશ નગર થાય તે નગરને વિષે ઢેશની રાજઢાની સઢિત વિઢ્યા ઢરનાં રાજા મઢોટા બલવંત વશે ઢે. વલી તે વિઢ્યાઢરની શ્રેણીના ઝૂમિઝાગ થકી વૈતાઢ્ય પર્વતને બે પાસે ઢશ ઢશ યોજન ડંચા જઢ્યે તેવારે આઝિયોગિક ઢેવતાની બે શ્રેણી આવે તે પણ ઢશ ઢશ યોજન પઢોલી અને પર્વત સરલી લાંબ પણે ઢે તે બેઢુ શ્રેણી બને પાસે બે પઢ્યવરવેઢિકા અને બે વનડંડેકરી વીંટીઢે. તેનું વર્ણન પૂર્વપરે જાણવું તે ઝૂમિમાં ઘણા વ્યંતરિક ઢેવતા અને ઢેવાંગના યાવત્ વિચરેઢે. તે શ્રેણીને વિષે સૌઢમંઢનાં ચાર લોકપાલ તેના આઝિયોગિક ંટલે આઢ્ઢાકારી કિંકર ઢેવોના ઘણા ઝવન ઢે. તે સર્વ ઝવન બાઢેર ગોલાકારે ઢે, માંઢે સમચતુરસ્ર ઢે, યાવત્ અપત્સરાના સમૂઢે કરી સંકીર્ણ ઢે. તેમાં જે ઢેવતા વસે ઢે, તેનું એક પલ્લોપમાયુ ઢે.

वली ते आत्रियोगिक देवोनी श्रेणी थकी पांच पांच योजन उंचा जइये तिहां वैता
द्व्य पर्वतनुं शिखरतलुं ठे ते दश योजन पोहोल पणे अने पर्वत जेटलुं लांब पणेठे ते
शिखर तल एक पद्मवरवेदिकाये करी अने एक वनखंडे करी सर्व दिसिये चोक फेर वीडे
लुं ठे ते शिखर तलने विषे घणा व्यंतरिक देवता देवांगनाउं जोग जोगवता थका विचरेठे.

वैताद्व्य पर्वतने विषे नव कूट एटले शिखरठे तेना नाम कहेठेः—१ सिद्धायतनकूट,
२ दक्षणाङ्गजरत नामा कूट, ३ खंरुप्रपात गुफा कूट, ४ माणिक्यकूट, ५ वैताद्व्य कूट,
६ पूरणजद्रकूट, ७ तिमिश्रागुफा कूट, ८ उत्तराङ्गजरत कूट, ९ वैश्रमणकूट, १० नव कूटठे.

तेमां प्रथम सिद्धायतनकूट सवाठ योजन उंचपणे ठे. अने मूलमां सवाठ योजन
पोहोल पणे वचमां कांश्क उंणा पांच योजन पोहोलपणेठे, उपर कांश्क जाजेरा त्रण
योजन पोहोल पणे ठे मूलमां पोहोलो वच्चमां सांकडो अने उपर पातलो गायना पूंठने
संस्थाने ठे सर्व रत्नमय ठे ते कूट पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी चोफेर वीड्युंठे तेना
मध्यजागने विषे शाश्वती अरिहंतनी प्रतिमानुं आयतन एटले देहेरुंठे, ते एक कोश
लांब पणे, अर्द्धकोश पोहोल पणे अने चौदशे ने चालीश धनुष उंच पणेठे तेने विषे
रुषज, चंद्रानन, वारिषेण अने वर्द्धमान ए चार नामे तीर्थकरनी एकशोने आठ प्रतिमाठे.

ए प्रथमना सिद्धायतना कूटनी पश्चिमदिसे बीजो दक्षणाङ्गजरत नामे कूट ठे तेपण
सिद्धायतन कूट जेटलो उंचो पोहोलोठे ते प्रासादना मध्यजागमां एक प्रसादावतंसकठे
ते एक कोश उंचो अने अर्द्धकोश पोहोल पणेठे तेना मध्यजागमां एक पीठिका (चोत
रोठे) ते पांचसे धनुष लांबो पोहोलो अने अढीसे धनुष जाड पणेठे तेनां उपर एक
बेसवानुं सिंहासन ठे ते हजारो गमे जद्रासनादिके परवखुं ठे ए कूटने विषे दक्षणाङ्ग
जरतनामे देवता महाऋद्धिवंत एक पद्योपमायुनी स्थितिये वसेठे तेने चार हजार सा
मानिक देव, चार अग्रमहिषी परिवार सहीत, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकनां
स्वामी, चारे दिसीये चार चार हजार उचारहे एवा शोल हजार आत्मारक्षक देवता,
दक्षणाङ्ग जरतक्षेत्रनुं दक्षणाङ्ग राजधानीनुं तथा अनेरा पण घणा देवता देवांगनानुं
आधिपत्यपणुं पालतो थको यावत् विचरेठे ए नवे कूट सवाठ योजन उंचा जाणवा.

चोथुं माणिक्यकूट, पांचसुं वैताद्व्य कूट अने ठहुं पूरणजद्रकूट ए त्रण सुवर्णमय
ठे शेष ठ कूट रत्नमय ठे तेमां तिमिश्रागुफा कूटमां कृतमाल देवता वसेठे तथा खंरु
प्रपातगुफा कूटमां नृतमाल देवता वसेठे एरीते बे कूटनां देवतानां नाम कूटने नामे नथी
अने शेष ठ कूटनां देवतानां नाम कूटने नामे ठे जे कूटनो नाम तेजनाम तेमां वसनार
देवतानो पण होय ए सर्व देव एक पद्यायु वाला जाणवा ए सर्व मेरु पर्वतने दक्षणा
दिसे तिर्था असंख्याता द्वीप समुद्र व्यतिक्रमी जइये तिहां बीजो जंबूद्वीप ठे तेने बार

हजार योजन अवगाहीये तिहां ए सर्व देवोनी राजधानी विजया राजधानी सरखी जाणवी तथा वैताढ्य गिरिकुमार नामे देवता महर्किक एक पढ्योपमायु वालो इहां वसे ठे. तेथी ए पर्वतनुं पण वैताढ्य एवुं नाम शाश्वतुं ठे.

हवे उत्तरार्द्ध ज़रतनामे वास क्षेत्र पूर्व पश्चिमे लांबुं उत्तर दक्षणे पोहोळुं पढ्यं कने संस्थाने संस्थितठे ते गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदी तेणे करी त्रण जागे वे हेचाणुठे ३३० योजन उपर उंगणीसीया त्रण जाग एटळुं पोहोळ पणेठे, एनी बाहू पूर्व पश्चिमदिसे १०९९ योजन उपर उंगणीसीया साडासात जाग एटळी लांब पणे ठे एनी जीवा पणठनी परे उत्तरदिसे १४४९१ योजन उपर उंगणीसीया ठ जाग कांश्क उण्णा एटळी लांब पणे ठे ते जीवानुं धनुष्य दक्षणेदिसे १४५३० योजन उपर उंगणीसीया अगीअर जाग एटळुं परिधि पणेठे.

हवे ए उत्तरार्द्ध ज़रतमां ऋषजकूटनामे पर्वतठे ते कहेठे:—गंगाप्रपातकूंरुनी पश्चिम दिसे अने सिंधुकूंरुनी पूर्वदिसे चुल्लहिमवंत पर्वतना दक्षणे पासानां नितंब पासे ऋषज कूटठे ते आठ योजन धरतीमां उंड पणे, मूलमा आठ योजन पोहोळ पणे, वच्चमां ठ योजन पोहोळ पणे अने उपर चार योजन पोहोळ पणे तथा पाठांतरे मूलमां बा र योजन पोहोळ पणे मध्यमां आठ योजन पोहोळो अने उपरे चार योजन पोहोळो ठे गायना पूंठने संस्थाने सर्व जंबूनंद रत्नमय श्यामवणेंठे. एमां पूर्वदी परे जवन प्रमू ख जे ठे तेशांखांतरथी जाणवा इहां ऋषजनामे महर्किक देवता वसेठे तेनो परिवार तथा एनुं अनेरे जंबूढीपे राजधानीनो स्थानक यावत् पूर्वपरे सर्व कहेवुं.

ए ज़रतक्षेत्रने विषे ज़रत नामे देवता महा ऋद्धिवंत सामानीकादिक देवोये स हीत एक पढ्योपमने आउखे वसेठे तेथी एनुं ज़रत वर्ष एवुं शाश्वतुं नामठे.

हवे चुल्ल हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेठे:—

ज़रत क्षेत्रने उत्तर दिसे ज़रतक्षेत्रनी सीमा रूप ए चुल्ल हेमवंत पर्वत ठे ते एकशो योजन उंच पणे ठे अने पच्चीश योजन धरती मांहेठे. तथा १०५३ योजन उपर उंगणीसीया वार जाग एटळो पोहोळ पणे ठे, तेनी बाहा पूर्व पश्चिमे प्रत्येके ५३५० योजन उपर उंगणीसीया साडा पंदर जाग ठे, तेनी जीवा पणठ उत्तर तरफ पूर्व पश्चिमे लांबी ३४९३३ योजन उंगणीसीये अर्द्धजागे कांश्क उणो एटळी लांब पणे ठे तेनुं धनुष्य दक्षणे ३५३० योजन उपर उंगणीसीया चार जाग परिधि पणेठे ए रुचक नामा वस्तुने संस्थाने रह्यो ठे, सर्व सुवर्ण मयठे, बे पासे बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे करी वींठ्योठे ए पर्वत उपर घणा व्यंतरिकदेव देवांगनाठ विचरे ठे, इत्यादि कहेवुं.

ए पर्वतना मध्यजागे एक महोटो पद्मद्रह नामे ड्रहते ते पूर्वपश्चिम लांबपणे एक हजार योजनते अने उत्तर दक्षण पोहोलो पांचशो योजन ते, दश योजन उंचते, ए ड्रहनुं रूपामयतटते, ते ड्रह एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंडे करी चोकफेर वीट्यो ते.

ते ड्रहना मध्यजागे एक महोटुं कमलते ते एक योजन लांबुं अने पोहोळुं ते तथा अर्द्ध योजन जाडुं ते एटले वे कोश पाणी थकी उंचुं ते, अने दश योजन उंडुं पाणी मांहे ते एम पाणीमां तथा उपर मली साडा दश योजन उंचुं ते ते कमल एक जगतीये करी चोकफेर वीटेलुं ते ते जगती पाणी उपरे जंबूढ्रीपनी जगती प्रमाणे ते गवाह गोख पण तेज रीते जाणवा ए कमलनुं वज्ररत्नमय मूलते, अरिष्टरत्नमय कंद ते, वैडूर्यरत्न मय नालते, वैडूर्यरत्नमय बाहेरना पत्रते, कांश्क राता सुवर्णमय मांहेली पांखमी ते, रातासुवर्णमय केशराते, विविध प्रकारनां मणिमय कमलनां बीज जागते, कनकमय कर्णिका कोडोते, ते कर्णिका अर्द्धयोजन लांबी तथा पोहोलीते, एक कोश उंची ते.

ते कर्णिकानी उपरली जूमिना मध्यजागे एक महोटो जवनते, ते एक कोश लांबो, अर्द्धकोशपोहोलो, चौदशेचालीश धनुष्य उंचो, अनेक सशकडा गमे थांजे करी सहीतते, ते जवनने त्रणदिसाये त्रण बारणाते ते प्रत्येक पांचशे धनुष उंचाते, अढीशे धनुष पोहोळा ते, स्वेत प्रधान कनकमय शूजिका चोतरो तेणे करी सहीतते, यावत् वनमा ला पर्यंत इहां कहेवुं. ते जवनना मध्य जागे एक मणिमय पीठिका ते, ते पांचशे धनुष लांबी पोहोली अने अढीशे धनुष जाडीते, तेना उपर श्रीदेवीनी सय्या ते.

ते कमलनी प्रथम परिधिये बीजा एकशोने आठ कमलते, ते सर्व उंच पणे तथा लांब पणे पूर्वोक्त मूल कमलथी अर्द्ध जागेते एटले एक कोश पाणीथी बाहेर ते अने दश योजन पाणीमांहे ते, मली सवादश योजन उंचाते, अर्द्ध योजन लांबा पोहोळा ते, तेनी पण कर्णिका प्रमुख तथा जुवनादिक सर्व ते मूल कमलनी पेरे अर्द्ध प्रमाण वाळा जाणवा. ए एकशोने आठ कमलने विषे श्रीदेवीना जूषणादिक वस्तु रहेते.

हवे बीजी परिधिना कमलते ते मुल कमलथी वाव्यकूणे, उत्तर दिसिये अने इशान कूणे ए त्रण दिसाये श्रीदेवीनी चार हजार सामानिक देवीना चार हजार कमलते तथा पूर्वदिसे श्रीदेवीनी चार महत्तरिका गुरु स्थानीय देवीना चार कमलते, तथा अशिकूणे मांहेली परखदानां आठ हजार देवतानां आठ हजार कमलते, तथा दक्षणदिसिये वचली मध्य परखदानां दश हजार देवतानां दश हजार कमलते तथा नैऋतकूणे बाहे रली परखदानां बार हजार देवतानां बार हजार कमलते, तथा पश्चिमदिसे सात कटकना स्वामीनां सात कमलते, एरीते ए बीजा वलयमां सरवाले ३४०११ कमल ते.

હવે ત્રીજી પરિધિનાં કમલ કહેઢે:—ત્રીજા વલયની પ્રત્યેક દિસાયે ચાર ચાર હજાર કમલ ગણતાં ચાર દિસાયે શોલ હજાર કમલ શ્રીદેવીના આત્મરક્તક દેવોનાં ઢે.

વલી તે મૂલ કમલને ચોફેર ત્રણ બીજા પરિઢેપ ઢે, ંટલે માંઢેલી, વિચલી અને બાહિરલી ંવી ત્રણ પરિધિ અર્થાત્ ચોથી, પાંચમી અને ઢઠી ં ત્રણ પરિધિનાં કમલોમાં શ્રીદેવીનાં આત્તિયોગિક કિંકર દેવો રહેઢે, તેની સંખ્યા કહેઢે, ચોથી માંઢેલી પરિધિમાં બત્રીશ લાખ કમલઢે, વિચલી પાંચમી પરિધિમાં ચાલીશ લાખ કમલઢે અને બાહિરલી ઢઠી પરિધિમાં અરુતાલીશ લાખ કમલઢે, ં ત્રણ પરિધિનાં ંક ક રોરુને વીશ લાખ કમલ થયા તેની સાથે આગલી ત્રણ પરિધિનાં તથા મુખકમલમ લીને ૫૦૧૨૦ કમલ મેલવીયે તેવારે સરવાલે ૧૨૦૫૦૧૨૦ કમલ થાય. સર્વ કમલ જં બૂવૃઢ્ઢની પેઢે શાશ્વતા પૃથવીકાય રૂપઢે, પરંતુ કમલના આકારે ઢે, માટે કમલ કહી ને વખાણ્યા ઢે, અને પઢેલી પરિધિના કમલથી ત્રીજી પરિધિના કમલ અર્ઢ પ્રમાણ વાલા ઢે, ંમ આગલ પણ સર્વ પરિધિયે અર્ઢ અર્ઢ પ્રમાણ વાલા કહેવા તથા ં પ ઢ્ઢહને વિષે જેમ કમલોનો પરિવાર વખાણ્યો તેમ ત્રીજા પર્વતોનાં ઢ્ઢ સંબંધી પણ ંમજ પરિવાર જાણવો. પઢ્ઢહને વિષે ઘણા કમલ પઢ્ઢહને આકારે પઢ્ઢહ સરિ ંાઢે, માટે ંતું પઢ્ઢહ ંવું શાશ્વતું નામ ઢે, ઢ્ઢાં શ્રીનામેદેવી મહારુઢ્ઢિવંત ંાવત્ ંક પઢ્ઢ્યોપમના આઢલાવાલી વસેઢે, ં કમલનું ચિત્ર જોવું.

હવે ં ઢ્ઢહના ચારણાં પ્રમુખ વખાણતો ઢતો ત્રીજા પર્વતોનાં ઢ્ઢ સંબંધી વક્તવ્યતા પણ સાથેજ કહેઢે.

હિમવંત તથા શિખરી ં બે પર્વતો ડપર પઢ્ઢ તથા પુંરૂરીક ં બે ઢ્ઢહને વિષે ંક પૂર્વદિશિ, ત્રીજો પશ્ચિમદિશિ, ત્રીજો મેરુપર્વતને સન્મુખ ં ત્રણ ઢારઢે, તે ચારણા પણ સ્વસ્વદિશિ ઢ્ઢહના માનથી, ંંસીમે જાગ પ્રમાણેઢે. તે કેમ ? તોકે—ઢ્ઢહનો જે વિસ્તાર પાંચસે ંજન પૂર્વ અને પશ્ચિમદિશિ ં, તે ંંસીમે જાગે વઢેંચી ં તેવારે સવાઢ ંજ ન આવે; તેમાટે પૂર્વ અને પશ્ચિમનાં ચારણાં ઢ્ઢહને વિષે સવાઢ ંજન પઢોલાં ઢે. અને મેરુસન્મુખ હજાર ંજન ઢ્ઢહઢે, તે ંંસીજાગે વઢેંચી ં તેવારે સાઢાબાર ંજન જાગે આવે તેમાટે મેરુસન્મુખ ઢ્ઢહનાં ચારણા સાઢાબાર ંજન પઢોલાં ઢે, ંમ જાણવું. તે ઢાર તોરણસહિત તથા તેમાંથી નદીઢ નીકલી ઢે, તેણે કરી સહિત ઢે. શેષ ત્રીજા ચાર ઢ્ઢહને વિષે દક્ષિણ અને ંત્તર દિશા ં બે ચારણાં ઢે તેમના મધ્યે જે મેરુ સામા ચારણાઢે તે ચારણા સ્વદિશિ ઢ્ઢહના ંંસીમે જાગેઢે. જેમ મહાપઢ્ઢ તથા મહા પુંરૂરીક ં બે ઢ્ઢહ મેરુદિશિ સન્મુખ બે સહસ્ર ંજન ઢે, તેમના લાંબ પણાને ંંસીજાગે વઢેંચતાં પચીશ ંજન આવે, તો જે મેરુ સન્મુખ ચારણુંઢે તે પચીશ ંજનનું ઢે. અને

बाहेरनां दक्षिण तथा उत्तर सन्मुख जे बारणा ठे, ते मांहेला मेरु सन्मुख बारणाथी अर्द्धमाने एटले सामाबार योजन प्रमाणे ठे. वली एरीते तिगिष्ठि तथा केशरी ड्रह मेरु दिशि लांबा चार हजार योजन ठे. ते एंसी जागे वहेचतां पचाश योजन प्रमाणे मेरु सन्मुखतु बारणुं ठे, अने दक्षिण तथा उत्तरनां जे बारणां ठे, ते मांहेला बारणा थी अर्द्ध एटले पचीश योजन प्रमाणना ठे. ए सर्व ड्रहना बारणां जे ठे ते तोरण तथा नदीए सहित ठे एम जाणवुं.

ए पद्मड्रहनां पूर्वदिसिने तोरणेथी गंगा नामे महोटी नदी नीकली ते पूर्वदिसि सन्मुख पांचशे योजन पर्वत उपर जइने गंगावर्तन नामे कूट फरीने पांचशे त्रेवीश योजन उपर उंगणीसीया सामात्रण जाग एटली दक्षिणदिसी साहामी पर्वत उपर जइने जेम मोहोटा घमानां मुख मांहेथी पाणीनो समूह नीकलतो होय ते सरखो मुक्ता वलीनां हारने संस्थाने कांश्क जाजेरा शो योजनने प्रपाते पाणीने पडवे करीने हेठी पडेठे, ए गंगानदी जिहां पडेठे, तिहां एक महोटी जीजी प्रणालीठे, ते जीजी अर्द्ध योजन लांबी अने सवाठ योजन पोहोली, अर्द्धकोश जाकी, मगरमत्सवुं पसाखुं मुख ते संस्थाने संस्थितठे, ए गंगानदी जिहां पडेठे, तिहां एक गंगा प्रपात एवे नामे कुंरुठे, ते शाठ योजन लांबो अने पोहोलो ठे तथा १९० योजन कांश्क जाजेरो परिधिठे, दश योजन उंमो ठे, गोलाकारे ठे. अनेक जातना तिहां कमलठे, ते कुंरु एक पद्मवरवेदि का अने एक वनखंरु तेणेकरी चोफेर वींटेळुं ठे, ते कुंरुने चारेदिसे पगथालीया ठे.

ते कुंरुना मध्यजागे एक महोटी गंगा नामे द्रीपठे, ते आठ योजन लांबो अने पोहोलो वृत्ताकारेठे, कांश्क जाजेरा पचीश योजन तेनी परिधिठे, वे कोश पाणी थकी उं चो सर्व वज्ररत्नमय ठे ते द्रीप एक पद्मवरवेदिका अने वनखंडेकरी चोफेर वींटेळोठे, ते ना उपरे गंगा नामक देवीने वसवानो जुवनठे घरठे ते एककोश लांबो, अर्द्धकोश पोहो लो अने १४४० धनुष उंचोठे तेमां गंगादेवीनी सय्याठे, माटे एनुं गंगाप्रपात नामठे.

ते गंगाप्रपातकुंरुने दक्षिणदिसिने तोरणे थइने गंगा महानदी नीकली थकी उत्तरा र्द्ध नरतक्षेत्र मांहे आवती आवती सात हजार नदीये पूराती थकी खंरुप्रपाता गुफाने हेठे वैताढ्य पर्वतने जेदीने दक्षिणार्द्ध नरत मांहे आवती थकी दक्षिणार्द्ध नरतनां मध्य जागे जइने पूर्वदिसि साहामी वलती थकी चौदहजार नदीये पूराती थकी नीचे जंबूद्रीपनी जगतीने जेदीने पूर्वदिसे लवण समुद्रमांहे जले ठे.

ए गंगानदी जिहांथी वहेठे तिहांथी मूळे सवा ठ योजन पोहोली ठे अने अर्द्धकोश उंमीठे पठी वे पासे मात्राये मात्राये वधती थकी समुद्रमां जलतां शाकीबाशठ योजन पोहोळ पणे थइ अने सवा योजन उंड पणे थइ एटले सर्व नदीउने मूल थकी मुखे

समुद्रमां जलतां दश गुणो प्रवाह होय तथा पोहोल पणाशी पच्चाशमो जाग उंरु पणे होय गंगानदी वे पासे वे पद्मवर वेदिका अने वे वनखंडे करी वींटीठे.

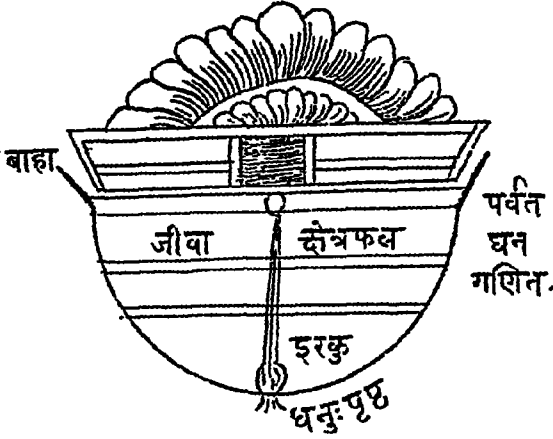
ए गंगानदीनी पेरेज सिंधुनदीनुं स्वरूप पण जाणी लेवुं मात्र ते पद्मझहने पश्चिम दिसिने तोरणे नीकली थकी सिंधुआवर्तन नामा कूटने फरीने दक्षिणदिसा तरफ चा ली थकी सिंधुप्रपातकुंडमां पनी तिहां सिंधुदेवीनो सिंधु नामे छीप जाणवो यावत् तिमिश्रा गुफा नीचे वैताढ्य पर्वत जेदीने पश्चिमदिसी साहामी वली थकी चौदह जार नदीये पुराती लवण समुद्रमां जली तेनो शेष अधिकार गंगानी परे जाणवो

हवे ते पद्मझहने उत्तरदिसिने तोरणे रोहितांसा महानदी नकली ते ३९६ योजन अने उंगणीसीया ठ जाग उत्तर दिसि साहामी पर्वत उपर जइने कांश्क जाजेरा शो योजनने प्रपाते रोहीतांशा प्रपात कुंडमां जइ पडेठे, ते कुंड एकशोने वीश योजन लांबो अने पोहोलोठे, कांश्क उणा त्रणसो एंसी योजन परिधि पणे ठे, दश योजन उंडो ठे, तेना मध्यजागे रोहितांशा नामे छीपठे, ते शोल योजन लांबो अने पोहोलो ठे, वे कोश पाणी थकी उंचोठे, तिहां रोहितांशा देवीनुं जवन जाणवुं इत्यादिकएनो वीजो सर्व अधिकार पूर्वला कुंरुनी परे कहेवो.

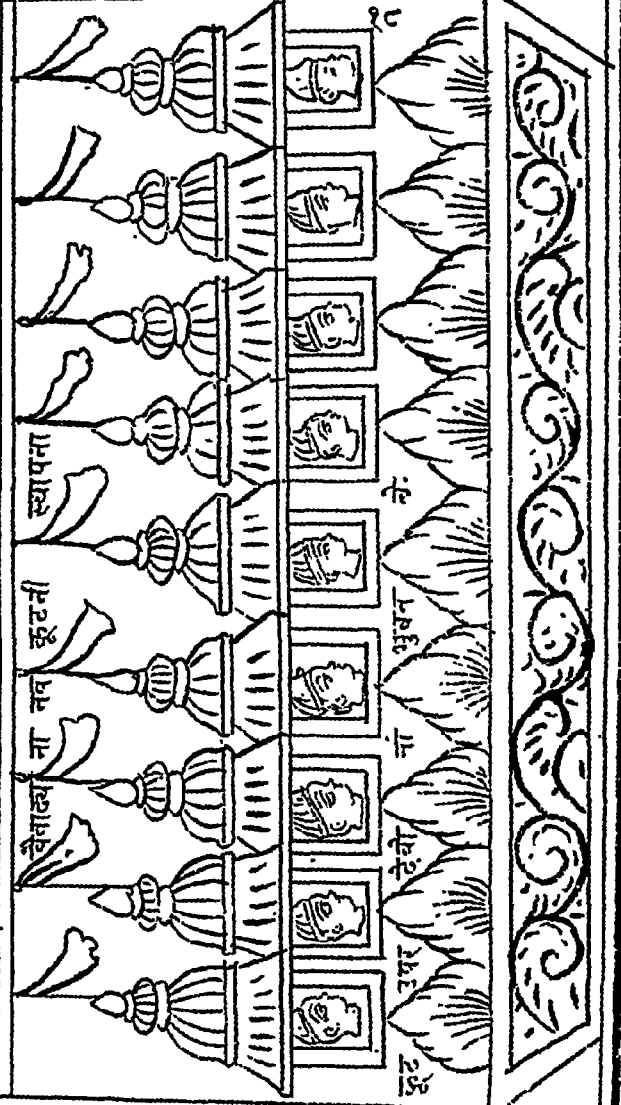
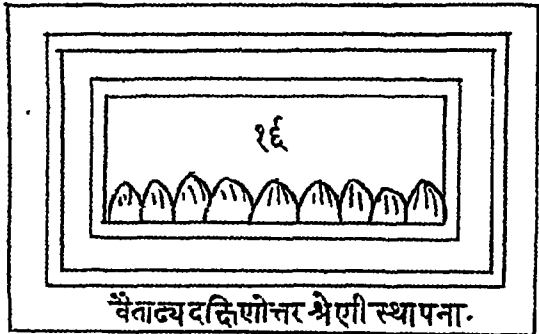
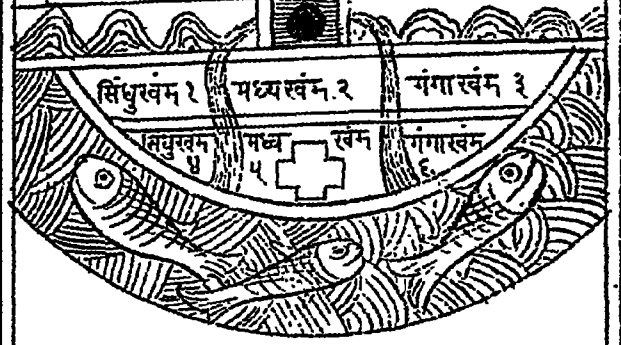
ते रोहितंसा प्रपातकुंडने उत्तरदिसिने तोरणे रोहितंसा नदी नीकली थकी हेमवंत युगलीयानां खेत्र मांहे जाती जाती, चौद हजार नदीये पुराती पुराती, शब्दापाती नामे वृत्तवैताढ्य पर्वतने अरू योजने पण पोहोती थकी, पश्चिम दिसि साहामी व ली थकी, हेमवंतखेत्रने वे जागे वेचती थकी, अष्टावीश हजार नदीये पुराती जरा ती नीचेथी जगतीने जेदीने लवण समुद्र मांहे जले ठे. ए नदीनो मूले प्रवाह सा डावार योजन पोहोलपणे अने एक कोश उंड पणे ठे, पठी मात्राये मात्राये वे पासे वधती समुद्रमांहे पेशतां १३५ योजन पोहोल पणे प्रवाह ठे, अने अढी योजन उंड पणे ठे, ए वे पासे वे पद्मवरवेदिका अने वे वन खंडे करी वींटी ठे.

हवे चुल्लहेमवंत पर्वत उपर अगीआर कूटठे, तेनां नाम कहेठे:—१ सिद्धायतनकूट एना उपर सिद्धनुं देहेरुं ठे, २ चुल्ल हेमवंत गिरिकुमार देवकूट, एना उपर ए पर्वतना ए कूटने नामे देवतानो निवास जुवनठे, ३ जरतदेवकूट एना उपर जरतक्षेत्रना जरतदेवता नो निवासठे, ४ इलादेवीकूट, ५ गंगादेवीकूट, ६ श्रीदेवीकूट, ७ रोहितंसादेवीकूट, ८ सिंधु देवीकूट, ९ सुरादेवीकूट, १० हेमवंतदेवकूट, ११ वैश्रमण लोकपाल देवकूट, पूर्वदिसिना लवण समुद्रने पश्चिमदिसे अने चुल्लहेमवंत नामा कूटने पूर्वदिसे प्रथम सिद्धायतन कू टठे ते पांचशे योजन उंचोठे, मूलमां पांचशो योजन पोहोल पणे, वच्चे ३९५ योजन पोहोल पणे, उपर अढीसे योजन पोहोल पणे, गोपुठने संस्थानेठे, ते कूट पद्मवरवेदिका

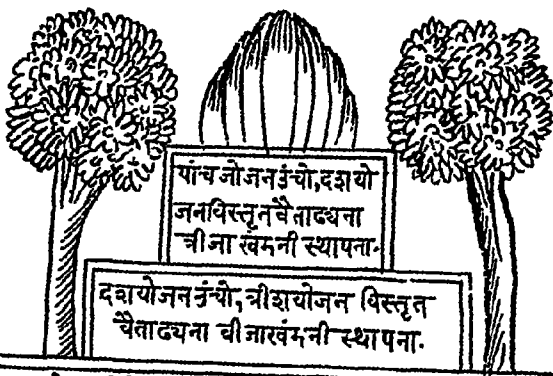
१४



मस्तक्षेत्र माहेला ब स्वम नी स्थापना.
१५



१७



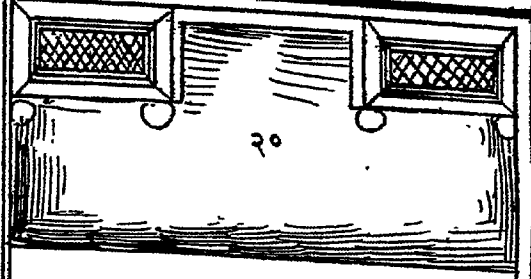
दशयोजनउंचो, पचाशयोजनविस्तृतचैः प्रथम खंड स्थापना.

ऊर्ध्वाकार वैतादथ स्थापना.

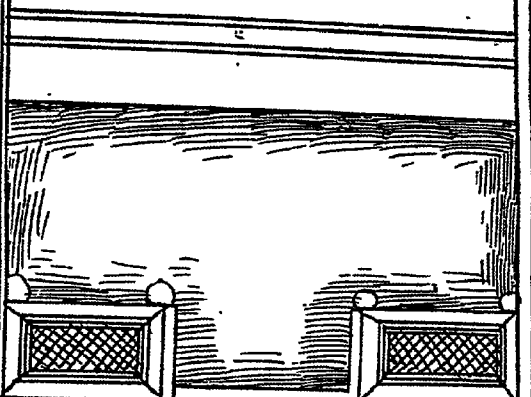
१९



चक्रवर्ति-पैवाढ्यानी युफाना कपाटउघाइछे तेनी स्थापना.



२०



२४



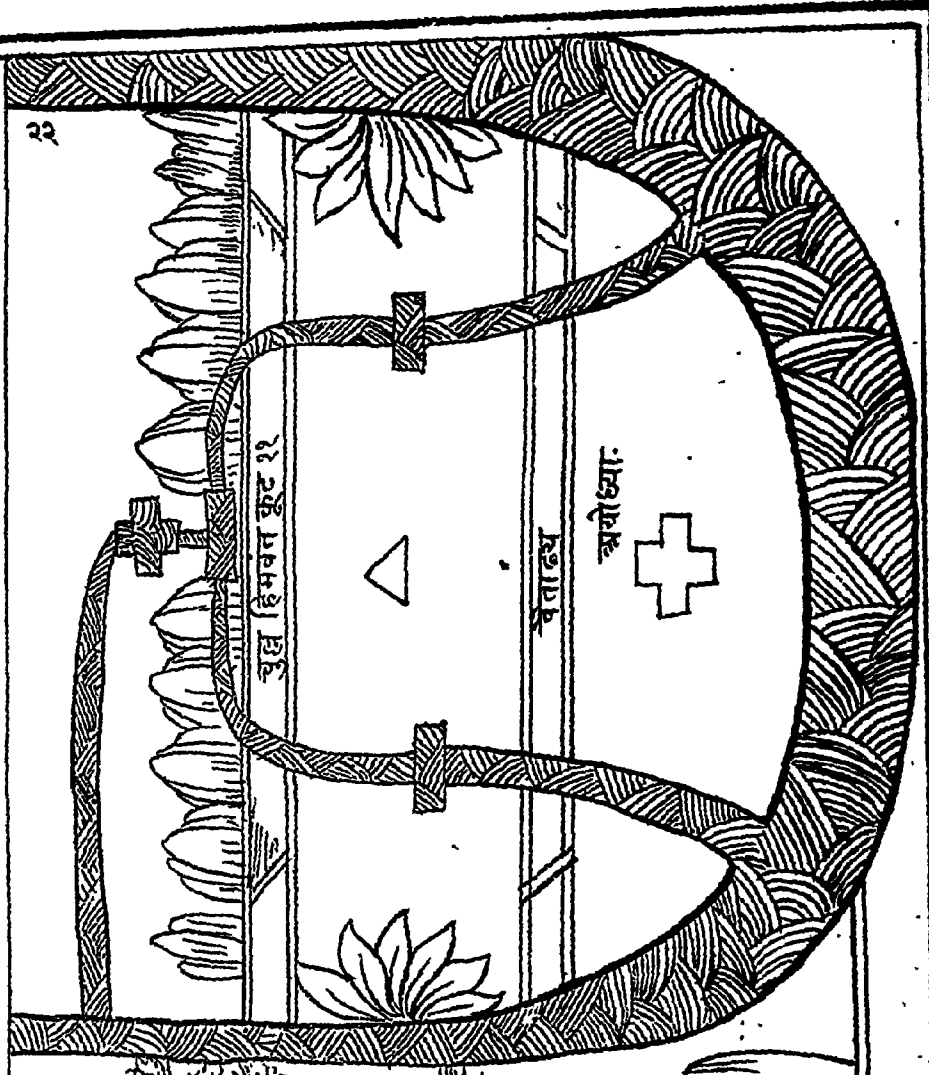
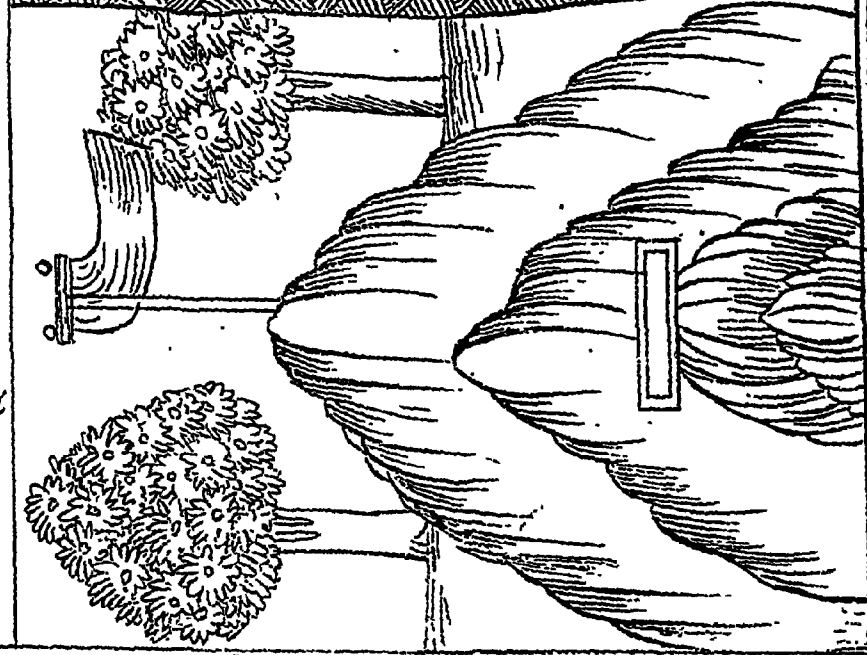
बुधहिमवंत पर्वत उपरंगंगवर्तीदि कूटनी स्थापना-
२१

एआठे दादानेविषे प्रत्येके सातसात अंतर दीपठे.

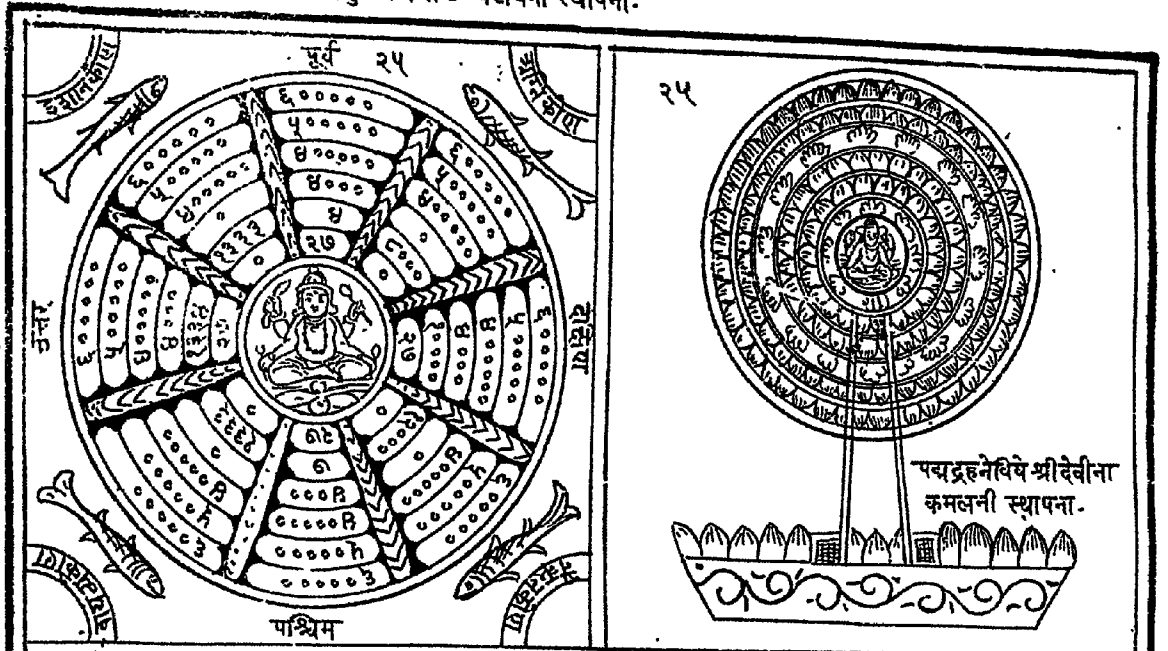
भारतक्षेत्र, वैताल्य पर्वत अने युद्ध हिमवत पर्वतनी
स्थापना.

युद्ध हिमवत पर्वतनी पासि
अषभकूट छे जैना उपर
चक्रवर्ति पोताजुं नाम बखे छे तेनी स्थापना.

२३



श्रीदेवीना मुख्यकमलने फिरता लघुकमलनाठ वलयनी स्थापना.



पद्मद्रहनेषिये श्रीदेवीना
कमलनी स्थापना.



हिमयंत युगल दोन स्थापना.

२५

अने वन खंडे करी चोफेर वींढ्योठे, तेना उपर सिद्धुं देहेरंठे, तेनुं वर्णन जीवाजि गम सूत्रथी जाणवुं बीजा दश कूट पण एटलाज लांबा पोहोला अने उंजा जाणवां.

एमज चूह्लहेमवंतकूटने विषे चूह्लहेमवंतगिरिकुमार देवनो प्रासादावतंसक प्रमुख तथा तेनी चुह्लहेमवंत नामे राजधानी असंख्यातमे जंबूछीपे जाणवी शेष थाकता सर्व कूटोनी वक्तव्यतामां पण देवताना प्रासाद सिंहासन, परिवार प्रमुख ते सर्व कहेवा.

इहां चुह्लहेमवंतकूट, जरतकूट, हेमवंतकूट वैश्रमणकूट ए चार कूटने विषे देवता जाणवा शेष ठ कूटने विषे देवांगना जाणवी ए पर्वत महाहेमवंत पर्वत आश्रिथी लं बाइ आदिकमां लगारेक न्हानोठे, वली चुह्लहेमवंतनामे देवता एक पळ्योपमायुये इ हांवशेठे. तेथी (चूह्ल के०) लघुहेमवंत पर्वत एवुं एनुं शाश्वतुं नाम ठे इति ॥

हवे हेमवंत युगलीयाना क्षेत्रनुं वर्णन कहेठे, चुह्लहेमवंत वर्षधर पर्वतने उत्तरदिसे ए हेमवंत क्षेत्रठे, ते २१०५ योजन उपर उंगणीसीया पांच जाग एटलुं पोहोला पणेठे, एनी बाह ६९५५ योजन उपर उंगणीसीया त्रण जागठे, तेनी जीवा पणठ ३९६९४ योजन उपर उंगणीसीया पंदर जागठे. एनुं धनुषष्ठ ३८९४० योजन उपर उंगणीसीया दश जाग एटलुं परिधि पणेठे, एमां त्रीजा सुखमडुखमा आरा सरखो सरूप जाणवो.

इहां रोहिता नदीनी पश्चिम दिसे अने रोहितांशा नदीनी पूर्व दिसे हेमवंत क्षेत्रने मध्यजागे शब्दापाती नामे वृत्त वैताढ्य पर्वत ठे, ते एक हजार योजन उंचोठे, अढीशो योजन धरतीमां उंडोठे, तथा नीचे अने उपर लांबो पोहोलो सर्वत्र सरखो धान चरवाना पालाने संस्थानेठे, एक हजार योजन लांबो पोहोलो ठे अने ३१६९ योजन कांश्क जाफेरी एटली परिधिठे, वेदिका अने वनखंडे करी चारे बाजु वींढ्योठे तेनी उपर यावत् सिंहासन प्रमुख परिवार सहित जाणवा तथा ए पर्वतनी न्हानी महोटी वाव्यने विषे यावत् बिल्लने विषे शब्दापाती जेवा वर्णवाला एना सरखा अनेक जातीना कम ल ठे तेणेकरी तथा इहां खाती नामे देवता एक पळ्योपमनां आउखावंत, चारहजार सामानीक देवो आदिक सहित थको वसेठे, यावत् विजय देवनी पेरे राजधानी वा लो ठे, तेथी ए पर्वतनुं शब्दापाती वृत्तवैताढ्य एवुं शाश्वतुं नाम ठे.

तथा चुह्ल हेमवंत अने महा हेमवंत ए वे वर्षधर पर्वते वे पासे दक्षण उत्तर दिसे ए क्षेत्रने गोपव्युंठे, मर्यादा कीधीठे, नित्ये सदैव हेम सुवर्ण प्रकाशेठे, तथा इहां हेमवंत नामे देवता एक पळ्योपमने आउखे वशेठे तेथी हेमवंत क्षेत्र एवुं एनुं शाश्वतुं नामठे.

हवे महा हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेठे:—हेमवंत क्षेत्रने उत्तरदिसे अने हरिवर्ष क्षेत्रने दक्षणदिसे महाहेमवंत नामे वर्षधर पर्वतठे, ते बशे योजन उंचपणे अने पचाश

યોજન ધરતીમાં ડંમોઢે, તથા ૪૨૧૦ યોજન ડપર ડંગણીસીયા ઢશ ડાગ ંટલો પોહોલ પળેઢે ંની બાહૂ પૂર્વ પશ્ચિમ ઢિસે ૂ૨૭૬ યોજન ડપર ડંગણીસીયા સાઢાનવ ડાગઢે, તથા ંની ડીવા પળઢ ડત્તરઢિસિ તરફ પૂર્વ પશ્ચિમે ઢાંબી ઢે ઢેઢેઢે લવણ સમુઢ્રને ફરસી ઢે, તે ૂ૩ૂ૩૧ યોજન ડપર ડંગણીસીયા ઢ ડાગ કાંઢક ડાઢેરીઢે, તેનું ઢનુપૃષ્ઠ ઢક્ષણ ઢિસી તરફ ૂ૭૨ૂ૩ યોજન ડપર ડંગણીસીયા ઢશ ડાગ પરિઢિ પળેઢે, ં પર્વત રુઢકને સંસ્થાને સંસ્થિતઢે, સર્વ રત્નમયઢે, ઢે બાઢુયે ઢે પઢ્નવર ઢેઢિકાયે કરી તથા ઢે વન ડંઢે કરી ઢીંઢ્યોઢે ઘણુ સમ રમણીક ઢૂમિ ડાગઢે, યાવત્ ઢેવતા ઢેસેઢે રઢેઢે ઢ્ત્યાઢિ.

તે મહાઢેમવંત પર્વતનાં મધ્યડાગે વઢ્ચોવઢ્ચે મહાપઢ્નનામે ડ્રહ ઢે, તે ઢે હઢાર યોજન ઢાંબપળે ંને ંક હઢાર યોજન પોહોલપળે ઢે, તથા ઢશ યોજન ડંઢો ઢે, તેનું રૂપામય તટ ઢે, ડે રીતે પૂર્વે પઢ્નડ્રહની વક્તવ્યતા કહી તેહિઢ વક્તવ્યતા ઢ્હાં પળ ડાણ ઢી ઢ્હાં કમલનું પ્રમાણ ઢે યોજનનું ઢે, યાવત્ તે કમલ મહાપઢ્નડ્રહ સરઢા ઢે ઢ્હાં ઢ્હીં નામે ઢેઢી ંક પઢ્યોપમને ંઢાઢલે વશે ઢે તેળે કરી ંનું મહાપઢ્નડ્રહ ંનું શાશ્વતું નામઢે.

ં ડ્રહને ઢક્ષણઢિસિને તોરળે રોહિતા મહાનઢી નિકલ્લી તે ૧૬૦ૂ યોજન ડપર ડંગણીસીંયા પાંઢ ડાગ ંટલી ઢક્ષણઢિસિ સાહમી પર્વત ડપરે ઢ્હને મહોટા ઘઢાનાં મુઢ સરિઢે મુક્તાવલી ઢારને સંસ્થાને કાંઢ ંક ડાઢેરા બશે યોજને પ્રપાત કુંઢમાં પઢે ઢે, તે ડિઢાંંથી પઢેઢે, તિઢાં મહોટી ડીઢી પ્રણાલી ઢે, તે ડીઢી ંક યોજન ઢાંબ પળે ંને શાનાબાર યોજન પોહોલ પળે તથા ંક કોશ ડારુ પળે ઢે, મહોટા મગરમત્સનું ઢુઢ વિસ્તિરણ કસ્યો હોય તે સંસ્થાને સંસ્થિત ઢે, સર્વ વઢ્જરત્નમય ઢે તે ડિઢાં પઢેઢે તિઢાં રોહિત પ્રપાત નામે કુંઢઢે, તે ંકસો ઢીશ યોજન ઢાંબો પોહોલો ઢે, ંને ઢ્રણસે ંસી યોજન કાંઢક ડંણા પરિઢિ પળે ઢે, તથા ઢશ યોજન ડંઢો ઢે, તેના મધ્યડાગે ંક રોહિતા નામે ઢ્રીપઢે, તે શોલ યોજન ઢાંબો પોહોલો ંને કાંઢક ડાઢેરાપઢાશ યોજન પરિઢિ પળેઢે, પાણી ંકી ઢે કોશ ડંઢોઢે, વઢ્જરત્નમય ઢે, તે ઢ્રીપ પઢ્નવરઢેઢિકા ંને વનડંઢે કરી ઢીંઢ્યોઢે, તે ઢ્રીપને વઢ્ચે ંક ડવનઢે, તે ંક કોશ ઢાંબ પળે ઢે, ઢ્ત્યાઢિ.

તે રોહિત પ્રપાત કુંઢને ઢક્ષણઢિસિને તોરળે રોહિતા મહાનઢી નીકલ્લી ંકી ઢેમવંત ડેઢ્રમાંઢે ડાતી ડાતી શબ્ઢાપાતી ઢૃત્તઢેતાઢ્ય પર્વતને ંરૂ યોજને ંણ પોહોતી ંકી પૂર્વઢિસિ સન્મુઢ વલીને ઢેમવંત ઢેઢ્ર પ્રત્યે ઢે ડાગે ઢેઢેઢતી ંકી ંઢાઢીશ હ ડાર નઢીઢે પૂરાતી ંકી નીઢે ડગતીને ડેઢી પૂર્વઢિસે લવણ સમુઢ્રમાંઢે ડલી ઢે.

તથા ં ડ્રહના ડત્તરઢિસિને તોરળે હરિકાંતા મહાનઢી નીકલ્લી ંકી ૧૬૦ૂ યોજન ડપર ડંગણીસીયા પાંઢ ડાગ ડત્તર ઢિસિને સામી પર્વત ડપરે ઢ્હને કાંઢક ડાઢેરા બશે યોજનને પ્રપાતે ઢેઢી પઢેઢે, ડિઢાંંથી પઢેઢે, તિઢાં ડીઢી ઢે યોજન ઢાંબ પળે, ં

वीश योजन पोहोल पणे अने अरुं योजन जाड पणेते, ते हरिकांत प्रपात नामें कुंडमां पडेते ते कुंड १४० योजन लांबो पोहोलो अने ७५ ए योजन परिधि पणेते, तेना मध्यजागे हरिकांता नामे छीपते, ते बत्रीश योजन लांबो पोहोलो अने एकशो एक योजन परिधि पणेते, तथा बे कोश पाणीथकी उंचों ते, ते पद्मवर वेदिका अने वनखंडे करी वींठ्योते. एना मध्यमां जुवनते तथा ते हरिकांता प्रपात कुंफनां उत्तर दिसिने तोरणे हरिकांता महांनदी नीकली थकी हरिवर्षक्षेत्रमां जाती थकी विकटापाती वृत्तवैताढ्य पर्वत प्रत्ये अरुं योजन अण पोहोती थकी पश्चिमदिसि साहमी वलो थकी हरिवर्ष क्षेत्रने बे जागे वेचती थकी ढपन्न हजार नदीचे पूराती थकी नीचे जगती जेदीने पश्चिमदिसिचे लवणसमुद्र मांहे जलेते ए हरिकांता महानदी ड्रहथकी निकलता प्रवाहे पच्चीश योजन पोहोल पणे अरुं योजन उंडपणे पढी मात्राये मात्राये अनुक्रमे योजने योजने एकेक पाशे वीश वीश धनुष करतां बे पाशे चाळीश धनुष वधती वधती समुद्र प्रवेशे अढीशे योजन पोहो लपणे अने पांच योजन उंड पणे अशेते, बे पासे पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे वींटीते.

महा हेमवंत पर्वत उपर आठ कूट कहेते:—एक सिद्धायतन कूट, बीजो महाहेमवंत कूट, त्रीजो हेमवंत कूट, चोथो रोहितादेवी कूट, पांचमो झींदेवी कूट, षठो हरिकांता कूट, सातमो हरिवर्ष कूट, आठमो वैदूर्य कूट, पूर्वे जेम चूडहेमवंत पर्वतना कूटोनी वक्तव्यता कही तेम इहां पण देवी देवो प्रमुखना निवाश प्रमुख जाणवा ए महा हेमवंत पर्वत जे ते, ते चूडहेमवंत पर्वत आश्रयी लांब पणे, पहोल पणे, उंचपणे, उंड पणे, परिधि पणे अतिशय महोटो ते, तथा इहां महाहिमवंतनामे देवता यावत् एक पद्योपमायुनी स्थितिये वशेते, माटे एनुं महाहिमवंत पर्वत एवुं शाश्वतुं नामते.

हवे हरिवर्ष युगलीयानां क्षेत्रनी वक्तव्यता कहेते.

निषध पर्वतने दक्षिण दिसे अने महाहेमवंत पर्वतने उत्तरदिसे हरिवर्ष नामे युगल क्षेत्रते ते ७४११ योजन उपर उंगणीसीओ एक जाग एटबुं पहोल पणेते. तथा १३३६१ योजन उपर शाडा ष जाग एटली पूर्व पश्चिमदिसे वाहाते, तथा एनी जीवा पणठ उत्तर दिसीये पूर्वपश्चिमे लांबी ७३९०१ योजनउपर साडासत्तर जाग ते, तेनुं धनुषष्ट दक्षिण दिसीये ७४०१६ योजन उपर चार जाग एटबुं परिधिपणे ते, एनुं घणुज सम रमणि क चूमि जाग ते, यावत् मणितृणादिके करी शोचावंतते, इत्यादिक सर्व वात इहां पण कहेवी इहां सुखमा नामे बीजा आरानुं अनुचाव सदा सर्वदा वर्ते ते.

इहां हरिसखिला महानदीने पश्चिमदिसे अने हरिकांता महा नदिने पूर्वदिसिये तथा हरिवर्ष क्षेत्रने मध्यजागे विकटापाती नामे वृत्तवैताढ्य पर्वत ते, तेनुं पोहोल पण, उंच

अढीझीपना नकशानी हकीगत.

पणु अने उंरुपणु तथा परिधि प्रमुख सर्व पूर्वे कहेला शब्दपाती वृत्तवैताल्यनी पेरे इहां पणु कहेवा परंतु एटळुं विशेष जे ए पर्वतनो अरुणनामे देवता अधिपतिडे, तथा इहां विकटापाती सरखा वर्णे करी कमल ठे, तेथी एनुं विकटापाती एवुं शाश्वतुं नामडे.

ए हरिवर्षक्षेत्रने विषे (हरिके०) सूर्य अने चंद्रमा कहीये तेथी केटलाएक मनुष्य उगता सूर्य जेवा राते वर्णे रातिकांतिने प्रकाश करेडे, तथा केटलां एक तिहांना मनुष्य चंद्रमा तथा शंखना सरिखां धोले वर्णे ठे, तेमाटे तथा इहां हरिवर्षनामे महर्कि क देवता एक पद्योपमायुये वशेडे, तेथी एनुं हरिवर्ष एवुं नाम शाश्वतुं ठे.

हवे निषध नामा वर्षधर पर्वत कहेडे.

महाविदेह क्षेत्रने दक्षिणदिसे अने हरिवर्षक्षेत्रने उत्तरदिसे निषध नामे पर्वतडे, ते चारसे योजन उंचपणे, शा योजन नीचो धरतीमां ठे, तथा १६०५२ योजन उपर बे कला पहोलो ठे, तेनी पूर्वपश्चिमदिसे बाहा २०१६५ योजन उपर अढी जागडे, तथा लांबपणे तेनी जीवा पणुठ उत्तरदिसे ९४१५६ योजन उपर बे जागडे, तथा तेनुं धनु पृष्ठ दक्षिणदिसे १२४३४६ योजन उपर नव जाग परिधिपणे ठे, सर्व तपनीय राता सु वर्णमय ठे, बे पासे पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी सहित ठे.

तेना मध्यजागे एक तिगिळि नामे ड्रह ठे, तिगिळि एटले कमलनो परागड्रह ते ति गिळि ड्रह. ए चार हजार योजन लांब पणे अने बे हजार योजन पोहोल पणे तथा दश योजन उंचो ठे, एनुं रूपामय तट ठे, चारदिसिये चार त्रिसोपान पगथाकियाडे, एम जे रीते महापद्मड्रहनी वक्तव्यता पूर्वे कही तेज रीते इहां पणु कहेवी, इहां क मलनुं प्रमाण तेहिज जाणवुं यावत् तिहां तिगिळि सरखा घणा कमल ठे, तथा इहां धृतिनामे देवी एक पद्योपमने आउखे वशे ठे, तेथी एनुं तिगिळिड्रह एवुं नाम ठे.

ते तिगिळिड्रहने दक्षिण दिसिने तोरणे हरिसखिला महानदी नीकली थकी ७४२१ योजन उपर एक जाग एटली दक्षिणदिसि सामी पर्वत उपरे जइने कांश्क जाजेरा चारसे योजनने प्रपाते करी हेठी हरिसखीला कुंडमां पमेडे, ते कुंरुनुं अने झीपनुं तथा झीपना जवन प्रमुखनुं प्रमाण तेनी वक्तव्यता सर्व हरिकांता नदीनी पेरे जाणवी यावत् हरि वर्ष क्षेत्रने बे जागे वेंचती उपर हजार नदीये सहीत थकी नीचे जगती जेदीने पूर्व दिसिनां लवण समुद्रमांहे जलेडे एनुं प्रवाह, मुख, मूले, पहोलपणुं, उंरुपणुं, ए सर्व हरिकांता नदी प्रमाणेज जाणवुं यावत् वेदिका अने वनखंड तेणे करी सहीत ठे.

हवे ते तिगिळिड्रहने उत्तरदिसिने तोरणे सीतोदा महानदी निकली थकी ७४२१ योजन उपर एक जाग एटळुं उत्तर साहमी पर्वत उपरे जइने कांश्क जाजेरा चारसे योज

नने प्रपाते हेठी पडेठे ए सीतोदा महानदी जिहां थकी पडेठे तिहां एक महोटी जीजी प्रणाली रूपठे ते चार योजन लांब पणे, पच्चाश योजन पोहोल पणे अने एक योजन जाऊ पणे महोटा मगर मत्सना मुखने संस्थाने संस्थित ठे, सर्व वज्र रत्नमय ठे ते जिहां नीची पडेठे तिहां महोटा सीतोदा प्रपात कुंडठे ते चारसे एंसी योजन लांब पणे पोहोल पणे अने १५१७ योजन कांश् एक उंणा परिधि पणे ठे, यावत् तोरण पर्यंत वक्तव्यता जा एवी ते सीतोदा प्रपात कुंमने मध्य जागे सीतोदा नामे छीपठे, ते चोशठ योजन लांबो पोहोलो अने बशे बे योजन परिधि पणे ठे, बे कोश पाणी थकी उंचोठे, सर्व वज्र रत्नमय ठे, तेमज वेदिका, वनखंड भूमिजाग, जवनघर, शयनीय ए सर्व पूर्वपरे जाणवा.

ते कुंमने उत्तरदिसिनेतोरणे ए सीतोदा महानदी नीकळी थकी, देवकुरु क्षेत्र प्रत्ये आवती थकी, बेहु पर्वत प्रत्ये तथा १ निषध २ देवकुरु ३ सूरेंद्र ४ सुखस ५ विद्युत्प्रज्ञ ए पांचद्रहने बे जागे वहेचती थकी ते ड्रहमांहे वेहेती थकी, देव कुरु मांहेळी चो रासी हजार नदीये पूराती थकी, जद्रशाल वन मांहे आवती थकी, मेरु पर्वत पासे बे योजन अण पोहोती थकी, तिहांथी पश्चिमदिसि साहमी वढी थकी, नीचे विद्युत्प्रज्ञ नामा गजदंता पर्वतने जेदीने मेरुपर्वतने पश्चिमदिसे, पश्चिम महाविदेह क्षेत्रने बे जागे वेहेचती थकी, एकेकी चक्रवर्त्तिनी विजय थकी अछावीश अछावीश हजार नदीये पूराती पूराती थकी केमके ए नदीने दक्षण तटे आठ विजयठे तिहां एकेकी विजये गंगा अने सिंधु ए बे बे नदी चौद चौद हजारने परिवारेठे तेवारे अछावीश हजारनुं परिवारथयुं तथा उत्तरतडे पण एजरीते एकेकी विजये अछावीश अछावीश हजार नदीने परिवारे एरीते शोल वीज यनी बत्रीश नदी ते प्रत्येकने शौद हजारनो परिवार गणता ४४७००० नदी थइ तेनी साथे ७४००० नदी देवकुरुनी मेलवतां ५३२००० नदी सहीत पूराती थकी, जयंतनामा पश्चिमदिसि संबंधी जंबूद्वीपनां द्वारने नीचे जगतीने जेदीने लवण समुद्र मांहे जळेठे ए नदी ड्रहमांथी नीकळतां मूलप्रवाहे पच्चाश योजन पोहोल पणे तथा एक योजन उंड पणे ठे, पठी मात्राये मात्राये अनुक्रमे योजने योजने एकेक बाजुये चाळीश चाळीश धनुष एरीते बे पासे एंसी धनुषनी वृद्धि वधती वधती मुख मूळे समुद्र प्रवेशे पांचशे योजन पोहोल पणे अने दश योजन उंड पणे थइठे. बे पासे पद्मवरवेदिका अने वनखंके करी सहीत ठे.

निषध पर्वत उपर नव कूटठे तेनां नाम कहेठे:—एक सिद्धायतन कूट, बीजो निषध कूट, त्रीजो हरिवर्ष कूट, चौथो पूर्वविदेह कूट, पांचमो हरिसखिला कूट, षष्ठो धृतिकूट, सातमो सीतोदा कूट. आठमो अपरविदेह कूट, नवमो रुचक कूट. जेरीते चूळहिमवंतना कूटनुं उंचपणु, पोहोलपणु, परिधिपणु, राजधानी सहीत पूर्वे वर्णव्युं तेरीते इहां जाणवुं. निषध पर्वतने विषे घणा कूट निषधने संस्थाने ठे, निषधने अत्यंत सहन करे, पूठे स्कंधे

ઞાર સઢે તે નિષધ વૃષઞ પર્યાયાંતરે વૃષઞ બલઢને સંસ્થાને સંસ્થિત ઢે તથા ઢ્ઢાં નિષધ નામે ઢેવતા યાવત્ પઢ્યોપમને આઞલે વશેઢે, તેથી ઇનું નિષધ પર્વત ઇવું શાશ્વતું નામઢે.

ઢ્ઢાં નઢી ઢ્રહ અને કુંઢ આઢિકનો કાંઢક વિશેષ કઢે ઢે.

ઞરત ક્ષેત્રનેવિષે ગંગા અને સિંઢૂનઢી ઢે; તથા ઇરવત ક્ષેત્રનેવિષે રક્તા અને રક્તાવતી નઢી ઢે. ઇ બાઢેર ઢેમે રઢેલીઞ જે ઞાર નઢીઞ ઢે, તે બાઢેરનાં જે પઢ્ઢઢ્રહ તથા પુંઢ રીકનામે ઢ્રહઢે, તેનાં પૂર્વ પશ્ચિમનાં ઢ્ઢારનો જે વિસ્તારઢે, તે પ્રમાણે સવા ઢ યોઞન પઢોલ પણે હિમવંત તથા શિખરી પર્વતના શિખરથી નઢી વઢે ઢે. ઇટલે ઞતરે ઢે.

પૂર્વોક્ત જે ઞાર નઢીઢે, તે ઢ્રહનાં બારણાથી પાંચસેં યોઞન સુધી પર્વતના શિખર ઞપર બારણાં સન્મુખ પૂર્વ પશ્ચિમઢિશિ ઞઢ્ઢને પઢી પોતપોતાના વર્તન કૂટથી બાઢેર ના ઞરત અને ઇરવત ક્ષેત્રને સન્મુખ વલે. તે આવીરીતે જે ગંગાનઢી ઢ્રહના બારણા થી પાંચસે યોઞન સુધી પર્વત ઞપરે બારણાસામી ઞાય ત્યાં ગંગાવર્તન ઇ નામે પર્વતનું જે કૂટ તે થકી બાઢેરનું જે ઞરત ક્ષેત્ર ઢે તેને સન્મુખ વલે. ઇરીતે સિંઢૂનઢી પણ સિંઢૂ આ વર્તન કૂટથી ઞરતઢિશિ વલે, તથા રક્તાનઢી પાંચસે યોઞન બારણા સન્મુખ ઞઢ્ઢને પઢી રક્તાવર્તન કૂટથી ઇરવતઢિશિયે વલે. ઇમ રક્તવતી નઢી રક્તવલ્યાવર્તન કૂટથી ઇરવત ઢિશિ વલે, તો ઇ નઢી ઞરત તથા ઇરવત સામી વલે, તે વારે પર્વતના મઢ્ય ઞાગથી બાઢેર આવતાં પર્વત ઞપર કેટલા યોઞન ઞાલે? તે કઢેઢે:—સવાઢ યોઞન નઢીનું મુખ ઢે તે, પર્વતનો જે વિસ્તાર ઇક સઢસ્ર વાવન યોઞન, અને વાર કલા—તેમાંઢેથી કાઢી ઇ, તેવારે ઇક સઢસ્ર ઢેતાલીશ યોઞન ઞપર સવા સાત કલા રઢે. તેનું અર્ઢ પાંચસે ત્રેવીશ યોઞન અને શાઢી ત્રણ કલા ઞાઞેરી લાઞે ત્યાંઢાંલગી પર્વતના શિખર ઞપર નઢીવઢે.

શિખરના ઢેઢાથી મગરમત્સના મુખને આકારે, તથા વઞ્ઞરલ્લમય ઇવી જે ઞીઞી ઇનો ઞીઞી સરલ્લો આકારઢે, ઞીઞી ઇટલે પરનાલ તે મઢ્યે ઢઢ્ઢને વઞ્ઞમયઢે તલું જે હને વિષે, ઇહલો જે નઢીના પોતપોતાને નામે નિપાત કુંઢ, તેને વિષે મોતીની તૂઢેલી સેર તેને સઢશ પ્રવાઢે અવઢિન્ન ઢારાઇં કરી પઢે ઢે. ઇટલે ગંગાનઢી ગંગાનિપાત કુંઢમાં પઢેઢે, અને સિંઢૂનઢી સિંઢૂનિપાત કુંઢમાં પઢેઢે. ઇમ નઢિને નામે કુંઢ ઞાણવા.

ઢ્રહનાં બારણાનો વિસ્તાર સવાઢ યોઞન ઢે; તેમ નઢીપ્રવાહમાંઢે ઞીઞીનો વિસ્તા પણ સવા ઢ યોઞન ઢે, તેમઢે સરલ્લો વિસ્તાર ઢે. અને ઢ્રહનાં બારણાનો જે પઢોલ પણે વિસ્તાર તે વિસ્તારનાં પઞાશમે ઞાગે ઞીઞી ઞામી ઢે. અને તે ઞાઢ પણાથી ઞોઢુ ણી સર્વ ઞીઞીઞ લાંબી ઢે. ઇમ સર્વ ઢ્રહોની ઞીઞીનું પ્રમાણ ઞાણવું, ઇટલે બાઢેરનાં ઢે પર્વતને વિષે સવા ઢ યોઞન ઞીઞી પઢોલીઢે, અને મઢ્યના ઢે પર્વતની માંઢેલી ઢિ

शिनी जीर्णी पचीस योजन पहोली ठे. अने बाहेरनी दिशिनी जीर्णी साडाबार योजन प्रमाणे ठे. तथा महाविदेह क्षेत्रमां मांहेली जीर्णी पचास योजन प्रमाणे ठे. अने बाहेरनी जे जीर्णी ठे ते पचीस योजन प्रमाणे पोहोली ठे. तथा ए सर्व जीर्णी ठनुं जारुपणु ठे ते पोतपोताना विस्तारने पचाशमे जागे ठे. अने जारुपणार्थी चोगणु लांबपणु ठे.

हवे ते कुंरु वच्चे जे छीपठे, तेनुं प्रमाणे कहेठे. आठ योजन पोहोली पाणीमांठे. अने ते पाणी उपर बे कोस उंचो, अने वेदिका ए सहित, एवो नदीनी देवीने बसवानो छीपठे; तेमांहे डहनी जे श्री, लक्ष्मी प्रमुख देवी तेहना जवन सरखां जवन ते छीपने विषे ठे. ते कुंड साठ योजन पहोला ठे. अने सवा ठ योजन पहोलां वेदिकानां त्रण बार णाठे तथा दशयोजन उंचाठे. ए प्रकारे बीजापण जे कुंरु ठे तेहनुं जे विशेष ठे ते कहेठे.

कुंरुनुं पहोलपणु अने छीपनुं पोहोपणु तथा वेदिकानुं पहोलपणु ए त्रण विस्तार ते महाविदेह क्षेत्रमांहे बत्रीश विजयनी बत्रीश नदी ठे ते नदीना जे चोसठ कुंड ठे, तेनुं तथा तेमांहे जे छीपठे तेनुं तथा तेनी वेदिका, तेहनां बारणानो विस्तार, ते जरत अने ऐरवतना कुंरु सरखोठे. एटले विदेहना विजयमांहे जे चोसठ कुंड ठे, ते साठ योजन पहोलाठे. तेमध्ये आठ योजन छीपठे. तिहां वेदिकानां बारणानो विस्तार सवाठ योजन जाणवो. अने हिमवंत क्षेत्रनी बे नदी, हिरण्यवंत क्षेत्रनी बे नदी, वली बत्रीश विजयनी बार अंतर नदी ए सोल नदीमां जे सोल कुंड ठे, तेनो तथा तेहनां छीपनो तथा तेहनां वेदिकानां द्वारनो विस्तार पहोलानाथी बमणो जाणवो. एटले ए सोल नदीना कुंरु ए कसो वीस योजन पोहोलाठे अने ए कुंरुनां छीप सोल योजन पहोला ठे. तथा ए सोल कुंरुना वेदिकाना बारणानो विस्तार साडाबार योजन ठे. वली हरिवर्ष क्षेत्रनी बे नदी, अने रम्यकनी बे नदी—ए चार नदीना चार कुंरु, तेहना त्रण विस्तार आश्रीने चोगुणो जाणवो. एटले बशेने चालीश योजन एनां कुंरुनो विस्तारठे. अने बत्रीश योजन छीपनो विस्तारठे. तथा पचीस योजन वेदिकानां द्वारनो विस्तारठे. तथा महाविदेहनी बे नदीना बे कुंड, तेहना त्रण विस्तार आश्रीने आठगुणो जाणवो. ते कहेठे. चारसे एंसी योजन कुंरुनो विस्तार ठे. अने छीपनो विस्तार चोसठ योजननो ठे. तथा विदेहनां कुंरुनी वेदिकानां बारा पचाश योजन पहोलांठे, एम सर्व एकठा गणीए तो आ जंबूछीपमांहे नेवुं कुंरु थाय.

बाहेरनी जे चार नदी ठे, तेमनी गति कहेठे. चार नदी जे गंगा, सिंधु, रक्ता अने रक्तवती ते पोतपोताना निपात कुंरुथी बाहेरना जरत अने ऐरवतने सन्मुख बारणे नी कले. ते केम? तोके—गंगा अने सिंधु ए बे दक्षिणने बारणे जरत सामी नीकलेठे. अने रक्ता तथा रक्तवती ए बे उत्तरने बारणे उत्तरना ऐरवत दिशि नीकलेठे, पण ते जेवारे वैताढ्य लगी आवे, तेवारे ते प्रत्येक नदीने सात सहस्र नदीं बीजी मले ठे तेना परि

वारे परिवरीथकी वैताढ्यनी वच्चे अइने नीकलेठे. ते वैताढ्य पर्वत जेदीने नीकल्या पढी बाहेरना जरत तथा ऐरवत खेत्रना अरुंजागना वचमांथी पूर्व अने पश्चिमदिशि समुद्र सन्मुख वले एटले जरत क्षेत्र मांहे गंगानदी पूर्वदिशि जाय, अने सिंधुनदी पश्चिमदिशि जाय तथा ऐरवत मांहे रक्तानदी पूर्वदिशि जाय अने रक्तवती नदी पश्चिम दिशि जाय, पण ते चार नदीं वैताढ्य पर्वतने जेदीने नीकल्या पढी वली बीजी सात सहस्र नदीं करी सहित थाय सर्व मली चौदसहस्र नदीने परिवारे परवरी थकी, जे म पूर्व वैताढ्यने जेदी नीकली ठे तेनीपरे जगतीने पण जेदीने समुद्रमांहे जाय ठे.

नदीनो विस्तार तथा उंडपणुं कहेठे. सर्व नदीं ने पहेला नीकलतां कुंडना द्वार सरखो विस्तार होय अने अंतने विषे प्रथमनां विस्तारथी दशगुणी विस्तारपणे होय ते आचीरीते के—जरत तथा ऐरवतनी चार नदींठे, तेनो प्रथम सवा ठ योजन विस्तार ठे. अने ठेठे समुद्रमांहे जले तेवारे साडी बासठ योजन थाय. तथा बत्रीश विजयनी चोसठ नदीं ठे. तेहनो पण एज आदिअंतनो विस्तार ठे, तेहना जे चोसठ कुंठ ठे, ते बाहेरना कुंड सरखा ठे, ते माटे सरखो विस्तार कह्यो. वली हेमवंत तथा हिरण्यवंतनी चार नदी, अने विजयनी बार अंतरनदी, एवं सोल नदींनो आदिविस्तार साडाबार योजन ठे. तो ठेठे ए कसो पचीश योजननो विस्तार जाणवो, वली हरिवर्ष तथा रम्यकक्षेत्रमांहे जे चार नदीं ठे तेहनो विस्तार पचीश योजन धुरेठे. तो अंतनेविषे बसें पचास योजन विस्तार थाय ठे. अने विदेह क्षेत्रे जे सीता अने सीतोदा बे नदी ठे तेहनो प्रथम विस्तार पचाश योजननो ठे, तो ठेठे पांचसें योजन विस्तारठे. तथा ए सर्वजे मोटी नदी ठे, ते विस्तारथी पचासमे जागे उंठी ठे, जेम गंगानदी आदि विस्तार सवा ठ योजन ठे, तेने पचाशे जाग देतां योजननो आठमोजाग आवे, तो प्रथम नीकलतां योजनने आठमे जागे उंडी ठे, अने ठेठे साडी बासठ योजन विस्तार ठे, तेने पचाशे जाग देतां सवा योजन आवे, तेमाटे ठेठे सवा योजन उंठी जाणवी, एम समस्त नदीनो विस्तार जाणवो.

हवे पांच क्षेत्रनी नदीनी गति कहेठे. पांच क्षेत्रनी जे महानदींठे ते पोत पोताना बारणानी दिशि डहनो जे विस्तारठे, ते काढतां जे पर्वतना विस्तारनुं अरुं थाय तेटला योजन नदी पर्वतना शिखर उपर वहे. ते केम ? तो के—हेमवंत अने शिखरीनो विस्तार १०५३ योजन अने बार कला ठे. तेमांहेथी डहनो विस्तार पांचसें योजन काढीए तेवारे ५५३ योजन अने बार कला रहे. तेनुं अरुं २२६ योजन अने ठ कला थाय. तो पोताना डहद्वारनां मुखथी पर्वतनां शिखर उपर २२६ योजन अने ठ कला वहेठे. अने महाहिमवंत तथा रुक्मी पर्वतने विषे चार नदी १६०५ योजन अने पांच कला पर्वतना शिखर उपर चाले, तथा निषध अने नीलवंत संबंधी

चार नदीउं ७४२१ योजन अने एक कला पर्वतनां शिखर उपर चाखे ए रीते डहनो विस्तार पर्वतनां विस्तार मांहेथी काढी अरु करीए तेवारे एतुं पूर्वोक्त मान लात्रे तेवार पढी पर्वतना विस्तारने ठेठे जइने पोतानी जीजी उपर अइने पोतपोताना नि पात कुंडने विषे ते नदीउं पडेठे, तथा पोतपोतानी जीजीना पहोलपणाने पचीशमे जागे वृतवैताढ्य तथा मेरु तेने मूकीने जे नदीनुं मुख इकाण सामुं ठे, ते नदी पूर्व समुद्रदिशि तरफ वले अने जे नदीनुं मुख उत्तर सामुं ठे, ते पश्चिम समुद्रदिशि वले; एटले हेमवंत तथा हिरण्यवंतनी बे नदी वृतवैताढ्यने बे कोस वेगलो मूकी पूर्व तथा पश्चिमदिशिए वले तथा हरिवर्ष अने रम्यकूनी बे नदी चार कोश वृत वैताढ्यने वेगलो मूकीने पूर्व पश्चिम दिशिए वले. तथा महा विदेहनी बे नदी आठ कोस मेरु पर्वतने वेगलो मूकी पूर्व पश्चिम दिशिए वले.

हेमवंत क्षेत्रमांहे रोहितांशा तथा रोहिता एवे नामे बे नदीठे, ते प्रत्येकनो गंगानदी करतां बमणो परिवारठे. एटले अछावीश हजार नदीउंना परिवारे परिवरि ठे तेमज हिरण्यवंत क्षेत्रमांहे सुवर्णकुला अने रूपकुला एवे नामे बे नदी ठे, तेपण रोहितांसा नदी नी परे अछावीश हजार नदीउंए परिवरीठे, तथा हरिवर्ष क्षेत्रनेविषे हरिकंता अने हरिसखिला नामे बे नदीठे ते गंगानदीथी चोगणा परिवार वाली ठे. एटले ठप्पन हजार नदीउंए परिवरीठे. तथा ए पूर्वोक्त नदी सदृशरम्यक् क्षेत्रने विषे नरकंता अने नारी कंता ए नामे बे नदीउंठे ते पण एटलीज ठप्पन हजार नदीए परिवरी ठे. तथा सीतोदा अने सीता ए बे नदी महाविदेह क्षेत्रमां ठे ते एकेकी नदीमांहे पांच लाख बत्री स हजारने आरुत्रीश नदीउं संबधी पाणी पडे ठे. कुरुक्षेत्रनेविषे चोराशी हजार नदी उंठे. वली ठ अंतर नदीठे तथा एकेकी विजये गंगा, अने सिंधु ए बे बे महानदीउं ठे, तो सोल विजयमांहे बत्रीश महोटी नदीउं अइ ते प्रत्येक नदीनो परिवार चौद हजारनो गणतां ४३०००० हजार आय, तेनी साथे पाठली कुरुक्षेत्रादिकनी ०४०३० नदीउं मेलवीए तेवारे ५३२०३० नदीउंनुं पाणी सीतोदा नदीमांहे जले ठे. तथा सीता मांहे पण एटली नदीउंनुं पाणी जले ठे. ते माटे बमणी करीए तेवारे १०६४०७६ एटली नदीउं महा विदेह क्षेत्रमांहे जाणवी.

हवे जंबूछीपनी सर्व नदीउंनी संख्या कहेठे बत्रीश विजयनी चोसठ नदी, तथा सीतोदा अने सीता ए बे नदी तथा जरतादिकनी गंगा प्रमुख बार नदी ए सर्व एकठी करतां अछोतेर महोटी नदीउं जाणवी. अने बत्रीश विजयनी बार अंतर नदीउं ए नेतुं मूलगी नदी ठे. बाकी बीजी परिवारनी नदीउं चौद लाखने ठप्पन हजार ठे.

हवे महाविदेह क्षेत्रनी वक्तव्यता कहे ठे.

नीलवंत नामा वर्षधर पर्वतने दक्षिणदिसे तथा निषध नामा वर्षधर पर्वतने उत्तर दिसे महाविदेह नामा क्षेत्र ठे ते पद्वयंकने संस्थाने संस्थित ठे, ३३६७४ योजन उपर चार जाग एटलुं पोहोल पणे ठे एनी बाह पूर्व पश्चिमे ३३७६७ योजन उपरसात जाग लांब पणेठे तेनी जीवा पणठ महाविदेहना मध्य जागने विषे पूर्व पश्चिमदिसे लांबी एक लाख योजन ठे एतुं धनुषष्ट १५७११३ योजन उपर शोल जाग कांश्क जाजेरा ए टलुं परिधि पणे एकेकी दिसिये ठे, एटले जंबूघ्रीपनो ३१६३५७ योजन प्रमुख जे पूर्वे परिधि कह्योठे, तेनुं अर्द्ध करीये तेवारे महाविदेहनी एकदिसितुं धनुषष्ट थाय अने वे दिसिनां धनुषष्ट एकठा करीये तेवारे जंबूघ्रीपनी पूर्ण परिधि थाय एम जाणतुं.

महाविदेह क्षेत्र चार प्रकारेठे एक मेरु थकी पूर्वे पूर्व महाविदेह, बीजो मेरु थकी पश्चिमे अपरविदेह, त्रीजो मेरु थकी दक्षिणे देवकुरु क्षेत्र चोथो मेरु थकी उत्तरे उत्तर कुरु क्षेत्र ठे. जरत ऐरवत, हेमवंत, हिरण्यवंत, हरिवर्ष, अने रम्यकू ए ठए क्षेत्र थकी लांब पणे, पहोल पणे, परिधि पणे करीने घणु विस्तिरण ठे एटले घणु महंत महोदुं ठे, अथवा वत्रीश विजयने विषे पांचशे धनुषनी कायानां महोटा शरीर वाला मनुष्यठे, तथा देवकुरु अने उत्तरकुरुने विषे त्रणगाउनं शरीर वाला मनुष्य वसे ठे एरीते शरीर आश्रयी मनुष्य पण महोटा ठे, तथा महाविदेह नामे देवता महाऋद्धिवंत यावत् एक पद्योपमने आउखे इहां वसे ठे, तेथी एतुं महाविदेह एवुं शाश्वतुं नाम ठे.

हवे ए महाविदेहमां चार गजदंतगिरिठे तेनी वक्तव्यता कहे ठे:-

१ नीलवंत पर्वतने दक्षिणदिसिये अने मेरुने उत्तर पश्चिमदिसि वच्चे वायुकुंणे तथा गंधिलावती विजयने पूर्वदिसे, उत्तरकुरुने पश्चिम दिसे, इहां गंधमादन नामे गजदंत पर्वत पीले वर्णे ठे ३०२०९ योजन उपर ठ जाग लांब पणे ठे तथा नीलवंत पर्वतनी पासे चा रसो योजन उंच पणे ठे, शो योजन उंच पणे धरतीमां ठे, पांचशे योजन पोहोल पणे ठे. पठी मात्राये मात्राये अनुक्रमे उंच पणे तथा उंड पणे वधतो वधतो थको अने पो होल पणानी हाणीये घटतो घटतो थको मेरु पर्वतनी समीपे पांचशे योजन उंच पणे तथा सवासो योजन उंच पणे धरतीमां अने अंगुलनो असंख्यातमो जाग पोहोल पणे हाथीनां दांतने संस्थाने संस्थित ठे, सर्व रत्नमय ठे, वे पासे वे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे करी सहीत ठे, यावत् उपरे घणा देवता बेशे ठे, इत्यावि सर्व पूर्वपरे कहेतुं. ए गंध मादन पर्वत उपर सात कूटठे तेना नाम कहे ठे:- एक मेरु दिसिये सिद्धाय तन कूट, तेवार पठी अनुक्रमे नीलवंत सन्मुख बीजो गंधमादनकूट, त्रीजो गंधिलाव ती कूट, चोथो उत्तरकुरु कूट, पांचमो स्फाटिक कूट, षष्ठो लोहिताक्षकूट, सातमो अ

नंद कूट, तिहां सिद्धायतन कूटने विषे सिद्धनुं देहेरुं ठे तथा स्फाटिक कूट अने लोही ताक कूट ए बे कूटने विषे जोगंकरा अने जोगवती ए बे दिक्मारिका देवीनो निवास ठे शेष चार कूटने विषे कूटने नामे देवता रहे ठे. ए सर्वे कूट पांचशे योजन उंच पणे ठे.

ए पर्वतनो गंध ते कोष्ट सुगंधना पुराने पीसतां, चूर्ण करतां, उकेरतां थकां, जूजू आ विखेरतां थकां, जोगवतां, गंधलेता थकां, जेम उत्तम उदार मनोहर गंध नीकले, तेथी पण इष्टतर अति उत्तम गंधठे ते गंधे करी मद ठे, तथा इहां गंधमादन नामे देवता महाकृद्धिवंत वसे ठे, तेथी एतुं गंधमादन एतुं शाश्वतुं नाम ठे.

१ मेरु पर्वतने इशानकूणे, नीलवंत पर्वतने दक्षिण दिसे, उत्तरकुरुने पूर्वदिसे, कञ्च नामा विजयने पश्चिमदिसे, माध्यवंत नामे गजदंत पर्वत वैदूर्य रत्नमय नीले वर्णे ठे, ते गंधमादन गजदंता प्रमाणे लांबुं पोहोळुं ठे, शेष अधिकार तेमज जाणवुं.

माध्यवंत गजदंतगिरिना नवकूटनां नाम कहेठे. एक मेरुदिसिये सिद्धायलकूट, तेवार पढी अनुक्रमे नीलवंत पर्वतने सन्मुख बीजो माध्यवंतकूट, त्रीजो उत्तर कुरुकूट, चोथो कञ्चकूट, पांचमो सागरकूट, षष्ठो रजतकूट, सातमो सीताकूट, आठमो पूरणचद्र कूट, नवमो हरिस्सह कूट, ए सर्वे कूट पांचशे योजन उंचपणे ठे तिहां सागरकूट अने रजत कूट ए बे कूटने विषे सुजोगा अने जोगमाखिनी नामे देवी वसेठे शेष कूटने नामे तिहां वसनारा देवोना पण तेहीज नाम जाणवा. एमां हरिस्सह कूट उपर हरिस्सह राज धानीनो हरिस्सह नामे देव वशे ठे, ए कूट हजार योजन पोहोळुं अने हजार योजन उंचुं यमक पर्वतने प्रमाणे ठे अने माध्यवंत गजदंत पांचशे योजन पोहोळुं ठे माटे बे पासे अष्टीशे अष्टीशे योजन पर्वतथी वाहेर अधर रहुं ठे, ए हरिस्सह देवनी रां जधानी अन्य जंबूद्वीपे चोरासी हजार योजननी लांब पणे पोहोळ पणे ठे.

ए माध्यवंत गजदंताने विषे घणा सरिकानामे वनस्पतिना गुल्म, नवमालतीना गुल्म, यावत् मगदंतिका वनस्पतिनां गुल्म ठे ते गुल्म सर्वदा पंचवर्णना फूले फूले ठे तथा जूमिने विषे वायरे कंपित एवा अग्रशालाने विषे फूलनां पूंज तेने उपचारे करी सही त करे ठे तथा इहां माध्यवंत देव एक पट्यायुये वशे ठे, माटे एतुं माध्यवंत नाम ठे.

३ निषध पर्वतने उत्तर दिसे, मेरु पर्वतने दक्षिण पूर्वने वञ्चे अग्निक्वणे, मंगलावती वि जयने पश्चिम दिसे अने देवकुरुने पूर्वदिसे, सोमनस नामे गजदंत पर्वत स्वेतवर्णेठे ते लांबोपोहोळो माध्यवंतनी पेरे जाणवुं ए रूपमय ठे इहां घणा देवता देवांगना कुचेष्टा रहित सौम्य पणे सुमन एटले शोकादि रहित विचरे ठे, तथा सोमनस नामे महर्द्धिक देव इहां वशे ठे तेथी एतुं सोमनस नाम ठे. एनां उपर सात कूट ठे तेनां नाम कहेठे:— एक मेरुनी दिसिथी सिद्धायतन कूट, तेवार पढी अनुक्रमे निषध पर्वतनी सन्मुख

बीजो सोमनस कूट, त्रीजो मंगवलाती कूट, चोथो देवकुरु कूट, पांचमो विमल कूट, षष्ठो कांचन कूट, सातमो वशिष्ठ कूट, ए सर्वे कूट पांचशे योजन उंच पणे पहोल पणे ठे तिहां विमल अने कांचन ए बे कूटने विषे सुवत्सा अने वत्समित्रा ए बे दिक्कुमारिका देविनो निवास ठे तथा शेष कूटने विषे कूटने नामे देवना निवास जाणवा.

४ तथा निषध पर्वतने उत्तर दिसे अने मेरुने दक्षण पश्चिम वच्चं नैरुतकूणे, पद्मविजय ने पूर्वदिसे विद्युत्प्रज नामे गजदंत पर्वत सर्व तपनीय राता सुवर्ण मय ठे यावत् उपर देवता वसे ठे इत्यादि सर्व पूर्व परे कहेवुं. एनां नव कूटनां नाम कहे ठे:-प्रथम मेरुदिसिथे सिद्धायतन, तेवार पढी अनुक्रमे निषध पर्वतनी सन्मुख बीजो विद्युत्प्रज, त्रीजो देव कुरु, चोथो पद्म, पांचमो कनक, षष्ठो सौवस्तिक, सातमो सीतोदा, आठमो शतजवल, नवमो हरि कूट. तेमां हरि कूट ते पूर्वोक्त हरिस्सह कूटनी पेरे हजार योजन पोहोलो, उंचोठे, अने शेष आठ कूट पांचशे योजन उंचा जाणवा तथा कनक कूट अने सौवस्तिक ए बे कूटने विषे वारिषेणा अने बलाहिका नामांतरे पुष्पमाला अने अर्नंदिता दिग्कुमारिका देवी वशेठे, शेष कूटने विषे कूटने नामे देवता जाणवा. तथा ए पर्वत बीजलीनी पेरे रक्तसुवर्णमयपंणा माटे चोफेर अवजासे ठे, उद्योत करे ठे, कांति करे ठे तथा इहां विद्युत्प्रज नामे देवता एक पळ्योपमायुये वशे ठे तेशी एतुं विद्युत्प्रज एतुं शाश्वतुं नाम ठे. ए चार गजदंत उपर प्रत्येके दिक्मारि देवीनां बे बे कूट कह्या ते अधलोकने विषे वसनारी दिक्मारी जाणवी एनां रेवानां जवन गजदंत गिरिने नीचेठे.

कुरुक्षेत्रनी जे सीतोदा तथा सीतानदी तेहनुं पन्वा नीकलवानुं स्थानक जे जीची तिहांथी १६४९५ योजन बेपासे मेरुपर्वत साहामां ए चार गजदंत गिरीठे, ए निषध तथा नीलवंत पर्वतमांहेथी नीकल्याठे, हाथीनां दांतने आकारे देखायठे, माटे एने गजदंत गिरी कहिए. अग्नि कूणे सोमनस नामे गजदंतगिरि ठे, तिहांथी धुरमांढीने प्रदक्षणावर्त्त गणतां चार दिशीनेविषे अनुक्रमे चार गजदंत गिरीठे.

हवे ए महाविदेहने विषे उत्तरकुरु नामे युगळीयानुं क्षेत्र वखाणे ठे. मेरु पर्वतने उत्तरदिसे अने नीलवंतनी दक्षणदिसे तथा गंधमादन पर्वतनी पूर्वदिसे अने माध्यवंतनी पश्चिमदिसे इहां उत्तर कुरुनामे क्षेत्र ठे ते पूर्वपश्चिमे लांबो अने उत्तर दक्षणे पोहोलो अर्कू चंद्रमाने संस्थाने संस्थित ठे, ११०४१ योजन उपर बे जागर एटलो पोहोल पणे ठे, एनी जीवा पण ठ उत्तरदिसे पूर्वपश्चिमे लांबी, बे दिसाये गजदंता पर्वतने फरसी ठे, ते ५३००० योजन लांब पणे ठे, एतुं धनुषष्ट ६०४१० योजन उपर वार जाग परिधि पणे ठे. ते आवीरीते:-३०१०५ योजन उपर ठ कला एटळुं

एकेको गजदंत गिरि लांबो ठे, तेवा गजदंत गिरिनी वच्चमां ए क्षेत्र अर्द्ध चंद्राकारे ठे, माटे बे गजदंतना लांब पणानां योजन जेवारे एकठा करिये तेवारे ६०४१८ योजन उ पर बार कला एटलुं कुरुक्षेत्रनो धनुष्य थाय एटले धनुषनो बाहेरलो पुंठनो जाग अर्द्धचंद्राकारनुं थाय. ए क्षेत्रमां युगलिया मनुष वसे ठे, तिहां सर्वदा पहेला आरा सरखो जाव वत्तेठे, तथा ए उत्तरकुरु क्षेत्रमां महाऋद्धिवंत उत्तरकुरुनामे देवता एक पद्यायुये वशेठे, माटे एनुं उत्तरकुरु एवुं शाश्वतुं नाम ठे.

उत्तर कुरुने विषे नीलवंत पर्वतना दक्षिण दिसिनां चरमांत ठेहेनाथी ८३४ योजन उपर सातीआ चार जाग एटली अबाधाये सीता महानदीने एक पूर्वतटे अने बीजो पश्चिम तटे ए बे तटे बे यमक नामे पर्वत ठे, ते एक हजार योजन उंच पणे तथा अढीशे योजन उंच पणे धरतीमां तथा मूलमां हजार योजन लांब पणे पोहोल पणे ठे, वच्चमां ७५० योजन लांब पणे पोहोल पणे ठे, अने उपर पांचशे योजन लांब पणे पोहोल पणे ठे, तथा मूलमां ३१६२ योजन कांश्क अधिक परिधि पणे ठे, मध्यमां ३३७३ योजन कांश्क जाजेरा परिधि पणे ठे, तथा उपर १५८१ योजन कांश्क जाजेरा परिधि पणे ठे, ए रीते मूलमां विस्तिरण ठे, वच्चमां सांकना ठे, अने उपर पातला ठे, यमक एटले जोरुले जण्या जाइ तेने संस्थाने संस्थित ठे. एटले बेहु सरखे संस्थाने ठे, सर्व कनक सुवर्णमय ठे, प्रत्येके पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी वींठ्या ठे, ते वेदिका वन खंडनुं वर्णन पूर्वदी परे जाणवुं तेना उपर बे प्रासादावतंसक ठे, ते साका बाशठ योजन उंचा तथा सवाएकत्रीश योजन लांबा अने पोहोला ठे, तेनो वर्णन विजय देवतानां प्रासादनी परे जाणवो ए पर्वते न्हानी वावी तथा महोटी वावीने विषे यावत् बिह्व पंक्तिने विषे घणा कमल यमक पर्वत सरिखे वर्णे ठे, तथा इहां बे यमक नामे देवता महा ऋद्धिवंत यावत् देव संबधि जोग जोगवता थका विचरे ठे, माटे एनुं यमक पर्वत एवुं शाश्वतुं नाम ठे, ए बे देवोनी अनेरे जंबूद्वीपे जूदी जूदी यमका नामे राजधानीठे, तेनो वर्णन सर्व विजय देवनी परे जाणवो.

हवे उत्तर कुरुक्षेत्रनां ड्रह कहेठे.

नीलवंत पर्वत थकी ८३४ योजन अने उपर सातीया चार जाग कांश्क जाजेरा ए टली अबाधाये सीता महानदीनी वच्चमां प्रथम नीलवंतनामे ड्रहठे, ते जेम पद्मड्रह नो वर्णन कह्यो तेमज एनो वर्णन पण जाणवो ए बे बाजुये पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे सहीतठे, तिहां नीलवंत नामे नागकुमार देव वसेठे.

ते नीलवंत ड्रहनी पूर्व अने पश्चिमदिसिये बेहु पासे दश दश योजनने आंतरे मली वीश कांचन पर्वत ठे ते प्रत्येक एकशो योजन उंच पणे अने मूलमां एकशो योजन

લાંબા પોહોલાઢે, તથા વચ્ચમાં પંચોતેર યોજન અને ઉપરે પચાશ યોજન લાંબા પોહોલા ઢે, તથા મૂલમાં ૩૨૬ યોજન, મધ્યમાં ૨૩૨ યોજન અને ઉપરે ૧૫૬ યોજન કાંઢક અધિક પરિધિ પળેઢે, તેમ ં પ્રથમ નીલવંતઢ્રહ થકી વલી પૂર્વોક્ત ૬૨૪ યોજનની અવાધાયે ઢીજો ઉત્તરકુરુ ઢ્રહ ઢે, વલી તેથકી તેટલીજ અવાધાયે ઢીજો ચંદ્ર ઢ્રહ ઢે વલી તેથકી તેટલીજ અવાધાયે ચોથો ંરવત નામે ઢ્રહ ઢે, વલી તે થકી તેટલીજ અવાધાયે પાંચમો માઢ્યવંત નામે ઢ્રહ ઢે, ં પાંચ ઢ્રહની વક્તવ્યતા સરખી ઢે, ં પાંચે ઢ્રહનાં સો કાંચનગિરિ ઉત્તર કુરુમાં ઢે. ં ઢ્રહના ઢેવોની ંક પઢ્યોમ સ્થિતિ જાણધી.

હવે ઉત્તર કુરુમાં જંબૂ વૃઢ વચ્ચાળે ઢે.

નીલવંત પર્વતને ઢક્ષણ ઢિસે તથા મેરુ પર્વતને ઉત્તર ઢિસે અને માઢ્યવંત ગજઢંત ગિરિને પશ્ચિમ ઢિસે તથા સીતા મહાનઢીનાં પૂર્વને તઢે, ઉત્તર કુરુ ક્ષેત્રને વિષે જંબૂ પીઠ નામે પીઠ ઢે, તે પાંચશે યોજન લાંબ પળે પોહોલ પળે ઢે, તથા ૧૫૬ યોજન કાંઢક જાજેરા પરિધિ પળે ઢે, ં પીઠ મધ્ય ઢાગે ઢાર યોજન જાઢ પળે ઢે, ંટલે ંચપળે ઢે, પઢી માત્રાયે માત્રાયે અનુક્રમે પ્રઢેશની હાણીયે ઘટતું ઘટતું થકું સર્વે ચોફેર ઢેઢ્યા પ્રઢેશને વિષે ઢે ઢે ગાઢ ચારે ઢિસિયે ંચ પળે ઢે, ં પીઠ સર્વ જાંબુનંઢ રત્નમય ઢે, ંધાં સરાવલાને આકારે ઢે, તે પીઠ ંક પઢ્યવરવેઢિકા અને ંક વનલંઢે કરી ચોકફેર વીંઢ્યુ ઢે, તે વેઢિકા ઢે કોશ ંચા અને ંક કોશ પોહોલા ંવા મનાહર ચાર ઢારણા તે ંકરી સઢીત ઢે. તેનો ઢર્ણન પૂર્વલી પરે કહેવો, તે પીઠને ચાર ઢિસેયે ચાર પગ થાલીયા ઢે, તેતું ઢર્ણન ંવાવત્ તોરણ ઢત્રાતિઢત્ર પર્યંત પૂર્વલી પરે કહેવો, તે પીઠનાં મધ્ય ઢાગમાં વચ્ચો વચ્ચે મણિપીઠિકા ઢે, તે આઠ યોજન લાંબ પળે પોહોલ પળે અને ચાર યોજન જાઢ પળે ંટલે ંચ પળે ઢે, તે સર્વ મણી મય ઢે, તે ઉપરે જંબૂ વૃઢ અપર નામ સુઢર્શન કહ્યો ઢે, તે નામે વૃઢ ઢે. તે આઠ યોજન ંચો ઢે, અઢ્ઢ યોજન ઢૂમિમાં ંકો ઢે, ઢે યોજનનો લંધ ઢે, ઢ યોજનની શાખા ઢે, તે વૃઢ મધ્ય ઢાગે આઠ યોજન લાંબુ પોહોલું ઢે, સાઢા આઠ યોજન સર્વાગે ંચ પળે કહ્યું ઢે.

તે જંબૂ સુઢર્શન વૃઢના વજ્રરત્ન મય મૂલ ઢે, રૂપામય પ્રતિષ્ઠિત હઢ શાખા ઢે, અરિષ્ટ રત્નમય વિસ્તિરણ કંઢ ઢે, વૈઢ્ય રત્નનો ઢેઢીપ્યમાન લંધ ઢે, ંત્તમ રૂપામય મૂલથીજ વિસ્તિરણ શાખા ઢે, નવા નવા મણિ અને રત્ન તેની નવા નવા પ્રકારની શાખા અને પ્રશાલા ઢે, વૈઢ્ય રત્નનાં પાનઢા ઢે, તે પાનઢાના વીંટ રાતા સુઢર્ણના ઢે, જંબૂનંઢ રત્નમય રાતા ઢીસી, કોમલ પત્ર અને અંકૂરા શુકુમાલ ઢે, વિચિત્ર મનોહર મણિરત્નનાં ફલ અને સુગંધિત ફૂલ ઢે, તે ફૂલ અને ફલને ઢારે કરીને તે વૃઢની શાખા નમી ઢે, ઢાયા સઢીત

हे, कांति सहीत हे, सश्रिक हे, उद्योत सहीत हे, अत्यंत मनने सुख उपजावनार हे.

एटले जंबूवृक्षानी मूलने विषे जे जटावे ते वज्ररत्नमय हे तथा मूलथी उपर जे कंद हे, ते श्यामवर्ण रत्नतुं हे, तथा जंबूवृक्षानी माल वैडूर्य रत्न एटले नील वर्ण रत्ननी हे, तथा महोटी शाखा पीला सोनानी हे, तथा लघु शाखा कांश्क धोला सोनानी हे, तथा एना पानडा जे हे ते वैडूर्य रत्न एटले नीला रत्ननां हे, तथा पत्रनी बीटवे ते तपनीय सुवर्ण समा न महा तेजवंत हे, तथा जे जे पल्लव एटले नवां उगतां पत्र हे, ते रक्त सुवर्णनां हे, तथा नवा पत्र रूपामय हे, तथा मध्य जागनी वच्चेनी महोटी माल ते रूपामय हे, तथा फल फूल सर्व रत्नमय हे. तथा बे कोश चूमीमध्ये उंरु पणे जाको हे, तथा थरुने विषे अने महोटी शाखाने विषे अने मध्य जागे जे मूल शाखा हे, तेने विषे बे कोशतुं पोहोळ पणुं हे, तथा आठ कोश थडनी माल लांबी हे, तथा थडनी शाखा थकी चार दिसिये चार महोटी माल जिहांथी नीकली हे, तिहांथी पंदर कोश लांबी हे तथा मध्य जागनी मूलगी लांबी डाल उंचीवे ते चोवीश कोश लांबी हे तिहां चार दिसिनी चार शाखाने विषे श्री देवीना जवन सरखा चार जवनवे, तथा जे पांचमी महोटी चोवीश कोशनी मालवे, ते उपर श्रीदेवीना जवन सदृश जिनजवन जाणतुं तिहां पूर्वदिसिनी शाखानां जवनने विषे जंबूद्रीपनो अनाद्धित नामे जे अधिष्टायक देव तेने सुवानी सद्या हे, तथा शेष जे त्र ण दिसिना त्रण जवन हे, तेने विषे अनाद्धित देवताने बेसवा योग्य सिंहासन हे.

ते जंबू सुदर्शन वृक्षानी जे पीठिका हे ते मूलमां अनुक्रमे बारवेदिकाये करी वींटेली हे, ते वेदिकाउंनो वर्णन पूर्वली परे जाणवो, ते मूल जंबूवृक्षथी अर्ध प्रमाण उंचाइ वा ला एवा बीजा १०० जंबूवृक्षे करी सर्व दिसे चोफेर वींटेळुं हे, तेमां अनाद्धित देवना आचूषणादिकवस्तु रहेवे, तथा बीजी परिधिये वायुकूणे, उत्तरदिसे अने इशाण कूणे अनाद्धित देवताना चार हजार सामानिक देवना चार हजार जंबूवृक्ष हे, तथा पूर्व दिसे अनाद्धित देवतानी चार अग्रमहीषीना चार जंबूवृक्ष कह्या हे, इत्यादिक सर्व १२०५०१२० जंबूवृक्षना पद्मद्रहनी श्रीदेवीना कमलनी परे इहां पण परिवार हे.

ते जंबूवृक्ष एक अच्यंतर बीजुं मध्य त्रीजुं बाह्य एवा त्रण वनखंड शो शो योजनना तेणे करी सर्वदिसे चोफेर वींठ्युं हे, तेमां प्रथम वनखंडनी चारदिसाये पच्चाश पच्चाश योजन अवगाही जश्ये तिहां एकेकुं जिनजवनवे, एम चारेदिसाना चार जवन एटले चैत्यगृहवे, ते पूर्वदिसिनी शाखा सरखा जवन जाणवा तेमज तेवननी इशानादिक चार विदिसिने विषे पच्चाश पच्चाश योजन अवगाही जश्ये तिहां प्रत्येक विदिसिये चार चार नंदापुष्करणी हे, ते प्रत्येके एककोश लांबी, अर्धकोश पोहोळी अने पांचशे धनुष उंनो

ढे, ते चार चार पुष्करणीर्तनां मध्यमां वच्चोवच्च एकेक प्रासादावतंसक ढे, ते प्रासादावतंसक बीजी त्रण दिसिनी डालने विषे जेवा जवनढे, तेवा जाणवा.

ते जिनचुवन तथा प्रासादनां आठ आंतराने विषे श्रीजिनचुवने सहीत आठ कूट जाणवा. ते प्रत्येक कूटनो बार योजन मूले विस्तारढे, मध्यमां आठ योजन अने शिखर उपर चार योजन विस्तार ढे, तथा आठ योजन उंचा ढे, एवा आठ तरुकूट कहा ढे.

ए जंबू सुदर्शन वृद्ध ते बीजा घणा तिलकवृद्ध, लजकवृद्ध, यावत् राजरुख प्रमुख वृद्धे करी सर्वदिसिये चोफेर वीटेलोढे, ए वृद्ध उपर घणा आठ आठ मंगलिक, तथा कृष्ण, चामर, ध्वजा यावत् ठत्रातिठत्र ढे.

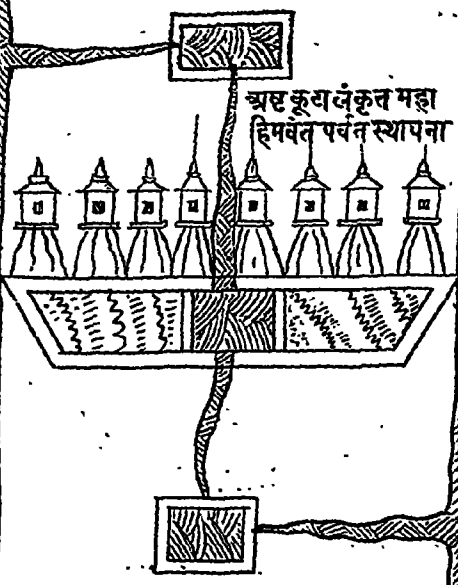
एनां वार नाम अर्थ सहीत कहेढे:—एक शुजदर्शन माटे सुदर्शन, बीजो अनिष्फल माटे अमोघ, त्रीजो मणिरत्नेकरी बरू पीठ माटे सुप्रतिबरू, चोथो यशनो धरनार माटे यशो धर, पांचमो जंबूछीपनुं नाम विस्तारे माटे विदेहजंबू, षष्ठो सोमनस एटले उत्तमवृद्ध जेने देखवाथी केवारे मन दुष्ट नथाय सर्वदा प्रीतिवंत मन थाय, सातमुं शाश्वत नाम माटे नित्य, आठमुं अनादिकालनुं मंफित माटे नित्य मंडित, नवमुं कट्याणकारि उपद्रव रहीत माटे सुजद्र. दशमो विस्तिरणवृद्ध माटे विशाल, अगीआरमुं सुनिष्पन्नरूप माटे सुजात वारमो एना दर्शनथी शुजमन थाय माटे सुमन, ए वृद्ध उपर जंबूछीपनो धणी अ नाहत देव एकपदयोपमने आउखे वसे ढे, माटे एनुं जंबू वृद्ध एवुं शाश्वतुं नामढे.

हवे ए महाविदेहने विषे देवकुरु नामे युगल्लियानुं क्षेत्र बखाणे ढे.

मेरुने दक्षिणदिसे अने निषध पर्वतने उत्तर दिशिसे देवकुरु नामे युगल्लियानुं खेत्रढे ते ११०४२ योजन उपर वे जाग पोहोळुं ढे ते आवी रीते:—गजदंत गिरिमध्ये मेरुपर्वत थकी दक्षिणदिशिनेविषे देवकुरुक्षेत्रढे, अने मेरुथी उत्तरदिशिनेविषे उत्तरकुरुक्षेत्रढे. ए वे युगल्लियाना क्षेत्रढे ते अर्द्धचंद्रमाने आकारे रह्यांढे, तिहां महाविदेह क्षेत्रनुं विस्तार तेत्रीश सहस्र ठसेने चोरासी योजन अने उपर चार कलाढे. तेमांहेथी मेरुनु विष्कंज दशसहस्र योजन काढिए तेवारे तेविश सहस्र ठसेने चोरासी योजन अने उपर चार कला उगरे तेहनुं अर्द्ध करीये तेवारे अगीआर सहस्र आठसेने बेतालीस योजन उपर कला वे थाय एटलो विष्कंज कुरुक्षेत्रनां मध्यजागने विषे जाणवो.

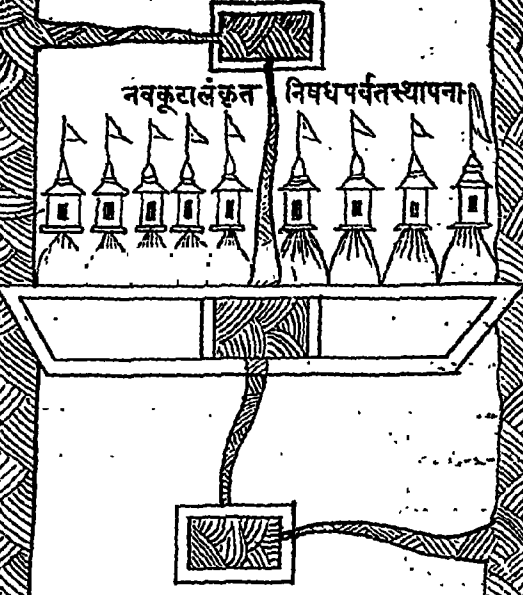
एमां चित्रकूट नामे वे पर्वतढे, ते निषध पर्वतनी उत्तरदिसि थकी ०३४ योजन उपर सातीया चार जाग अबाधाये सीतोदा नदीने पूर्वे अने पश्चिमे वे तटने विषे ए वे पर्वत ढे, तेनुं प्रमाण जेम उत्तर कुरुमां वे थमक पर्वतनुं कहुं तेम जाणवुं. तथा ए वे चित्र कूटनी उत्तरदिसि थकी ०३४ योजन उपर सातीया चार जागनी

२७



अष्टकूटलंकृत महा
हिमवत पर्वत स्थापना

२८



नवकूटलंकृत निषधपर्वतस्थापना

२९



२९



हरिचर्प युगल स्नेह.

३०

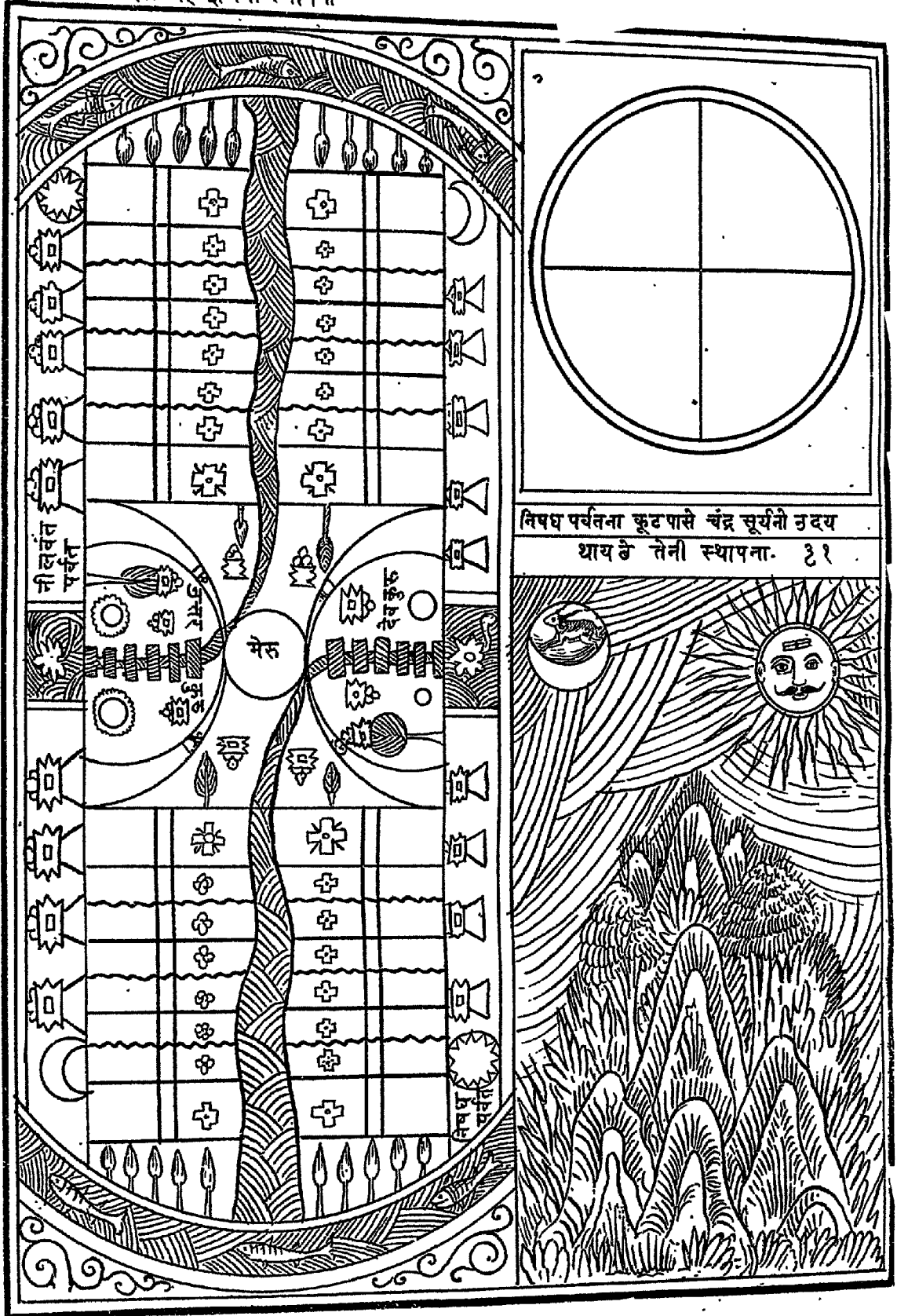


उत्तर कुठ

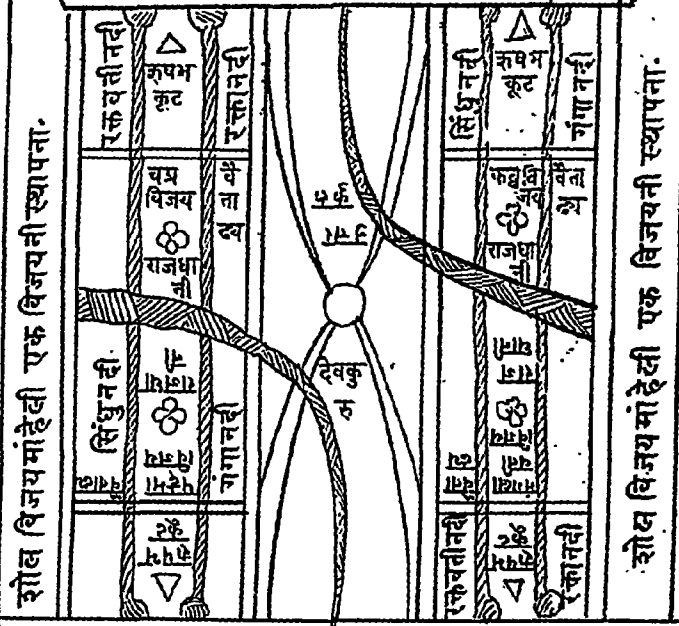
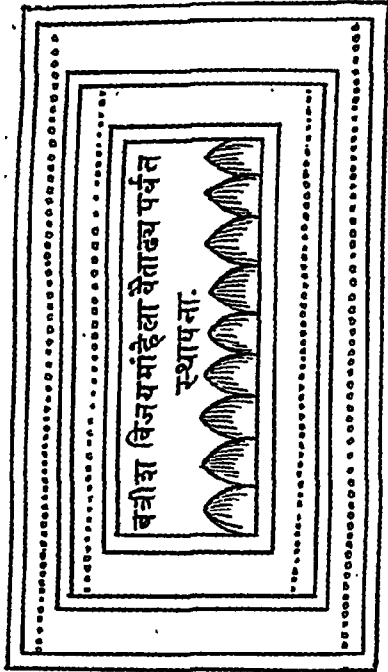


देवकुरु

महाविदेह क्षेत्रनी स्थापना



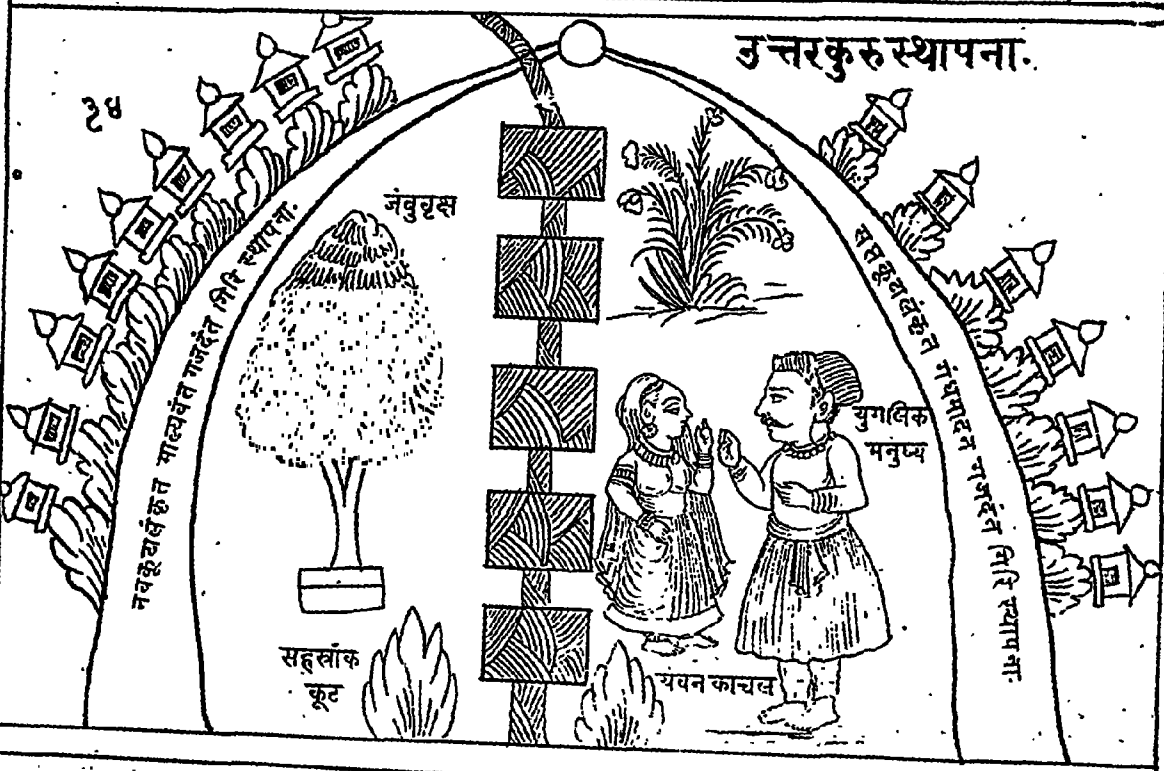
निषध पर्वतना कूटपासे चंद्र सूर्यो उदय
थाय डे तेनी स्थापना. ४१



शोल विजयमांहेदी एक विजयनी स्थापना.

शोल विजयमांहेदी एक विजयनी स्थापना.

उत्तरकुरु स्थापना.



जंबुवृक्ष स्थापना.

३५



अबाधाये प्रथम निषध नामे ड्रहडे, तेमज तेथकी तेटली अबाधाये बीजो देव कुरु ड्रह, त्रीजो सूरप्रजड्रह चोथो सुलसड्रह अने पांचमो विद्युत्प्रज ए पांचे ड्रह देवकुरु क्षेत्रमांहे सीतोदा नदीनां जाणवा ए सर्वड्रह पद्मड्रह सरखा एक हजार योजन लांबा अने पांचशें योजन पोहोला अने दश योजन उंचा जाणवा तथा प्रत्येक ड्रहना एक दक्षिण अने बीजो उत्तर ए बे दिसिनेविषे बे वारणा जाणवा. अने ए ड्रहना जे अधिष्टायक देव ठे, ते सर्व पोताना ड्रहने नामे जाणवा. ए ड्रहथकी पूर्व अने पश्चिमदिशे दस योजन वेगलाइए एकेक ड्रहना एकेक पासाने विषे दस दस कंचनगिरि ठे. ते कंचनगिरि वैताल्यनां कूट सवाठ योजन ठे, तेथी सोलगुणा मोटाठे. एहवा कंचनगिरि जंबू छीपने विषे सर्वे बसे जाणवां ते केम ? देवकुरु तथा उत्तरकुरुना दश ड्रहठे, ते एकेक ड्रहने बे पासे दश दश गुणतां वीश थाए ते वीशने दशवार गुणतां बसे पूरा थाय. हवे कुलगिरि, यमकपर्वत, पांचड्रह अने मेरु एनां सात अंतरां कहेठे.

आठसे चोत्रीस योजन उपर एक कलाना सात जाग करीए एहवे एक जागे सहित अगीआर कला एटळुं कुलगिरि, जमकपर्वत, पांच ड्रह तथा मेरुनो प्रत्येके अंतर जाणवुं ते केम ? देवकुरुनुं विस्तार अगीआर सहस्र आठसे बेतालीश योजन अने बे कलाठे, ते मांहेथी यमकपर्वत अने पांच ड्रह तेणे रुंधेला जे ठ सहस्र योजन ठे, ते काडिए ते वारे अष्टावनसे बेतालीस योजन अने बे कला वधे तेने सात जागे वेचतां आठसे चो त्रीश योजन आवे शेष चार उगरे तेने उंगणीस साथे गणीए तेवारे ठहुत्तेर कला थाय तेनीसाथे मूलगी बे कला एकठी करता अष्टोत्तर कला थाय ते वली सात जागे वेचतां उंगणीसी अगीआर कला आवे. वली एक कला उगरे तेहना सात जाग करीए तेवारे एक जाग आवे एटळुं कुलगिरि, जमकपर्वत, पांच ड्रह तथा मेरुनु अंतर जाणवुं.

तथा ए देवकुरुना पश्चिमांकुना मध्यजागे रूपानी पीठउपर शाढमलीवृद्धठे, तेना उपर गुरु देवतानो निवासठे, तेनो वर्णन सर्व जंबूवृद्धनी पेरे कहेवो. पण एनां बार ना मन कहेवा तथा इहां देवकुरुनामे देव वशेठे, तेथी एनुं देवकुरु एवुं शाश्वतुं नाम ठे.

हवे जंबूछीपना मध्यने विषे मेरुपर्वत ठे, तेनुं स्वरूप कहेठे:-

मेरुपर्वत कनकमय वाटळुं गोलाकारेठे. नवाणु हजार योजन उंच पणे अने एक हजार योजन नीचे धरतीमां उंच पणे, सरवाले एक लाख योजन उंचो ठे, तथा मूले धरती मां कंदे १०००० योजन उपर अगीआरीआ दश जाग एटलो पोहोळ पणेठे, अने धरती तले दश हजार योजन पोहोळ पणेठे, पठी उंचा जातां मात्राये मात्राये घटतो गयो ठे, एटले एक योजन उंचो जतां एक योजननो इग्यारमो जाग, इग्यार योजने एक योजन, शो

योजने नव योजन अने उपर अगीआरीउं एक जाग, हजार योजने नेवुं योजन अने अगीआरीआ दश जाग उपर एरीते पोहोल पणामां घटतो घटतो थको उपरे शिखरने तले एक हजार योजन पोहोल पणे थयो ठे.

एनी परिधि मूलमां ३१९१० योजन उपर अगीआरीआ त्रण जाग तथा धरती तले समजूतला पाशे ३१६३३ योजन अने उपरे शिखरने तले ३१६३ योजन कांश्क जाजे रा ठे, ए पर्वत उंधो करेलो गोपुठने संस्थाने संस्थित ठे, सर्व रत्नमय ठे, एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंड तेणे करी चोफेर वींठ्यो ठे, एनां त्रण कांरुठे, तिहां प्रथम धरतीमां हजार योजननो कांरु ते माटी, पाषाण, वज्ररत्न तथा काकरा ए चार पदार्थनो ठे, तथा पृथ्वी थकी सोमनसनामा वन सुधी बीजो कांरु त्रेशठ हजार योजन प्रमाण ठे, ते स्फाटिकरत्न, अंकरत्न रूप तथा कांचननो ठे, तथा त्यांथी उपर ढत्रीश हजार योजननो त्रीजो कांरु ते रक्तवर्ण कनकनो ठे, ए मेरुनां त्रण जाग कह्या.

ए मेरु पर्वतने विषे चार वन ठे, तेनां नाम कहेठे, एक जडशालवन, बीजुं नंदनवन, त्रीजुं सोमनसवन, चोथुं पंरुकवन. तिहां प्रथमसंजूतलाने स्थाने जडशालवन ठे, तेना चारगजदंत गिरिये तथा सीता अने सीतोदा महानदीये करी आठ जागे वेहेच्युं थकुं आठ खंरु थया ठे, ते जडशालवन मेरु पर्वतने पूर्व पश्चिम दिसे बावीश बावीश हजार योजन लांब पणे ठे, अने उत्तर दक्षणे अढीशे अढीशे योजन पोहोल पणे ठे, देवकुरुने उत्तर कुरु मांहे पेतुंठे, ते वन पद्मवर वेदिका अने वन खंडेकरी चोफेरे वींठ्युंठे.

तथा मेरु पर्वतनी पूर्वादि चारे दिसे जडशालवनमां पचाश पचाश योजन अवगाही जाइये तिहां प्रत्येक दिसिये सिद्धायतन एटले श्री तीर्थकर जगवाननुं देहेरुंठे, ते पचाश योजन लांब पणे, पचीश योजन पोहोल पणे अने ढत्रीश योजन उंच पणे ठे, ए वा चारेदिसे मली चार सिद्धायतन ठे, तथा चार विदिसिने विषे पचाश योजन अवगाही जाइये तिहां प्रत्येक विदिसिये चार चार नंदा पुष्करणी शाश्वती वाव्य ठे, तिहां प्रथम इशान कूणनी चार वाव्यनां नाम कहेठे, एक पद्मा, बीजी पद्मप्रजा, त्रीजी कुमुदा, चोथी कुमुदप्रजा ते पुष्करणी पचाश योजन लांब पणे, पचीश योजन पोहोल पणे अने दश योजन उंच पणे ठे, वेदिका वन खंडे सहीत ठे, ते चार पुष्करणीनी वच्चें इशानेंद्रनो प्रासादावतंसक ठे, ते पांचशे योजन उंच पणे अने अढीशे योजन पोहोल पणे ठे.

तेमज अग्निंकूणे उत्पलगुहमा, नलिना, उत्पला अने उत्पलोज्वला ए चार वाव्य पूर्वोक्त प्रमाण वाली तेनी वच्चे सौधमेंद्रनो परिवार सहीत प्रासादावतंसक जाणवो तेमज नैऋतकूणे भृंगा, जृंगनिजा, अंजना अने अंजनप्रजा ए चार वाव्य वच्चे पण सौधमेंद्रनो परिवार सहीत प्रासादावतंसक जाणवो तथा वायूंकूणे श्रीकांता, श्रीचंदा,

श्रीमहिता अने श्रीनिलया ए चार पुष्करणी वच्चे इशानेंद्रनो प्रासादावतंसक जाणवो तेमज ए जद्रशाल वनमां पूर्वोक्त जे जिन जवन अने प्रसाद कह्या तेना आठ आं तराने विषे आठ करिकूट हाथीने आकारे ठे, ते प्रत्येक कूट पांचशे योजन उंच पणे ठे, अने सवासो योजन धरतीमां ठे, ते आठे कूटने नामे आठे कूटना देवता प्रमुखनी राजधानी प्रमुख सर्व कहेवी. ते आठ कूटनां नाम कहे ठे, एक पद्मोत्तर दिग्गज हस्ति कूट बीजो नीलवंत दिग् हस्ति कूट, त्रीजो सुहस्तिदिग्हस्ति कूट, चोथो अंजनगिरि दिग्हस्ति कूट, पांचमो कुमुददिग् हस्ति कूट, षष्ठो पलासदिग्हस्ति कूट, सातमो अ वतंसहस्ति कूट, आठमो रोचना गिरिदिग् हस्ति कूट. ए आठ दिग्गज कूट कह्या. ए जद्रशालवनने विषे मेरुनी चारदिशि ते सीतोदा तथा सीतानां प्रवाहे रुंधी ठे, ते माटे पूर्वोक्त जिन जवन जे ठे ते नदीनां तट उपरे ठे, अने प्रासाद जे ठे ते गज दंतगिरिनी पाशे ठे, अने जिनजवन तथा प्रासादनी वच्चे ए आठ करी कूट ठे.

ते जद्रशाल वन थकी पांचशे योजन उंचा जश्ये तिहां बीजो नंदनवन ठे, ते पांचशे योजन चक्रवाल पणे फरतुं पोहोल पणे वलयाकारे मेरु पर्वतने चोफेर वींटीने रळुं ठे, तिहां एण्ण५४ योजन उपर अगीआरीआठ जाग एटलुं नंदन वन थकी बाहेर मेरु पर्व तनुं पोहोल पणु ठे, तथा ३१४७९ योजन कांश्क जाजेरा एटली परिधि ठे, तथा ७९५४ योजन उपर श्ग्यारीआठ जाग एटलो नंदन वन मांहे मेरु पर्वत पोहोल पणे ठे, तथा २७३१६ योजन उपर आठ जाग एटली नंदनवननी मांहे मेरुनी परिधि ठे, ते नंदनवन पद्मवरवेदिका अने वन खंडे करी वींठ्युं ठे, एनी पण चार दिसाये चार सिद्धायतन जद्र शाल वननी पेरे जाणवा अने चार विदिसिने विषे शोल पुष्करणी जाणवी तेनां नाम कहेठे:—इशान कूणे नंदा. नंदोत्तरा, सुनंदा अने नंदीवर्ऊनी. तथा अंघ्रिकूणे नंदिषेणा, अमोघा, गोस्तूपा अने सुदर्शना. तथा नैऋतकूणे जद्रा, विशाला, कुमुदा अने पुंरुरिकि णि तथा वायू कूणे विजया, विजयंति, जयंति अने अपराजिता. इहां पण चारचार वाव्यनी वच्चे जद्रशाल वननी पेरेज सौधर्म तथा इशानेंद्रना प्रासादावतंसक जाणवा.

तथा नंदनवनमां जिन जवन अने प्रासादनां आठ आंतराने विषे दिक्कुमारिका नां आठ कूट ठे, ते कहे ठे, नंदन वन कूट, मेरु कूट, निषध कूट, हिमवंत कूट, रज त कूट, रुचक कूट, सागरचित्र कूट, वज्र कूट, ए आठ कूट ठे. तेमां दिग्कुमारिका व से ठे, ते संजूतलथी एक सहस्र योजन उंची ठे, केमके पांचशे योजन नंदन वन तेना उपर वली पांचशे योजन उंचा कूट ठे, एरीते हजार योजन उपर जवन मांहे वसे ठे, माटे एने उर्ऊवलोक वासिनी कहीये. तेनां नाम कहेठे. मेघंकरी, मेघवती, सुमेघा हेममालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, वज्रसेना अने बलाहिका ए आठ कुमारिका जाणवी

अने नवमो वलकूटठे, ते हजार योजन उंचो ठे, माटे ते सहस्रांककूट मध्ये गएयुं ठे, ते कूट इशान विसिना प्रासादधी पण इशान कूणे नंदन वनने ठेडेठे, ते माखवंत गजदंत. ना हरिस्सह कूटने प्रमाणे ठे, इहां पांचशे योजननुं पोहोळुं नंदन वन अने पांचशे योजननां कूट मेरुधी पचाश योजन वेगळां ठे, ते माटे शाका चारशे योजन नंदनवन माथे ठे अने पचाश योजन अधर रखा ठे, तेम नवमुं वलकूट तो नंदनवन माथे थोडुं रखुंठे, अने आकाशे अधर घणुं रखुंठे, ए वलकूट उपर वलनामा देवतानी राजधानी कहीठे.

हवे नंदनवन थकी शाका वाशठ हजार योजन उंचा जश्ये तिहां त्रीजुं सोमनस वन ठे, ते पांचशे योजन चक्रवाल पणे प्होळुं मेरुने चोफेर वलयाकारे वींटीने रखुंठे, ४२७२ योजन उपर अगीआरीआ आठ जाग एटलो मेरु पर्वत वाहेर पोहोळ पणेठे तथा २३५२२ योजन उपर इग्यारीआ ठ जाग एटलो वाहेर परिधि पणे ठे, ३२७२ योजन उ पर अगीआरीआ आठ जाग एटलो सोमनस वननी मांढेली कोरे मेरु पोहोळ पणे ठे, तथा १०३४९ योजन उपर अगीआरीआ त्रण जाग एटलो मांढे परिधि पणे ठे, ए सो मनसवन एक पद्मवरवेदिका अने वनखंके करी चोफेर वींठ्युंठे, इहां कूट नथी माटे कूट वर्जीने शेष सिद्धायतन तथा पुष्करणी अने प्रासादावतंसक सर्वनी वक्तव्यता तेमज नंदनवननी पेरे कहेवी. इहांनी शोल पुष्करणीनां नाम कहेठे:—इशानकूणे सुमना, सो मनसा, सोमनस्या अने मनोरमा. तथा अग्निकूणे उत्तरकुरु, देवकुरु, वारिषेणा अने सरस्वति. तथा नैऋतकूणे विशाला, माघजडा, अजयशेना अने रोहिणी. तथा वायुकुं णे जडा, जडोत्तरा, सुजडा अने जडावति ए नाम जाणवा. इहां कूट नथी.

सोमनस वनथकी ठत्रीश हजार योजन उंचा जश्ये तिहां मेरुपर्वतना शिखरतले पंरुक नामे वनठे, ते ४९४ योजन चक्रवाल पणे वलयाकारे मेरुनी चूलीकाने चोफेर वींटीने रखुं ठे, तिहां ३१६२ योजन जाजेरा मेरुनी वाहिर परिधि ठे.

पंरुकवनना मध्यजागे वच्चें इहां मेरुपर्वतनी चूलिका चोटली रूप ठे, ते चालीश योजन उंच पणे ठे, मूलमां वार योजन पोहोळ पणे ठे, वच्चमां आठ योजन पोहोळ पणे ठे, मूलमां शारुत्रीश योजन जाजेरा परिधि पणे अने उपर वार योजन जाजेरा परिधि पणे ठे, एक योजन मूल थकी उंचा जश्ये तेवारे पोहोळ पणे योजननो पांचमो जाग घटे, एम पांच योजने एक योजन घटे, एगोपूठने संस्थाने संस्थितठे, सर्व वैदूर्य मय नीलीठे, ते चूलिका एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंके करी चोफेर वींटीनी ठे, तेना उपरे मध्यजागे एक सिद्धजगवानुं आयतन एटले घर ठे, अर्थात् देहरं ठे, ते एक कोश लांव पणे, अर्द्धकोश प्होळ पणे अने १४४० धनुष उंच पणे ठे. ते पंरुक वनने विषे पूर्वादि चारदिसाये चार सिद्धायतन तथा चार विदिसिनी शोल

पुष्करणीनो तथा चार प्रासादावतंसकनो वर्णन पूर्वला वननी परे यावत् सौधर्म इशाने इना प्रासाद पर्यंत इहां पण जाणवो इहांनी शोल पुष्करणीनां नाम कहेडे. इशान कूणें पुंड्रा, पुंड्रप्रजा, सुरक्ता अने रक्तवति, तथा अश्रिकूणें क्षीररसा, इक्षुरसा, अमृतरसा अने वारुणी. तथा नैऋत्यकूणें शंखोतरा, शंखा, शंखावत्तरा अने बलाहिका तथा वायु कूणें पुष्पोत्तरा, पुष्पवती, सुपुष्पा अने पुष्प माखिनी ए शोल वाव्यनां नाम कल्या.

हवे पंरुकवननेविषे श्रीतीर्थकरने जन्माजिषेक करवानी शिला केटली ठे, ते कहे ठे. तिहां पूर्वदिसिने ठेहेडे पांडुशिला ठे, ते उत्तर दक्षण लांबी पांचसे योजन अने पूर्व पश्चिम अढीसे योजन पोहोळ पणे ठे, चार योजन जाऊ पणेठे सर्व अर्जुन सुवर्णमय ठे, अर्द्धचंद्राकारे ठे, शिलानी वक्रता चूलिका साहामीठे, वेदिका अने वनखं के करी चोफेर वींटीठे, तेना चारेदिसे चार सोपान पगथाळीयाठे, यावत् तोरण पर्यंत तथा देवता बेसे ठे इत्यादि वर्णन जाणवो. तेना मध्य जागे एक उत्तरदिसि अने बी जो दक्षणदिसि ए बे सिंहासनठे, ते शिखाना लंबाई पोहोळोई तथा उंचाईने आठ हजारमे जागे ठे, एटले पांचशे धनुष लांब पणे अढीशे धनुष पोहोळपणे अने चार धनुष उंचपणेठे, तिहां उत्तरदिसिना सिंहासन उपर ते दिसितरफना कक्षादिक आठ विजयना तीर्थकरनो जन्माजिषेक थाय तथा जे दक्षण दिसिनुं सिंहासन ठे, ते उ परे ते दिसिना वक्षादिक आठ विजयना तीर्थकरनो जन्माजिषेक थाय.

तथा दक्षणदिसिने ठेहेके पांरुकंबल नामे शिलाठे, ते पण अर्जुन सुवर्णमयठे, ते शिला पांडुशिला प्रमाणे लांबी पोहोळी ठे, तेना उपर एकज सिंहासन ठे, तिहां दक्षिणदिशि तरफनां ऋतक्षेत्रमां उत्पन्न थयला तीर्थकरनो जन्माजिषेक थाय ठे, के मके ऋतक्षेत्रमां एक समये एकज तीर्थकर उपजे ठे, माटे एकज सिंहासन ठे.

तथा पश्चिमदिसिने ठेहेके रक्तशिला नामे शिला ठे, ते अर्जुन सुवर्ण मयठे, एनी लंबाई पोहोळाई पूर्वली परे जाणवी. तेना उपर बे सिंहासन ठे, तिहां पश्चिम महाविदेहमां उत्पन्न थयला तीर्थकरनो जन्माजिषेक थाय ठे, ते आवी रीते के दक्षणदिसिना सिंहासन उपर, पद्मादिक आठ विजयना तीर्थकरनो जन्माजिषेक थाय अने उत्तरदिसिना सिंहासने, वप्रादिक आठ विजयना तीर्थकरनो जन्माजिषेक थाय.

तथा चूलिकाने उत्तरदिसे पंरुकवनना उत्तरदिसिने ठेहेके रक्तकंबल नामे शिला ठे, तेपण अर्जुन सुवर्णमय ठे, तेनो वर्णन पूर्वली परे जाणवो तेना मध्यजागे एक सिंहासन ठे, तिहां ते दिसिमां आवेला ऐरवत क्षेत्रना तीर्थकरनो जन्माजिषेक थायठे, कारण के ऐरवतमां पण एक समये एकज तीर्थकरनो जन्म थायठे, तेथी एकज सिंहासन

उत्तर तरफनी शिला उपर ठे, अने महाविदेहना पूर्व पश्चिमे प्रत्येके एक समये एके की बाजुये बे बे तीर्थकरनो जन्म थायठे, सरवाले चार तीर्थकर एक समये जन्मेठे, माटे पूर्व पश्चिमनी शिला उपर जन्माजिषेक करवाना बे बे सिंहासन ठे, सरवाले मेरुनी चार शिला उपर ठे सिंहासनठे, हवे मेरुने विषे सर्व सिद्धायतनादिकनी संख्या कहेठे.

| | | | |
|---------------------|---------------------|---------------------|------------------|
| १ चद्रशालवने. | २ नंदनवने. | ३ सोमनसवने. | ४ पांडुकवने. |
| ४ सिद्धायतन ४. | ४ सिद्धायतन ४ | ४ सिद्धायतन ४. | ४ सिद्धायतन ४. |
| ४ प्रासादावतंसक ४ | ४ प्रासादावतंसक ४ | ४ प्रासादावतंसक. ४ | ४ प्रासादावतंसक. |
| १६ पुष्करणीवाव्य १६ | १६ पुष्करणीवाव्य १६ | १६ पुष्करणीवाव्य १६ | १६ पुष्करणी. १६ |
| ७ दिसिहस्तिकूट ७ | ए कूट. | १ चूलिकायेसिद्धायतन | ४ अजिषेकशिला. |

मेरु पर्वतनां शोल नाम हेतु सहीत कहेठे १ मंदरनामे देवता अधिपतिठे माटे मंदर पर्वत २ मेरु ३ मनने रमे ते माटे मनोरम ४ जलुंठे दर्शन जेनुं तेमाटे सुदर्शन ५ पोतेज रंजादिके करी प्रकाश ठे माटे स्वयंप्रज ६ सर्व पर्वत थकी जंचो तथा श्रीतीर्थकरना जन्माजिषेक थाय ठे, माटे गिरिराज ७ अनेक प्रकारना रत्नो समूह एने विषेठे माटे रत्नोच्चय ८ पांडुशिलादिक शिलानो समूह ठे, माटे शिलोच्चय ९ मेरु थकी चारे दिसे लोक सरखो समजागे ठे माटे लोकनुं मध्य १० लोकना मध्यपणा माटे लोकनाजि ११ अत्यंत निर्मल पणा माटे आठो १२ सूर्य चंद्रादिक आवर्त प्रदक्षणा करेठे, माटे सूर्यावर्त १३ सूर्यादिक ग्रह, नक्षत्र अने तारा एनी पूंठे फरेठे माटे सूर्यावर्त १४ सर्व पर्व तथकी उत्तम माटे उत्तम १५ मेरुना मध्यवर्ति अष्टप्रदेशिक रुचक थकी दिसि विदिसि नीकली ठे, माटे दिशादि १६ सर्व गिरिमांहे जंच पणे करी मुकुट सरखो माटे अवतंस. इहां मंदर नामे देवता एक पद्योपमायुये वशेठे, तेथी एनुं मंदर एवुं शाश्वतुं नाम ठे.

हवे महाविदेह मांहे वत्रीश विजय ठे, ते वखाणे ठे.

मेरु पर्वतना चद्रशाल वन थकी पूर्वदिसि अने पश्चिमदिसिने विषे प्रथम बे विजय पठी बे वक्षस्कारा पर्वत वली बे विजय तेवार पठी बे अंतरनदी वली बे विजय एम अनुक्रमे एकेकि दिसाये शोल विजय तथा आठ वक्षस्कारा पर्वत अने ठ अंतरनदी थाय तेवारे बे पासाना वत्रीश विशय तथा शोल वक्षस्कार पर्वत अने बार अंतरनदी थाय.

हवे वत्रीस विजयनुं पोहोलपणानुं प्रमाण कहेठे.

तिहां बावीससे वार योजन तथा एक योजनना आठ जाग करिए तेहवा सात जाग उपर एटलुं एकेका विजयनुं पोहोलपणुं जाणवुं. तथा वक्षस्कार पर्वत शोल ठे, ते एकेको पांचसे योजन पोहोलो ठे. तथा वार अंतरनदी ठे, ते एकेकी एकसोने पचीस योजन पोहो

लीढे. हवे ए विजयादिनुं पोहोलपणुं जाणवानो उपाय लखेढे. चउपन्न सहस्र योजन
 चूमि, मेरु अने चद्रशालवने रुंधीढे. तथा चार सहस्र योजन चूमि, वक्षस्कारा पर्वतोए
 रुंधीढे, तथा सातसेने पचास योजन चूमिना अंतरनदीए रुंध्याढे, तथा पांच सहस्र
 आठसे चुमालीस योजन चूमि, वे वनमुखे रुंधीढे ए सर्व योजन एकठा करिए तेवारे
 चोसठ सहस्र अने पांचसे चोराणु योजन थाय. तेने एक लक्ष योजन प्रमाण जे जंबू
 द्वीप ढे, ते मांहेथी काहामीए. तेवारे पांत्रीश सहस्र चारसे ने ठ योजन उगरे. तेने
 सोल विजय ढे, माटे सोल जागे वेहेच्यीए तेवारे बावीससे अने बार योजन लाजे अने
 उपर चउद योजन उगरे तेना प्रत्येक योजनना आठ जाग करिए तेवारे एकसोने
 बार जाग थाय. ते सोल जागे वेंचतां आठीआ सात जाग लाजे एटले एकेक विज
 यनुं परिमाण बावीससे ने बार योजन उपर आठीआ सात जाग एटलुं जाणवुं.

हवे ए विजयादिकनुं लांबपणुं कहेढे.

सोल हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बे कला एटलुं ए सर्व विजय तथा वक्षस्कार
 तथा अंतर नदी ए सर्वनुं प्रत्येक लांबपणुं जाणवुं. वली शीतोदा तथा शीताने अंते
 पूर्व तथा पश्चिम दिशे जे चार वनमुख ढे, तेहनुं पण एटलुंज लांबपणुं जाणवुं.

हवे वक्षस्कार पर्वतनुं उंचपणुं कहे ढे.

वक्षस्कार पर्वत गजदंत गिरिनी पेरे उंचाढे, जेम गजदंतगिरि कुलगिरिने समीपे
 चारसे योजन उंचाढे, ढेहेढे मेरुपर्वतनी पाशे पांचसे योजन उंचाढे, तेम ए वक्षस्कार
 पण कुलगिरिने समीपे चारसे योजन उंचाढे, अने ढेहेमे शीतोदा तथा शीताने समीपे पां
 चसे योजन उंचाढे. हवे सोल वक्षस्कार पर्वतनां तथा बार अंतरनदिनां अने बत्रीश
 विजयनां नाम कहेढे. ए सर्व माढ्यवंतनामे जे गजदंतगिरिढे, ते थकी प्रदक्षिणावर्ते ढे.

तिहां प्रथम सोल वक्षस्कारनां नाम कहेढे.

एक चित्रकूट, बीजुं वर्मकूट, त्रीजुं नलिनीकूट, चोथुं एकशेलकूट, पांचमुं त्रिकूट,
 षणुं वैश्रमणकूट, सातमुं अंजन, आठमुं मातंजन, नवमुं अंकापाती, दशमुं पद्मापाती, अ
 गीआरमुं आशीविष, बारमुं सुखावह, तेरमुं चंद्र, चौदमुं सूर. पंदरमुं नाग अने सोलमुं
 देव, ए सोल वक्षस्कार गिरिनां नाम जाणवां. ए एकेका वक्षस्कार उपर चार चार कूटढे
 तेमां एक तो सिद्धायतनकूट बीजुं ते पर्वतने नामेकूट, त्रीजुं पाठला विजयने नामेकूट,
 अने चोथुं आगला विजयने नामेकूट ए चारकूट सर्व वक्षस्काराने विषेढे, तिहां सिद्धा
 यतनकूट उपर श्रीसिद्धनुं देहेरुं होय अने शेषकूटने विषे तेने नामे देवताउंना प्रासा
 दावतंसक ढे. ए सर्व पर्वतना अधिपति देवो पण एज नामे जाणवा अने सर्व पर्वत
 पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे करी वीटला ढे, यावत् देवता बेसेढे, इत्यादि सर्व कहेवुं.

अढीद्वीपना नकशानी हकीगत.

हवे वार अंतर नदीनां नाम कहेवे.

ग्राहावती, डहावती, पंकावती, तप्तजला, मत्तजला, उन्मत्ता, खीरोदा, शीतश्रोता, अंतर्वाहिनी, उर्मिमालिनी, गंजीरमालिनी, फेनमालिनी, ए नामे वार अंतर नदी जाणवी. ते धुरे तथा ठेहेके सर्व नदिउं दशयोजन प्रमाण उंडा एवा जे नीलवंतने नीचे ठ कुंरु ठे, तथा निषधने नीचे पण ठ कुंरु ठे, ते थकी नीकली एवी ए वार अंतर नदी ते कुंडने नामेज जाणवी. जेम ग्राहावत कुंड थकी ग्राहावती नदी नीकली एरीते सर्व नदीने नामे कुंडनां नाम पण जाणवा, अहिंआं नदीनी देवीनुं द्वीप प्रमुख जे विशेष प्रकारनी वक्तव्यता ठे, ते सर्व रोहितांशा नदीने परिमाणे जाणवी. ए सर्व अंतरनदीउं पद्मवर वेदिका अने वनखंके करी वींटेली ठे.

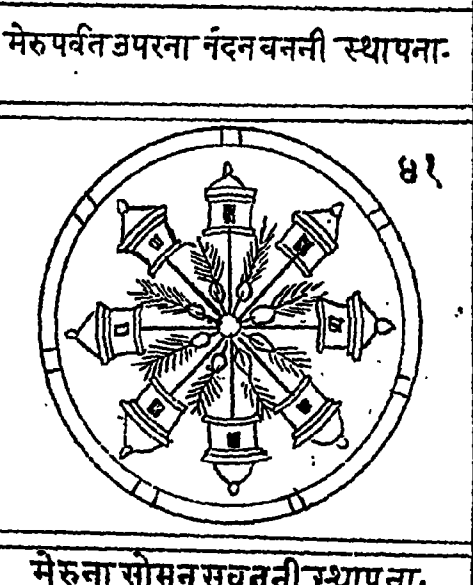
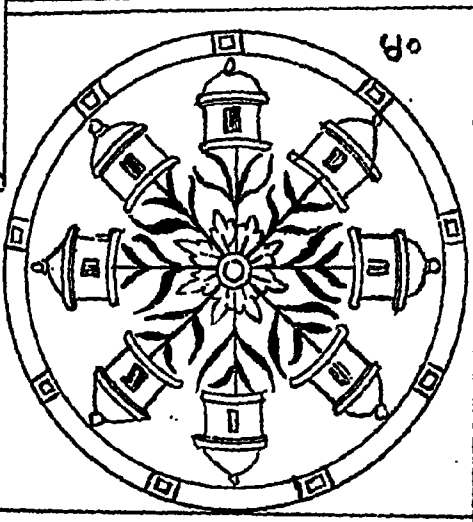
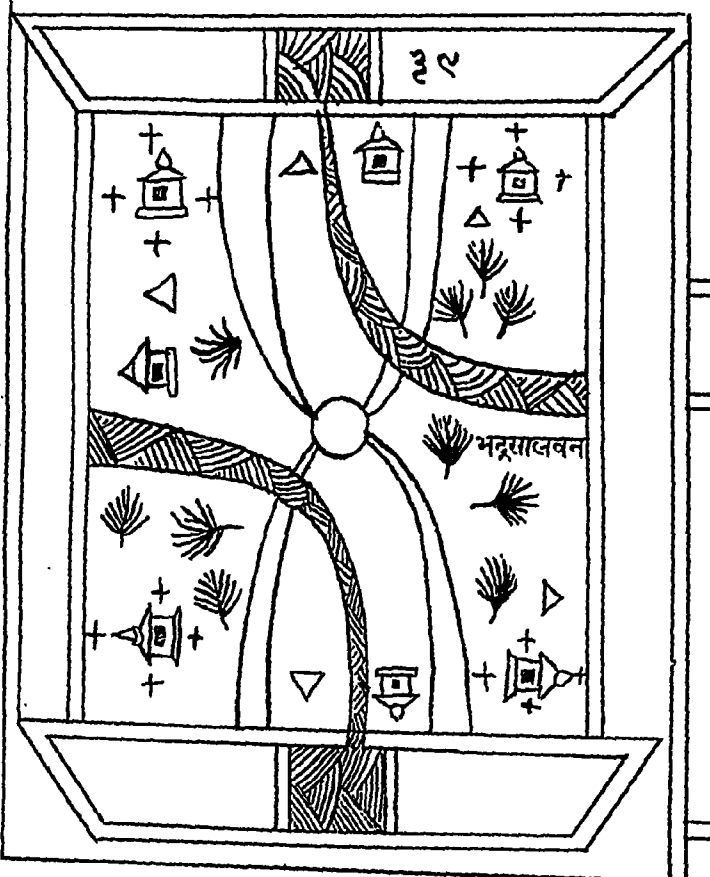
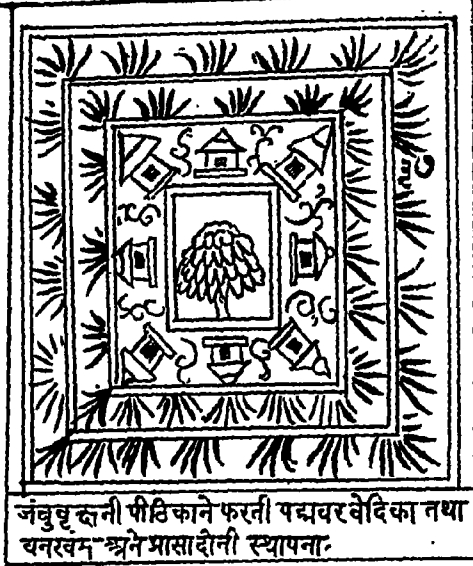
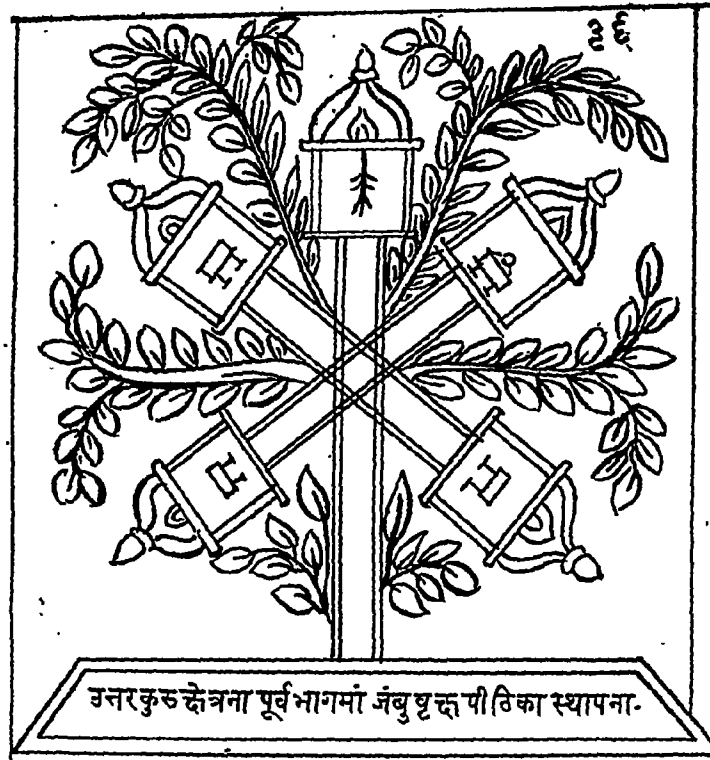
हवे वत्रीश विजयनां नाम कहेवे.

एक कठ, वीजो सुकठ, त्रीजो महाकठ, चोथो कठावती, पांचमो आवर्त्त, षष्ठो मंगलावर्त्त, सातमो पुष्कलावर्त्त, आठमो पुष्कलावती, नवमो वत्स, दशमो सुवत्स, अर्गी आरमो महावत्स, वारमो वत्सावती, तेरमो रम्य, चउदमो, रम्यक, पंदरमो रमणिक, सोलमो मंगलावती, सत्तरमो पद्म, अठारमो सुपद्म, उंगणीशमो महापद्म, वीशमो पद्मावती, एकवीशमो शंख, वावीशमो कुमुद, त्रेवीशमो नलिन, चोवीशमो नलिनावती, पच्चीशमो वप्र, षड्वीशमो सुवप्र, सत्तावीशमो महावप्र, अठावीशमो वप्रावती, उंगणत्रीशमो वद्यु, त्रीशमो सुवद्यु, एकत्रीशमो गंधिल अने वत्रीशमो गंधिलावती.

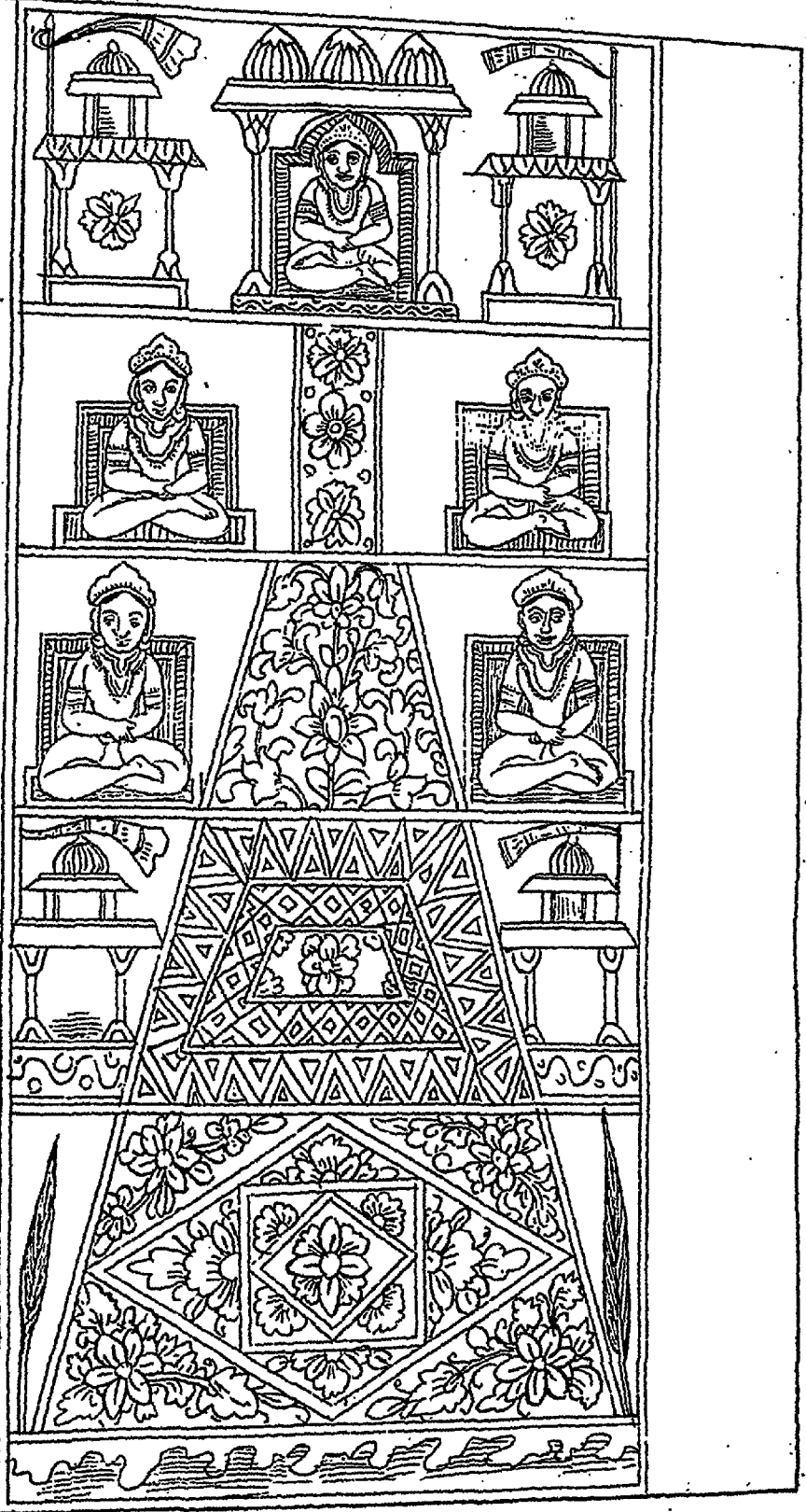
ए कठादिक वत्रीश विजय जेठे तेमां पूर्व अने पश्चिम दिशि गत जे द्वांवा वैताढ्य पर्वतठे, तेणे चरत तथा ऐरवतनी पेरे विजयना अर्द्ध कीधां ठे, एटले एकेकी विजयना वे वे खंड कीधां ठे, वली एकेका विजयने विषे वे बे नदी ठे, तेणे करी ठ खंरु कीधां ठे, तथा ए प्रत्येक विजयमां नदीनी दिशिये दक्षणाद्ध विजयने विषे दक्षण चरतनी अयोध्या नगरी सरखी वत्रीश विजयने विषे वत्रीश नगरीउं ठे.

ए वत्रीश नगरीउंनां नाम अनुक्रमे कहेवे.

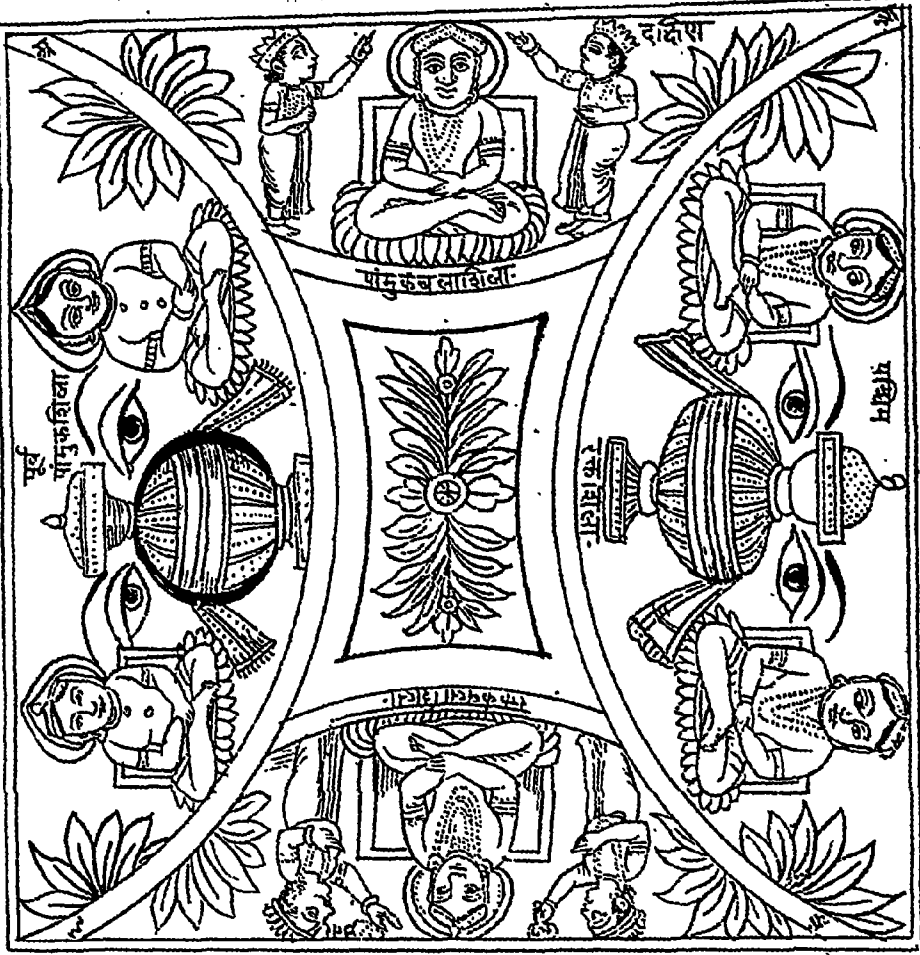
हेमा, हेमपुरा, अरिष्ठा, अरिष्टपुरा, खड्गी, मंजूषा, ऋषज्ञपुरी, पुंरुरिगिणी, सुसीमा, कुंडला, अपरावती, प्रज्ञंकरा, अंकावती, पद्मावती, शुजा, रत्नसंचया, अश्वपुरा, सिंहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अपराजिता, अपरा, अशोका, वीतशोका, विजया, वैजयंती, जयंती, अपराजिता, चक्रपुरा, खड्गपुरा, अवध्या अने वत्रीसमी अयोध्या नगरी जाणवी. ए वत्रीस नगरी ते नदिनी दिशि जे विजयनुं अर्द्धठे तेमांहे जाणवी. ए प्रत्येक राजधानीमां ते ते विजयने नामे चक्रवर्त्ति थाय जेम कठविजयनी हेमा नामे राजधानीमां कठ चक्रवर्त्ति थाय तेम सर्व विजयोने विषे जाणी वेवुं तथा कठविजयमां



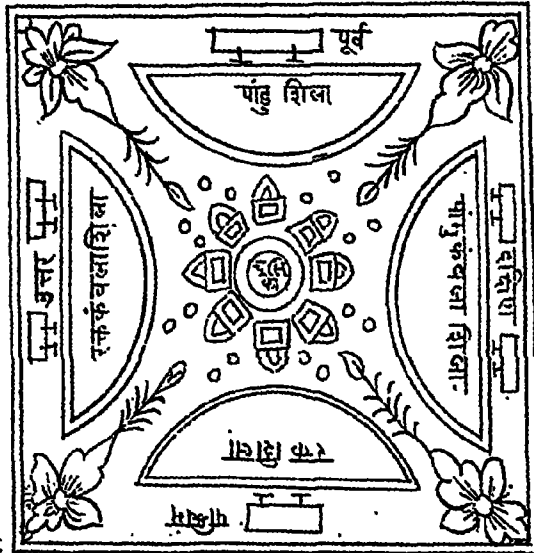
मेरुपर्वत स्थापना. ३८



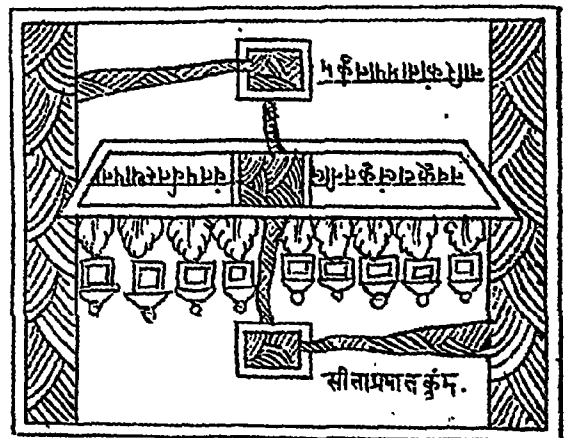
पांमुकवनने विषे श्री तीर्थकरने जन्माभिवेक करयानी
 शिला तथा सिंहासननी स्थापना. ४४



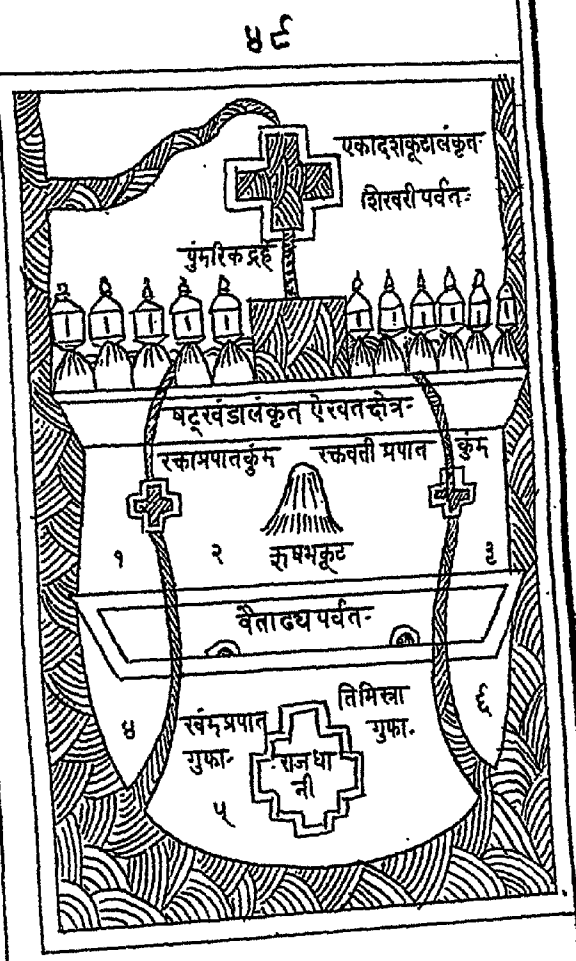
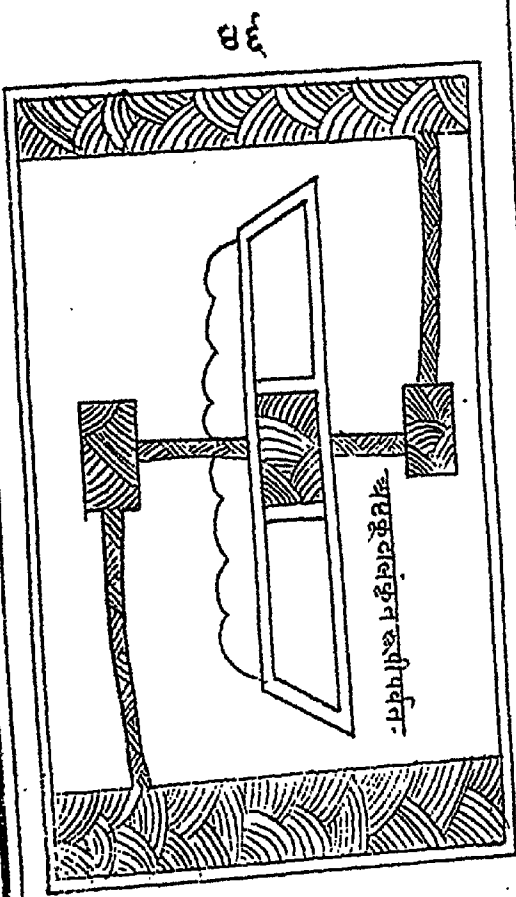
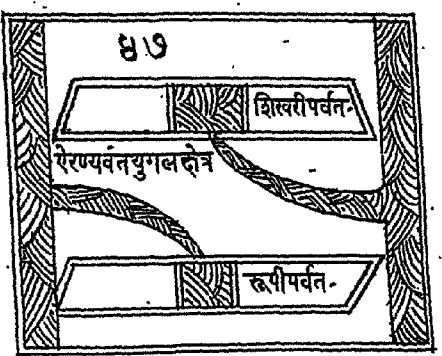
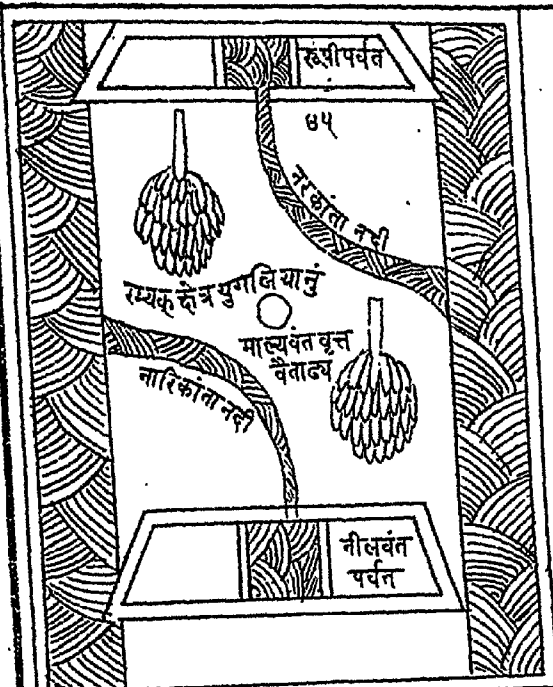
४३



४४



मेरु पर्वत नुपर पांमुकवन स्थापना.



कछ नामे देवता एक पख्योपमायु वालो वशे ठे, तेम सर्व विजयने विषे ते ते विजयने नामे देवता पण कहेवा.

हवे विजयनी नदी कहेठे. निषध तथा नीलवंतने समीपे जे कुंडठे, ते थकी नी कली एवी गंगा अने सिंधु, नामे जे नदी ठे, ते कछादिक आठ विजय तथा पद्मादि क आठ विजय मली शोल विजयने विषे ए बे बे नदी जाणवी. अने शेष बीजा जे चछादिक आठ विजय तथा वप्रादिक आठ विजय ए शोल विजयने विषे रक्ता अने रक्तवती नामा बे बे नदी ठे, ते सर्व नदीउं वैताढ्य प्रत्ये जेदीने शीतोदा तथा शी तामांहे प्रवेश करे ठे. ए कछादिक विजयथी दक्षणावर्त्त गणीये.

हवे महाविदेह क्षेत्रनेविषे पूर्व तथा पश्चिमदिशि शीतोदा तथा शीतानदी जगतीने जेदीने ज्यां समुद्रमांहे मखे ठे. त्यां जगती मांहेनी दिशि शीतोदा तथा शीता नदीने बन्ने बाजु चार वन मुखठे तेनुं जगतीनी विवक्षाविना पहोलपणुं उगणत्रीशसेने बावीस योज ननुं शीतोदा तथा शीता नदीने समीपे जाणवुं. पठी संकोचता संकोचता निषध तथा नील वंतने पाशे वनमुखनुं विस्तार एककला जाणवी. हवे कुलगिरि थकी नदी दिशि जातां वांठित स्थानकने विषे वनमुखनुं विस्तार जाणवानो विधि कहेठे. निषध तथा नीलवं तने समीपे वनमुखनो विस्तार एक कलाठे तो नदीने समीपे निषध तथा नीलवंत थकी सोल हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बे कला जइए तेवारे वनमुखनो विस्तार केटळुं थाय ते जाणवा माटे ए पूर्वोक्त सोल हजार पांचसे ने बाणु योजननी कला करीए ते कला त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश थाय, तेने नदीने समीपे वनमुखनुं वि स्तार उगणत्रीससेने बावीश योजनठे, तेनी साथे गुणीए तेवारे बाणुकोडी अगीआर लाख साठ हजार ने पांचसे थाय, तेने ते क्षेत्रना विस्तार त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश साथे जाग आपीए तेवारे उगणत्रीशसे ने बावीश योजन वनमुखनुं विस्तार थाय. ए प्रकारे ज्यां वांठिए त्यां वनमुखनुं विस्तार लाजे. ए प्रत्येक वनमुख पद्मवरवे दिका अने वनखंडे करी वींटेला ठे, यावत् देवता बेसे ठे. इत्यादि सर्व कहेवुं.

हवे ए विजयादिकनो विस्तार एकठो करतां लाख योजन पूर्ण थाय ते कहेठे.

पांत्रीस हजार चारसे ने ठ योजन एटलो सर्व विजयनो विष्कंज जाणवो, अने बे वन मुखनो विष्कंज अछावनसे ने चुमालीश योजन ठे, सातसेने पचास योजन अंतरनदीनुं पहोलपणुंठे, अने चोपन हजार योजन मेरु तथा जइशाल वन ठे, ते केम के जइशाल वनजे ठे, ते मेरुथकी पूर्वदिशि अने पश्चिमदिशि बावीश चावीश हजार योजनठे. ते माटे बे बाजुना चुमालीश हजार योजन थया अने मेरुनो मध्य विस्तार दश हजार यो

અઢીઢીપના નકશાની ઢકીગત.

જન ઢે. ં ંકઠા કરતાં ઢોપન્ન ઢૂઢાર ઢોજન પૂરણ ઢાય તથા વઢ્ઢસ્કાર પર્વતનું વિસ્તાર ઢાર ઢૂઢાર ઢોજનઢે, ં સર્વ ંકઠો કરિણ તેવારે લાલ ઢોજન પૂર્ણ ઢાય ઢે. ઢવે અધો લોકમાંઢે ગામ વલ્લાણેઢે.

મેરુના સમઢૂતલની અપેઢ્ઢાણ માઢ્રાણં માઢ્રાણં ઢૂમી નીઢી ઢતી ઢાયઢે. તે મેરુપર્વત ઢકી પશ્ચિમઢિશિયે ઢેતાલીશ ઢૂઢાર ઢોજન ઢૂમિને વિષે ગયા પઢી ત્યાં ંક ઢૂઢાર ઢોજન ઢૂમી સમઢૂતલથી ઢંઢીઢે, ત્યાં અધોગામી માણસ વસેઢે. સમઢૂતલથી નવસે ઢોજન ઢેઠા અને નવસે ઢોજન ઢંઢા તિઢાં સુધી તિઢોં લોક કઢીયે તથા નવસેથી ઢંઢું તે ઢરૂં લોક કઢીયે અને નવસેથી નીઢું તે અધોલોક કઢીયે. ં મઢાવિઢેઢનો વિઢારકઢ્યો.

જંઢૂઢીપના મઢાવિઢેઢ સંવંધિ પૂર્વ પશ્ચિમનાં લઢ્ઢ ઢોજન મેલક ઢંઢ્ર.

પૂર્વઢિસિ.

પશ્ચિમઢિસિ.

| અંઠ | સ્થાનકનાં નામ. | ઢોજનસંઢ્યા | અંઠ | સ્થાનકનાં નામ. | ઢોજનસંઢ્યા |
|-----|-----------------------|------------|-----|-------------------------|------------|
| ૧ | સીતામુલ્લવનજગતીસઢીત. | ૩ૂૂ૩ | ૧ૂ | ઢઢશાલવન પશ્ચિમઢિસિયે. | ૩૩૦૦૦ |
| ૨ | આઠમી નવમી, વિજય. | ૩૩૧૩ | ૨૦ | ઢત્રીશમી, સત્તરમી વિજય. | ૩૩૧૩ |
| ૩ | વસ્કારો પર્વત. | ૫૦૦ | ૨૧ | વસ્કારો પર્વત. | ૫૦૦ |
| ૫ | સાતમી, ઢશમી વિજય. | ૩૩૧૩ | ૨૨ | ંકત્રીશમી અઢારમી વિજય. | ૩૩૧૩ |
| ૫ | અંતર નઢી. | ૧૩૫ | ૨૩ | અંતરનઢી. | ૧૩૫ |
| ૬ | ઢઢી અગીઆરમી વિજય. | ૩૩૧૩ | ૨૫ | ત્રીશમી, ઢંગણીશમી વિજય. | ૩૩૧૩ |
| ૭ | વસ્કારો પર્વત. | ૫૦૦ | ૨૫ | વસ્કારો પર્વત. | ૫૦૦ |
| ૦ | પાંઢમી, ઢારમી વિજય. | ૩૩૧૩ | ૨૬ | ઢંગણત્રીશમી, ઢીશમી વિજ. | ૩૩૧૩ |
| ૂ | અંતર નઢી. | ૧૩૫ | ૨૭ | અંતર નઢી. | ૧૩૫ |
| ૧૦ | ઢોથી, તેરમી વિજય. | ૩૩૧૩ | ૨૦ | અઠાઢીશમી, ંકઢીશમી વિ. | ૩૩૧૩ |
| ૧૧ | વસ્કારો પર્વત. | ૫૦૦ | ૨ૂ | વસ્કારો પર્વત. | ૫૦૦ |
| ૧૨ | ત્રીઢી ઢોઢમી વિજય. | ૩૩૧૩ | ૩૦ | સત્તાઢીશમી, ઢાઢીશમી વિ. | ૩૩૧૩ |
| ૧૩ | અંતર નઢી. | ૧૩૫ | ૩૧ | અંતર નઢી. | ૧૩૫ |
| ૧૫ | ઢીઢી, પંઢરમી વિજય. | ૩૩૧૩ | ૩૨ | ઢઢીશમી, ત્રેઢીશમી વિજય. | ૩૩૧૩ |
| ૧૫ | વસ્કારો પર્વત. | ૫૦૦ | ૩૩ | વસ્કારો પર્વત. | ૫૦૦ |
| ૧૬ | પઢેઢી, શોઢમી વિજય. | ૩૩૧૩ | ૩૫ | પઢ્ઢીશમી, ઢોઢીશમી વિજય. | ૩૩૧૩ |
| ૧૭ | ઢઢશાલવન પૂર્વઢિસિયે. | ૩૩૦૦૦ | ૩૫ | સીતોઢા મુલ્લવનજગતીસ | ૩ૂૂ૩ |
| ૧૦ | મેરુપર્વતનું વિષ્કંઢ. | ૧૦૦૦૦ | ૩૬ | સરઢાલે. | ૧૦૦૦૦૦ |

हवे तीर्थकर तथा चक्रवर्ति प्रमुख क्यां उपजे ते कहेते.

आ जंबूद्रीपने विषे जघन्य तो चार तीर्थकर समकाले होय वली उत्कृष्टतो बत्री श विजयना बत्रीश अने जरत तथा ऐरवतना बे मलीने चोत्रीश समकाले होय. तथा वासुदेव, चक्रवर्ति अने बलदेव ए त्रण पुरुष जघन्यतो समकाले प्रत्येके चार चार होय अने उत्कृष्टा त्रीश होय. जेवारे चक्रवर्ति होय, तेवारे वासुदेव न होय, अने जेवारे वासुदेव होय, तेवारे चक्रवर्ति नहोय तेमाटे त्रीश समकाले होय, पण चोत्रीश नहोय, बत्रीश विजय तथा जरत अने ऐरवत मली चोत्रीश क्षेत्र उपजवाना जाणवा.

हवे नीलवंत पर्वतनो विचार कहेते:-

महाविदेहने उत्तरदिसे अने रम्यकूक्षेत्र युगलीयानुं तेनी दक्षिण दिसे नीलवंत नामा वर्षधर पर्वत ठे, ते जेम निषध पर्वतनी वक्तव्यता कही तेमज लंबाश् पोहोलाश् आदिक एमां पण कहेवी अने इहां केशरी नामे झहते, तेनी दक्षिणदिसि थकी सीता महानदी नीकली थकी उत्तरकुरु मांहे आवती बे यमक पर्वत तथा पांच झह प्रत्ये बे प्रकारे वेहेचती थकी एनी वधे थझे चोरासी हजार नदीये पूराती पूराती चंद्रशालवन प्रत्ये आवती मेरुपर्वत पासे बे योजन अण पोहोती थकी पूर्वदिसि साहामी वली ते माध्यवंत नामे गजदंत पर्वतने नीचे जेदीने मेरुपर्वतनी पूर्वदिसे पूर्वमहाविदेह क्षेत्रने बे जागे वेहेचती थकी एकेका चक्रवर्तिना विजयथकी अष्टावीश अष्टाबीश हजार नदीये पूराती पूराती ५३२००० नदीये सहीत थकी विजय नामा जंबूद्रीपनां द्वारने नीचे जगती जेदीने पूर्वदिसे लवण समुद्रमां जलेते, शेष अधिकार सीतोदा परे जाणवुं.

इहां नारीकांता नदी, केशरी झहनी उत्तरदिसि थकी नीकली तेनुं अधिकार हरि कांता नदीनी परे जाणवुं पण एटळुं विशेष जे गंधापाती वृत्तवैताढ्य पर्वतने एक योजन अण पोहोती थकी पश्चिम साहामी वली थकी समुद्रमां जले ते, शेष तेमज जाणवुं.

नीलवंत पर्वतना नव कूटनां नाम कहेते:- १ सिद्धायतन कूट २ नीलवंत कूट ३ पूर्वविदेह कूट ४ सीता कूट ५ कीर्तिदेवी कूट ६ नारीकांता कूट ७ अपरविदेह कूट ८ रम्यकूट ए उपदर्शन कूट ए सर्वकूट पांचशे योजनना जाणवा तथा ए पर्वतनो नीलोवर्ण, नीलीकांति, सर्ववैदूर्यरत्नमय नीलो ठे, अने नीलवंत नामे देवता इहां ए क पद्योपमायुये वसे ठे, माटे एनुं नीलवंत एवुं शाश्वतुं नाम ठे.

हवे रम्यकू नामे युगलीयानुं क्षेत्र कहेते:- नीलवंतने उत्तरदिसे अने रूपी पर्वतने दक्षिण दिसे रम्यकूक्षेत्र ठे तेनुं वर्णन जेम पूर्वे हरिवर्ष युगल क्षेत्रनुं कळुंते तेनी परे जाणवुं. तथा नरकांता नदीने पश्चिमदिसे अने नारिकांता नदीने पूर्वदिसे ए क्षेत्रमां गंधापाती नामा वृत्तवैताढ्य पर्वतठे, तेमां घणा कमल गंधापातीना वर्ण सरिखा रक्त

वर्णे ठे ते उपर पद्मनामे देवता पद्योपमायु वालो वसेठे तेमज ए रम्यक क्षेत्र पण घणो रम्य मनोहर ठे, तथा रम्यक नामे देवता वशेठे, तेशी एनुं रम्यक नाम शाश्वतुं ठे.

हवे रुक्मि (रूपी) पर्वत कहेठे:-रम्यकक्षेत्रने उत्तरदिसे अने हिरण्यवंत क्षेत्रने दक्षिण दिसे रुक्मी पर्वतठे ते महाहिमवंतनी वक्तव्यताये जाणवो. इहां महापुंडरिक नामे ड्रहठे तेमांशी नरकांता नामा नदी दक्षिणदिसेथी पूर्वोक्त रोहितानी परे पूर्वदिसे जाय ठे तथा रूपकुला नदी उत्तर दिसेथी नीकली ते हरिकांतानी पेरे पश्चिम दिसे जायठे.

ए रूपी पर्वत उपर आठ कूटठे तेनां नाम कहेठे:-१ सिद्धायनकूट २ रुक्मीकूट ३ रम्यककूट ४ नरकांता कूट ५ बुद्धिदेवीकूट ६ रूपकुलाकूट ७ हैरण्यवंतकूट ८ मणिकांचनकूट ए सर्व कूट पांचशे पांचशे योजननां ठे ए पर्वत रूपामय ठे रूपानी पेरे कांती ठे अने रुक्मिनामा देवता पद्योपमनी स्थितिचे वशेठे साटे एनुं रुक्मि एवुं शाश्वतुं नामठे.

ए रुक्मी पर्वतने उत्तरदिसे अने शिखरी पर्वतने दक्षिणदिसे हैरण्यवंत नामे युगल क्षेत्र ठे तेनो अधिकार हेमवंत क्षेत्रनी पेरे जाणवो. इहां सुवर्णकुला महा नदीने पश्चिम दिसे अने रूपकुला महानदीने पूर्वदिसे हैरण्यवंत क्षेत्रने मध्य जागे, माध्यवंत नामे वृत्तवैताल्य पर्वत ठे तेनो वर्णन शब्दापाती वृत्तवैताल्यनी पेरे जाणवो एना कमल ते माध्यवंत सरखा प्रजाये माध्यवंत सरखे वर्णेठे तथा प्रजास नामे देवता पद्योपमनी स्थितिचे इहां रहेठे तेशी तथा हैरण्यवंत क्षेत्र ते रुक्मी अने शिखरी पर्वत तेणे करी बे पासे सहित ठे, तथा नित्ये हिरण्य एटले सुवर्णरूप प्रकाशेठे तथा आशनादिके करी नित्ये हिरण्य दीएठे, अने इहां हैरण्यवंत नामे देवता वशेठे तेशी एनुं नाम हैरण्यवंतठे.

हैरण्यवंत क्षेत्रने उत्तरदिसे अने ऐरवतक्षेत्रने दक्षिणदिसे शिखरी नामे वर्षधर पर्वत ठे, तेनो लंवाइ आदिक सर्व अधिकार चूल हेमवंत पर्वतनी पेरे जाणवो इहां पुंडरिक नामे ड्रह ठे तेमांशी सुवर्णकुला महानदी दक्षिणदिसे नीकली ते रोहीतांसानी पेरे पूर्व दिसे समुद्रमां जायठे अने जेम गंगा अने सिंधु ए बे नदी जरत क्षेत्रमां जायठे तेम इहां रक्ता अने रक्तावती ए बे नदी ऐरवतक्षेत्र मांहे जाय ठे तेमां पूर्वदिसिये रक्ता नदी अने पश्चिम दिसिये रक्तावती नदी जाणवी शेषअधिकार सर्व चुल्ल हेमवंतनीपेरेजाणवो.

शिखरीपर्वतने विषे इग्यारकूट ठे तेनां नाम कहेठे:-१ सिद्धायतन कूट, वीजो शिखरी कूट, त्रीजो हैरण्यवंत कूट, चौथो सुवर्णकुला कूट, पांचमो सूरदेवी कूट, षष्ठो रक्तावर्त्तन कूट, सातमो लक्ष्मी कूट, आठमो रक्तावत्यावर्त्तन कूट, नवमो इलादेवी कूट, दशमो ऐरवत कूट, अगीआरमो तिगिडि कूट ए सर्व कूट पांचशे योजननां जाणवा तथा ए शिखरी पर्वतने विषे घणा कूट शिखरीवृद्धाने संस्थाने संस्थित ठे, सर्व रत्नमय ठे, अने इहां शिखरी नामे देवता वशेठे तेशी एनुं शिखरी एवुं शाश्वतुं नाम ठे.

हवे ऐरवतक्षेत्रनी वक्तव्यता कहे ठे.

उत्तरदिशिना लवणसमुद्रनी दक्षिण दिशे ऐरवत नामे क्षेत्र ठे, एने विषे ठुंग वृक्ष तथा कांटा जरतक्षेत्रनी पेरे घणा ठे, तथा एनी बीजी पण सर्व वक्तव्यता जर तक्षेत्रनी पेरे जाणवी. परंतु एटलुं विशेष जे इहां ऐरवत नामे चक्रवर्ती जाणवो अ ने जरतक्षेत्रने विषे जरत नामे चक्रवर्ती कहेवो, तथा इहां ऐरवत नामे देवता वसे ठे, तेथी एनुं ऐरवत एवुं शाश्वतुं नाम ठे.

हवे ए जरत अने ऐरवत क्षेत्रने विषे कालचक्रनुं स्वरूप कहे ठे.

जरत तथा ऐरवत क्षेत्रमांहे ठ आरे करी अवसर्पिणी अने ठ आरे करी उत्सर्पिणी रूप वार आरानुं कालचक्र ठे. ते सदा काल अनादि अनंत पणे अनुक्रमे त्रमण करे ठे.

हवे ए वार आरानां नाम कहेठे. प्रथम सुखम सुखमा, बीजो सुखमा, त्रीजो सुखम दुखमा, चौथो दुखम सुखमा, पांचमो दुखमा, षष्ठो दुखम दुखमा ए ठ आरा ठे, ते अवसर्पिणी कालनेविषे अनुक्रमे प्रथम सुखम सुखमाथी गणीये अने उत्सर्पिणी काले अवला गणीये एटले दुखम दुखमाथी धुर मांडी गणीए. एम वार आरा चढता प डता जाणवा, ए चक्रनी पेठे फिरता आवे माटे एने कालचक्र कहीए. एमां अवसर्पिणी ते घटतो घटतो काल जाणवो अने उत्सर्पिणी ते चढतो चढतो काल जाणवो.

हवे ए आराना कालनुं प्रमाण कहे ठे. पहेलो आरो चार कोनाकोनी सागरनो, बी जो आरो त्रण कोनाकोनी सागरनो, त्रीजो आरो बे कोडाकोडी सागरनो, ए त्रण आ राने विषे अनुक्रमे करी मनुष्योनां आयुष्य कहे ठे:—प्रथम आरे त्रण पळ्योपमनुं, तथा बीजे आरे बे पळ्योपमनुं, त्रीजे आरे एक पळ्योपमनुं, ए रीते मनुष्यनुं आयुष्य जा एवुं. हवे शरीरनुं मान कहे ठे. प्रथम आराने विषे त्रण कोश उंचा मनुष्यनां शरीर होय, अने बीजे आरे बे कोश, त्रीजे आरे एक कोश, ए शरीरनुं उंचपणुं जाणवुं.

हवे ए त्रण आराने विषे मनुष्योने जे आहारनी इष्टा थाय ठे, ते कहेठे:—पहेला आ राने विषे चौथे दिवसे तुअर प्रमाणे आहारनी वांढा थाय, अने बीजे आरे त्रीजे दिवसे वोर प्रमाणे आहारनी वांढा थाय. तथा त्रीजे आरे एकांतरे आमला प्रमाणे आहारनी वांढा थाय. हवे शरीरने विषे पांसलीनी संख्या कहेठे. प्रथम आरामांहे वशेने ढप्पन्न पिठकरंरु एटले पांसली होय, अने बीजे आरे ते पूर्वोक्त पांसलीनुं अर्द्ध एटले एकशोने अष्टावीश पांसली होय, तथा त्रीजे आरे वली तेनुं अर्द्ध एटले चोशठ पांसली होय.

हवे ए त्रण आराने विषे अपत्य पालना कहेठे. प्रथम आराने विषे युगलने प्रसव्या पढी उगणपचास दिवस सुधी अपत्य एटले ठोरु युगल तेहनी प्रतिपालना करे, तथा

વીજે આરે ચોશઠ દિવસ અપત્યપાલના હોય, અને ત્રીજે આરે ડંગણાણી દિવસસુધી અપત્યપાલના જાણવી. તેવાર પઢી તે યુગલનાં માતપિતા મરણ પામે. ં ત્રણ આરાને વિષે નિશ્ચયે સમસ્ત પંચેઢી જીવ તે સર્વ યુગલિયા જાણવા. તે યુગલિક કેહેવા ઠે ? તોકે જલા મનવાલા ંટલે અટપ કષાય વાલા, તથા રૂપવંત તથા સમચઢરંસ સંસ્થાન વાલા હોય તેમાઢે સુંદરાકાર ઠે, વલી તે યુગલિયા મનુષ્ય તથા તિર્યચ તે સર્વ પોતાના આયુષ્યથી ઢઢી આયુષ્ય પ્રમાણે અથવા પોતાના આયુષ્ય પ્રમાણેજ દેવતા માંહે જડ ડપજે.

હવે ં ત્રણ આરાને વિષે યુગલિયાને મતંગ પ્રમુખ દશ જાતિના કલ્પવૃક્ષ ઠે તે પાનક પ્રમુખ દશ પ્રકારના વાંઢિત પદાર્થ આપે, તે આવી રીતે:—પ્રથમ મતંગ નામે કલ્પવૃક્ષ તે વૃક્ષ ઁારેક પ્રમુખના રસ સરઁા મીઠા રસ આપે, વીજો ઢંગનામે કલ્પવૃક્ષ તે ઁાલી તથા વાટલી તથા ચરુ અને કલશ પ્રમુખ જાજન આપે. ત્રીજો તુર્યાંગનામે કલ્પવૃક્ષ તે મહા વાજિત્ર સહિત વત્રીશ વઠુનાટક દેઁાઢે ઠે, ચોથો જ્યોતિરંગનામે જે કલ્પવૃક્ષ ઠે તે રાત્રિને વિષે પણ સૂર્યની પેરે પ્રકાશ કરે ઠે, તથા પાંચમો ઢીપાંગ નામે જે કલ્પવૃક્ષ ઠે તે ઘરને વિષે ઢીવાની પેરે અજુઆલું કરે ઠે, તથા ઠઠો ચિત્રાંગ નામે જે કલ્પવૃક્ષ ઠે તે પંચવર્ણ અને સુગંધિક ફૂલ, સહસ્રદલ કમલ, માલતી પ્રમુખ આપે, તથા સાતમો ચિત્રરસા નામે જે કલ્પવૃક્ષ ઠે તે આહાર ંટલે મનોવાંઢિત મિષ્ટાન્ન પટ્સ જોજન આપે, તથા આઠમો મણિતાંગ નામે જે કલ્પવૃક્ષ ઠે, તે ઁૂષણ, આચરણ, મુકુટ, મુઢ્રિકા, હાર, કુંડલ અને નેઢર પ્રમુખ આપે. તથા નવમો ગેહાકાર નામે જે કલ્પવૃક્ષ ઠે, તે સસઁૂમિના, પંચ ઁૂમિના તથા ત્રિઁૂમિના મનોહર આવાસ આપે, તથા દશમો અનિતાંગ નામે કલ્પવૃક્ષ ઠે તે જલાં વસ્ત્ર તથા દેવઢુષ્ય ચીર, વરપટકૂલાદિ આસન વેસવા યોગ્ય તથા જઢા સન શય્યા પ્રમુખ આપે. ં દશ જાતિના કલ્પવૃક્ષ તે ં પૂર્વોક્ત વાંઢિત પદાર્થ પૂરે ઠે.

હવે સર્વ આરાનેવિષે સામાન્ય પણે તિર્યચનાં પણ આયુષ્ય કહે ઠે.

મનુષ્યના આયુષ્ય સરઁાં ગજ, હાથી, સિંહ અને અષ્ટાપદ પ્રમુખનાં આયુષ્ય હોય. મનુષ્યના આયુષ્યનો ચોથો જાગ ઘોઢા અને વેસર પ્રમુખનું આયુષ્ય જાણવું. તથા ઠા લી, ગાઢર અને શીયાલ પ્રમુખનું મનુષ્યના આયુષ્યને આઠમે જાગે આયુષ્ય જાણવું. તથાં ગાય, ઁંશ, ડંટ અને ગર્દજ પ્રમુખનું આયુષ્ય તે મનુષ્યના આયુષ્યને પાંચમે જાગે જાણવું. તથા કૂતરા પ્રમુખનાં આયુષ્ય તે મનુષ્યના આયુષ્યને દશમે જાગે ઠે. ં તિર્યચનાં આયુષ્ય પ્રમુખ પ્રાયે સર્વ આરાને વિષે ં પ્રકારે સરઁાં હોય. હવે ત્રીજા આરાને અંતે નવ કુલગર, રાજનીતિ અને સર્વ સંસાર વ્યવહાર તથા જિન ધર્મ આદિ શબ્દથી વાઢર અગ્નિકાય તથા જ્ઞાન વિજ્ઞાન પ્રમુખ સર્વની ડત્પત્તિ ઁાય.

अवसर्पिणी त्रीजा आरानेविषे नेव्याशी पखवाना पाठला जेवारे शेष रहे तेवारे पेहेला तीर्थकर सिद्धिपद पामे अने चोथा आरानानेव्याशी पखवाना पाठला जेवारे शेष रहे, तेवारे चोवीशमा तीर्थकर सिद्धिपद पामे, अने उत्सर्पिणी कालना त्रीजा आराना नेव्याशी पखवाना जेवारे जाय, तेवारे पेहेला तीर्थकर उपजे, तथा चोथा आराना नेव्याशी पखवाना जेवारे जाय, तेवारे ठेठ्ठा चोवीशमा तीर्थकर उपजे.

हवे चोथा आरानुं स्वरूप कहे ठे.

बैताद्वीश सहस्र वरसे ऊणो एक कोनाकोनी सागरोपमनो चोथो आरो होय, तेहने विषे मनुष्यनुं आयुष्य पूर्वकोडि वर्षनुं जाणवुं. अने शरीरनुं मान पांचशे धनुष्यनुं जाणवुं.

हवे पांचमा आरानुं स्वरूप कहे ठे.

पांचमा आरानुं प्रमाण एकवीश सहस्र वरसनुं ठे, ते पांचमा आरानेविषे सात हा थ उंचा मनुष्य होय, एकशोने त्रीश वरसनुं आयुष्य मनुष्यनुं होय, तथा पांचमा आराने अंत जिनधर्मादि पदार्थनो पण अंत एटले नाश थाय. व्यवहार, आचार, नीति, जाति, ए सर्वनो अंत आवशे. ए वात सिद्धांतमां कही ठे. तथा केटला बोल विच्छेद जशे? ते कहे ठे ॥गाथा॥ सुय सूरि संघ धम्मो, पुवण्हे विज्जिही अगणि सायं ॥ निव विमलवाहणे सुह, ममंति तद्धम्म मञ्जण्हे ॥१॥ दुप्पसहो समणाणं, फग्गुसिरि होइ साहुणीणं च ॥ सहो नाइल नामा, सच्चसिरि सावियाणं च ॥२॥ पुवाए सञ्जाए, विच्छेडं होइ चरणधम्म स्स ॥ मञ्जण्हे रायाणं. अवरण्हे जाइ तेयस्स ॥३॥इति॥ तेवार पढी शुं अशे? ते कहे ठे. लवणादि खार तथा अग्नि अने कालकूटादिविष, तेनी वृष्टितेणे करी पृथ्वी जे ठे ते हा हाकार करशे तथा पद्दी जाति प्रमुखनां जे बीज ठे, ते वैताढ्य प्रमुख पर्वतने विषे रहेशे तथा मनुष्य अने तिर्यचना बीज ठे, ते सर्व बिलादि स्थाननेविषे रहे ठे.

हवे ते बिल वखाणे ठे.

वैताढ्यना बे पासानेविषे ज्यां घणां माठलां ठे, वली गामानां चकनी धारा सरखो प्रवाह ठे जेहनो एहवी गंगा अने सिंधु तथा रक्ता अने रक्तवती नामे जे नदी तेहना बे तटने विषे नव नव बिल ते गुफा सरखां जाणवा. एटले दक्षिणजरत मांहे बे नदी ना चार तट ठे. अने उत्तर जरतमांहे बे नदीना चार तट ठे, सर्व मली आठ तट ठे, ते एकेक तटे नव नव बिल गणिएं, तेवारे बहोतेर बिल थाय. एम षेरवतने विषे पण बहोतेर बिल ठे, ते सर्व एकठा करीएं तो एकशोने चुम्मालीश बिल थाय.

हवे ठठा आराने विषे मनुष्यादिकनुं जे स्वरूप ठे, ते कहेठे.

एकवीश सहस्र वरस प्रमाणे पांचमा आरा सरखो जे ठठो आरो ठे, तेहनेविषे बे हा थ उंचा शरीर अने वीश वरस आयुष्यवालां एहवा मनुष्य होय, ते मनुष्य मत्स्यनां आ

हार करे तथा मांठा रूपवालां होय वली निर्दय परिणाम वालां होय, बिलने विषे रहेनारां होय, वली नरक निर्यचरूप दुर्गतिने विषे गमन करनारां होय. वली लजा रहित होय, तथा वल्ल रहित पशुनी पेठे नम्र फरे. तथा कठोरवचनना बोल नार होय, तथा ए पिता, ए पुत्र, ए स्त्री, ते ए बहेन, इत्यादि व्यवहार तेने न होय एटले तिर्यचनी पेरे विवेकरहित होय. तथा ठ वरषनी स्त्री गर्ज धारण करे, ते पण अतिदुःखे प्रसव करे. वली ते स्त्रीयोने घणां ठोरु होय, एवी स्त्रीउं होय.

ए पूर्वोक्त ठ आरा तेणे करी अवसर्पिणी काल होय अने तेने विपरीतपणे अवला गणीए तेवारे उत्सर्पिणीकाल थाय. त्यां अवसर्पिणी ते प्रथम आराधी घटतो काल होय अने उत्सर्पिणी ते प्रथम आराधी चढतो काल होय. ए अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणीना बार आराना कालचक्रनेविषे वीश कोणाकोनी सागरोपम थाय.

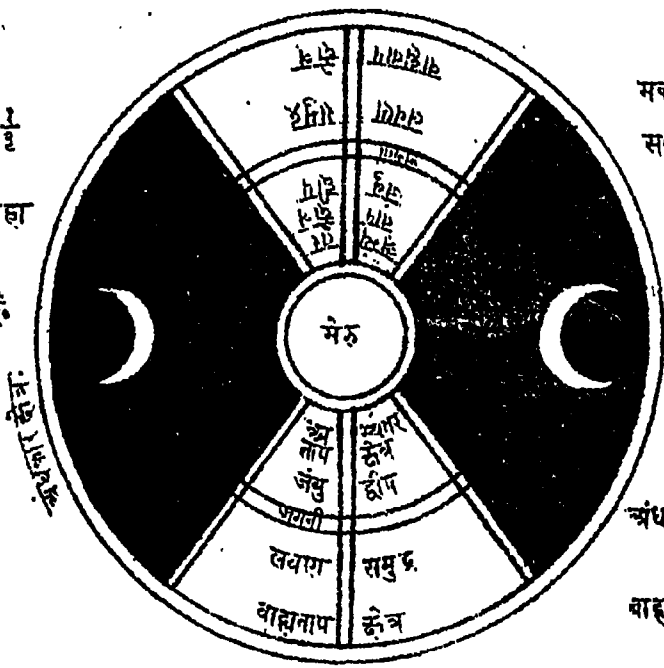
हवे शेष क्षेत्रने विषे आरानुं सरखापणुं कहे ठे.

देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए बे क्षेत्रनेविषे अने हरिवर्ष तथा रम्यक् ए बे क्षेत्रनेविषे तथा हेमवंत अने हिरण्यवंत ए बे क्षेत्रनेविषे तथा पूर्वविदेह अने पश्चिमविदेह क्षेत्रनेविषे ए चार क्षेत्रना युगलनेविषे अनुक्रमे करी सदाकाले अवसर्पिणी कालना चार आरानो प्रथम काल जाणवो. ते केम के अवसर्पिणी कालनो पेहेलो आरो सुखम सुखमा ठे. तेहना धुरनो जेहवो काल होय तेहवो काल सदैव देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए बे कुरु क्षेत्रनेविषे होय एम बीजा आरानो जेहवो प्रथम काल होय तेहवो सदैव हरिवर्ष तथा रम्यक् ए बे क्षेत्रनेविषे होय. वली बीजा आरानो जेहवो प्रथम काल होय, तेहवो सदैव हेमवंत तथा हिरण्यवंत ए बे क्षेत्रने विषे होय तथा चोथा आरानो जेवो प्रथम काल होय, तेवो काल महाविदेहक्षेत्रने विषे सदा जाणवो.

हवे चंद्रमा अने सूर्यनां चार क्षेत्र कहे ठे.

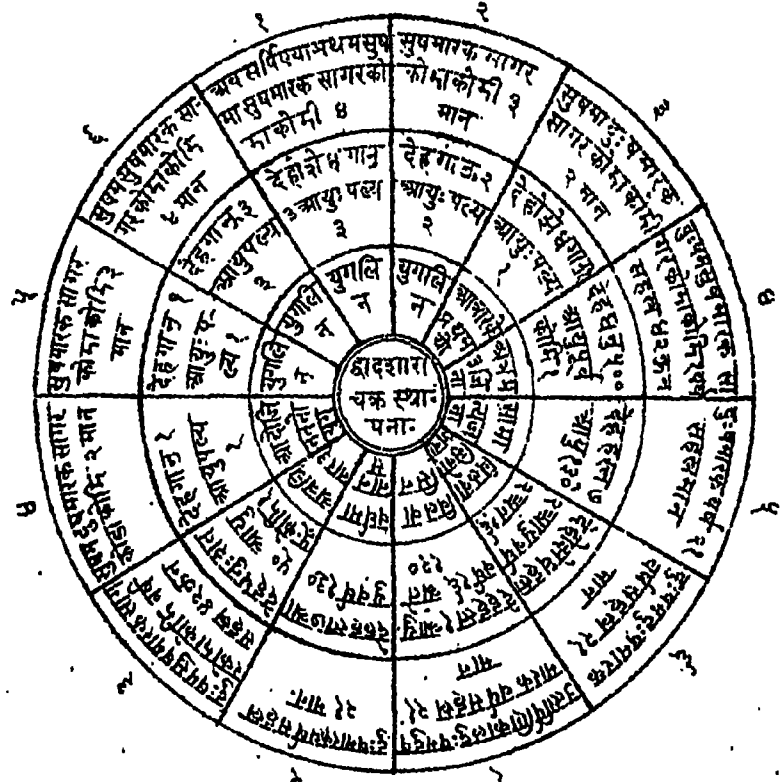
जंबूद्वीपने विषे बे चंद्रमा अने बे सूर्यते तेनुं दक्षिण अने उत्तरदिशिनुं जे गमनागमन तेनुं क्षेत्र पांचशे दश योजन उपर एक योजनना एकसठ्ठीआ अरुतालीश जाग जाणवा. हवे चंद्रमा अने सूर्यना मंरुलनी संख्या अने प्रमाण कहे ठे. चंद्रमाना पंदर मांडलां ठे अने सूर्यना एकशोने चोराशी मांरुलां ठे, ते एकयोजननां एकशठ जाग करिएं, तेवां उपन्नजाग प्रमाण चंद्रनां मांडलां ठे, अने अरुतालीशजाग प्रमाण सूर्यनां मांरुलां ठे. ए चंद्र सूर्यना विमाने रोधन करेली जूमि तेने मंरुल कहीएं, ते मंरुलनी संख्या श्री मंरुलना आंतरा एकेके उठा जाणवा, एटले चंद्रमाना मांरुला पंदरना चउद आंतरा थाय. अने सूर्यना मांडला एकशोने चोराशीना आंतरा एकशोने त्र्याशी थाय.

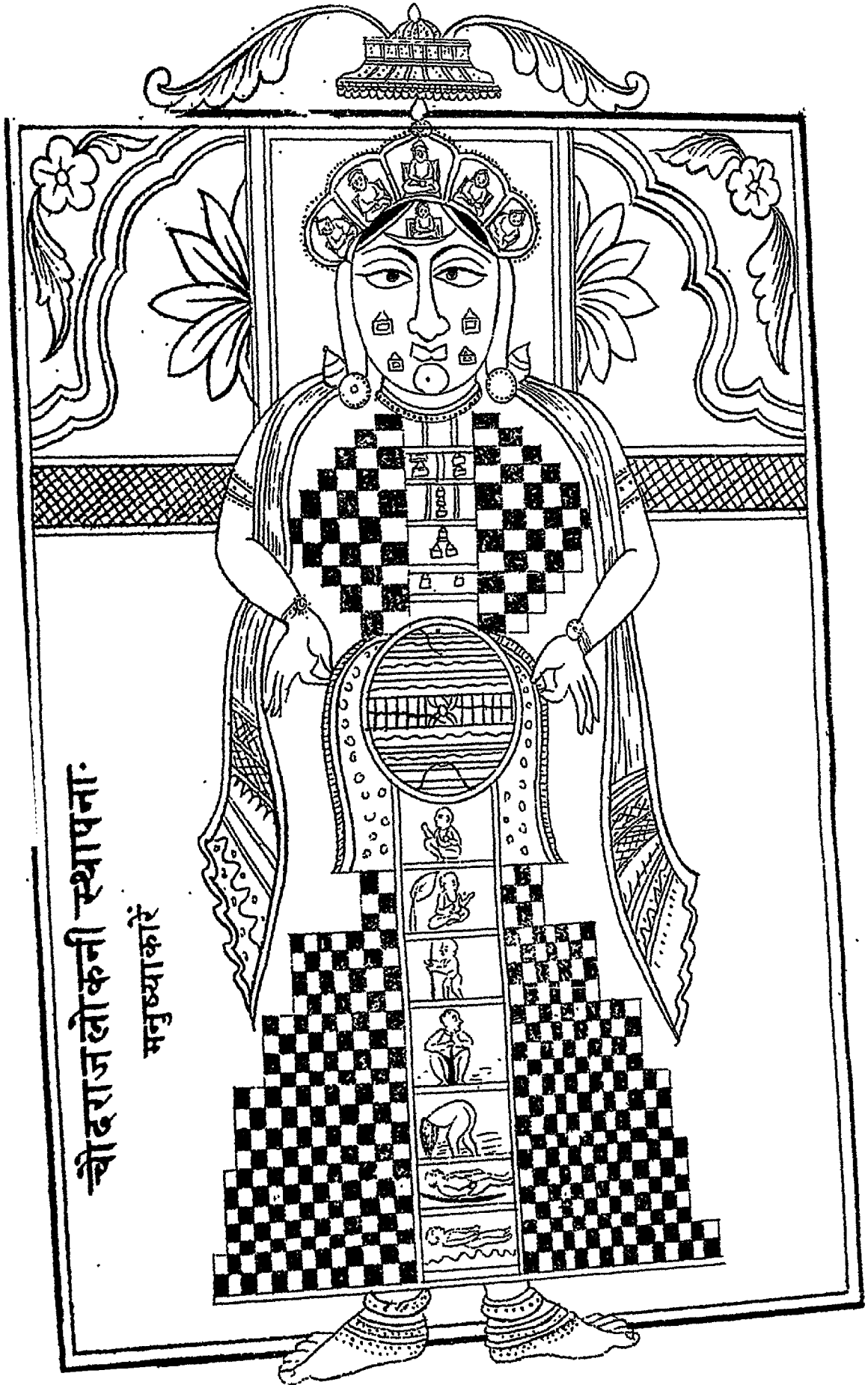
नापक्षेत्रं ज्योतिषं
 जंजुदीप ४५०००
 लवणसमुद्रे ३३३३३।३
 ताप क्षेत्र अभ्यंतर बाहा
 ६३२४।३
 बाह्यबाहा ६३२४५।३



मकर संक्रांते प्रथम दिने
 सर्व बाह्यमंडले सूर्यताप
 क्षेत्रस्थिति
 तथा
 अंधकार क्षेत्रस्थिति
 स्थापना
 दिनमान मुहूर्त २२
 रात्रिमान मुहूर्त १८
 अंधकारक्षेत्र अभ्यंतर बाहा
 ६४८६।३
 बाह्यबाहा ६४८६८।३

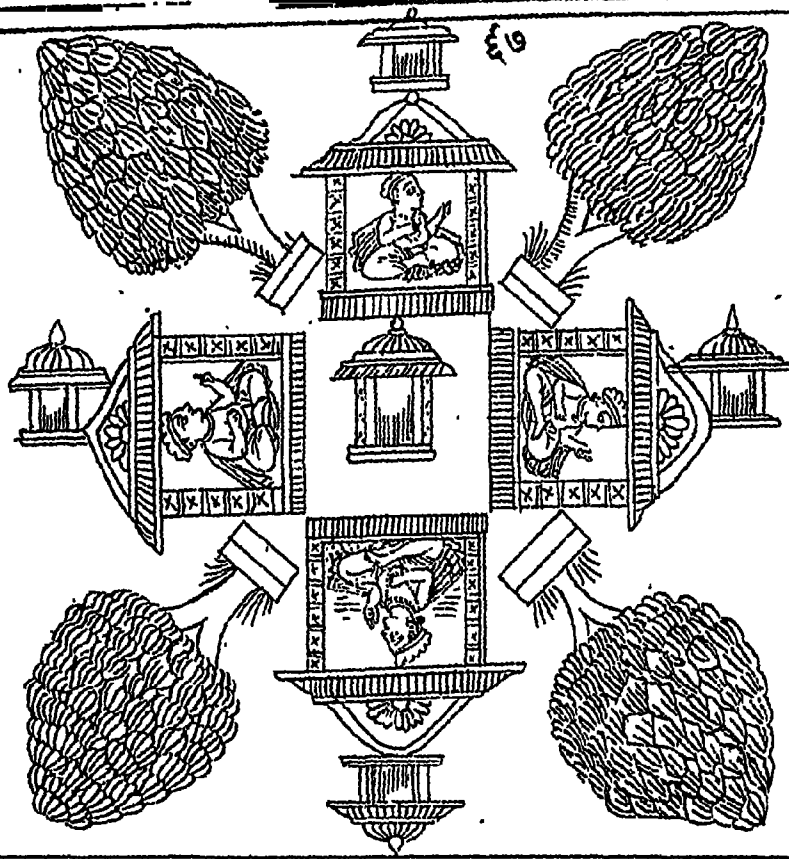
बारा आरानी स्थापना





चौदराजलोकनी स्थापना

मनुष्याकरे



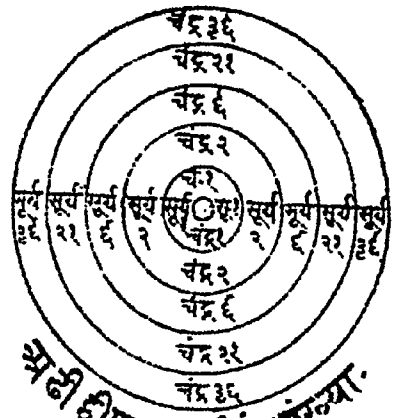
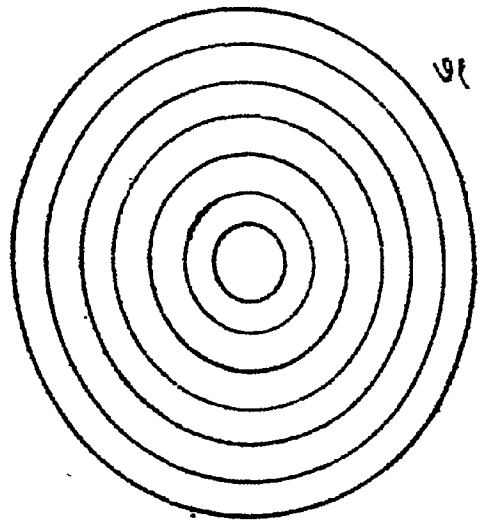
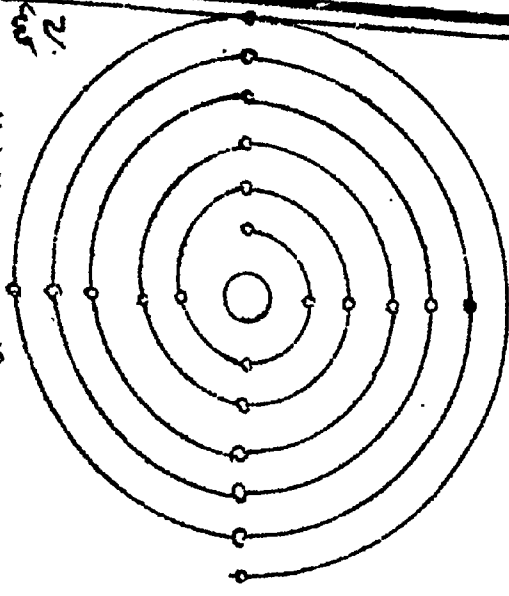
समुद्रवासी-चार देवतानी स्थापना-

मनुष्यक्षेत्रेसूचिश्रेणिस्थित
चंद्रसूर्यस्थापना.

६८

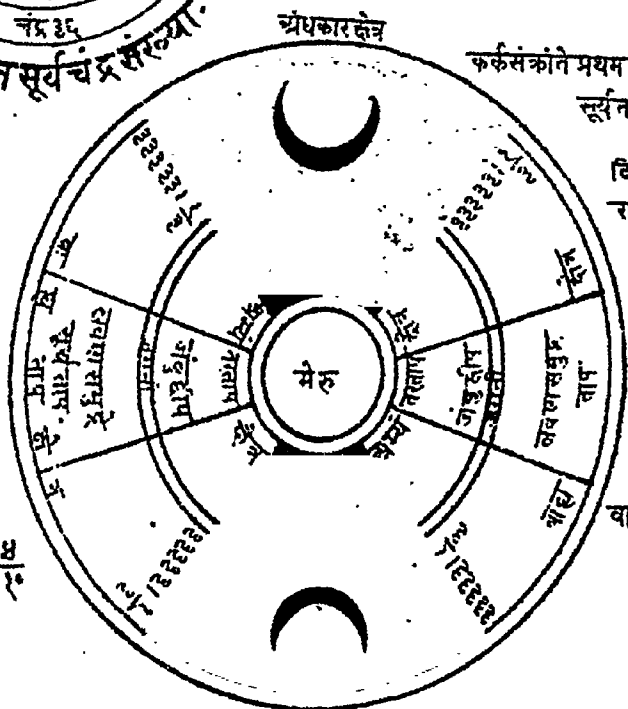


चंद्रसूर्य मंजल स्थापना



अही दीपगत सूर्य चंद्र संख्या.

तापक्षेत्रं लोचपसुं-
 जंबु द्वीपे ४५०००
 लयाण समुद्रे ३३३३३।
 आयां ३।
 तापक्षेत्र अर्धंतर वाहा
 ९४०६। ९
 बाहरी वाहा ९४०६। १५



अंधकार क्षेत्र
 कर्कसंक्रांते प्रथम दिने सर्वाभ्यंतर मंजले
 सूर्य तापक्षेत्र स्थापना-

दिनमान मुहूर्त १०
 रात्रिमान मुहूर्त १२

अंधकारक्षेत्र अर्धंतर वाहा
 ९५२४।
 वाह्य वाहा ९५२४५।

अंधकार क्षेत्र-

हवे चंद्रमाना एक मंजलने बीजा मंडलनी वचमां अंतर कहे ठे. पांत्रीश योजन उपर एकसठिआ त्रीश जाग, वली एकसठिआ एक जागना सात जाग करिणं तेवा चार जाग अधिक, एटलुं चंद्रमाना एक मंडलथी बीजा मंगलनी वचमां अंतरनुं प्रमाण जाणुं. ते जाणवानी परें लखीं ठैये:-चंद्रमंडल पंदर ठे, ते एकेकानुं परिमाण जे एकसठिआ ढप्पन्न जाग ठे तेने पंदरमंडल साथे गुणीये तेवारे आठशे चाळीश जाग थाय, तेने एकशठ जागे हरतां तेर योजन उपर एकसठिआ सुकतालीश जाग थाय, ते मूलगी जे चारना क्षेत्रनी राशि पांचशे दश योजन उपर एकसठिआ अडतालीश जागनी ठे, ते मांहेथी बाद करतां बाकी चारशे सत्ताणुं योजन उपर एक जाग रहे, तेने चौद आंतरे वेहेंचीये तेवारे पांत्रीश योजन आवे, उपर सात योजन वधे, तेना एकसठिआ चारशेने सत्तावीश जाग थाय, तेनी साथे प्रथमनी उगस्यो एक जाग जेळीए, तेवारे चारशेने अछा वीश जाग थाय, तेने चउद जागे वेहेचतां त्रीश जाग आवे, उपर आठ वधे, ते एकेकाना सात प्रतिजाग कढपीं तेवारे सात ने आवे गुणतां ढप्पन्न थाय, तेने चउदे जाग देतां चार जाग लाजे, एरीते चंद्रमाना मंडलनो आंतरो पांत्रीश योजन उपर एकसठिआ त्रीश जाग, तथा एकसठिआ एक जागना सात जाग करीं तेवा चार जाग, अधिक थाय

हवे सूर्यमंजलनुं अंतर कहे ठे. सूर्यमंडल एकशेने चोराशी ठे. ते एकेकनुं परिमाण एकसठिआ अडतालीश जागनुं ठे, अने चार क्षेत्रनुं परिमाण पांचशें दश योजन उपर एकसठिआ अरुतालीश जाग ठे, ते मांथी एकशेने चोराशी मंडलना परिमाणना एक सठिआ आठ हजार आठशेने वत्रीश जाग थाय, तेना योजन एकशे चुम्मालीश उपर एकसठिआ अडतालीश जाग आवे, ते उपली चार क्षेत्रनी राशिमांथी बाद करतां बाकी त्रणशे ने ठासेठ योजन रहे ठे, तेने एकसोने ज्यासी अंतरे वेचतां जे योजन आवे तो एक सूर्यमंजल अने बीजा सूर्यमंडलनी वचमां अंतर जे योजननो ठे

चंद्रमा तथा सूर्य जंबूद्वीपमांहे तथा लवण समुद्रमांहे केटला योजन आवे ? ते कहे ठे:-जंबूद्वीपमांहे एकशेने एंशी योजन प्रमाण क्षेत्रने विषे पांच मंडल चंद्रमानां ठे, अने पांसठ मंडल सूर्यनां ठे, तथा लवण समुद्रमांहे त्रणसेने त्रीश योजन प्रमाण क्षेत्रने विषे दश मंगल चंद्रमानां ठे, अने एकशेने उगणीश मंगल सूर्यनां ठे, एटले एक सोने एंशी योजन चंद्रमा अने सूर्यजंबूद्वीपमांहे आवे, अने लवण समुद्रमांहे त्रण शेने त्रीश योजन चंद्रमा अने सूर्य जाय.

हवे चंद्रमानुं मंडल अने सूर्यनुं जे मंजल ठे तेनुं परस्पर अंतर कहे ठे. सर्व मंजल मांहेला मध्यना मंजलने विषे रहेलु जे चंद्रमंडल अने सूर्यमंजल तेनुं परस्पर अंतर नवाणुं हजार ठशेने चाळीश योजननुं सूर्यमंडल अने चंद्रमंडलनुं मांहोमांहे अं

तर जाणवुं. तदनंतर चंद्रमंडलांना प्रतिमंडलाने विषे व्होत्तेर योजन अने एक योजनना एकसठ जाग करिणं, तेवा बावन जाग उपर एवी अंतर वृद्धि ठे, अने सूर्यमंडलांना प्रतिमंडलाने विषे पांच योजन अने एक योजनना एकसठ जाग करिणं, तेवा पांच जाग उपर, एटली अंतर वृद्धि ठे. तेमज बाह्य मंडलाने विषे रेहेलुं जे चंद्रमंडल अने सूर्यमंडल, तेनुं परस्पर वचमां अंतर एक लक्ष ठसेने साठ योजननुं ठे.

हवे चंद्रमाना प्रत्येक मंडलाने विषे मुहुर्त्त गति कहे ठे.

चंद्रमा जेवारे निषध पर्वतने माथे सर्वाज्यंतर मंडले उगे, तेवारे एक मुहुर्त्तमांहे पांच हजार तहोत्तेर योजन, अने ऊपर एक योजनना तेर हजार सातशोने पचीश जाग करीणं तेवा सीत्योतेरसोने चुम्माळीश जाग उपर एटली मुहुर्त्त गति करे. त्यार पठी जेवारे वीजे वीजे मांडले जाय तेवारे प्रतिमंडले पोणा चार योजननी वृद्धि करीणं. एम मंडल मंडलप्रत्ये मुहुर्त्त दीठ पोणा चार योजन वधारतां जेवारे पंदर मंडल सुधी मुहुर्त्त गतिं चंद्रमा लवण समुद्रमांहे सर्व बाह्य मंडले उगे, तेवारे बावन योजने अधिक करिणं तो एकेक मुहुर्त्त पांच हजार एकशोने पचीश योजन उपर एक योजनना तेर हजार सातशेने पचीश जाग करीणं, तेवा ठ हजार नवशेने नेवुं जाग अधिक जाणवी, एटली बाहेरने मंडले चंद्रमा एक मुहुर्त्तमांहे गति करे.

जे चंद्रमानी मांहेला मांडलानी मुहुर्त्तगति, पांच हजारने तहोत्तेर योजन जाजेरी कही तेज सर्वाज्यंतर मंडले सूर्यनी गति ठे, परंतु तेमांहे एकशोने अछोतेर योजन सहित करीणं एटली अधिक सूर्यनी मांहेले मंडले मुहुर्त्त गति जाणवी. एटले जेवारे पांच हजार तहोत्तेर मांहे एकशोने अछोतेर जेळीणं. तेवारे पांच हजार वशेने एकावन्न योजन, अने एक योजनना साठ जाग करिणं, तेवा उगणत्रीश जाग जाजेरी सूर्यनी गति जाणवी. अने चंद्रमानी बाहेरने मंडले जे मुहुर्त्त गति एकावनशोने पन्चिश योजन कही ठे, तेमांहे एकसोने एंशी योजननी वृद्धि करिणं, तेवारे त्रेपनसेने पांच योजन अने साठी आ पंदर जाग एटली बाहेरने मंडले सूर्यनी मुहुर्त्त गति जाणवी. कांश्क उणा साठी आ अठार जाग एटली मांहेना मंडलथी बाहेरने मंडले आवतां प्रत्येक मंडले सूर्यनी मुहुर्त्त गतिमांहे वृद्धि जाणवी.

हवे सूर्य उदय पामे त्यांथी केटले योजने अस्त थाय? ते कहे ठे:—सूर्य जेवारे मांहेने मंडले उदय पामे, तेवारे चोराणुं हजार पांचशेने ठवीस योजन उपर साठीआ बेताळीश जाग एटली योजनने आंतरे वेगलो सूर्य आथमे, तेवारे दिवस अठार मुहुर्त्तनो होय. हवे मांहेथी बाहेर मंडले आवतां केटलो दिवस घटे, ते कहे ठे:—मांहेना मंडल थकी बाहेर आवतां एकेका मंडल प्रत्ये एक मुहुर्त्तना एकसठ जाग करिणं, एवा बे जाग अ

ढार मुहूर्तना दिवसमांहेथी दिन प्रत्ये घटे एम घटामतां ठेहेले एकशोने चोराशीमे मंरुले जेवारे सूर्य आवे, तेवारे दिवस, बार मुहूर्तनो होय, अने रात्रितो ते दिवसथकी विपरीत जाणवी. ते केम ? के जेवारे दिवस बार मुहूर्तनो होय तेवारे रात्रि अढार मुहूर्तनी कर्कसंक्रांतिथी मकर संक्रांति सुधी जाणवी, अने जेवारे मांहेना मंडलथी सूर्य बाहेर आवे, तेवारे दिवसमांहे मुहूर्तना एकसठीआ बे जाग घटे, अने जेवारे मकर संक्रांतिथकी धुर मांकीने बाहेरना मंडलथी मांहे आवे, तेवारे मुहूर्तना एकसठीआ बे जाग दिवसमांहे वधे, अने रात्रिने विषे घटे, ते विपरीत जाणवुं.

हवे सूर्य बाहेर मांरुले आवे, तेवारे उदय अस्तनुं अंतर कहे ठे:—सूर्य जेवारे बाहेरने एकशोने चोराशीमे मांडले आवे तेवारे त्रेशठ हजार बशेने त्रेशठ योजन बे गळो अस्त थाय, कर्कसंक्रांतिथी धुर मांकीने मकर संक्रांति सुधी एकसोने अडशठ योजन प्रति मंरुले उठी गति करे. तथा एक चंद्रमाने परिवारे अत्रिजित् प्रमुख अष्टावीश नक्षत्र अने अंगारक प्रमुख अष्टाशी ग्रह जाणवा.

हवे एक चंद्रमानी पठवाडे तारानी संख्या कहे ठे:—ठाशठ हजार नवसेने पंचोत्तेर कोमाकोडी एटला तारा एक चंद्रमानी पठवाडे जाणवा. ए ताराना बाहुद्वयपणाथकी क्षेत्र थोडुं ठे, माटे कोशक आचार्य कोमाकोकीने संज्ञांतर एटले कोडीनुं बीजुं नाम कहे ठे, अथवा उत्सेधांगुले जेवारे तारानां विमान लेखवीएं, तेवारे कोडाकोकीनो संभव होय, पठी निश्चयनी वात ज्ञानवंत जाणे.

हवे ग्रहादिकनी संख्या जाणवानुं करण कहेठे:—ग्रह, नक्षत्र अने तारा एत्रणनी संख्या, एक चंमा आश्री जे कही, ते जे द्वीप समुद्रनेविषे जेटला चंद्रमानी संख्या होय तेटला चंद्रमानी साथे गुणाकार करिएं, एम करतां जे ग्रहादिक संख्या आवे, तेटलो परिवार जाणवो. ए रीते वांडित द्वीप समुद्रने विषे ए ग्रहादिकनुं प्रमाण जाणीये.

हवे लवण समुद्र प्रमुखने विषे चंद्र सूर्यनी संख्या कहे ठे. लवणसमुद्रने विषे चार चंद्रमा अने चार सूर्य जाणवा तथा धातकी खंरुने विषे बार चंद्रमा अने बार सूर्य जाणवा. तेवार पठी कालोद समुद्र तथा पुष्करवर द्वीप प्रमुखने विषे पूर्वे जे कह्या ठे तेणे सहित त्रिगुण जाणवा, ते केम के धातकी खंरुने विषे बार चंद्र तथा बार सूर्य कह्या ठे, तेने त्रिगुणा करिएं, तेवारे ढत्रीश थाय. तेमांहे पहेला जंबूद्वीपना बे अने लवण समुद्रना चार, एवं ढ जेलेलीं, तेवारे बेतालीश सूर्य अने बेतालीश चंद्र कालोद समुद्रने विषे थाय, हवे ए बेतालीशने त्रिगुणा करिएं, तेवारे एकशोने ढवीश थाय. तेनी साथे पूर्वोक्त बे, चार अने बार, एवं अढार जेलेलीं, तेवारे एकशोने चुम्मालीश चंद्र अने एक

शोने चुम्मादीश सूर्य, पुष्करवर द्वीपने वीषे थायं ठे, तेनुं अर्क करीये, तेवारे बहों तेरं सूर्य अने बहोंतेर चंद्र पुष्करवर द्वीपना अर्कनेवीषे जाणवा.

हवे चंद्र,सूर्य,ग्रह अने नक्षत्र ज्यां सुधी अढीद्वीप ठे त्यां सुधी यावत् समश्रेणीएं चाले ठे, ते सर्वे शीघ्र शीघ्रतर गति वाला ठे, एटले चंद्रमाथकी सूर्यनी गति उतावली ठे. सूर्य थकी ग्रहनी गति उतावली ठे, ग्रहथकी नक्षत्रनी गति उतावली ठे, ते चंद्र सूर्यादिकना क्षेत्रना प्रमाणथकी केटला वेगला मनुष्यनी दृष्टि गोचर आवे, ते कहे ठे. एकवीश लाख चोत्रीश हजार पांचशेने सामुत्रीश योजन प्रमाण क्षेत्रथी पुष्करार्क द्वीपना मनुष्य ते पूर्वदिशि उदय पामता अने पश्चिमदिशि अस्त पामता एवा सूर्य चंद्रमा प्रत्ये देखे ठे, एटले त्यां तेटला क्षेत्रना वेगला विस्तारथकी देखे ठे.

हवे मनुष्य क्षेत्रथकी बाहेर चंद्र सूर्यनो विचार कहेठे:—मनुष्य क्षेत्रथकी बाहेर चंद्र सूर्यनी संख्या प्रथम कही ठे, तेमज होय. अथवा बीजुं करण पण होय, ते उपाय शास्त्रांतरथकी जाणवो. पण संघयणी प्रमुख ग्रंथने वषे पूर्वोक्त करण वध आदखुं ठे, तथा मनुष्य क्षेत्रथी बाहेर जे ज्योतिषी चंद्र सूर्यादिक ठे, ते अचल एटले स्थिर जाणवा. अने मनुष्य क्षेत्रना चंद्र सूर्यना विमानथी तेमना विमान अर्क प्रमाणे जाणवा.

ते पाकी इंटने संस्थाने रह्या ठे, जेम पाकी इंट पोहोल पणथी लांब पणे बमणी होय अने चोरस होय तेम मनुष्य क्षेत्रथी बाहेरला चंद्रसूर्यनां तापक्षेत्र पचाश हजार योजन पोहोलपणे अने एक लक्ष योजन लांब पणे होय, तथा मनुष्य क्षेत्रनी पेरे तिहां चंद्रमानुं अत्यंत शीतल तेज न होय अने सूर्यनुं अत्यंत उष्ण तेज पण न होय परंतु सम तेजवंत होय ॥ इति ॥

॥ हवे परिधि प्रमुख आठ बोल कहे ठे.

॥ एक तो जंबुद्वीपनी पेठे वाटला क्षेत्रने परिधि कहीये; बीजुं वृत्त क्षेत्रनां जे यो जनं प्रमाण समचउरंस खंड करीये, तेने गणितपद कहीये, त्रीजुं ठेहेला खंडादिकनुं जे बाण करीये तेने इस्कु कहीये, चोथुं धनुष्यने आकारे जरत वैताढ्य प्रमुखनी जे पणठ तेने जीवा कहीये, पांचमुं अर्क चंद्रमाने आकारे जरत प्रमुख जे क्षेत्र ठे, ते ना पुंठना जागने धनुःपृष्ठ कहीये; षठुं वैताढ्य प्रमुख पर्वत तथा क्षेत्र प्रमुखना ठे हेमानुं जे परिमाण करवुं तेने बाह कहीये, सातमुं जिहां लांबपणुं तथा पोहोल पणुं सरखुं होय, तेने प्रतर कहीये, आठमुं जिहां लांबपणुं, पोहोलपणुं अने जाणपणुं, एत्रणे सरखां होय, तेने घन कहीये ए आठ बोल कह्या ॥

तिहां प्रथम परिधि संबंधि गणित जाणवानो विधि कहे ठे.

जे गोल चालीना आकारे पदार्थ होय, तेना मध्यनो विस्तार जो दश योजन होय तो ते पदार्थ गोलाकारे फरतो केटला योजन थाय ? एवी रीतनुं जे गणित करवुं, तेने परिधि कहिये, ते परिधि करवानो विधि एक जंबूद्वीपना गणितेकरी देखानीये ठेये. तेवीज रीते जे जे स्थानके परिधि करवो पडे, ते सर्वत्र स्थानके एमज करवुं.

जंबूद्वीपनो विष्कंज एटले मध्य विस्तार एक लाख योजननो ठे, तेनो वर्ग करीये एटले ते आंकने तद्गुणो करीये अर्थात् लाखने लाख गुणो करीये तेवारे (१०००००००००००) दश अज थाय, ते आंकने वली दश गुणो करीये, एटले ए वर्गना आंकने आगले एक शून्य आपीये तेवारे दश गुणो थाय, ते आंक (१०००००००००००० संख्याये एकशो अबज अर्थात् एक खर्व थाय, हवे ए आंकनुं मूल शोधीये ते जेम चशेने उपन्ननुं मूल शोधीये तो शोल शोले बे उपन्ना एटले शोलनो अंक थाय अथवा दश हजारनुं मूल एकशो थाय अथवा ठशेने पच्चीशनुं मूल पच्ची पच्चीराम ठ पच्ची सां ए रीते मूलनो अंक पच्चीश थाय, तेम इहां एक खर्वनी संख्यानो जे उपरलो आंक ठे, तेनुं मूल शोधीये, तो केटलुं थाय ? तेनी रीत देखाडे ठे.

उपरला एक खर्वना आंकनो पहेलो आदिनो आंक जे एकनो ठे, तेने धुरनो आंक कहिये अने ठहेली शून्य ठे तेने ठहेलो आंक कहिये, ते ठहेला आंक थकी विषम सम करतां धुरना आंक सुधी आवीये तिहां विषम ते । उज्जी लीटी करवी, अने सम ते-आवी आनी लीटी करवी. ते आ प्रमाणे:- 100000000000000 आ प्रमाणे विषम सम कस्या पढी जो धुरना आंके विषम एटले (।) आवी उज्जी लीटी आवे तो धुरनो एकलोज आंक तेने वर्गना आंक साथे शोधीये, अने जो धुरना आंके सम एटले (-) आवी आनी लीटी आवे, तो धुरना बे आंकने वर्गने आंके शोधीये, तो आ ठेकेणे धुरना आंके (-) आ प्रकारनी सम लीटी आवेली ठे, माटे एक धुरनो आंक एकनो ठे, अने तेनी पासे बीजो आंक शून्यनो ठे, तेथी एक एकनो अने बीजो शून्य ए बे आंकने वर्गना आंक साथे शोधवुं ते आवी रीते:-

एकनो अने शून्य मली दशनो आंक थयो, तेने शोधीये तेवारे त्रण त्रिक नव जाय, शेष एकनो आंक रहे ते एकना आंक उपर वली उपरनी राशि मांहेली बे शून्य चन्वीये, तेवारे फरी (१००) नो आंक थाय अने उपरलो जे एक एकनो अने अगीआर शून्य मली बार आंकनी राशि ठे, ते मांहेलो एक एकनो अने त्रण शून्य मली चार आंक गया बाकी ते राशिमांहेली मात्र आठ शून्य रही.

હવે ંકસોના (૧૦૦) આંકને ઝાંગવાનો વિધિ કહે છે. પૂર્વે જે વર્ગનો આંક ઝ્રણનો આવ્યો છે, તેને ંક બાઝુ સ્થાપન કરી મૂકેલો છે તે આંકને બમણો કરીયે તેવારે ઢનો આંકનો થાય, તે ઢના આંક સાથે ડપરલા ંકશોનાં આંકને શોધીયે તેવારે ઢ ંકાં ઢ અને ંકનો ઝાગ આવ્યો માટે ઢની નીચે વલી ંકેકાં ંકનો આંક ઝાંપી મૂકીયે તેવારે (૬૧) ંકશઢનો આંક થાય, તે ડપરલી ંકશોની રાશિમાંથી બાઢ કરીયે તેવારે શેષ (૩ૂ) ડંગણઝાલીશનો આંક રહે, અને વર્ગના મૂલનો આંક જે પૂર્વે ઝ્રણનો હતો, તેની નીચે ંકનો મૂકાણો, તેવારે ંકઝીશનો આંક થયો.

હવે શેષ ડંગણઝાલીનો આંક વધ્યો છે, તેની નીચે ડપરલી મહોટી રાશિ માંહેલા જે આઢ શુન્ય શેષ રહેલા છે, તેમાંથી બે શુન્ય લઢીયે તેવારે (૩ૂ૦૦) નો આંક થાય. અને મહોટી રાશિ માંહેલી શેષ ઢ શુન્યો રહે.

પઢી વર્ગનો જે ંકઝીશનો આંક છે, તેને બમણો કરીયે તેવારે બાશઢનો આંક થાય તે બાશઢના આંક સાથે પૂર્વોક્ત (૩ૂ૦૦) ના આંકને શોધીયે, તેવારે બાશઢ ઢકાં ૩૨૩ થાય. અને વલી ઢનો ઝાગ આવ્યો છે, માટે ઢ ઢકાં ઢઝીશનો આંક નીચે ઝાંપી મૂકીયે તેવારે ૩૨ૂ૬ નો આંક થાય, તેને (૩ૂ૦૦) નાં આંકમાંથી બાઢ કરી ંકે તેવારે વાકી ૧ૂૂ વધે અને વર્ગના મૂલનો આંક જે પૂર્વે ૩૧ નો હતો, તેની નીચે હમણાની શોધનો ઢગનો મૂકીયે તેવારે ૩૧૬ નો આંક થાય.

હવે શેષ જે ૧ૂૂ નો આંક વધ્યો છે, તેની નીચે વલી ડપરલી મહોટી રાશિ માંહેલી ઢ શુન્યો શેષ રહેલી છે, તેમાંથી બે શુન્ય લઢી માંઢીયે તેવારે (૧ૂૂ૦૦) નો આંક થાય, અને મહોટી રાશિ માંહેલી શેષ ઝાર શુન્યો રહે.

પઢી વર્ગનો આંક ૩૧૬ નો છે, તેને બમણો કરતાં ૬૩૩ નો આંક થાય, તેની સાથે ૧ૂૂ૦૦ ના આંકને શોધીયે, તેવારે (૬૩૩) ડુ ૧૩૬ૂ અને વલી બેનો ઝાગ આવ્યો માટે ડું ડું ઝારનો આંક થાય, તેને ૧૩૬ૂ ના આંકની નીચે ઝાંપી માંઢીયે, તેવારે ૧૩૬ૂૂ નો આંક થાય, તે ૧ૂૂ૦૦ ના આંકમાંથી બાઢ કરીયે, તેવારે વાકી ૧૩ૂ૬ નો આંક વધે, અને વર્ગના મૂલનો આંક પ્રથમ ૩૧૬ નો હતો, તેની નીચે બગનો મૂકીયે તેવારે ૩૧૬૩ નો આંક થાય.

હવે જે શેષ ૧૩ૂ૬ નો આંક વધ્યો છે, તેની નીચે ડપરલી મહોટી રાશિ માંહેલી જે ઝાર શુન્યો શેષ રહેલી છે, તેમાંથી બે શુન્ય લઢીયે, તેવારે ૧૩ૂ૬૦૦ નો આંક થાય અને મહોટી રાશિ માંહેલી શેષ બે શુન્યો રહે.

પઢી વર્ગનો આંક ૩૧૬૩ છે, તેને બમણો કરીયે તેવારે ૬૩૩ૂ નો આંક થાય, તે

आंकनी साथे १९५६०० ना आंकने शोधिये, तेवारे ६३३४ डु १२६४७ थाय, अने वली बेनो जाग आव्यो माटे डुए डुए चारनो आंक थाय. तेने १२६४७ ना आंकनी नीचे चांपी मांडीये, तेवारे १२६४७४ नो आंक थाय, ते १९५६०० ना आंकमांथी बाद करीये तेवारे बाकी ४९११६ नो आंक वधे, अने वर्गना मूलनो आंक प्रथम ३१६२ नो हतो तेनी नीचे बगडो लखीये, तेवारे ३१ ६२२ नो आंक थाय-

हवे शेष जे ४९११६ नो आंक वधयो ठे तेनी नीचे उपरली महोटी राशि मांहेली जे बे शुन्यो शेष रहेली ठे, ते लहिये तेवारे ४९११६०० नो आंक थाय, अने महोटी राशिमांहेली शेषरहेली शुन्यो सर्वे खपी गइ.

पढी वर्गना मूलनो जे ३१६२२ नो आंक ठे, तेने पूर्वली रीते द्विगुणो करीये, तेवारे ६३३४४ नो आंक थाय. ते आंकनी साथे ४९११६०० ना आंकने शोधिये, ते आवी रीते के ६३३४४ सातां ४४२९०७ थाय, अने वली सातनो जाग आव्यो माटे सातने सात गुणा करीये तो सतियो सतियो जंगणपच्चाशनो आंक थाय, ते ४४२९०७ ना आंकनी नीचे चांपी मांकीये, तेवारे ४४२९२२९ नो आंक थाय, ते ४९११६०० ना आंकमांथी बाद करीये, तेवारे बाकी ४७४४९२ नो आंक वधे, अने वर्गमूलनो प्रथम ३१६२२ नो आंकहतो तेनी नीचे सातडानो आंक लखीये. तेवारे ३१६२२९ नो आंक थाय हवे शेष जे ४७४४९२ नो आंक वधयो ठे, तेनी आगल आंक वधारवा माटे महोटी राशिमांहेली शेष कोइ आंकनी संख्या रही नथी. तेमज वर्ग मूलना आंकनी राशि जे ३१६२२९ नी ठे, तेने द्विगुणा करीये तो ६३३४५४ नो आंक थाय, तेनी साथे शोधवामांकीये तो शोधाय पण नही कोइ जाग पोहोंचे नही, तेमाटे ए योजननी राशि ना एकेका योजनना चार चार कोश करी नाखीये तेवारे १९३९०७४ कोश थाय. तेने वर्गमूलनी जे बमणी करेली ६३३४५४ ना आंकनी राशि ठे, तेणे करी जाग आपीये तेवारे १७९३६२ नी संख्यामां त्रण गाउ आवे. शेष ४०५२२ गाउ वधे अने मूलना आंकनी संख्या ३१६२२९ योजननी उपर त्रण गाउनी थाय.

हवे शेष रहेला ४०५२२ गव्यूतिनी संख्याने पण ६३३४५४ ना आंकनी राशिनो जाग पोहोंचे नही माटे ए प्रत्येक गाउना बे हजार धनुष्य प्रमाणे ७१०४००० धनुष्यनी संख्या करीने तेने ६३३४५४ नो जाग आपतां ७०९४१२ नी संख्यामां १२७ धनुष्य आवे शेष ७९७७ धनुष्यनी संख्या वधे, अने मूलनी राशि ३१६२२९ योजननी उपर त्रण गाउ तथां १२७ धनुष्य एटली थाय

हवे ७९७७ धनुष्यनी संख्याना अंगुल करावा सारु एक धनुष्यना एड आंगुले गु

णीये, तेवारे ८६२९२४८ अंगुलनी संख्या थाय तेने ६३२४५४ ने जाग देतां ८५३८१२९
नी संख्यामां १३॥ अंगुल आवे, शेष ९११२९ अंगुल वधे अने मूलनी राशि
३१६२२७ योजन, त्रण गाड, १२८ धनुष्यनी उपर साकातेर अंगुल थाय.

हवे शेष ९११२९ अंगुल वध्या ठे, ते प्रत्येक अंगुलना आठ यव थाय ठे माटे एने
आठे गुणीये तेवारे ७२८९५२ यव थाय, तेने ६३२४५४ नो जाग देतां एक यव
आवे, शेष ९६४९८ नो आंक वधे अने मूल राशिनो आंक ३१६२२७ योजन, त्रण गाड
१२८ धनुष्य, साडातेर अंगुलनी उपर एक यव थाय.

हवे शेष ९६४९८ यवनो आंक रह्यो ठे, ते प्रत्येक यवनो आठ युका (जू) करतां
७२९९८४ युका थाय तेने ६३२४५४ ने जांजतां एक युका आवे, शेष १३९५३० युका
वधे, तेने वली आठे गुणीये तेवारे १११६२४० लीख थाय तेने ६३२४५४ नो जाग
देतां एक लीख आवे शेष ४८३७८६ लीख जगरे ते प्रत्येक लीखने आठ वालाये गु
णतां ३८७०२८८ एटला वाल थाय, तेने ६३२४५४ नो जाग देतां ३७९४७२४ ना
आंकमां ठ वाल आवे, शेष ७५५६४ वाल वधे, फरी एक वालाग्रना आठ रथरेणु
थाय माटे एने आठे गुणतां ६०४५१२ एटला रथरेणु थाय तेने जाग पहाँचे नही
माटे एक रथ रेणुना आठ त्रसरेणु थाय ठे तेथी त्रसरेणु करवा सारु उपली राशिने
आठे गुणीये तेवारे ४८३६०९६ त्रसरेणुनी संख्या थाय तेने पूर्वोक्त ६३२४५४ ने जाग
देतां ४४ २७१२८ नी संख्यामां सात त्रसरेणु आवे. शेष ४०८९१८ त्रसरेणु वधे ते
एक त्रसरेणुने विषे आठ व्यवहारिक बादर परमाणुआ थाय ठे, माटे ए राशिने आठे
गुणतां ३२७१३४४ एटला बादर एटले व्यवहारिक परमाणु थाय. तेने ६३२४५४ नो
जाग देतां ३१६२२७० ना आंकमां पांच बादर परमाणुआ आवे, शेष १०९०७४ एटला
बादर परमाणुआ वधे ए जेवारे अनंता सूक्ष्म परमाणु विस्त्रसा परिणामे मली एकठा
थाय ते एक बादर परमाणु कहैवाय ठे, माटे अनंताने जाग कोइ पोहोंचे नही तेथी
शेष १०९०७४ बादर परमाणुने १७४ गुणा करीये तेवारे १८९७८७६ एटला एक
बादर परमाणुना १७४ जाग करीये तेवा जाग थाय तेमांथी त्रीश जागमां
१८९७३६२० खंड जाय ते बाद करीये, तो शेष ५२५६ एटला एक परमाणुना १७४
जाग वाला बादर परमाणुना कटकावधे. ते प्रत्येक खंरुना वली ६३२४५४ कटका क
रीये, तो तेवा ५२५६ कटका उपर आवे एटलो जंबूद्वीपनो परिधि जाणवो, एटले ३१६२२७
योजन, त्रण गाड, १२८ धनुष्य, साडातेर अंगुल, एक यव, एक यूका, एक लीख, ठ वा
लाग्र अने रथरेणु बिल कुल नही परंतु सात त्रसरेणु, पांच बादर परमाणु, तथा एक

अढीद्रीपना नकशानी हकीगत.

८५

बादर परमाणुना १७४ जाग करीये तेवा त्रीश जाग, तथा ते १७४ जाग मांहेला एके काना ६३२४५४ जाग करीये तेवा(५२५६) जाग उपर एटलो जंबूद्रीपनो परिधि जाणवो- हवे उपर लख्या मुजवनी हकीगत सर्वे नीचे अंके करी टांकी देखानीये ठैये.

१००००० एक लाख योजननो जंबूद्रीपनो विष्कंज ठे.

१००००० एनो वर्ग करवा सारु लाखने लाख गुणो करीये.

१०००००००००० लाखने लाखे गुणतां दश अजनी संख्या थइ.

१० उपला आंकने दश गुणवा सारु दशना आंके गुणीये.

१००००००००००० दश गुणो करतां एकशो अज एटले एक खर्वनी संख्या थइ.

१००००००००००००० ए उपरनी राशिने विषम सम आवी रीते करवो. विषम ते उची लीटी करवी, अने सम ते आनी लीटी करवी. हवे ए विषम सम करेदी राशिमांथी मूल शोधवानी रीत देखाडे ठे.

१० प्रथम दशनो आंक उपली राशिमांथी लीधो.बाकी दश शुन्य रही.

ए -३ दशमांथी त्रणत्रिक नव गया बाकी एक रह्यो.

(६) १०० -१ एक रह्यो तेनी नीचे शेष रहेली दश शुन्य मांहेली बे लीधी.

६ पठी त्रणने बमणा करी ठनो जाग आपतां ठ एकां ठ थया.

१ १ जाग आव्यो, माटे एकेकां एकना आंकने ठनी नीचे चांपी मांड्यो.

६१ ठनां आंकनी नीचे एकडो चांपी मांडतां एकशठ थया.

३ए ६१ नो आंक उपरला एकशोमांथी बाद करतां बाकी ३ए रह्या.

(६३) ३ए०० (६ बाकी रहेला उंगणचालीशनी नीचे उपरली राशिमांहेली शेष रहेली आठ शुन्यमांथी बे शुन्य लीधी तेवारे ३ए०० थया.

३७३ मूलमां त्रणने नीजे एकनो मांडतां एकत्रीश थया तेने बमणां करी बाशठनो जाग आपतां बाशठ ठकां ३७३ थया.

३६ ठनो जाग आव्यो माटे ठ ठक ठत्रीशनो आंक नीचे चांपी मांड्यो.

३७५६ ठत्रीशनां आंकने नीचे चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.

१४४ ते उपरलां ३ए०० ना आंकमांथी बाद करतां बाकी १४४ वध्या.

(६३३) १४४००(३) वधेला १४४ नी नीचे शेष रहेली ठ शुन्यमांथी बे शुन्य लीधी.

१२६४ ३१६ ने बमणा करी ६३३ नो जाग आपतां ६३३डु१२६४ थया.

४ बेनो जाग आव्यो माटे डुए डुए ४ नो आंक नीचे चांपी मांड्यो.

१२६४४ चारना आंकने नीचे चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.

अढीढीपना नकशानी हकीगत.

१७५६
(६३३४)१७५६००(२)

उपरना आंकमांथी बाद करतां बाकी १७५६ वध्या.

वधेला १७५६ नी उपर शेषनी ४ शुन्यमां बे शुन्य लीधी.
मूल शोधवा माटे ३१६३ ने बमणा करी ६३३४ नो जाग.

१२६४७

आपतां ६३३४ दु १२६४७ थया.

४

बेनो जाग आव्यो माटे दुए दुए ४ नो आंक नीचे चांपी मांड्यो.

१२६४७४

चारना आंकने नीचे चांपी मांकतां सरवालानी संख्या थइ.

४ए११६

उपरला आंकमांथी बाद करतां बाकी वध्या ४ए११६.

६३३४४(४ए११६००(७)

बाकी वधेला ४ए११६ उपर शेष बेशुन्य रही हती ते लीधी.
मूल शोधवा माटे ३१६३२ ना आंकने बमणाकरतां ६३३४४ थया.

४४२७०७

तेनो जाग आपतां ६३३४४ सातां ४४२७०७ थया.

४ए

सातनो जाग आव्यो माटे सातुं सतियां ४ए ना आंकने नी
चे चांपी मांड्यो.

४४२७१२ए

उगणपचासना आंकने चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.

४७४४७१

उपरला ४ए११६०० ना आंकमांथी बाद करतां बाकी वध्या.

४

उपला योजननां कोश करवाने अर्थे चारनां आंक साथे गुणीचे.

६३३४५४)१ए३७७७४(३

चारे गुणतां कोशनी संख्या थइ.

१७ए७३६३

मूल शोधवा माटे ३१६३२७ नो आंक आव्यो ठे. तेने बमणो
करतां ६३३४५४ थाय ए आंके जाग आपतां त्रण गाडमां
१७ए७३६३ गाड नो आंक गयो.

४०५३३

एटलो आंक बाकी गाडनी राशिमांथी वध्यो.

२०००

एना धनुष्य करवा सारुं बे हजारना आंक साथे गुणवो.

६३३४५४)७१०४४०००

बे हजारनां आंक साथे गुणतां ७१०४४००० थया.

७०ए५४१२२)

६३३४५४ ने जाग देतां १२७ धनुष्यमां ७०ए५४१२२ गया.

७ए७७७

बाकी ७ए७७७ धनुष्य वध्या.

ए६

एना अंगुल करवाने ठनुं गुणा करवा.

६३३४५४)७६३ए७४७

ठनुं गुणा करतां एटला अंगुलनी राशि थइ.

७५३७१२ए

एने ६३३४५४) ने जाग देतां साडातेर अंगुलमां आंक जाय.

ए११२ए

एटलो आंक शेष अंगुलनी राशिनो उगस्थो.

| | |
|--|--|
| <p>८ (६३३४५४)७३८५५३) ६३३४५४) ६६४५८८</p> | <p>तेना यव करवा सारुं एने आठे गुणीये आठे गुणाकार करतां यवनी राशि थइ. एक यवना जागाकारमां ६३३४५४ गया. शेष यवनी राशि रही.</p> |
| <p>८ ७७१५८४) ६३३४५४) १३५५३०</p> | <p>तेनी यूका करवाने आठे गुणाकार करीये, एटली यूकानी राशि थइ. एने ६३३४५४) ने जाग देतां एक यूका आवे. शेष १३५५३० यूकानी राशि रहे.</p> |
| <p>८ १११६३४० ६३३४५४) ४८३९८६</p> | <p>तेनी लीख करवाने अर्थे आठ गुणा करीये, एटली लीख थाय. एटली राशिये जागाकार करतां एक लीख आवे. शेष लीखनी राशि वधी.</p> |
| <p>८ ३८७०३८८ ३७५७७३४ ७५५६४</p> | <p>तेना वालाग्र करवाने आठगुणा करीये. एटली वालाग्रनी राशि थइ. एने ६३३४५४) जागे देतां ७ वालाग्र आवे. शेष वालाग्रनी राशि वधी.</p> |
| <p>८ ६०४५१३ ८ ४८३६०५६ ४४३७१७८ ४०८५१८</p> | <p>तेना रथरेणु करवाने आठ गुणा करीये, एटला रथरेणु थाय तेने जाग पहोंचे नही. माटे एना त्रसरेणु करवा सारु आठगुणा करीये. एटली त्रसरेणुनी संख्या थाय. एने ६३३४५४) ने जाग देतां सात त्रसरेणु आवे. शेष एटली त्रसरेणुनी राशि वधी.</p> |
| <p>८ ३३७१३४४ ३१६३३७० १०५०७४ १७४ १८५७८७६)</p> | <p>एना व्यवहारिक बादर परमाणु करवाने आठे गुणीये, एटली व्यवहारिक बादर परमाणुनी राशि थइ. ६३३४५४)नो जाग देतां पांच बादरपरमाणुमां ए आंक आवे. एटली बादर परमाणुनी राशि शेष रही. एकेका परमाणुना १७४) खंरु करवा सारु १७४ गुणीये. एटला एकशो चमोतेरीया जाग थया.</p> |

१८९७३६२७) तेने ६३२४५४ नो जाग देतां त्रीश जागमां ए आंक आवे.

५२५६ शेष ५२५६) एकसो चमोतेरीया खंड वध्या.

३६१ प्रत्येक खंरुना ३६१) कटका करवा सारु ३६१) गुणीये.

१८९७४१६ (१७४ तेरीया एक खंरुना ३६१) कटकानी राशी थइ.

१८९७३६२) ६३२४५४) जाग देतां त्रण जागमां एटला आंक आव्या.

५४ शेष चोपन कटका रह्या तेने कांइ जाग पढोचे नही.

योजन. गाड. धनुष्य. अंगुल. यव. यूका. लीख. बालाय. रथरेणु.

३१६२२७- ३- १२८- १३॥- १- १- १- ६- ०

| | | | | |
|-----------|-------------|--------------------|------------------|-------------|
| त्रसरेणु. | बादरपरमाणु. | एक बादर परमाणुना. | एकसो चमोतेरीया | शेष. वध्या. |
| ७ | ५ | १७४ जाग करीये तेवा | एक जागना ३६१) | ५४ |
| | | जाग. | जागकरीये तेवाजाग | |
| | | ३० | ३ | |

जंबूछीपनी परिधि गणवाना करणनो यंत्र लखीये ठैये.

विष्कंजना योजन.

तद्वर्ग योजनराशि.

तेने दशगुणा करवानी राशि.

वर्गमूले लब्धयोजननी राशि.

शेष राशि.

ढेदराशि.

कोश करवाने अर्थे शेष राशिने चार गुणा करतां थयेली राशि.

ढेदांकनो जाग आपवामां लाधा कोश.

शेषराशि.

धनुष्य करवाने अर्थे बे हजारनो गुणाकार करतां थयेली राशि.

ढेदांकनो जाग आपवे करी लाधा धनुष्य.

शेष राशि.

अंगुल करवाने अर्थे छत्रुं गुणा करतां थयेली राशि.

ढेदांकनो जाग आपवाथी लाधा अंगुल.

शेष पूर्ण अंगुल राशि रही,

१०००००

१००००००००००

१०००००००००००

३१६२२७

४८४४७१

६३२४५४

१९३७८२

३

४०५२०

८१०४४०००

१२८

८९८८८

८६२९४८

१३ ॥

९१११९

अढीढीपना नकशानी हकीगत.

८९

हवे कमलादिक, ढीपादिक, चूलिका, कूट, कंचनगिरि, कुंडादिक, कूटनां मूल, कूटनां शिखर, मेरुपर्वतनां मूल, मेरुनां शिखर, नंदनवननी बाहिर, नंदनवननी मांहेली कोर इत्यादिक स्थानकोनी परिधिनां गणित उपरली रीति प्रमाणें पोते करवां, अथवा गुरु मुखथी धारवां, अहीआं मात्र ते मांहेलाकेटला एक स्थानकोनां नाम संझेपथी मांहीने तेनी परिधि करवाने अर्थें ते स्थानकोनो विष्कंज तथा ते विष्कंजनो वर्ग, पठी ते वर्गने दश गुणो करतां जे संख्या आवे, तेनो आंक तथा तेनुं मूल शोधता जे टला योजननो आंक लाजे, ते आंक तथा जेटला योजन शेष रहे, तेनो आंक तेमज शेष रहेला योजनना धनुष्य प्रमुख करीने पठी तेने वर्गनी राशिने शोधतां जे लब्धांक आव्यो होय, तेने बमणो करीये, तेवारे जे राशि थाय ते राशिने करीने ढेदी ये एटले जांजीये तेने ढेदराशि कह्तीये, ते ढेदराशिना आंक तेनो यंत्र नीचे देखाड्यो ढे, तिहांथी सुज्ञोये जोशने गणित करी मेलाववा,

जूदा जूदा स्थानकोनी परिधि विष्कंजादिकनो यंत्र,

| अंक | स्थानकोनां नाम, | विष्कंज. | वर्गनो अंक, | दशगुणी अंक, | लब्धांक. | शेषराशि | ढेद, |
|-----|-----------------|----------|-------------|-------------|----------|---------|-------|
| १ | कमलादिक. | १ | १ | १० | ३ | १ | ६ |
| २ | " | २ | ४ | ४० | ६ | ४ | १२ |
| ३ | " | ४ | १६ | १६० | १२ | १६ | २४ |
| ४ | ढीपादिक. | ८ | ६४ | ६४० | २५ | १५ | ५० |
| ५ | चूलिका मूल. | १२ | १४४ | १४४० | ३७ | ७१ | ७४ |
| ६ | कोशकूट. | २५ | ६२५ | ६२५० | ७९ | ९ | १५८ |
| ७ | कांचनगिरिशिखर | ५० | २५०० | २५००० | १५८ | ३६ | ३१६ |
| ८ | कांचनगिरि मूल. | १०० | १०००० | १००००० | ३१६ | १४४ | ६३२ |
| ९ | कुंडादिक. | १२० | १४४०० | १४४००० | ३७९ | ३५९ | ७५८ |
| १० | " | २४० | ५७६०० | ५७६००० | ७५८ | १४३६ | १५१६ |
| ११ | कूटशिखरादिक. | २५० | ६२५०० | ६२५००० | ७९० | ९०० | १५८० |
| १२ | कुंडादिक. | ४८० | २३०४०० | २३०४००० | १५१७ | २७११ | ३०३४ |
| १३ | कूटमूलादिक. | ५०० | २५०००० | २५००००० | १५८१ | ४३९ | ३१६२ |
| १४ | मेरुशिखर. | १००० | १०००००० | १००००००० | ३१६२ | १७५६ | ५३२४ |
| १५ | मेरुजूतलविष्कंज | १०००० | १०००००००० | १०००००००० | ३१६२२ | ४९११६ | ६३२४४ |

आ उपरथी एम समजतुं के एक योजन विष्कंजवालो कोइ वाटलो गोलाकारे प दार्थ होय तेनी त्रण योजन जे लब्धांकना कोठामां मूक्या ठे, ते तथा उपर शेष राशि मां एक योजन रह्यो ठे तेना ठेद ठ करीये एटले एक योजननो ठछो जाग उपर एटलो फरतो परिधि थाय, अने बे योजनवाला वाटला पदार्थनी ठ योजन पूरा अने तेनी उप र चार योजनना बारमा जागमां जेटली जगा आवे तेटली लेवी. एटलो परिधि जाण चो. ए रीते सर्व स्थानकोने विषे जाणी लेवुं. लब्धांकने बमणा करीये तो ठेदराशि थाय हवे पूर्वला यंत्रनी रीतेज मेरु पर्वतना नीचला तलीयानी तथा नंदनवनादिकनी सूमि मां योजनोनी जे संख्या कही ठे, तेना उपर वली एक योजनना अगीआर जाग क रीये, तेवा जाग प्रत्येक स्थानके आवे ठे,माटे ते स्थानकोना विस्कंजना योजनोना अ गीआरीआर जाग करीने परिधीनुं गणित कहुं ठे तेनो यंत्र नीचे लखीये ठैये.

| चढतो अंक. | मेरुपर्वतमांहेला जूदाजूदा स्थानकोनां नाम. | मूलयोजन तथा एकंदरअगीआरीते कलानो वर्ग कर एकयोजनना अगीआरीआरजाग कलानी संख्या. | अत्रा जाग संबंधितां जे आंक आवे तेनी संख्या. |
|-----------|---|--|---|
| १ | मेरुनो नीचेनो तलीयो. | १००९० ^{१०} / _{११} | १११००० |
| २ | नंदनवननीवाहिरनीपरिधि | ९९५४ ^{१०} / _{११} | १०९५०० |
| ३ | नंदनवननी मध्यपरिधि. | ८९५४ ^{१०} / _{११} | ९८५०० |
| ४ | सोमनसवननी बाहिरपरि. | ४२२२ ^{१०} / _{११} | ४२००० |
| ५ | सोमनसवननी मध्यपरिधि | ३२२२ ^{१०} / _{११} | ३६००० |

| ते वर्गनी कलाने दश गुणी करतां जे आंक आवे तेनी संख्या. | वर्गनुं मूल का हाडतां जे कला. लात्रे तेनो अंक | शेष राशि जेटली कला रही तेनी संख्या. | ठेद राशिनी संख्या. | परिधिना योजन तथा कलानो अंक. |
|---|---|-------------------------------------|--------------------|------------------------------------|
| १२३२१००००००० | ३५१०२२ | ५२५८५६ | २०२०२४ | ३१९१० ^२ / _{११} |
| ११९९०२५००००० | ३४६२६९ | २२९६३९ | ६९२५३८ | ३१४२९ |
| ९२०२२५००००० | ३११४८४ | २१२२४४ | ६२२९६८ | २८३१६ ^६ / _{११} |
| २२०९००००००० | १४८६२२ | १४८२१ | २९२२५४ | १३५११ ^६ / _{११} |
| १२९६००००००० | ११३८४२ | १९८६३६ | २२२६८४ | १०३४९ ^३ / _{११} |

॥ इतिपरिधिगणितम् समाप्तम् ॥

॥ आ एकज यंत्रना बे विजाग कीधाठे ॥

॥ अथ द्वितीयगणितपदप्रारंभः ॥

हवे हरेक वाटला क्षेत्रना योजन योजन प्रमाण समचतुरस्र खंरु करवा, तेने गणित पद कहीये. ते करवानी रीति कहे ठे. वाटला क्षेत्रनी परिधिनी संख्यानो जेटलो अंक होय, तेने तेज वाटला क्षेत्रनो जे विष्कंज होय तेना चोथा जागना आंक साथे गुणीये तेवारे तेनुं गणित पद थाय ते एक जंबूछीप आश्रयी देखाडे ठे.

जंबूछीपनो परिधि (३१६३३९) योजन ठे, तेने एज जंबूछीपनो विष्कंज एक लाख योजननो ठे, तेना चोथा जागना पच्चीश हजार योजन थाय. तेनी साथे गुणीये ते वारे ९९०५६९५००० योजन थाय, अने ते परिधिनी उपर त्रण कोश ठे. तेने पच्चीश हजार साथे गुणतां ९५००० कोश थाय. ते चार कोशनो एक योजन करतां १८९५० योजन थाय, तथा परिधि एकशो ने अष्टावीश धनुष्य ठे तेने पच्चीश हजार गुणतां बत्तीश लाख धनुष्य थाय, ते आठ हजार धनुष्यनो एक योजन गणतां ४०० योजन थाय. ए सर्व एकठा करीये, तेवारे ९९०५६९५१५० योजननी संख्या थाय. हवे परिधि उपर साकातेर अंगुल ठे, तेने पच्चीश हजार गुणतां ३३९५०० अंगुल थाय. ते एक धनुष्यमां ठहुं अंगुल आवे, माटे एने ठहुं जागे वेचता ३५१५ धनुष्य थाय. उपर शाठ अंगुल वधे तेना एक कोशमां बे हजार धनुष्य प्रमाणे पोणा बे कोश अने पांत्रीशसो धनुष्य थाय. तथा उपर पन्नर धनुष्य ठे ते एकेका धनुष्यना चार चार हाथ करतां शाठ हाथ थाय, तथा उपर शाठ अंगुल वध्या ठे, तेना अढी हाथ थाय, ए सर्व मली ९९०५६९५१५० योजन उपर पोणा बे कोश अने शाढा बाशठ हाथ एटहुं जंबूछीपनुं गणित पद थाय, ए एकेक योजनना खंडुक करीने जंबूछीपनी जेटली चूमि ठे. तेमां थापीये. तो एटला रही शके. एवी रीते बीजा पण वाटला क्षेत्रना सर्व स्थानके गणित पदना हिसाब करवा, एनो यंत्र नीचे देखाड्यो ठे. ए गणित पदनी यंत्रस्थापना,

| चढतो अंक. | परिधिनां योजनादि. | विष्कंजनो चोथो जाग. | गुणाकारकर तां राशि अङ्. | एक योजनमां अंगुलादि. | सरवाले योजननी संख्या. | गाजध. | अंगुल. |
|-----------|-------------------|---------------------|-------------------------|----------------------|-----------------------|-------|--------|
| १ | ३१६३३९ | ९५००० | ७९०५६७५००० | पूरा योजन. | ७९०५६७५००० | | |
| २ | कोश- ३ | ९५००० | ९५००० | चारगाजयो | १८९५० | | |
| ३ | धनुष्य- १३८ | ९५००० | ३२००००० | आठहजारध. | ४०० | | |
| ४ | अंगुल. १३॥ | ९५००० | ३३९५०० | ठहुं अंगुलनुं. | ० | १॥॥ | १५६० |
| ५ | एकंदरसंख्या. | | | | ७९०५६९५१५० | १॥॥ | १५६० |

॥ अथ तृतीय जीवा करण प्रारंभः ॥

हवे त्रीजो जीवा करण कहेठे. जेवारे जीवा करीये तेवारे आ वाटळुं क्षेत्र जे जंबू
 छीप एक लाख योजननुं ठे, तेना उंगणीशीआ जाग करीये, तेवारे (१९०००००) ओ
 गणीश लाख कला थाय, तेमांशी दक्षिणार्क चरतनी इस्कु कला (४५२५) ठे ते बाद क
 रीये, तो (१०९५४९५) कला बाकी रहे, तेने चार गुणी करीये, तेवारे (९५०१९००)
 थाय तेने इस्कुनी कला (४५२५) ठे तेनी साथे गुणीये अथवा (१०९५४९५) कला
 जे बाकी रही ठे तेने इस्कुनी कला (४५२५) ने चोगुणी करीये, तेवारे (१०१००)
 थाय. तेनी साथे गुणीये, तेवारे (३४३०००९५००) थाय, तेने पूर्वली रीते विषम
 सम करीने मूल शोधये, तेवारे (१०५२२४) एटलो आंक आवे, अने शेष (१६९३२४)
 एटली कला वधे, केम के (१०५२२४) आंकने एज आंक साथे गुणीये. तेवारे
 ३४३०९९३०१९६ थाय, ते उपरली विषम सम वाली राशिमांशी बाद करीये, तेवारे शेष
 (१६९३२४) कला वधे. हवे १०५२२४ कलाना योजन करवा सारु ए राशिने उंगणीश
 जागे वेंचीये, तेवारे ९९४० योजननी उपर बार कला थाय, अने १६९३२४, कला व
 धी ठे, तेना धनुष्य प्रमुख करीने पूर्वे जंबूछीपनी परिधिनी रीते जो आनुं मूल शो
 धीये, तो ठेदकला (३९०४४०) आवे, तेनी साथे जागाकार करतां जेटला धनुष्य प्र
 मुख उपर आवे, ते ९९४० योजन अने बार कलानी साथे लेवा एटली दक्षिणार्क
 चरतनी जीवा जाणवी. एवीज रीते वैताढ्य प्रमुख सर्व स्थानकोनी जीवा करवी-
 आंहीं मात्र एनो यंत्रज नीचे लख्यो ठे. अने एकज आ दक्षिणार्क चरतनो हिसाब
 करी वताव्यो ठे. परंतु वैताढ्यादिकना हिसाब पोतेज करीने मेलववा-

१९००००० उंगणीश लाख कलानो जंबूछीपनो विष्कंज ठे.

४५२५ तेमांशी दक्षिणार्क चरतना इस्कु कला बाद करवी-

१०९५४९५) शेष कला रही-

१०१०० तेने ४५२५) इस्कुनी कलाने चार गुणी करतां १०१००) कला

थाय, तेनी साथे गुणवा.

३४३०००९५०० एटली गुणाकार करतां कलानी राशि थइ.

३४३०००९५०० मूल शोधवा सारु विषम सम करीये ठैयें.

१ धुरना आंके विषम ठे, माटे धुरना एकज आंकने शोधवो.
 २) ३४३ (० एकेकां एक गयो बाकी बे रहा उपर तेतालीश लीधा.

| | |
|----------------|---|
| १६ | एक डु बेनो जाग आपतां आठ डु शोल थया. |
| ६४ | आठनो जाग आव्यो माटे आठुं आठुं चोशठ चांपी मांड्या. |
| २२४ | चोशठने चांपी मांरता बशोने चोवीश थया. |
| १९०८ | ते बाद करतां बाकी १९ रह्या नीचे (०८) बे आंक लीधा. |
| ३६) १८० (५ | ठत्रीशनो जाग आपतां ठत्री पांचुं १८० थया. |
| ३५ | पांचनो जाग आव्यो माटे पांचुं पांचुं पच्चीश चांपी मांड्या. |
| १८२५ | पच्चीशने चांपी मांरता १८२५ थया. |
| ८३०९ | ते बाद करतां बाकी त्र्यासी रह्या नीचे (०९) बे आंक लीधा |
| ३९०) ९४० (३ | त्रणशे सीतेरनो जाग आपतां ३९० डु ९४० थया. |
| ४ | बे नो जाग आव्यो माटे डुए डुए चार चांपी मांड्या. |
| ९४०४ | चारने चांपी मांरतां ९४०४ थया. |
| ३९०४) ९०५९५ (३ | बाद करतां बाकी ९०५ रह्या. नीचे ९५ बे आंक लीधा. |
| ९४०८ | ३९०४ नो जाग आपतां ३९०४ डु ९४०८ थया. |
| ४ | बेनो जाग आव्यो माटे डुए डुए चार चांपी मांड्या. |
| ९४०८४ | चारने चांपी मांडतां ९४०८४ थया. |
| ३९०४४) १६४९१०० | बाद करतां बाकी १६४९१ रह्या नीचे बे शून्य लीधी. |
| १४८१९६ (४) | ३९०४४ नो जाग आपतां ३९०४४ चोकुं १४८१९६ थया. |
| १६ | चारनो जाग आव्यो माटे चार चोक शोल चांपी मांड्या. |
| १४८१९९६ | शोलने चांपी मांरतां १४८१९९६ थया. |
| १९) १६९३२४ (८ | बाद करतां शेष कला १६९३२४ रही लाधी कला १८५२२४ |
| १५२ | एना योजन करवा सारु उंगणी आठुं १५२ गया. |
| १९) १५३ (८ | बाकी पन्नर रह्या. उपर त्रण लीधा. |
| १५२ | वली उंगणी आठुं १५२ गया. |
| १९) १२४ (० | बाकी १ रह्यो. तेनो जाग न पहोचे माटे ० लखवी उपर चोवीशलीधा. |
| ११४ (६ | उंगणी ठके ११४ गया. |
| १० | बाकी दश कला रही. |
| ०८०६) १० | ए रीते ०८०६ योजन उपर दश कला शेष रही. |
| ०००० | एना धनुष्य करवाने आठ हजारे गुणीचे. |

अढीद्रीपना नकशानी हकीगत.

७०४४००००
 ४२१०॥
३७०४४०)७०४५२२१०॥
 ३७०४४०
३७०४४०) ३३४०७४१ (ए
 ३३३४०३२
६७०६०॥
 ए६
४०२५४०
 ६०३०१०
 ४०
३७०४४०)६४४०६०० (१
 ३७०४४०
३७०४४०) २७३६२०० (७
 २५६३१३६
 १४३०७२
 ६२६१२
५०४६०

०००६ योजनने आठ हजारे गुणतां धनुष्य थया.
 दश कलाना ४२१०॥ धनुष्य उपर अरुधी कला वधी.
 सरवाले एकंदर धनुष्य थया.
 मूल १०५२२४ ने बमणा करी जाग आपतां एक आव्यो.
 बाकी ३३४०७४ रह्या उपर एक लीधो.
 ३७०४४० नवा ३३३४०३२ गया.
 शेष धनुष्य ६७०६ रह्या. उपर शून्य लीधो.
 अंगुल करवाने ठंयुंये गुणवा.
 उपली राशिने ठएं गुणतां आंक.
 उपली राशिने नवे गुणतां आंक.
 उपली राशिना रहेला अरुधा आंके गुणतां.
 सरवाले एकंदर अंगुल थया.
 मूलनी राशिने बमणा करी जाग देतां एक आव्यो.
 बाकी २७३६२० रह्या उपर आठ लीधा.
 फरी ३७०४४० ने साते गुणतां ए आंक आव्यो.
 शेष अंगुल १४३०७२ रही.
 पा आंगुलमां ६२६१२ नो आंक गयो.
 शेष अंगुल ५०४६० राशि रही.

ए दक्षिणार्क चरतनी जीवा ए७४०) योजन उपर एक योजनना उंगणीश जाग करीये, तेवा बार जाग तथा वली एक योजनना उंगणीशिया १६७३२४ जाग शेष व ध्या ठे, तेने ठेद कला ३७०४४० जागे वेंचीये, तेवारे १६१) धनुष्य अने सवा सतर अंगुल आवतां शेष ५०४६० अंगुल राशि वधे ठे, तेने ठेद कलानो आंक वधारे ठे, माटे जाग पोहोचे नही, तेथी तेना वली थव प्रमुख करीने जे रीते ते जाग पहोचे तेम पहोचामवो अने गणित करी लेवुं जोश्ये.

हवे ए जेम दक्षिणार्क चरतनुं जीवाकरण कछुं, तेम वैताढ्यादिक पर्वतोनी जीवा नुं गणित पण करवुं. अहियां सर्वेना जूदां जूदां गणित करता नथी, पण जंबूद्रीप मांहे ला सर्व स्थानकोनी जीवा करवानो यंत्र नीचे लखिये ठैये. ते गणित समजी लेवुं.

अष्टीद्वीपना नकशानीहकीगत.

९५

नव स्थानकने विषे क्षेत्र विष्कंन एक लाख योजन ठे, तेनी एकेक योजननी उंगणीश कला करतां उंगणीश लाख कला आय तेने विषे नव स्थानकनी जीवाना यंत्रनी स्थापन.

| | जीवा करवानो क्रम नाम पूर्वक, | योजन प्रमाण इस्कु. | उंगणीश जाग करतां इस्कु कला | विष्कंनमांथी बा दकरतां शेषकला | इस्कु कलाने चार गुणा करतां. |
|---|------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|-------------------------------|-----------------------------|
| १ | दक्षिण जरतारु. | २३८ ^३ / _{१२} | ४५२५ | १८९५४२५ | १८१०० |
| २ | वैताढ्य. | २८८ ^३ / _{१२} | ५४२५ | १८९४५२५ | २१९०० |
| ३ | पूरण जरत. | ५२६ ^६ / _{१२} | १०००० | १८९०००० | ४०००० |
| ४ | हिमवंत पर्वत. | १५७८ ^{१८} / _{१२} | ३०००० | १८७०००० | १२०००० |
| ५ | हिमवंत युगलक्षे | ३६८४ ^४ / _{१२} | ७०००० | १८३०००० | २८०००० |
| ६ | महाहिमवंतपठ | ७८९४ ^{१४} / _{१२} | १५०००० | १७५०००० | ६००००० |
| ७ | हरिवर्षक्षेत्र. | १६३१५ ^{१५} / _{१२} | ३१०००० | १५९०००० | १२४०००० |
| ८ | निषधपर्वत. | ३३१५७ ^{१७} / _{१२} | ६३०००० | १२७०००० | २५२०००० |
| ९ | महाविदेहमध्य | ५०००० | ९५०००० | ९५०००० | ३८००००० |

| शेष कला रही तेने चार गुणी इस्कु कला साथे गुणतां. | मूल शोधतां शेषराशिरही तेनो आंक. | उदराशिनो आंक. | मूलमां लाधी कला तेनो आंक. | लाधी कलाना योजन तथा उंगणीशीया जागनी कला. |
|--|---------------------------------|---------------|---------------------------|--|
| ३४३०८०९७५०० | १६७३२४ | ३७०४४८ | १८५२२४ | ९७४८ |
| ४१४९००९७५०० | ७४०१९ | ४०७३८२ | २०३६९१ | १०७२० |
| ७५६०००००००० | २९७८८४ | ५४९९०८ | २७४९५४ | १४४७१ |
| २२४४०००००००० | ७३०७३६ | ९४७४१६ | ४७३७०८ | २४९३२ |
| ५१२४०००००००० | २९५९५९ | १४३१६४२ | ७१५८२१ | ३७६७४ |
| १०५००००००००० | १५६९७५ | २०४९३९० | १०२४६९५ | ५३९३१ |
| १९७१६००००००० | २०९३५०४ | २८०८२७२ | १४०४१३६ | ७३९०१ |
| ३२००४००००००० | ६५०८४४ | ३५७७९३२ | १७८८९६६ | ९४१५६ |
| ३६१००००००००० | ० | ० | १९००००० | १००००० |

आहीं जगानी पहोलाइ न होवाथी एक यंत्रना बे जाग उपर अने नीचे कीधा ठे. एज प्रमाणे ऐरवत क्षेत्रमां पण जीवानुं कारण जाणवुं. इति तृतीय करणम् ॥

अढीढीपना नकशानी हकीगत.

हवे चोशुं इस्कु गणित कहेढे.

आ जंबूढीपने विषे एक देश जे ञरत क्षेत्र अथवा ऐरवत क्षेत्र ते चढावेला धनुष्य ने आकारे ढे, तिहां बाणना ठामनी वच्चेनुं जे विष्कंज तेने इस्कु कहीये ते इस्कुना जेट लां योजन होय तेने योजननो इस्कु कहीयें, अने ते एकेका योजनना उंगणीश ञाग करीने ते ञागनो आंकडो जेवारें लखीयें तेवारें कलानो इस्कु कहेवाय. जेमके दक्षिणार्द्ध ञरतनो इस्कु (३३७) योजननी उपर ञण कला ढे तेने उंगणीशना आंक साथे गुणी यें तेवारें (४५३५) कला थाय ए कलानो इस्कु जाणवो. एटले दक्षिण ञरत क्षेत्रनी सर एटले बाणनी कला, (४५३५) थइ ते आ प्रमाणे:--३३७) योजनने ओगणीशें गुणतां ४५३३ कला थाय तेनी साथें उपरनी ञण कला ढे ते मेलवीयें तेवारें ४५३५ कला थाय. एरीते नवे स्थानकना योजननुं इस्कु तथा कलाना इस्कु ते सर्व पाठला यंत्रमां आवी गया ढे तेमांथी जोइ लेवा. इति चतुर्थ इस्कुगणितं समाप्तम् ॥

हवे पांचमो वैताढ्य प्रमुखनो धनुष्य एटले पुंठनो ञाग तेनुं गणित करवानो उपाय कहे ढे. तिहां जे स्थानकनुं धनुःपृष्ठ करवुं होय, तेना इस्कुनो जे आंक होय, तेने तेटलागुणो करीने वर्ग करीये; पढी ते वर्गने ढ गुणो करीयें तथा जीवानो जे आंक होय तेने पण तद्गुणो वर्ग करी पढी ए बेहु वर्गने एकठा करीने तेनुं मूल शोधतां जे आंक आवे, तेटलुं ते स्थानकनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं. तेमां प्रथम दक्षिण ञरतार्द्धना धनुःपृष्ठनुं गणित करी देखाढे ढे.

| | |
|-------------|---|
| ४५३५ | दक्षिणञरतार्द्धनी इस्कु कला ४५३५ ढे. |
| ४५३५ | तेनो वर्ग करवा सारुं तद्गुणो करीयें. |
| ३३६३५ | उपला आंकने पांच साथें गुणतां संख्या. |
| ९०५० | उपला आंकने वे साथे गुणतां संख्या. |
| ३३६३५ | उपला आंकने पांचसाथे गुणतां संख्या. |
| १७१०० | उपला आंकने चार साथे गुणतां संख्या. |
| ३०४५५६३५ | एकंदर इस्कुकलाना वर्गनी राशि थइ. |
| ६ | ए राशिने ढगुणी करवामाटे ढयें गुणवुं. |
| १३३७५३३५० | ए इस्कुवर्गने ढगुणो करतां एटली राशि थइ. |
| ३३३०७०९३५०० | पूर्वोक्त जीवानी राशिना वर्गनो आंक साथे मेलवीयें. |
| ३३४३०९५१३५० | ए बेहुराशिना सरवालानो आंक थयो. |

| | |
|--|--|
| <p>३४४३०९५११५० १)</p> <hr/> <p>३) ३४४ (८ १६ ६४ ३२४</p> <hr/> <p>३६) ३०३० (५ १८० ३५ १८३५</p> <hr/> <p>३७) ३०५९५ (५ १८५० ३५ १८५३५</p> <hr/> <p>३९१०) ३०७०१२ (५ १८५५० ३५ १८५५३५</p> <hr/> <p>३९११०) ३१४८७५० (५ १८५५५० ३५ १८५५५३५</p> <hr/> <p>३९१११०) ३९३३३५</p> | <p>एतुं मूल शोधवा सारु विषम सम करतुं. पहेलो अंक विषम ठे, माटे एकज आंकने शोध्यो. शोधतां एकेकां एक गयो, बाकी बेरह्या. उपर चुमांलीश लीधा. एकनो जाग आव्यो तेने बमणा करी बे अठा शोल थया. आठनो जाग आव्यो, माटे आठो आठो चोशठने चांपी मांड्या. सरवाले बशे चोवीश थया, ते बाद करवा. बाकी वीश रह्या उपर त्रीश लीधा. अठारने द्विगुणा करी बत्रीश पंचां १८० थया. पांचनो जाग आव्यो माटे पांच पच्चा पच्चीश चांपी मांड्या. सरवालो १८३५ थयो. ते बाद करतां बाकी ३०५ रह्या उपर ९५ लीधा. १८५ ने द्विगुणा करी ३७० पांचु १८५० थया. पांचनो जाग आव्यो माटे पांच पच्चा पच्चीश चांपी मांड्या. सरवाले १८५३५ थया. ते बाद करतां ३०७० रह्या उपर बार लीधा. मूलना १८५५ ने द्विगुणा करी ३७१० पंचां १८५५० थया. पांचनो जाग आव्यो माटे पांच पच्चा पच्चीश चांपी मांड्या. सरवाले १८५५३५ थया. बाद करतां बांकी ३१४८७ रह्या उपर पच्चास लीधा. १८५५५ ने बमणा करी पांचे जाग देतां ए राशि आवी. पांचनो जाग आव्यो, माटे पंचो पंचो ३५ चांपी मांड्या. सरवाले १८५५५३५ थया. बाद करतां शेष कला रही तेने जाग पोहोचे नही.</p> |
|--|--|

ए रीते १८५५५५ नो आंक आव्यो शेष कला ३९३३३५ वधी तेने १८५५५५ ने बमणा करिये तेवारे ३९१११० थाय. तेनो जाग पोहोचे नही माटे पूर्वली रीते कोश धनुष्यादिक करी जाग पहोचाडवो, ए दक्षिण जरतारुं गणित करी देखाड्युं. शेष स्थान कनुं पण ए रीते गणित करतुं. ए दक्षिण जरतारुं दिक स्थानकना धनुःपृष्ठनो यंत्र नीचे लख्योते, तिहां महाविदेहना अरुं जाग पर्यंत जंबूद्वीपनी परिधिना अरुं जागनुं धनुःपृष्ठआवे

अष्टीद्वीपना नकशानी. हकीगत.

दक्षिण जरतार्कादिक नव स्थानकना धनुःपृष्ठनो यंत्र.

| स्थानकोनां नाम. | इस्कुनी कला. | इस्कुना वर्गनी कलानो आंक. | इस्कुवर्गने ठगुणो क रतां कला. | जीवाना वर्गनी कलानो आंक. |
|------------------|--------------|---------------------------|-------------------------------|--------------------------|
| जरतार्क. | ४५३५ | ३०४३५६३५ | १३३८५३३५० | ३४३०८०९३५०० |
| वैताळ्ये. | ५४३५ | ३९९३५६३५ | १३९८५३३५० | ४१४९००९३५०० |
| पूर्ण जरते. | १०००० | १०००००००० | ६०००००००० | ३५६०००००००० |
| हिमवंतगिरि | ३०००० | ९०००००००० | ५४०००००००० | ३३४४०००००००० |
| हिमवंतक्षेत्रे. | ३०००० | ४९०००००००० | ३९४०००००००० | ५१३४०००००००० |
| महाहिमवंत | १५०००० | ३३५०००००००० | १३५००००००००० | १०५००००००००० |
| हरिवर्षक्षेत्रे. | ३१०००० | ९६१०००००००० | ५३६६०००००००० | १९०१६०००००००० |
| निषधपर्वते. | ६३०००० | ३९६९४०००००००० | २३८१४०००००००० | ३२००४०००००००० |
| महाविदेहर्के. | ९५०००० | ९०२५०००००००० | ५४१५००००००००० | ३६१०००००००००० |

| ठ गुणी करेली इस्कुना वर्गनी कलानो सरवालो. | वर्गमूल आण तां शेषराशि. नो आंक. | वर्गमूल आण तां वेदराशि. नो आंक. | वर्गमूल आण तां लब्धराशि. नो आंक. | लाधेली कलाना योजन तथा कलानी संख्या. |
|---|---------------------------------|---------------------------------|----------------------------------|-------------------------------------|
| ३४४३०९५१३५० | ३९३३३५ | ३३१११० | १८५५५५ | ९९६६। १ |
| ४१६६९९५१३५० | ३३८३६ | ४०८३६४ | ३०४१३३ | १०३४३।५ |
| ३६३००००००००० | ३६३१५१ | ५५३०८६ | ३३६०४३ | १४५३८।१ |
| ३३९८००००००००० | ५६८१३४ | ९५८३४८ | ४३९३३४ | ३५३३०। ४ |
| ५४१८००००००००० | ९५५१०० | १४३३१४० | ३३६०३० | ३८३४०।१० |
| ११८५०००००००००० | ११५०३१ | ३१३३१५४ | १०८८५३३ | ५३३९३।१० |
| ३५४८३००००००००० | ३६९१३६ | ३१९३६१६ | १५९६३०८ | ८४०१६। ४ |
| ५५८१८००००००००० | १५६८१११ | ४३३५१६६ | ३३६३५८३ | १३४३४६।९ |
| ९०३५०००००००००० | ४६६९४३१ | ६००८३३६ | ३००४१६३ | १५८११३।६॥ |

आ एकज यंत्र ठे पण पुस्तकमां साहामी बाजु जगा न मलवाथी चालता अनुक्रमना कोठाने नीचें लक्ष लीधा ठे. प्रथमना यंत्रोमां पण बे ठेकाये एमज कखुं ठे.

इति पंचम धनुःपृष्ठगणितयंत्रं समाप्तम्

अढीढीपना नकशानी ढकीगत.

एए

अथ षष्ठ बाहा करण विधि प्रारंभः ॥

हवे ठहुं बाहकरण कहे ठे. आ ठेकाणे बे धनुःपृष्ठनो विश्लेष करीये, तिहां दक्षिण चरतार्क अने वैताढ्यपर्वत ए बे धनुष्य ठे, तेमां जे न्हानुं धनुष्य होय ते महोटा धनुष्यमांथी काहामीये तेने विश्लेष कहीये, ते काहाडीने पढी जे शेष रहे, तेनुं अर्क करीये तेवारे वैताढ्य तथा हिमवंत प्रमुख पर्वतनी बाह थाय. बाह एटले पर्वतना तथा क्षेत्रना ठेमानो विस्तार जाणवो, ते आवी रीते:-

दक्षिणार्क चरतनुं धनुःपृष्ठ (ए७६६) योजननी उपर एक कला ठे, अने वैताढ्य पर्वतनुं धनुःपृष्ठ (१०७४३) योजनने पन्नर कला उपर ठे, माटे वैताढ्यना धनुःपृष्ठनी अपेक्षायै दक्षिणार्कचरतनुं लघु धनुःपृष्ठ कहेवाय, अने वैताढ्यनुं महा धनुःपृष्ठ कहेवाय, तेवारे महाधनुःपृष्ठनी राशिमांथी लघु धनुःपृष्ठनी राशि बाद करीये, तो बाकी (ए७७) योजन उपर चौद कला रहे, तेनुं अर्क करीये तेवारे (४७७) योजन उपर साकीशोल कला आवे. एटला योजन प्रमाण वैताढ्य पर्वतना बेहु तरफनी प्रत्येक एकेकी बाह जाणवी, एवी रीते हिमवंत महाहिमवंतादिक सर्व पर्वतोनी तथा हिमवंतादिक क्षेत्रोनी बाहनुं गणित खयमेव करी लेवुं. अहिं मात्र एनो यंत्रज लखीये ठैये.

अथ बाहा करण यंत्रम्

| बाहा करवाना स्थानकोनां नाम. | वैताढ्यादिकनुं | | चरतार्कादिकनुं | | बेहुनो विश्लेषतेनुं | | अर्ककरतां जे आंक आवे, ते बाह. | |
|-----------------------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|---------------------|------------------|-------------------------------|------------------|
| | महा धनुः पृष्ठ. | लघु धनुः पृष्ठ. | महा धनुः पृष्ठ. | लघु धनुः पृष्ठ. | करतां बाकी. | आंक आवे, ते बाह. | करतां बाकी. | आंक आवे, ते बाह. |
| | योजन. कला. | योजन. कला. | योजन. कला. | योजन. कला. | योजन. कला. | योजन. कला. | योजन. कला. | योजन. कला. |
| १ वैताढ्य पर्वत. | १०७४३ | १५ | ए७६६ | १ | ए७७ | १४ | ४७७ | १६॥ |
| २ चरत क्षेत्र. | १४५२७ | ११ | १०७४३ | १५ | ३७७४ | १५ | १७७२ | ७॥ |
| ३ हिमवंतपर्वत. | २५२३० | ४ | १४५२७ | ११ | १०७०१ | १२ | ५३५० | १५॥ |
| ४ हिमवंतक्षेत्र. | ३७७४० | १० | २५२३० | ४ | १३५१० | ६ | ६७५५ | ३ |
| ५ महाहिमवंतपर्वत | ५७२७३ | १० | ३७७४० | १० | १७५५३ | ० | ७२७६ | ७॥ |
| ६ हरिवर्षक्षेत्र. | ७४०१६ | ४ | ५७२७३ | १० | २६७२२ | १३ | १३३६१ | ६॥ |
| ७ निषधपर्वत. | १२४३४६ | ७ | ७४०१६ | ४ | ४०३३० | ५ | २०१६५ | २॥ |
| ८ विदेहार्क. | १५७११३ | १६॥ | १२४३४६ | ७ | ३३७६७ | ७॥ | १६७७३ | १३॥ |

॥ इति पृष्ठ बाहा करणविधियंत्रादि संपूर्णम् ॥

अढीझीपना नकशानी इकीगतः

अथ सप्तम प्रतरकरण गणितं.

हवे सातमो प्रतर करवानो उपाय कहे ठे. जरत क्षेत्र प्रमुखने समचतुरस्र करवां, तेने प्रतर कहीये तिहां प्रथम ठेह्यो खंम जे जरत क्षेत्र ठे, तेना प्रतर करवानो उपाय देखाडे ठे. जरतार्कनी इरकु साथे जीवा गुणीये, ते गुणतां जे आंक आवे, तेने चार जागे वहेंची नाखतां चोथा जागमां जे आंक आवे, तेने तजुणो करीये एटले तेनो वर्ग करीने ते वर्गने दशे गुणीये. एम करतां जे आंक आवे, तेनुं मूल शोधिये, ते मूल शोध तां जे आंक आवे, ते प्रतिकला जाणवी; पठी ते प्रतिकलाने उंगणीश जागे वेंचीये, तेवारे तेनी कला थाय, अने शेष वधे, ते प्रतिकला कहीये. फरी ते कलानी राशिने उंगणीश जागे वेंचीये, तेवारे योजननी संख्या थाय. जेम के जरतक्षेत्रनी इरकुकला ४५३५) ठे, तेनी साथे जरतक्षेत्रनी जीवा संबधी कला १०५३३५) किंचित् न्यून ठे, तो पण ते सूक्ष्म गणित नथी करता, माटे एटलीज राशि साथे गुणतां ८३८१४३१३५ थाय, तेने चारनो जाग आपीये, तेवारे ३०५५३५३८१ थाय. शेष एक वधे. पठी ए राशिने एज राशि साथे गुणीने एनो वर्ग करीये, तेवारे ४३६०५३४३५१६३३६३५३५३ थाय. अने पठी एने दश गुणा करवा सारु एक मिंडुं नीचे आपीये. तेवारे ४३६०५३४३५१६३३६३५३५३ थाय. तेने विषम सम करी मूल शोधियें ते आवी रीतेः—

४३६०५३४३५१६३३६३५३५३ (६६३६१०३१६ मूल शोधतां ए राशि आवे.

| | |
|-------------|---|
| ३६ (६ | त्रेंतालीशमांथी ठ ठक ठत्रीश गया. |
| १२)३६०(६ | बाकी सात रह्या उपर नेवुं लीधा. |
| ३२ | ठने बमणा करी बार ठकां बहोंतेर थया. |
| ३६ | ठनो जाग आव्यो माटे ठ ठक ठत्रीश चांपी मांड्या. |
| ३५६ | बेहुनो सरवालो आपतां ३५६ गया. |
| १३२)३५६३(३ | बाकी चोत्रीश रह्या, उपर वावन लीधा. |
| ३६४ | ठाशठने बमणा करी १३२ डु ३६४ थया. |
| ४ | बेनो जाग आव्यो माटे डुए डुए चार चांपी मांड्या. |
| ३६४४ | सरवाले ३६४४ थया, ते वाद करवा. |
| १३२४)३६४३(६ | बाकी ००० रह्या उपर ४३ लीधा. |
| ३६४४ | ६६३ ने बमणा करी १३२४ ठकां ३६४४ थया. |
| ३६ | ठनो जाग आव्यो माटे ठ ठकां ठत्रीश चांपी मांड्या. |

७७४७६
 १३३५३)१३६७५१(१
१३३५३
 १
१३३५३१
 १३३५३३)४३३०७७(बाकी ४३३० रह्या, उपर एश लीधा जाग न पहोचे माटे० पडी.
 १३३५३३०)४३३०७७७(३ फरी ४३३०७७ नी उपर ७ए नो आंक लीधो.
३७७५६६० (६६३६१० ने बमणा करतां १३५३३० त्रिकां ३७७५६६० थया.
ए त्रणनो जाग आव्यो माटे त्रण त्रिक नव चांपी मांड्या.
३७७५६६०ए सरवाले ३७७५६६०ए गया.
 १३३५३३०६) ३५५३६७०ए (१ बाकी ३५५३६७० रह्या उपर ठुं लीधा.
 १३३५३३०६ ६६३६१०३ ने बमणा करी १३३५३३०६ एकां एटलाज
 १ एकनो जाग आव्यो माटे एकेकुं एक चांपी मांड्यो.
१३३५३३०६१ सरवाले १३३५३३०६१ गया.
 १३३५३३०६३) १३३७४५०३५१०(ए बाकी १३३७४५०३५ रह्या उपर दश लीधा.
 ११ए३६ए७५५७ ६६३६१०३१ने बमणा करतां १३३५३३०६३
 नवां ११ए३६ए७५५७ थया.
७१ नवनो जाग आव्यो माटे नेवे नेवे ७१ चांपी मां०
११ए३६ए७५६६१ सरवाले ११ए३ ६ए७५६६१ गया.

१३३५३३०६३७) ३४७५१७७४ए (शेष ३४७५१७७४ए राशि रही, एने लब्धराशिनो आं
 क ६६३६१०३१ए ठे तेने बमणा करतां १३३५३३०६३७ नो आंक थाय, तेनी साथे जाग
 पहोचे नही तेने सूक्ष्म गणित नथी माटे एमज पकता मूकवा.

अने ६६३६१०३१ए ए लब्ध प्रतर प्रतिकला थइ, तेने उंगणीश जागे वेंचिये,
 तेवारे ३४७५१७७४ कलानी उपर ठ प्रतिकला थाय. हवे एना योजन करवा सारु
 फरी उंगणीश जागे वेंचिये तेवारें (१७३५४७५) योजननी उपर बार कला अने ठ
 प्रतिकला तथा ३४७५१७७४ए एटली संख्यानी पूर्वोक्त १३३५३३०६३७ ठेद
 राशि वाली शेष राशि रही, ए दक्षिणचरतार्कना प्रतर करी देखाड्या. तेना यंत्रनी
 स्थापना नीचे करीचे ठैये.

दक्षिण जरतार्झना प्रतर करवानो यंत्र.

| | |
|---|----------------------|
| १ इस्कु कला. | ४५२५ |
| २ किंचित् न्यून जीवा कला. | १८५२२५ |
| ३ इस्कु कलाने जीवा कला साथे गुणतां. | ८३८१४३१२५ |
| ४ तेने चार जागे वेंचतां कला. | २०९५३५८८१ |
| ५ चोथा जागनी कलानो वर्ग करतां | ४३९०५२४३५१९२७९९६१ |
| ६ तेने दशगुणो करतां | ४३९०५२४३५१९२७९९६१० |
| ७ ते वर्गनुं मूल शोधतां लाधेलो आंक. | ६६२६१०३१९ |
| ८ शेष राशि रही. | ३४७५१२७४९ |
| ९ ठेद राशि. | १३२५२२०६३८ |
| १० लाधेली प्रतिकलाने १९ जागे वेंचतां कला. | ३४८७४२२७३६ प्रतिकला. |
| ११ फरी ते कलाना योजन करवा १९ नो जाग आपतां | १८३५४८५ |
| एटला योजननी उपर १२) कला अने ठ प्रतिकला जाणवी. | |

हवे वैताढ्य प्रमुख मध्यक्षेत्राणा प्रतर करवानो उपाय कहे ठे. लघु जीवानो वर्ग अने महोटी जीवानो वर्ग ए बे वर्गनो शरवालो बांधी एकठा करीने तेनुं अर्झ करीये, पठी तेनुं मूल शोधिये, ते मूलनो जे आंक आवे, ते पोताना विस्तार साथे एटले वैताढ्यादिक पर्वतोना पहोल पणा साथे गुणिये, तेवारे वैताढ्यादिक पर्वतोना प्रतर आय. तिहां प्रथम वैताढ्य पर्वतना तळीया संबंधि जूमिकानुं प्रतरकरण कहे ठे.

॥ अथ वैताढ्यस्य प्रतरकरणं लिख्यते ॥

| | |
|---|-------------|
| दक्षिण जरतार्झनी लघु जीवानो वर्ग करतां कला. | ३४३०८०९७५०० |
| वैताढ्यनी गुरु जीवा कहेवाय तेनो वर्ग करतां कला. | ४१४९००९७५०० |
| ए वने जीवानो सरवालो करतां कला. | ७५७९८१९५००० |
| तेनो अर्झजाग करतां कला. | ३८७९९०९७५०० |
| एनुं मूल शोधतां लाधेली कला. | १९४६७६ |
| शेष राशिनी कला. | ३५२५२४ |
| ठेद राशिनी कला. | ३८३३५२ |
| ए सामान्यधी विधि कह्यो; परंतु विशेष विधि तो आवी रीते ठे, ते आगल लखीये ठेये. | |

वैताढ्य पर्वतना दक्षिणना पासानुं जेटळुं लांब पणुं ठे, तेने जीवा कहीये; ते जीवाना योजनना उंगणीशिया जाग करीये, तेने कला कहीये. ते कलानो वर्ग करिये, तेने लघु जीवा वर्ग कहीये, अने ए वैताढ्य पर्वतना उत्तरना पासानुं जेटळुं लांबपणुं ठे, तेनी कला करीने तेनो वर्ग करिये, ते महोटी जीवा वर्ग कहीये. पढी लघु जीवाना वर्गनो आंक अने महोटी जीवाना वर्गनो आंक, ए बे आंक एकठा मेलवतां जे आंक आवे, तेने बे जागे वेंचीये एटळे अर्ध करी नाखीये, तेवारे (३७७७००७५००) एटलो आंक आवे, पढी तेतुं पुर्वोक्त रीते मूल शोधीये, तेवारे त्रण राशि थाय, तेमां जे आंक उगरे तेने शेष राशि कहीये, अने जे आंक नीचे लाजे, ते हेद राशि कहे वाय. अने ते हेद राशिनो अर्ध लाजे ते लब्धांक राशि कहेवाय, ए त्रण राशिमांथी जे शेष राशिनो आंक (३५२५२४) आवेशे, तेने बारना आंके अपवर्तना करीये. अपवर्तना एटळे पाळुं उंसरळुं चालळुं विशेष जाषाये. बारने आंके जाग आपीये तेवारे (२७३७७) नो आंक आवे, ते एक बाजु मांकी राखीये, तथा वढी हेद राशिनो आंक (३७७३५२) ठे, तेने पण बारे अपवर्तना करीये, तेवारे (३२४४६) आवे. ए आंक पण एक बाजु मांकी राखीये, तथा ए करणी करतां जे कला लब्ध थइ ठे, तेनो आंक (१७४६७६) नो ठे तेने वैताढ्यनुं पहोळपणुं पच्चास योजननुं ठे. तेनी साथे गुणाकार करीये, तेवारे (७७३३७००) नो आंक आवे, ते पण एक बाजु लखी राखीये, तथा शेष राशिना आंकने बारनो जाग आपतां जे २७३७७ नो आंक लाधो ठे, तेने पण वैताढ्य पर्वतना तळीयाना पहोळ पणाना पच्चास योजन साथे गुणाकार करीये, तेवारे (१४६७७५०) थाय ए आंकने प्रथम हेदराशिना आंकने बारे जाग आपतां जे (३२४४६) नो आंक आव्यो ठे, ते आंके जाग आपीये, तेवारे (४५) आंक आवे, अने शेष (७७७०) आंक वधता रहे, हवे पीस्ताळीशना आंकने पूर्वोक्त लब्धराशिने पच्चास गुणी करतां जे (७७३३७००) नो आंक आव्यो ठे, तेनी साथे मेलवीये तेवारे (७७३३७४५) थाय एटळी शेष कलानी राशि उगरी. तेना योजन करवाने अर्थे उंगणीशनो जागाकार आपीये, तेवारे (५१२३०७) योजन उपर बार कला एटला चोसला एटळे समचतुरस्र चोखूणा योजनना खांरुवा वैताढ्य पर्वतनी नीचली तळीयानी झूमिकामांहे थाय ठे.

हवे वैताढ्य पर्वत उपर दश योजन उंचा चढिये, तेवारे पहेली मेखला आवे, तिहां प्रतर गणित केटळुं थाय ? ते कहीये ठैये.

ए पण वैताढ्य पर्वतनो लघु जीवानो वर्ग तथा महोटी जीवानो वर्ग ए बेहु वर्गने

मेलवी सरवालो करी पढी तेनुं अर्ध करी, ते अर्ध जागमां जे आंक आव्यो तेनी करणी करवी एटले मूल शोधवुं. पढी तेनी त्रण राशि कलानी लाधी, त्यां सुधी तो वधो पूर्वली रीते वर्तारो वर्तवो. तेवार पढी पहेली मेखलाने विषे एटलुं विशेष करवुं, के पूर्वे वैताढ्य पर्वतना तलियानी करणीमां शेष राशिने वारे अपवर्तन करतां जे १९४६९६ कला लाधेली ठे, तेने वैताढ्यना तलियानुं पहोलपणुं पचास योजननुं ठे, तेनी साथे गुणाकार कीधो हतो ते इहां पहेली मेखलाये वैताढ्य पर्वत त्रीश योजन प होलो ठे, माटे ए लब्ध कलाने त्रीशे गुणीये, तेवारे ५८४०५८० नो आंक आवे, ते एक बाजु मांकी राखीये, अने शेष राशिनी द्वादश अपवर्तनाये एटले वारना आंके जाग दे तां जे १९६९९ नो आंक आव्यो ठे, ते आंकने वैताढ्यनी पहेली मेखलाना त्रीश योजन साथे गुणीये, तेवारे ८८२३२० नो आंक आवे, ते आंकने ठेदराशिना आंकने वारे जाग आपतां जे ३५४४६ नो आंक आव्यो ठे, ते आंके जागाकार आपीये, तेवारे (३५) नो आंक आवे, अने उपर ५५६८ नो आंक वधे. ते वधेलो आंक कांइ जागाकारमां काम न आवे माटे एमज रहेवा दइये. बाकी मात्र सत्तावीशना आंकने पूर्वोक्त लब्ध कलाने वैताढ्यनी पहेली मेखलाना पहोल पणाना त्रीश योजननी साथे गुणतां जे ५८४०५८० नो आंक आव्यो ठे, तेनी साथे मेलवीये, तेवारे ५८४०३०९ नो आंक कलानो थाय, तेना योजन करवाने अर्थे ए आंकने उंगणीशनो जाग आपीये, तेवारे (३०९३८४) योजन उपर अगियार कला एटला एकेका योजननां समचतुरस्र खांडवा वैताढ्य पर्वतनी पहेली मेखलानी चूमिकाये थाय.

हवे वैताढ्य पर्वतनी बीजी मेखलाये प्रतर गणित करवानो उपाय कहीये ठैये. तिहां पहेली मेखलाये जे करणी करतां १९४६९६ कला लब्धमान हती, ते आंकने इहां बीजी मेखला दश योजननी पहोली ठे, माटे दशना आंक साथे गुणीये, तेवारे १९४६९६० थाय. ते आंकने एक बाजुये लखी राखीये.

पढी शेष राशिने वारे जागतां जे १९३९९ नो आंक आव्यो ठे, ते आंकने वैताढ्यनी बीजी मेखलानुं दशयोजन पहोलपणुं ठे, तेनी साथे गुणीये. तेवारे १९३९९० नो आंक थाय. ते आंकने वली ठेद राशिना आंकने वार जागे वेंचतां जे ३५४४६ नो आंक आवेलो ठे, ते आंके जागाकार आपीये तेवारे ए नो आंक आवे, अने उपर १९५६ अंश वधे, ते अंशने जाग पहोचे नही माटे एमज रहेवा दइये. अने नवना आंकने पूर्वोक्त लब्ध राशिना आंकने वैताढ्यनी बीजी मेखलाना पहोलपणाना दश योजन साथे गुणीये जे १९४६९६० कलानो आंक आवेलो ठे, तेनी साथे मेलवीये,

तेवारे १९४६९६९ कला थाय. पढी कलाना योजन करवा सारु ए आंकने उंगणीशनो जागाकार आपीये, तेवारे १०२४६१ योजननी उपर दश कला थाय, एटला वैताढ्यनी बीजी मेखलाना सम चोरस खांडवा थाय, ए वैताढ्यपर्वतनी बीजी मेखलानुं प्रतरग णित कहुं. ए सर्वना यंत्रनी स्थापना आगल करशु.

हवे उत्तर चरतार्द्धनुं प्रतरकरण लखीये ठैये. इहां वैताढ्य पर्वतना उत्तरना पासा नी जे जीवा तेनी कला करीने पढी तेनो वर्ग करीये, तेने लघु जीवा वर्ग कहीये, अने हिमवंत पर्वतना दक्षिण पासानी लांबपणानी जे जीवा तेनी कला करीने पढी तेनो वर्ग करीये, तेने गुरुजीवा वर्ग कहीये. पढी बेहु जीवाना वर्गने एकठा करीश रवालो आपतां जे आंक आवे, तेनुं अर्द्ध करीये, पढी तेनी करणी करी मूल शोधी ये, तेवारे लब्ध कला २४१९६० आवे. तथा शेष राशि ४०९१५० आवे, तथा ठेदराशि ४०३९९० आवे, एवी त्रण राशि थाय.

हवे शेषराशिनो अंक ४०९१५० ठे, तेने शून्ये करी अपवर्त्तिये, एटले शेषराशिने ठेहडे शून्य अर्थात् मींहुं ठे, तेने जांजी नाखीये, तेवारे दशक पड्युं. ए जाव जाणवो. अर्थात् दशने आंके जागाकार कीधो तेवारे ४०९१५ नो आंक रह्यो. तथा ठेदराशिनो आंक ४०३९९० ठे, तेने पण शून्ये अपवर्त्तिये, तेवारे ४०३९९ नो आंक रहे.

हवे पूर्वोक्त लब्ध राशिनो आंक २४१९६० ठे, तेने चरतार्द्धना बाणनी कला एटले पहोल पणानी कला ४५२५ ठे. तेनी साथे गुणीये, तेवारे १०९४०६९००० आवे

वली शेषराशिने शून्ये अपवर्त्तन करीने ४०९१५ नो आंक रह्यो ठे, तेने पण चर तार्द्धना पृथुत्व एटले बाणनी कला ४५२५ नी साथे गुणाकार करीये तेवारे १०४२३५३९५ नो आंक आवे. हवे ए आंकने ठेदराशिना शून्ये अपवर्त्तलो जे ४०३९९ नो आंक ठे, ए आंके जाग आपीये, तेवारे ३००९ नो आंक लाजे, शेष ९०३१ एट लो आंक वधे. ते एमज राखीये अने प्रतिकला ३००९ लाधी, ते पूर्वोक्त ४५२५ पहो लपणानी राशिने गुणाकार करेदी प्रतिकलानी राशि १०९४०६९००० आंकनी ठे, तेनी साथे मेळवीये, तेवारे १०९४०९२००९ एटलो प्रतिकलानो आंक थाय. कारण के, एने पहोलपणाना २३० योजनथी गुणाकार कस्यो होय तो ए कलानी राशि कहेवाय. परंतु आ ठेकाणे उत्तरार्द्ध चरतना योजन २३० ने त्रण कलानी सर्व कला ४५२५ क रीने तेनी साथे गुणाकार करेलो ठे, माटे एने प्रतिकला कहिये ठैये.

हवे ए १०९४०९२००९ जे प्रतिकला थइ तेने उंगणीशनो जाग आपीये, तेवारे

५९६३४७७४ कला थाय, अने उपर अगीयार प्रतिकला उगरे तेना योजन करवां सारु फरी ए कलानी राशिने उंगणीशनो जागाकार आपीये, तेवारे ३०३३७७७ योजन वार कला अने अगीयार प्रतिकला थाय एटला एकेका योजनना चोसला खांरुवा उत्तरार्द्ध चरतना जाणवा. इति उत्तर चरतार्द्धस्य प्रतरकरणविधिः समाप्तः ॥

हवे हिमवंत पर्वतने तळीये प्रतरनी संख्या करवाने अर्थे वरतारो करवानीरीत लखीये ठैये. हिमवंत पर्वतनी दक्षिणने पासे जे उत्तरचरतार्द्धनो ९५६०००००००० जी वा वर्ग ठे, ते लघु जीवा वर्ग जाणवो, अने हिमवंत पर्वतनी उत्तर दिशिये जे ३३४४००००००० जीवावर्ग, ते गुरु जीवावर्ग जाणवो. ए वे वर्ग एकठा मेलवीये, ते वारे ३०००००००००० ए आंक आवे, तेनुं अर्द्ध करीये, तेवारे १५००००००००० था य. ए आंकने करणी करी मूल शोधिये, तेवारे ३०९३९७ लब्धराशि थाय. अने शेष राशि ३५९३९६ एटली उगरे, तथा ठेदराशि ९९४५९६ थाय. पढी शेष राशिनी ३५९३९६ नो आंक आव्यो ठे, ते आंकने चारना आंक साथे अपवर्त्तन करीये, एटले चारे जागाकार आपीये, तेवारे ६४९९९ नो आंक आवे, तथा ठेदराशिना आंकने चारे अपवर्त्तन करीये, एटले चारने आंके जागाकार आपीये तेवारे १९३६४९ नो आंक आवे.

हवे लब्धराशिनी आंक जे ३०९३९७ नो आव्यो ठे ते आंकने हिमवंत पर्वतनुं पहोलपणुं जे वीश हजार कलारूप ठे, तेनी साथे गुणीये, तेवारे ९९४५९६०००० नो आंक आवे, ते एक बाजुये लखी मूकीये.

पढी शेष राशिने चारे अपवर्त्तन करतां जे ६४९९९ नो आंक आव्यो ठे, ते राशिने हिमवंत पर्वतना पहोल पणानी वीश हजार कला साथे गुणाकार करीये, तेवारे १९९५९७०००० नो आंक आवे, तेने ठेदराशिने चारे अपवर्त्तन करेला १९३६४९ ना आंके जाग आपिये, तेवारे ६६९९ नो आंक आवे, अने उपर ०००९९ नो आंक शेष रहे, तेने जाग पहोचे नही माटे ते आंक पढतो मूकीने ए ६६९९ नो जे आंक ठे ते हिमवंत पर्वतना पहोल पणानी वीशहजार कलाये गुणेला लब्धराशिना ९९४५९६०००० आंक साथे मेलवीये, तेवारे ९९४५९६६६९९ नो आंक प्रतिकलारूप थाय, तेनी कला करवा सारु ए आंकने उंगणीशनो जागाकार आपीये, तेवारे ४०९६०९४५९ नो आंक उपर नव प्रतिकला वधे, वली ए आंकना योजन करवाने अर्थे फरी उंगणीशे जाग आपीये, तेवारे ३१४५६९९१ योजननी उपर आठ कला अने नव प्रतिकला थाय. ए टला एकेक योजनना चोसला खांरुवा हिमवंत पर्वतना जाणवा इति ॥

हवे हिमवंत क्षेत्रना प्रतर गणितनो वरतारो कहियें ठैये. इहां हिमवंत पर्वतना उत्तर पासानो जे जीवावर्ग ते लघुजीवावर्ग कह्यीये, अने हिमवंत क्षेत्रने ठेहडे महा हिमवंत पर्वतने अरुतो जे जीवावर्ग, ते महोटो जीवावर्ग जाणवो. ए बे वर्ग एकठा मेलवीने तेनुं अर्क करीये, तेवारे ३६७४०००००००० एटली कलानो आंक आवे, तेनुं सम विषम करी करणी करी मूल शोधिये, तेवारे ६०६७५९ कलानो आंक लब्धराशिंनो आवे, ते एक बाजुये लखी राखीये, अने शेषराशि ७७३३१९ नो आंक रहे, तथा ठेदराशि १२३३९१७ नो आंक रहे. पठी लब्ध राशिंनो ६०६७५९ नो आंक ठे तेने हिमवंतक्षेत्रना पहोलपणानी ४०००० कला बाणरूप ठे. तेनी साथे गुणिये तेवारे २४२७७३६००००० नो आंक आवे, ते एक बाजु मांडी मूकीये, पठी शेषराशिना आंक ने एके अपवर्त्तन करीये, तेवारे तेहीज ७७३३१९ नो आंक आवे तेने हिमवंतक्षेत्रना पहोलपणानी बाण रूप ४०००० कला ठे तेनी साथे गुणिये तेवारे ३०७७३७६००००० नो आंक आवे. ते आंकने ठेदराशिंनो १२३३९१७ नो आंक ठे, तेने एके अपवर्त्तन करतां एहीज आंक आवे ते आंके जागाकार आपीये, तेवारे २५४४७ नो आंक आवे, अने शेष ७७३३३६ नो आंक रहे तेने जाग पहाँचे नही माटे पडतो मूकीये. पठी लब्धराशिना चालीश हजारे गुणेल आंकनी साथे ए २५४४७ नो आंक मेलवीये, तेवारे २४२७७३७५४४७ नो आंक आवे एटली प्रतिकला थइ तेनी कला करवा सारु एने उंगणीशनो जाग आपीये, तेवारे १२७७७०७७६० कला अने उपर आठ प्रतिकला थाय तेना वली योजन करवा सारु ए आंकने उंगणीशनो जाग आपीये, ते वारे ६७२५३१४५ योजननी उपर पांच कला अने आठ प्रतिकला एटला योजनना चोसला खांरुवा हिमवंत क्षेत्रना थाय.

हवे महाहिमवंत पर्वतना प्रतरनुं गणित करवुं, तेनो वरतारो लखीये ठैये. हिमवंत क्षेत्रना उत्तरनी पासे जे जीवानो वर्ग ते लघु जीवावर्ग कह्यीये अने महाहिमवंत पर्वतना ठेहडानो जे जीवावर्ग ते गुरु जीवावर्ग कह्यीये. ते बेहुने एकठा मेलवीने तेनुं अर्क करीये, तेवारे ७७१२००००००००० एटलो आंक थाय तेनुं मूल शोधिये तेवारे लब्धराशि ७७३३५९ आवे अने ठेदराशिंनो आंक १७६७७१० नो आवे. तथा शेष राशि ३३७७५५ नो आंक आवे, तेने पांत्रीशना आंक साथे अपवर्त्तिये, एटले पांत्रीशे जाग आपीये तेवारे ७६७५ नो आंक आवे. पठी ठेदराशिंनो आंक १७६७७१० ठे, तेने पांत्रीशे अपवर्त्तिये, तेवारे ५०५०६ नो आंक आवे.

હવે પૂર્વે જે મૂલ શોધતાં ૫૮૩૭૫૫ નો આંક લઢધરાશિનો આવ્યો ઢે, તે આંકને મહા હિમવંત પર્વતના પહોલપણાના બાણ રૂપ ંશી હજાર કલા ઢે, તેની સાથે ગુણિયે, તે વારે ૭૦૭૦૮૪૦૦૦૦૦ નો આંક થાય.

હવે શેષ રાશિને અપવર્તન કરતાં જે ૫૬૮૫ નો આંક આવ્યો ઢે, તેને મહાહિમવંત પર્વતની પૃથુત્વ રૂપ આઠ હજાર કલાની સાથે ગુણિયે, તેવારે ૭૭૪૮૦૦૦૦૦ નો આંક થાય, તે આંકને અપવર્તન કરેલો જે ઢેદરાશિનો ૫૦૫૦૬ નો આંક ઢે, તે આંકે જાગાકાર આપીયે તેવારે ૧૫૩૪૦ નો આંક આવે, શેષ ૩૭૫૬૦ નો આંક વધે, તેને જાગ પોહોચે નહીં માટે પરુતો મૂકીયે અને ૧૫૩૪૦ ના આંકને પૂર્વે જે ંશીહજાર ગુણો કરેલો લઢધરાશિનો ૭૦૭૦૮૪૦૦૦૦૦ નો આંક ઢે, તેની સાથે મેલવિયે, તેવારે ૭૦૭૦૮૪૧૫૩૪૦ નો આંક પ્રતિકલાનો થાય, તેની કલા કરવા સારુ ૫ આંકને ંગણીશે જાગ આપીયે, તેવારે ૩૭૨૧૪૫૫૫૪૪ ંટલી કલા ંપર ચાર પ્રતિકલા થાય. વલી ંના ંયોજન કરવા સારુ ૫ કલાના આંકને બીજી વાર ંગણીશે જાગ આપીયે, તે વારે ૧૫૫૦૬૮૧૦૬ ંયોજન ંપર દશ કલા અને ચાર પ્રતિકલા થાય, ંટલા સમ ચોરસ ંયોજનના ંાંમવા મહાહિમવંત પર્વતના જાણવા.

હવે હરિવર્ષકેત્ર બીજું નામ હરિવાસ કેત્ર તેનું પ્રતર કરવાનો વરતારો કહીયે ઢેયે, મહાહિમવંત પર્વતની ંત્તર પાસે જે જીવાનો વર્ગ તે લઘુ જીવાવર્ગ કહીયે, અને હરિવાસ કેત્રને ઢેહઢે નિષધ પર્વતને લગતો લાંબપણાનો જે જીવાવર્ગ તે ગુરુ જીવાવર્ગ કહીયે. ૫ બે જીવાવર્ગનો સરવાલો કરી ંકઠો મેલવીને પઢી તેનું અર્ઢ કરીયે તે વારે ૧૫૧૦૮૦૦૦૦૦૦૦૦ નો આંક આવે, તેને સમવિષમ કરી મૂલ શોધિયે તેવારે વર્ગ મૂલ ૧૨૨૫૧૪૬ લઢધરાશિનો આંક આવે, અને ૧૧૦૬૮૪ શેષ રાશિનો આંક આવે તથા ૨૪૫૮૨૫૨ ંટલો ઢેદરાશિનો આંક આવે.

હવે શેષરાશિના આંકને ચારે અપહરિયે તેવારે ૨૭૬૭૧ નો આંક આવે, તેમજ ઢેદરાશિના આંકને પણ ચારે જાગ આપીયે, તેવારે ૬૧૪૫૭૩ નો આંક આવે.

હવે મૂલની લઢધરાશિના આંકને હરિવાસકેત્રના પહોલપણાનો બાણ ૧૬૦૦૦૦ કલા રૂપ ઢે, તેની સાથે ગુણિયે તેવારે ૧૫૬૬૩૩૬૦૦૦૦ નો આંક આવે, તેને ંક બાજુ માંઢી રાઢીયે.

પઢી શેષરાશિના આંકને ચારે અપવર્તન કરતાં જે ૨૭૬૭૧ નો આંક આવ્યો ઢે, તેને હરિવર્ષ કેત્રના પહોલ પણાની ૧૬૦૦૦૦ કલા સાથે ગુણિયે, તેવારે ૪૪૨૭૩૬૦૦૦૦

नो आंक थाय. ए आंकने चारे अपवर्तना करेली ठेदराशिना जे ६१४५७३ नो आंक ठे, ते आंके जाग आपीये, तेवारे ७२०३ नो आंक आवे. शेष ५९०६८१ नो आंक वधे, तेने जाग पहुँचे नही, माटे एमज रहेवा आपीये. अने ७२०३ ना आंकने एक लाखने शाठ हजारे गुणेल्ला लब्धराशिना आंक साथे मेलवीये तेवारे १९६६६३३६७२०३ नो आंक प्रतिकलानो थाय, तेनी कला करवाने अर्थे उंगणीशनो जाग आपीये, ते वारे १०३५०७०३५३७ कला थाय, तेना योजन करवा सारु फरी बीजीवार उंगणीशो जाग आपीये तेवारे ५४४७३८७० योजननी उपर सात कला थाय. एटला हरिवास क्षेत्रनी चूमिना एक योजनीया समचतुरस्र खंमुक जाणवा.

हवे निषधपर्वतनुं प्रतर करवानुं गणित कहिये ठैये. हरिवासक्षेत्रने ठेहेडे निषधपर्वतने लगतुं जे लांबपणुं तेनी जीवानो वर्ग ते लघुजीवा वर्ग कहिये, तथा निषधपर्वतनी उत्तरनी पासे मेरुपर्वत तरफ जे निषधनुं लांबपणुं तेनी जीवानो जे वर्ग, ते गुरु जीवावर्ग जाणवो. ए बे जीवावर्गना आंकनो सरवालो करी तेनुं अर्क करीये. ते वारे २५८६०००००००००० नो आंक थाय, तेनुं वर्गमूल शोधिये तेवारे १६०८१०४ लब्ध राशि थाय, अने १५२५१०४ एटली शेषराशि रहे, तथा ३२१६२०८ एटली ठेदराशि आवे, ए त्रण राशि थइ.

हवे शेषराशिनो आंक मांकीने तेने शोलने आंके अपवर्तिये एटले जागाकार आपीये, तेवारे ९५३३४ नो आंक आवे. तेमज ते ठेदराशिना आंकने शोले अपवर्तिये तेवारे २०१०१३ नो आंक आवे.

पढी लब्धराशिनो आंक जे १६०८१०४ नो ठे, तेने निषध पर्वतना पहोलपणानी ३२०००० कलानी साथे गुणीये, तेवारे ५१४५९३२००००० नो आंक आवे, तेने एक बाजु लखी राखीये.

हवे शेषराशिने शोलना आंके अपवर्तन करेलो जे ९५३३४ नो आंक ठे, तेने निषध पर्वतना पहोलपणानी जे ३२०००० कला ठे, तेनी साथे गुणीये, तेवारे ३०५०३६८००००० नो आंक आवे, तेने शोले अपवर्तन करेली ठेदराशिनो जे २०१०१३ नो आंक ठे, ते आंके जागाकार आपीये, तेवारे १५१७४९ नो आंक आवे. शेष १५८२६३ नो आंक वधे, तेने जाग पहुँचे नही माटे परुतो मूकीये, अने त्रण लाख बीश हजारे गुणेल्ला लब्धराशिना आंकनी साथे ए १५१७४९ नो आंक मेलविये, तेवारे ५१४५९३४३१७४९ नो आंक प्रतिकलारूप थाय, तेनी कला कर

वाने अर्थे ए आंकने उंगणीशनो जागाकार आपिये, तेवारे ३९००३०६४०३० कला नी उपर सत्तर प्रतिकला थाय तेना योजन करवा सारु फरी पण उंगणीशनो जाग आपीये, तेवारे १४३५४६६५६६६ योजन उपर सत्तर कला अने सत्तर प्रतिकला थाय, एटलुं निषेध पर्वतनुं प्रतर गणित जाणवुं. एटले जूमिना एकेका योजनना सम चतुरस्र खंडूक एटला थाय ॥ इति ॥

हवे विदेहार्कनुं प्रतर गणित करी देखाकिये ठैये, निषधपर्वतनो मेरु तरफ जे ठे हेमो तेनो जे जीवावर्ग ते लघुजीवावर्ग जाणवो, अने जंबूद्रीपनी मध्यनो वचमांनो जे अर्कजाग तिहां सुधी जे बाण अथवा जीवा तेनो जे वर्ग ते गुरुजीवावर्ग जाणवो. ए बे जीवावर्गने एकठा करतां जे आंक आवे, तेनुं अर्क करीये, तेवारे ३४०५१०००००००००० नो आंक आवे तेनुं मूल शोधिये, तेवारे १०४५३१० नो आंक आवे, अने १४९००९६ एटली शेष राशि रहे, तथा ३६६०६३६ एटली ठेदराशि आवे, ए त्रण राशि थइ.

हवे शेषराशिनां आंकने चारे अपवर्त्तन करीये, तेवारे ३६६९१६ नो आंक आवे अने ठेदराशिने चारे अपवर्त्तन करीये, तेवारे ६९३६५६ नो आंक आवे.

हवे लब्धराशिनो आंक १०४५३१० नो ठे, ते आंकने विदेहार्कनुं जे बाण एटले पहोलपणुं तेनी ३३०००० कला ठे, तेणे करी गुणाकार करीये, तेवारे ५६०५०१९६००००० नो आंक आवे, तेने एक बाजुये मांकी राखीये. पढी शेषराशि ने चारे अपवर्त्तन करतां जे ३६६९१६ नो आंक आव्यो ठे, तेने विदेहार्कना पहोल पणानी ३३०००० कलानी साथे गुणीये, तेवारे ११०३१००००००००० नो आंक आवे, तेने चारे अपवर्त्तन करेली ठेदराशिनो जे ६९३६५६ नो आंक ठे, तेणे करी जागाकार आपीये तेवारे १३०३३९ नो आंक आवे अने उपर ३०४४०९ नो आंक वधे, तेने जाग पहुँचे नही, माटे तेने पडतो मूकीये, अने १३०३३९ नो जे आंक ठे ते पूर्वे अपवर्त्तन करीने विदेहार्कनी लंबाझनी कला साथे गुणेलो जे लब्धराशिनो आंक ते नी साथे मेलवीये, तेवारे ५६०५०१०००३३९ नो आंक प्रतिकलानो थाय. पढी एनी कला करवा सारु उंगणीशे जाग आपिये. तेवारे ३१०९६०४६९४० एटली कला थाय, उपर पन्नर प्रतिकला वधे, तेना योजन करवाने अर्थे फरी ए आंकने उंगणीशे जाग आपीये, तेवारे १६३५९३६३०३ योजननी उपर दश कला अने पन्नर प्रतिकला थाय. एटलुं विदेहार्कनुं प्रतर गणित जाणवुं ॥

हवे ए प्रतरना सरवालानो अवशेष कहे ठे. ए दक्षिणजरतार्क आदे देइने जे क्षेत्रो

तथा पर्वतो तेना प्रतरनुं गणवुं, एटला चोसला योजनना गणितपदनुं करवुं ते व्य
वहार मार्गे देखाड्युं, तेमज मेरुथकी उत्तरदिशिये जे ऐरवत क्षेत्र आदे देइने क्षेत्रो
तथा पर्वतो ठे तेनो पण उत्तरविदेहार्ऊ पर्यंत एज रीते वरतारो वर्त्तवो, पढी सर्वनो
सरवालो एकठो मेलववो अथवा जंबूद्वीपना विदेहार्ऊ पर्यंत अर्ऊजागना चोसला यो
जनीयां खंरु जेनुं गणित उपर करी आव्या छैये, तेने एकठा करी सरवालो बांधीने
पढी बमणा करीये, तेवारे "सगसयनउय" ए गाथामां कहेली संख्या जेटलां प्रतर
थाय. ए प्रतर करवाना यंत्रनी स्थापना नीचे करीये छैये.

| प्रतरकरणं. | उत्तरचरतार्ऊस्य १ | हिमवजिरेः २ | हिमवंतक्षेत्रस्य ३ |
|------------------------|-------------------------|------------------------|----------------------|
| लघुजीवावर्गकला. | ४१४९००९७५०० | ७५६०००००००० | ३३४४०००००००० |
| गुरुजीवा वर्ग कला. | ७५६००००००००० | ३३४४०००००००० | ५१३४०००००००० |
| उच्चयमीलनेकला. | ११७०९००९७५०० | ३००००००००००० | ७३६०००००००० |
| तद्दलीकरणेकला. | ५०५४५०४०७५० | १५०००००००००० | ३६०४०००००००० |
| वर्गमूललब्धकला. | ३४१९६० | ३०७३९० | ६०६९५९ |
| शेषराशिः ॥ | ४०७१५० | ३५९१९६ | ७७३३१९ |
| ढेदराशिः ॥ | ४०३९७० | ७७४५९६ | १३१३९१० |
| अपवर्त्तनांक १० | शून्येनापवर्त्तना. | ४ | ० |
| कृतेऽपवर्त्तनेशेषराशिः | ४०७१५ | ६४७९९ | ० |
| कृतेऽपवर्त्तनेढेदराशिः | ४०३९७ | १९३६४९ | ० |
| पृथुत्वकलाः ॥ | ४५३५ | ३०४०० | ००००० |
| तद्गुणोलब्धराशिः | १०९४०६९००० | ७७४५९६०००० | ३४३७०३६०००० |
| पृथुत्वेनशेषांशगुणाः | १०४३३५३७५ | १३९५९००००० | ३००९३७६०००० |
| ढेदजागेनलब्धकला. | ३००७शेष७०३१ | ६६९३शेष०००९३ | ३५४४०शेष७५७३६ |
| तासांबृहद्भाशिक्षेत्र. | १०९४०७३०७ | ७७४५९६६६९३ | ३४३७०३६५४४० |
| एकदा १९ जागकला॥ | ५७६३४००४३०११ | ४०७६०४४५७३०९ | १३७७०९७६०३०३ |
| पुनः १९ जागेयो ॥ | ३०३३००० क०१३— प्र०११ | ३१४५६९३१क००— प्र०१० | ६७३५३१४५क०५ प्र०० |

| महाहिमवजिरेः ४ | हरिवर्षक्षेत्रस्य ५ | निषधगिरेः ६ | विदेहार्कस्य ७ |
|----------------|---------------------|-----------------|-----------------|
| ५१२४०००००००० | १०५०००००००००० | १९७१६०००००००० | ३२००४०००००००० |
| १०५०००००००००० | १९७१६०००००००० | ३२००४०००००००० | ३६१०००००००००० |
| १५६२४००००००००० | ३०२१७००००००००० | ५१७२०००००००००० | ६८१०४००००००००० |
| ७८१२०००००००००० | १५१०८००००००००० | २५८६०००००००००० | ३४०५२००००००००० |
| ८८३८५५ | १२२९१४६ | १६०८१०४ | १८४५३१८ |
| ३३८९७५ | ११०६८४ | १५२५१८४ | १४७८८७६ |
| १७६७७१० | २४५८२९२ | ३२१६२०८ | ३६९०६२६ |
| ३५ | ४ | १६ | ४ |
| ९६८५ | २७६७१ | ९५३२४ | ३६९७१९ |
| ५०५०६ | ६१४५७३ | २०१०१३ | ९२२६५९ |
| ८०००० | १६०००० | ३२०००० | ३२०००० |
| ७०७०८४०००००० | १९६६६३३६०००० | ५१४५९३२७०००० | ५९०५०१७६०००० |
| ७७४८०००००० | ४४२७३६०००० | ३०५०३६८०००० | ११८३१००८०००० |
| १५३४०शेष३७९६० | ७२०३शेष.५९०६८१ | १५१७४९शेष१५८२६३ | १२८२२७शेष७८४४०७ |
| ७०७०८४१५३४० | १९६६६३३६७२०३ | ५१४५९३२७३१७४९ | ५९०५०१८८८२२७ |
| ३७२१४९५५४४४०४ | १०३५०७०३५३७ | २७०८३८६४८२८४१७ | ३१०७९०४६७४४८४१५ |
| १९५८६८१८६क०१० | ५४४७७३८७०क०७ | १४२५४६६५६एक१७ | १६३५७३९३०शक०१० |
| प्र०४ | | प्र०१७ | प्र०१५ |

हवे घनगणित गणवानी रीत कहे बे.

पूर्वे जे प्रतरगणित कहुं ते प्रतरनुं गणित चूमिकानुं गणाय बे, तेहीज प्रतर गणितनो आंक मांकीने पर्वतोनुं घन गणित करीये; केम के, पर्वतनी चूमिकाना त द्वियां प्रतर गणित जेटलां होय, माटे तेटलो आंक मांकीने ऊंचपणाना आंके गुणी ये, तेवारे तेनुं घनगणित थाय. ए संक्षेपथी कहुं.

विशेषार्थ तो आम बे, के वैताढ्यने तलीये चूमिकानुं प्रतर ५१२३०७ योजन उपर वार कला एंटलुं बे. पहेली मेखला पर्यंत पचास योजन पहोलुं अने दश योजन ऊंचुं बे, माटे ए प्रतरना गणित पदनो आंक तेने दशे गुणाकार करीये, तेवारे ५१२३०७६ योजन उपर ठ कला एंटलुं चूमिकाथी मांकीने पहेली मेखला सुधी घनगणित होय.

हवे पहेली मेखलाये पर्वत सांकडो बे. केम के, पचास योजन वैताढ्यनी लंबाइमांथी

दश योजन एक पासे मूक्या, अने दश योजन बीजे पासे मूक्या, तेवारे त्रीश योजन वैताढ्य पहोला ठे, माटे पहेली मेखलाये पर्वतनुं तद्विधुं त्रीश योजन ठे, तिहां प्रतर (३०९३०४) योजन उपर अगीयार कला ठे, अने तिहांथी दश योजन ऊंचा चक्रिये तिहां सुधी ए पर्वत बेहु पासे सरखो त्रीश योजन पहोलो ठे, माटे प्रतरना आंकने दश योजननी ऊंचाइ साथे गुणीये, तेवारे (३०९३०४५) योजन उपर पन्नर कला एटलुं पहेली मेखलाये घनगणित जाणवुं.

वली बीजी मेखलाये ए पर्वतना दश योजन उत्तरनी पासे मूकीये, अने दश योजन दक्षिणनी पासे मूकीये, तेवारे वैताढ्य पर्वत दश योजन पहोलो ठे, अने बने पासे मथाला पर्यंत पांच योजन ऊंचो ठे, तेमाटे तिहां दश योजन पहोलो ठे, तेना प्रतर गणितनो आंक १०२४६१ उपर दश कलानो ठे, तेने ऊंचपणाना पांच योजन साथे गुणीये, तेवारे ५१२३०९ योजन उपर बार कला एटलुं बीजी मेखलाये घनगणित थाय.

हवे समस्त वैताढ्य पर्वतनुं घन गणित कहीये ठैयें. वैताढ्यनुं प्रतर गणित १५२१५३ योजन उपर चौद कला ठे, ए आंकने वैताढ्यनी पच्चीश योजननी ऊंचाइ ठे, परंतु तेमां जुदी जुदी त्रण राशिने जुदा जुदा ऊंचाइना योजन साथे त्रण प्रकारनो पूर्वोक्त रीते गुणाकार करीये, तेवारे सर्व मली ८९०९२२९ योजन उपर चौद कला थाय.

हवे हिमवंतपर्वतनुं घन गणित कहे ठे. हिमवंतने तलीये २१४५६९१ योजन आठ कला अने दश प्रतिकला एटलुं प्रतरगणित ठे, तेने हिमवंत पर्वतनी एकशो योजननी ऊंचाइ ठे, तेनी साथे गुणतां (२१४५६९१४४) योजननी उपर शोल कला अने बार प्रतिकला एटलो आंक घनगणितनो थाय.

महा हिमवंत पर्वतनुं घनगणित कहे ठे, एने तलीये प्रतर गणित १९५०६०१०६ योजन दश कला अने पांच प्रतिकला ठे, ए पर्वत बेहु पासे सरखो बशे योजन ऊंचो ठे, माटे प्रतर गणितना आंकने बशे गुणो करतां ३९१९३६३९३०८ योजन उपर बार प्रतिकला एटलुं घनगणित थाय एटले योजनना चोसला खंडुक थाय.

निषध पर्वतनुं घनगणित कहे ठे. निषध पर्वतने तले १४२५४६६५६९ योजन उपर अठार कला एटलुं प्रतर गणित ठे, तेने ए पर्वतनी चारशे योजननी ऊंचाइ साथे गुणीये, तेवारे (५९०१०६६२९९९०) योजन उपर अठार कला घनगणितनी थाय.

जे मनुष्य पूर्वोक्त गणित प्रमुख करवाने आलसु होय ते मनुष्यने वास्ते यंत्रोनी स्थापनाउं करेली ठे, तेना उपरथी जोइ लेवुं, अने जे मनुष्य माहा निपुणबुद्धिवाला उद्यमवंत हशे, ते तो पोतेज गणित करी वर्तारो करी लेशे.

घनगणितनां यंत्रनी स्थापना.

| घनगणित | क. प्रति | उच्च | उच्चपणा सायें |
|-------------------|------------------|------------------|----------------|
| कला. | १०३५४०५ १२ ६ | प्रतर प्रमाणम्. | गुणवुं. |
| वैताढ्यजूमौ. | ५१२३०७ १२ ० | ५१२३०७कला१२ | ५१२३०७६ ६ |
| वैताढ्य प्र. मे. | ३०३२०० १२ ११ | ३०३२०४ १११ | ३०३२०४५१५ |
| वैताढ्य द्वि. मे. | २१४५६९७१ ० १० | २०२४६१ १२० | ५१२३०७१२ |
| सकल वैता० | ६७२५३१४५ ५ ० | ९२२५३ १२४ श्रीशु | ०७०९२२५१४ |
| हिमवति. | १९५०६०१०६ १० ५ | २१४५६९७१०१० १०० | २१४५६९७१४१६१२ |
| महाहिमवति | ५४४७७३०७० ७ ५ | १९५०६०१०६१०५ २०० | ३९१७३६३७३००७१२ |
| निषधे. | १४२५४६६५६९ १७ १७ | १४२५४६६५६९१० ४०० | ५७०१०६६२७९७ |
| विदेहार्क. | १६३५७३९३०२ १० १ | | |

एवं ३०९५९३०७२० योजनानि ॥

३०९५९३०७२० मेरोरुत्तरतः ॥

७७९१०७७४५६ सर्वप्रतराणामेकादयोरपि पार्श्वयोरयमंकः ॥

द्वितीयप्रकारे ११३०१६६९५ । क्रो. २ ध० ४०५ अं. ३६ न्यूनं जवति ।

पूर्वोक्त गणितपदमिदं ७९०५६९४१५० । क्रो. १^३ ह. ६२^३

शुकुप्रमुख सर्वना सिद्ध थयेला आंकनो यंत्र.

| सिद्धांकाः । | इषवः | जीवाः । | धनुःपृष्ठानि. | बाहवः । |
|----------------|---------|-------------------------------------|--|-------------------------------------|
| दक्षिणचरतार्क. | २३०३ | ९७४०१२ | ९७६६ क. १ | ० |
| वैताढ्ये. | २००३ | १०७२०११ | १०७४३१५ | ४००१६ ^१ / _२ |
| संपूर्णचरते. | ५२६६ | १४४७१५ | १४५२०११ | १०९१० ^१ / _२ |
| हिमवति. | १५७०१० | २४९३१ ^१ / _२ | २५२३०४ | ५३५०१५ ^१ / _२ |
| हैमवति. | ३६०४४ | ३७६७४१५ | ३०७४०१० | ६७५५३ |
| महाहिमवति. | ७०९४१४ | ५३९३१६ | ५७२९३१० | ९२७६९ ^१ / _२ |
| हरिवर्षे. | १६३१५१५ | ७३९०११२ ^१ / _२ | ०४०१६४ | १३३६१६ ^१ / _२ |
| निषधे. | ३३१५७१७ | ९४१५६१ | १२४३४६९ | २०१६५३ ^१ / _२ |
| विदेहार्क. | ५०००० | १०००००. | यो. १५०१११ ^१ / _२ | १६००३१३ ^१ / _२ |

| प्रतरगणितानि. | क. प्र. | घनगणितानि वैताढ्य श्रूमौ. |
|-----------------------|---------------|---------------------------|
| १८३५४८५ | १३६॥ | ५१२३०७६६ |
| ५० वि० ५१२३०७१११० वि० | १०२४ | ३०७३०४५११५ |
| ३० वि० | ३०७३०४॥११६११० | ५१२३०७११२ |
| | ३०३२०८०११११ | सकलवैताढ्यग. ८७००२२८ क १४ |
| | २१४५६९२१०१० | २१४५६९२१४१६१ प्रतिकला. १२ |
| | ६७२५३१४५११० | ० |
| | १९५८६८१८६१०५ | |
| | ५४४७७३०७०७७ | ३९१७३६३७३००० प्रतिकला १२ |
| १४२५४६६५६९१७१७ | | ५७०१८६६२७९७ |
| १६३५७३९३०२१०१ | | ० |

इति अष्टप्रकारगणितं समाप्तं ॥

हवे ए जीवाप्रमुख गणितनी संग्रह गाथा कहे ठे ॥ योजण सहस्त नवगं, सत्ते वसया हवंति अक्याला ॥ बारसय कला सकला, दाहिण जरहुरू जीवाठ ॥ १ ॥ दसचेव सहस्ता इं, जीवा सत्तय सयाइ वीसाइं ॥ बारसय कला ऊणा, वेयहू गिरिस्त विज्ञेया ॥ २ ॥ चउदसय सहस्ताइं, सयाइं चत्तारि एग सयराइं ॥ जरहूत्तर जीवा, उच्चकला ऊषिया किंचि ॥ ३ ॥ चउवीस सहस्ताइं, नवयसए जोयणाण वत्तीसे ॥ चुद्धहिमवंत जीवा, आयामेणं कलऊं च ॥ ४ ॥ सत्तत्तीस सहस्ता, उच्चसया जोयणाण चउ सयरा ॥ हेमवयवासजीवा, किंचूणा सोलस कला य ॥ ५ ॥ तेवन्न सहस्ताइं, नवयसया जोयणाण इगतीसा ॥ जीवाय महाहिमवे, अरूकला चकलाठं य ॥ ६ ॥ एगुत्तरा नवसया, तेवत्तरिमेव जोयण सहस्ता ॥ जीवा सत्तरस कला, अरूकला चेव हरिवासे ॥ ७ ॥ चउषवइ सहस्ताइं, उप्पन्नहियं सयंकला दोय ॥ जीवा निसहस्सेसे, लखं जीवा वि देहरे ॥ ८ ॥ ॥ इति जीवासंग्रहगाथा ॥ नवचेव सहस्ताइं, ठावठाइं सयाइं सत्तेव ॥ सविसेस कलाचेगा, दाहिणजरहुरू धणुपिठं ॥ ९ ॥ दसचेव सहस्ताइं, सत्तेव सया हवंति तेयाला ॥ धणुपिठं वेयहे, कलाय पन्नरस हवंति ॥ १० ॥ सोलस चेव कला ठं, अहियाठं हुंति अरूजागेणं ॥ बाहावेयहूसउ, अठासीया तहा चउरो ॥ ११ ॥ चउदस य सहस्ताइं, पंचेव सयाइं अठावीसाइं ॥ इकारसय कलाठं, धणुपिठं उत्तररू स्सं ॥ १२ ॥ जरहूत्तर बाहा, अठारस हुंति जोयण सयाइं ॥ बाणउय जोयणाणिय, अरूकला सत्तय कलाठं ॥ १३ ॥ धणु हिमवेकल चउरो, पणवीस सहस्त डुसय तीस

हिया ॥ बाहा सोलस कला, तेवन्न सयाय पन्नहिया ॥ १४ ॥ अरुतीस सहस्स स
 गसय, चत्ताधणुदस कलाय हिमवण ॥ बाहा सत्तठिसण, पणपन्नेतिन्निय कलाउं ॥१५॥
 धणु महहिमवे दसकल, दोसय तेणउ सहस्स सगवन्ना ॥ बाहा बाणउयसण, बहत्तरे
 नवकलउं च ॥१६॥ चुलसी सहसासोलस, धणुहरिवासे कला चउकं च ॥ बाहा तेरस
 हस्सा, तिसयइगसठा ठकल सहा ॥ १७ ॥ निसह धणुनवकलाउरकु, सहसचउवीस
 तिसय ठायाला ॥ बाहा पन्नठिसयं, सहस्स वीस्सं डुकलअरुं ॥१८॥ सोलस सहस्स
 अडसय, तेसीयासदुतेरस कला य ॥ बाहा विदेहमझे, धनुपिठुं परियरस्सउं ॥ १९ ॥
 ॥ इति धनुःपृष्ठबाहासंग्रहगाथा ॥ लरकठारसण, ससहस्सा चउस्सया य पणसीया ॥
 बार कल ठेविकला, दाहिण जरहउपयरंतु ॥ २० ॥ सत्तहियातिन्निसया, बार सयस
 हस्स पंच लरका य ॥ बारसय कला पयरं, वेयदुगिरिस्स धरणितले ॥२१॥ जोयण ती
 सं वासे, पढमाए मेहलाइ पयरमिमं ॥ लरकतिगतिसयरिसया, चुलसी इकार सक
 लाउं ॥ २२ ॥ दस जोयण विरुंजे, बीयाइं मेहलयपरमिमं ॥ लरकोचउवीस सया,
 इगसठा दस कलाउंय ॥ २३ ॥ अरुसीया अठसया, वत्तीस सहस्स तीस लरका य ॥
 कलवार विकलिगारस्स, उत्तर जरहउ पयरमिमं ॥ २४ ॥ दोकोडि चउद लरका, सह
 सा ठप्पन्न नवसइग सयरा ॥ अठकला, दसविकला, पयरमिमं चुल्लहिमवंते ॥२५॥ हे
 मवण ठकोडी, वावत्तरि लरक सहस तेवन्ना ॥ पणयालसयं पयरो, पंचकला अठविकला य
 ॥ २६ ॥ गुणवीसकोडि अडव, न्न लरक अरुसठि सहस सयमेयं ॥ चुलसीयंदससय कला,
 पणविकला पयरुमहहिमवे ॥ २७ ॥ चउवन्नं कोडीउं, लरकासीयालतिसयरि सह
 स्सा ॥ अठसय सतरिसत्तय, कलाउ पयर तु हरिवासे ॥२८॥ बायालं कोडिसयं, लरका
 चउपन्न सहस ठासठी ॥ पणसयगुणत्तरकल, अठारस्स निसहपयरमिमं ॥ २९ ॥ ते
 सठिं कोमिसयं, लरक सगवन्न सहस गुणयाला ॥ तिसय डुडुत्तर दसकल, पन्नरसकला
 विदेहउं ॥३०॥ इतिप्रतरप्रमाणसंग्रहगाथा ॥ दस जोयणुसण पुण, तेवीस सहस्सलरक
 इगवन्ना ॥ जोयण ठावत्तरि ठ, कलाय वेयदु घणगणियं ॥ ३१ ॥ अठसया पणयाला,
 तीसं लरकातिहत्तरि सहस्सा ॥ पनरस कलायघणो, दसस्सुए होइ बीयम्मि ॥ ३२ ॥
 सत्तहिया तिन्निसया, बारसय सहस्सा पंच लरकाया ॥ अवराय बारसकला, पणुस्स
 ए होइ घणगणियं ॥ ३३ ॥ सत्तासीई लरका, उणवीसहियाय बिणवइ सयाइं ॥ अउ
 णावीसयन्नागा, चउदस वेयदु घणगणियं ॥३४॥ हिमवंति डुसय चउदस, कोनी ठप्प
 न्न लरक सग नउई ॥ सहसा चउयाल सयं, सोलस कलवार विकलघणं ॥ ३५ ॥ गुणया
 ल सयासत्तर, कोनी ठत्तीस लरक सगतीसा ॥ सहसातिसय अरुत्तर, बारविकलघण

महाहिमवे ॥३६॥ उगवन्नसहस्र अष्टार,कोफि ठासठि लस्क गुणतीसं॥सहसानव सयएगु,
एसीइनिसहस्स घणगणियं ॥३७॥ इति घनगणितसंग्रहगाथा ॥ इति जंबूद्विपाधिकारः॥

हवे लवणसमुद्रनो अधिकार कहे ठे.

जेम गाय पाणी पीवाने तलावमां प्रवेश करे, तेवारे तेनी पाठली बाजु उंची होय, अने आगली बाजु नीची होय तेने गोतीर्थ कहीये, तेम लवण समुद्रमांहे पण एक जंबूद्रीपनी जगतीथकी अने बीजो पहेली तरफथी लवणसमुद्रनी जगती थकी एम वे पासाथी नीकलीने वचमां पंचाणुं पंचाणुं हजार योजन सुधी पाठली चूमि उंची अने आगलीचूमि नीची ठे, जगतीथकी लवणसमुद्रनी दिग्माल तरफ जातां थोडी थोडी जलवृद्धि थतां ज्यां पंचाणुं हजार योजन थाय ठे, त्यां समचूतलथकी सातशे योजन पाणीनी उंची वृद्धि ठे, अने एक हजार योजन पाणी उंडुं ठे.

नीचे तथा उपर दश हजार योजन पहोली अने मूलथकी सत्तर हजार योजन उंची, एवी लवणसमुद्रनी मध्यमां पाणीनी शिखा ठे, तेनी उपर बे गाळ उंची पाणी नी वेळ ठे ते एक अहोरात्रमां बे वखत वधे ठे.

लवणसमुद्रने विषे वचमां पाणीनी मेखलाये चार दिशिने विषे वज्रमय चार पाताल कलशा ठे, ते कलशानी एक हजार योजन ठीकरी जाकी ठे. तथा नीचे अने उपर दश हजार योजन पहोला ठे, अने वचमां एक लाख योजननुं पेट पहोळुं ठे तथा ते कलशा एक लाख योजन चूमिमांहे उंका ठे. ते चारे पूर्वदिशिथी दक्षिणावर्त्त गणतां एक व डवामुख, बीजो केथूप, त्रीजो थूप, चोथो ईश्वर, ए चार नामे चार कलशा जाणवा.

हवे जंबूद्रीपथकी पंचाणुं हजार योजन जातां लवणसमुद्रना दश हजार योजन विस्तारवाली पाणीनी शिखा आवे, तिहां बे लाख, नेवुं हजार योजन विष्कंज ठे. तेनो वर्ग करी ते वर्गने दशे गुणतां जे राशि आवे. तेनुं मूल शोधिये. तेवारे (११७०६०) योजन मध्यपरिधि थाय. तेमांथी चार दिशाना चार कलशे चालीश हजार योजन रुंध्या ठे, ते बाद करतां बाकी (८७७०६०) योजन रहे, तेने चारे जागे वहेचतां ११७१६५ योजन थाय, एटळुं एकेकी दिशिना महोटा कलशनुं मांहोमांहे अंतर थाय, ते अंतरना योजनमांहे वली एकेकी दिशाये नव नव श्रेणी न्हाना पाताल कलशोनी ठे, तेणे (११५०००) योजन रुंध्या ठे, अने (४१६५) योजन ते कलशानी ठीकरीने जारुपणे रुंध्या ठे. तिहां प्रथम श्रेणिमां ११५ बीजीमां ११६ त्रीजोमां ११७ एम कके को कलश वधारतां यावत् नवमी श्रेणिमां (११३) कलशा ठे, तेनव श्रेणिनो सरवालो करतां (११७१) कलशा एक दिशिना अंतरने विषे ठे, तेवी चार दिशिना कलश मेल

वीथें, तेवारे (७००४) कलश थाय. ते प्रत्येकनी ठीकरी दश योजन जाडी ठे, अने एक शो योजन प्रमाण नीचे तथा उपर पहोला ठे, अने एक हजार योजन जूमिमांहे उंचा ठे. तेदवाज मध्यमां पेते पहोला ठे. एवा न्हाना कलश ते जे स्थानके महोटा कलशे जूमि रुंधी नथी तेवा जलमेखलाना प्रदेशे ठामे ठामे ए कलशा ठे.

महोटा चार पाताल कलशाना अनुक्रमे पूर्वदिशिथी दक्षिणावर्त्तं लेतां एक काल, बीजो महाकाल, त्रीजो वेळंब, अने चोथो प्रजंजन, ए चार नामे चार अधिष्ठायिक देवता ठे. तेनुं एक पढ्योपमायु ठे. अने बीजा न्हाना कलशाना अधिष्ठायिक देवोनुं अर्कपढ्योपमायु ठे.

महोटा पातालकलशाने अधोजागे वायु ठे, अने वचला जागमां वायु तथा पाणी बेहु ठे अने उपरला जागमां एकहुं पाणीज ठे. ते वायु एक अहोरात्रमां पाणीने बे वखत होज पमाडे ठे, तेथी पाणीना वेलनी वृद्धि थाय ठे, जेवारे पाणीना जोरथी कलशा उचराय ठे, तेवारे समुद्रनुं पाणी वधे ठे, एवो सहेजथी चाल ठे.

बहेंतालीश हजार नागकुमार देवता ते मांहे पेसती पाणीनी वेलने धरी राखे ठे, वली शाठ हजार नागकुमार देवता तो उपरनी बे कोशथी उपरांत जे वेल वधे ठे, तेने वारी राखे ठे. तथा बहोंतेर हजार नागकुमार देवता ते बाहिरली धातकीखंड मां प्रवेश करती वेलने निवारण करे ठे. ए रीते (१७४०००) नागकुमार देवो पाणी नी वेलने धरी राखे ठे, माटे ए वेळंधर देवो कहेवाय ठे.

जंबूछीपनी जगतीथकी पूर्वादि चारे दिशाये (४२०००) योजन लवणसमुद्रमांहे जा ता अनुक्रमे पूर्वदिशिये गोशुचनामे आवास पर्वत ठे, दक्षिणे दिग्जास नामे आवास पर्वत ठे, पश्चिमे शंख नामे आवास पर्वत ठे, अने उत्तरे दिक्सीम नामे आवास पर्वत ठे. ए चारे दिशिना पर्वतोने विषे अनुक्रमे एक गोशुच, बीजो शिवदेव, त्रीजो शंख अने चोथो मणोसिल, ए नामे वेळंधर देवताना राजा एवा नागकुमार देवो रहे ठे. जे दि शियोने विषे रहे ठे, तेने वेळंधर कहीये अने विदिशियोने विषे रहे तेने अनुवेळंधर कहीये.

ईशान प्रमुख चार विदिशिने विषे कर्कोटक, विद्युत्प्रज, कैलास अने अरुणप्रज, एवे नामे चार आवास पर्वत ठे तेने विषे अनुक्रमे कर्कोटक, कर्दम, कैलास अने विद्युत्प्रज एवे नामे चार वेळंधर देवोना राजा नागकुमार देवता रहे ठे.

ए वेळंधर अने अनुवेळंधर नामे जे आवास पर्वतो ठे ते (१०२२) योजन मूलने विषे पहोला ठे, अने (४२४) योजन शिखरने विषे पहोला ठे, तथा (१७२१) योजन उंचा ठे, ते आठे पर्वत सर्व वेदिका अने वनखंरु तेणे करी सहित ठे, तथा पूर्वदिशिथी अनु

क्रमे सुवर्ण, अंकरल, रूपुं, अने स्फाटिकरत्नना गोथूजादिक चार पर्वत ठे, अने वि दिशिने विषे जे चार पर्वत ठे ते रत्नमय जाणवा.

ए आठ पर्वत जंबूढीपनी दिशा तरफ ए६ए योजननी उपर एक योजनना पचाणुं जाग करीये, तेवा चालीश जाग अधिक एटला पाणीनी उपर देखाय ठे, अने मांहे ली लवण समुद्रनी शिखानी दिशिशी जोतां ए६३ योजननी उपर एकयोजनना पंचाणुं जाग करीये, तेवा (७७) जाग जेटला पाणीनी उपर देखाय ठे.

लवणसमुद्र मध्ये पंचाणुं हजार योजने जतां सातशे योजननी जलवृद्धि ठे. तो बहेतालीश हजार योजन जश्ये, त्यां वेळंधर पर्वत ठे, ते स्थानके केटली जलवृद्धि होय? ते जाणवानी रीति बतावे ठे. आहींयां प्रथम श्रेणि पंचाणुं हजारनी, बीजी सातशेनी, अने त्रीजी श्रेणी बहेतालीश हजारनी, एवी आंकनी त्रण श्रेणि मांकीये, ए त्रण आंकनी राशि मांड्या पठी ते राशि "एणमज्जिह्व ए" गाथाना विधिये ग णीये, ते आवी रीते के वचमांनी जे सातशेनी श्रेणि तेने ठेकी बहेतालीश हजारनी श्रेणीये गुणीये, तेवारे बे क्रोरु ने चोराणुं लाख थाय. पठी पहेली श्रेणी जे पंचाणुं हजारनी ठे, तेनी साथे जाग वेहेंचीये, तेवारे त्रणशे ने नव योजन उपर एक योज नना पंचाणुं जाग करीये, तेवा पीस्तालीश जाग आवे, ए रीते संचूतले जंबूढीपे जो तां बहेतालीश हजार योजने एटली जलवृद्धि होय.

अने पंचाणुं हजार योजने एक हजार योजन लवण समुद्र उंडो ठे, तो बहेताली श हजार योजने केटलो उंमो ठे? तेनुं गणित आवी रीते करवुं, के बहेतालीश हजार योजनने हजारने आंके गुणीये, तेवारे चारकोनीने वीश लाख थाय. तेने पंचाणुं ह जार जागे वेहेंचीये, तेवारे चारशे ने बहेतालीश योजन उपर एक योजनना पंचाणुं जाग करीये, तेवा दश जाग आवे. एटलो समुद्र उंडो ठे, पठी जलवृद्धि तथा उंरुपणुं ए बे एकठां करीये तेवारे सातशे ने एकावन योजन उपर एक योजनना पंचाणुं जाग करीये, तेवा पंचावन जाग थाय, ते सतरशे ने एकवीश योजन वेळंधर पर्वतनुं उंचप णुं ठे, तेमांहेथी बाद करीये तेवारे नवशे उंगणोतेर योजन, अने उपर पंचाणुआ चा लीश जाग रहे. एटलो जंबूढीपथी जतां वेळंधर पर्वत पाणीथी उंचो ठे.

हवे त्यां पर्वतनो विस्तार केटलो ठे? ते आणवानो विधि कहे ठे. जलवृद्धि अने उंरुपणुं ए बे सातशे एकावन योजन उपर पंचाणुआ पंचावन जाग ठे, ते सर्वना पं चाणुआ जाग करीये, तेवारे एकोतेर हजारने चारशे जाग थाय, पठी "विठारडुगविसे सो" ए करण गाथाये करतां पर्वतनो मूल विस्तार एक हजार ने बाबीश योजन ठे,

अने शिखर विस्तार चारशे ने चोवीश योजन ठे, ते अधिका मांहेथी उंहुं काढतां बाकी पांचशे ने अछाणुं रहे, ते पर्वतनुं सत्तरशे ने एकवीश योजन उंचपणुं ठे, तेनी साथे जाग वेहेचतां जाग पहोचे नही, ते माटे एकोतेर हजार ने चारशे एटली जल वृद्धि, तथा उंरुपणानां पंचाणुआ जाग ठे, तेने पांचशे ने अछाणुं साथे गुणीये, तेवारे चार क्रोरु ठवीश लाख सत्ताणुं हजार ने बशे थाय, तेने पर्वतना उंचपणाना सत्तरशे ने एकवीश योजन साथे जाग वेहेचीये, तेवारे चोवीश हजार आठशे ने नव आवे, शेष नवशे ने अगीयार वधे. ते माटे ते चोवीश हजार आठशे ने नव जे ठे, तेमांहे एक जे लीये. पढी पंचाणुं जागे वेहेचीये, तेवारे बशे ने एकशठ योजन उपर पंचाणुआ पंदर जाग आवे. हवे पर्वतनो मूल विस्तार एक हजार ने बावीश योजन ठे. तेमांहेथी जेवारे ए बशे एकशठ योजन, अने पंचाणुआ पन्नर जाग काढीये, तेवारे सातशे ने साठ योजन उपर पंचाणुआ एंशी जाग रहे, एटलो पर्वतनो विस्तार जाणवो.

हवे मांहेली दिशिये जलनी वृद्धि आणवाने अर्थे ए पर्वतना विस्तारनो आंक जे सातशे शाठ योजन उपर पंचाणुआ एंशी जाग ठे, तेने पंचाणुये गुणीये, तेवारे बहोतेर हजार बशे ने एंशी एटला पंचाणुआ जाग थाय. पढी एक पंचाणुं हजारनी बीजी सातशेनी, अने त्रीजी बहोतेर हजार बशे ने एंशीनी, एवा आंकनी त्रण राशि मांफिये तेमां वचेंनी जे सातशेनी श्रेणी ठे, तेनी साथे जेवारे ठेहली श्रेणी गुणीये, तेवारे पांच क्रोड पांच लाख ने ठहुं हजार एटला प्रतिजंग थाय. पढी जे पहेली राशि पंचाशी हजारनी ठे, तेना प्रतिजंग करवा माटे तेने पंचाणुये गुणीये, तेवारे नेवुं लाख ने पचीश हजार थाय. एटला प्रतिजंगे उपरना प्रतिजंगनी राशी वेहेचीये, तेवारे योजन पांच आवे, शेष पांच हजार चारशे ने एकोतेर वधे. तेने पंचाणुं जागे वेहेचतां सत्तावन कला आवे, शेष ठप्पन उगरे, ते माटे एक जेलीये तेवारे कला अछावन थाय, एटले पांच योजन उपर अछावन कला एटली मांहेली दिशिये जलवृद्धि ठे, ते जलथकी पर्वतनुं उंचपणुं नवशे उंगणोतेर योजनने उपर पंचाणुआ चालीश जाग ठे, तेमांहेथी पांच योजन ने अछावन जाग वाद करीये, तेवारे नवशे त्रेशठ योजन उपर पंचाणुआ सत्योतेर जाग होय. एटला लवण समुद्रनी शिखादिशिथी जोतां वेळंधर पर्वत उंचा ठे. तथा ए आठ पर्वतना मूलने विषे त्रण हजार बशे ने बत्रीश योजननो परिधि ठे, अने शिखरने विषे तेरशेने चौद योजननो परिधि ठे, हवे मांहोमांहेते पर्वतनो आंतरो आणवानो विधि कहेठे.

जंबू छीपनी जगतीथकी बहेतालीश हजार पांचशे ने अगीयार योजन लवण समुद्रमांहे गया पढी पर्वतना विष्कंजनुं मध्य ठे, त्यां समुद्रनुं वृत्तविष्कंज एक लाख पं

चाशी हजार ने बावीश योजन ठे, तेनो परिधि पांच लाख पंचाशी हजार ने एकाणुं योजन थाय, ते मांहेथी आठ वेळंधरनो विष्कंज आठ हजार एकसो ने बहोंतेर योजन बाद करिये, तेवारे पांच लाख बहोंतेर हजार नवशे ने पन्नर योजन बाकी रहे; तेने आठ जागे वेहेचीये, तेवारे बहोंतेर हजार एकशो ने चउद योजन उपर एक योजनना तेर जाग करिये, तेवा आठ जाग एटळुं प्रत्येक वेळंधर पर्वतने वचे अंतर जाणवुं ॥११॥

हवे ठप्पन्न अंतरद्रीपनी विवक्षा करे ठे.

हेमवंत पर्वतना बन्ने ठेमाने विषे समुद्रमांहे बे बे दाढा विदिशिने विषे नीकळी ठे; ते प्रत्येक दाढाने विषे सात सात अंतरद्रीप ठे, ते अंतरद्रीपमांहे पहेळां चार अंतरद्रीप जगतीथकी त्रणशे योजन दूर ठे, तो तेनो विस्तार पण एकेक अंतरद्रीप नो त्रणशे योजन प्रमाणे जाणवो. बीजुं चतुष्क जगतीथकी चारशे योजन दूर ठे, तो तेनो विस्तार पण चारशे योजन ठे, एम सर्वने विषे एकशो योजननी वृद्धि करतां सातमुं अंतरद्रीपनुं चतुष्क जगतीथकी नवशे योजन दूर ठे, ते एकेकानो विस्तार पण नवशे योजन प्रमाण ठे. ते यंत्रथी जाणवो.

हवे ए अंतरद्रीप, पाणी उपर केटला उंचा ठे ? ते कहे ठे.

अंतरद्रीपनुं पहेळुं चतुष्क ते बाहेर जंबूद्रीपनी दिशाये अढी योजन उपर पंचाणुं आ वीश जाग एटळुं पाणीथी उपर उंचुं जाणवुं, बीजा अंतरद्रीपोनां ठ चतुष्क अढी योजन उपर पंचाणुआ नेवुं जाग पाणीथी उंचा जाणवा, अने लवणसमुद्रनी शिखानी दिशिये बे कोश प्रमाण सर्वद्रीपनो प्रकाश जाणवो. ते यंत्रमांहे लख्यो ठे ॥ ११३ ॥

हवे अंतरद्रीपनां नाम कहे ठे.

सर्व अंतरद्रीप, वेदिका अने वनखंडे करी मंजित जाणवा. अंतरद्रीपना पहेळा चतुष्कने विषे ईशान कूणथी दक्षिणावर्त गणतां एक रुचक, बीजुं आज्ञासिक, त्रीजुं वैषाणिक, चोथुं लांगुलिक ए चार नाम अनुक्रमे जाणवां. अंतरद्रीपना बीजा चतुष्कने विषे हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने शकुलीकर्ण, एवां नाम जाणवां. त्रीजा चतुष्कने विषे आदर्शमुख, मेंढमुख, अयोमुख, अने गोमुख, एवे नामे चार द्रीप ठे. चोथा चतुष्कने विषे हयमुख, गजमुख, हरिमुख अने व्याघ्रमुख, एवां चार नामे चार द्रीप ठे. अने अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, अकर्ण अने कर्णप्रवावरण, एवे नामे पांचमा चतुष्कने विषे अंतरद्रीप जाणवा. उढकामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख अने विशुदंत. एवे नामे षठा चतुष्कना अंतरद्रीप ठे. सातमा चतुष्कनेविषे घनदंत, लष्टदंत, गूढदंत, अने सिद्धदंत, एवां चार नाम जाणवां. ए अष्टावीश अंतरद्रीपनां नाम कख्यां.

हवे अंतरदीपनो परिधि कहेठे. पहेला चतुष्कने विषे नवशे ने उंगण पचास थो जननो परिधि ठे, पठीना ठ चतुष्कने विषे प्रत्येके त्रणसो ने सोल योजननी वृद्धि क रीथे ॥ यथा ॥ सोलुत्तर तिसयजुय, सपढम परिहिं वरावर चउकं ॥ पढमे नवगुणवन्ना, साबीए बारपण सठी ॥ १ ॥ तइए पनरिक्कारसि, चउठए पुणअठार सगणउआ ॥ जो यण बावीस सया, तेरहिया पंचम चउकं ॥ २ ॥ पणवीस इगुणतीसा, ठठे चरमेडवी स पणयाला ॥ परिहीअंतरदीवा, सत्तचउक्काण नायवा ॥ ३ ॥ १९९ ॥

ए पूर्वोक्त प्रकारे वली शीखरी पर्वतने विषे पण ईशानकूण प्रमुख चार विदिशि ने विषे चार दाढा ठे, अने ककेकी दाढाये सात सात अंतरदीप ठे, तेवारे चार दा ढाना अठावीश थाय. ए रीते हेमवंत तथा शिखरीना एकठा गणतां सर्व मलीने ठ प्पन्न अंतरदीप जाणवा. ए सर्व ठप्पन्न अंतरदीपने विषे युगल मनुष्य रहे ठे. तेनुं पढयोपमने असंख्यातमे जागे आयुष्य जाणवुं.

ते युगलीयाना आठशे धनुष्यनां उंचां शरीर ठे, वली तेनां शरीरने विषे चोसठ पांसली ठे. वली आहारनी इठा एकांतरे उपजे ठे, अने उंगण्यांशी दिवसलगे अपत्य पावनकरेठे.

मेरुपर्वतथकी पश्चिमदिशिने विषे जगतीथकी बार हजार योजन लवणसमुद्रमांहे सुस्थित एवे नामे जे लवणसमुद्रनो स्वामी देव ठे, तेनो गौतम एवे नामे एक दीप ठे. ते गौतमदीपनी वन्ने वाजु जंबूदीपना बे सूर्य अने लवणसमुद्रना बे सूर्य, तेना बे बे दीप जाणवा. एटले वचमां गौतमदीप ठे, अने वन्ने पासे बे बे सूर्यदीप ठे.

जगतीथकी दीपनुं वेगलाइपणुं अने दीपनो मांहेमांहे अंतर तथा दीपनो वि स्तार ते बार हजार योजन जाणवो. वली ए प्रकारेज पूर्वदिशिने विषे जगतीथकी बार हजार योजन लवणसमुद्रमांहे बे चंद्रमा जंबूदीपना अने बे चंद्रमा लवणसमु द्रना. ए रीते चार चंद्रमाना चार दीप ठे.

ए प्रकारे बाहेरथकी धातकीखंडने विषे तथा मंदरपर्वतथकी पूर्वपश्चिम दिशे लवणसमुद्रनी जगतीथकी बार हजार योजन लवण समुद्रमांहे शिखानीदिशि फरे तिहां बे चंद्रमा लवण समुद्रना, अने ठ चंद्रमा धातकीखंडना, ए रीते आठ चंद्रमा ना दीप पूर्वदिशिथे ठे, तथा बे सूर्य लवणसमुद्रना, अने ठ सूर्य धातकीखंडना ए वं आठ सूर्यना दीप पश्चिम दिशे ठे.

ए चंद्रमा अने सूर्यना दीप पाणी उपर केटला ठे ? ते कहे ठे.

ए पूर्वे कह्या जे चंद्रमा अने सूर्यना दीप ते जंबूदीप तथा धातकीखंडनी दिशिथी जोतां साडी अठ्याशी योजन उपरे पंचाणुआ चाळीश जाग एटला पाणीथी उपर ठे,

ते जाणवाने अर्थे प्रथमनी पेरे आंकनी त्रण राशि मांकीये, एक पंचाणुं हजार, बी जी सातशे, अने त्रीजी चोवीश हजार, सुलजपणा माटे बिंडु टाळीने वचेंनी राशि, ठेहेली राशि साथे गुणतां सोळ हजार ने आठसो थाय, तेने पहेली राशिना पंचाणुं हजार ठे, तेना बिंडु टाळतां पंचाणुं जागे वेहेचीये, तेवारे एकसो ठोंतेर योजन उपर पंचाणुआ एंशी जाग आवे, एटली लवणसमुद्रनी शिखादिशिये जलवृद्धि ठे. तेनुं अरु अठ्याशी योजन थाय ठे. तेनी साथे पाणीथकी बाहेरनी उंचाश्ना बेकोश जेळीये, तेवारे साडी अठ्याशी योजन उपर पंचाणुआ चालीश जाग. एटला जंबूद्वीप तथा धातकीखंडनी दिशिथी जोतां पाणी उपर द्वीप ठे. वली मांहेनी लवणशिखानी दिशाथकी जोतां बन्ने बाजुये बे कोश पाणीथकी सर्व द्वीप उंचा ठे. हवे द्वीपनो परिधि कहे ठे ॥ उक्तं च ॥ सगतीस सहस्स नवसय, कयाल परिहिं जळाडुकोस बहिं ॥ उच्चा अंतो जोयण, अडसी पण नउअ चत्तंसा ॥ १ ॥

हवे ते चंद्र सूर्य द्वीपमांहे प्रासादनां प्रमाण कहे ठे.

ए चंद्र सूर्यद्वीपने विषे कुलगिरिना प्रासाद सरखा साकीबासठ योजन उंचा, अने सवाएकत्रीश योजन पहोला, एवा रमवा योग्य पोतपोताना प्रभु एटले स्वामी जे सुस्थि तदेव तथा चंद्र सूर्य, तेमना प्रासाद ठे, तथा ए सर्व चंद्रसूर्य प्रमुख जे ज्योतिषीयोनां विमान ठे ते स्फाटिक रत्ननां ठे. तथा लवणसमुद्रने विषे जे ज्योतिषी ठे, तेनां विमान दगपाटन जे स्फाटिकरत्न तेनां ठे, ते विमानने संयोगें लवणसमुद्रनो पाणी फाटे ठे, ए रत्ननो जातिगुणज ठे. वली ते रत्ननी कांति उंची लवणशिखाने विषे पण प्रकाश करे ठे. लवणसमुद्रने विषे चार चंद्रमा, चार सूर्य त्रणशे ने बावन ग्रह, एकशे ने बार नक्षत्र, अने बे लाख सरसठ हजार ने नवशें एटली तारानी कोडाकोडी जाणवी. लवणसमुद्रनो परिधि पन्नर लाख एक्याशी हजार एकसो ने उंगणचालीश योजन जाणवो. समुद्रनी जगतीना द्वार द्वारनुं अंतर, त्रण लाख पंचाणुं हजार बशे ने सवाएंशी योजन ठे. हवे लवणसमुद्रनुं प्रतरघन करवानी गाथा लखे ठे ॥ दससहस रहियविठर, अरुंदस सहस संजुअं तेण ॥ गणियाय मज्ज परिही, पयरो लवणस्सिमो होइ ॥१॥ नव नवइं कोमिसया, इगसठी कोमिसत्तरस लस्का ॥ पन्नरसहसाय इमो, घणोसवे सत्तर सहस्स गुणो ॥ २ ॥ सो सोलकोमिकोडी, तिणवइलस्कागुणचत्त सहसाया ॥ नवसय कोमीपन्नर, कोमी पन्नास लस्काय ॥ ३ ॥ इति लवणसमुद्राधिकारः ॥

हवे धातकीखंड नामा बीजा द्वीपनो अधिकार वखाणे ठे.

लवणसमुद्रनी जगतीथकी बाहेर वलयने आकारे चार लाख योजन पहोलो ए

वो बीजो धातकीखंरु नामे द्वीप ठे, ते धातकीखंरु, इस्ककार नामे जे बे पर्वत तेणे बे जागे वेहेंच्यो ठे, एटले एक पूर्व धातकीखंरु. अने बीजो पश्चिम धातकीखंरु. ए बे जाग जाणवा. हवे ते इस्ककार पर्वत दक्षिणदिशे, अने उत्तरदिशिये, लांबा ठे. वली एक हजार योजन मूलने विषे, अने शिखरने विषे सरखा पद्दोला ठे. तथा पांचशें योजन उंचा ठे. लवणसमुद्रनी जगतीना दक्षिण उत्तरदिशिना वैजयंत, अपराजि न एवे नामे जे बारणां ठे, तेमांथी इषु एटले बाणने आकारे चार लाख योजन धातकी खंडना विस्तार सुधी लांबा निकळ्या ठे, एवा ते पर्वतो ठे.

हवे धातकीना बे खंरुने विषे कुलगिरि तथा क्षेत्र वखाणे ठे.

धातकी खंडना पूर्व अने पश्चिम दिशाना एकेका खंरुनेविषे ठ ठ कुलगिरि जाणवा अने सात सात क्षेत्र जाणवां. ते जेम गाडीनां पड्डांने विषे, वच्चेंनी नाजिथकी आराना आंतरा होय, तेम जंबूद्वीप अने लवण समुद्र जे ठे, ते नाजि सरखा ठे. अने धातकी खंडमांहे जे इखुकार तथा कुलगिरि प्रमुख पर्वत ठे, ते आराना सरखा ठे, अने क्षेत्र जे ठे ते आराना विवर एटले आंतरा सरखा ठे. वली ते कुलगिरि इस्ककार मूलने विषे अने ठेहडाने विषे सरखा पद्दोला ठे. वली वासक्षेत्र जे ठे, ते लवणसमुद्रथकी मांकीने पिहुल पिहुलतर ठे.

हवे धातकीखंरुमांहे जे पदार्थ जंबूद्वीप मांहेला पदार्थ सरखा ठे, ते कहे ठे.

धातकी खंडनेविषे जे ड्रह, कुंडनुं उंरुपणुं तथा मेरुपर्वत टाळीने कुलगिरि. गयदं तगिरि, वक्षस्कार, यमलगिरि, कांचनगिरि अने वैताढ्य प्रमुख पर्वतनुं उंचपणुं, तथा सुमेरुपर्वत वर्जिने वैताढ्यनो विस्तार अने बीजा वैताढ्य प्रमुख वृत्त पर्वतनो विस्तार ते सर्व पद्दोला कह्या ठे, तेना सरखो जाणवो, एटले जंबूद्वीपनी घेरे जाणवो.

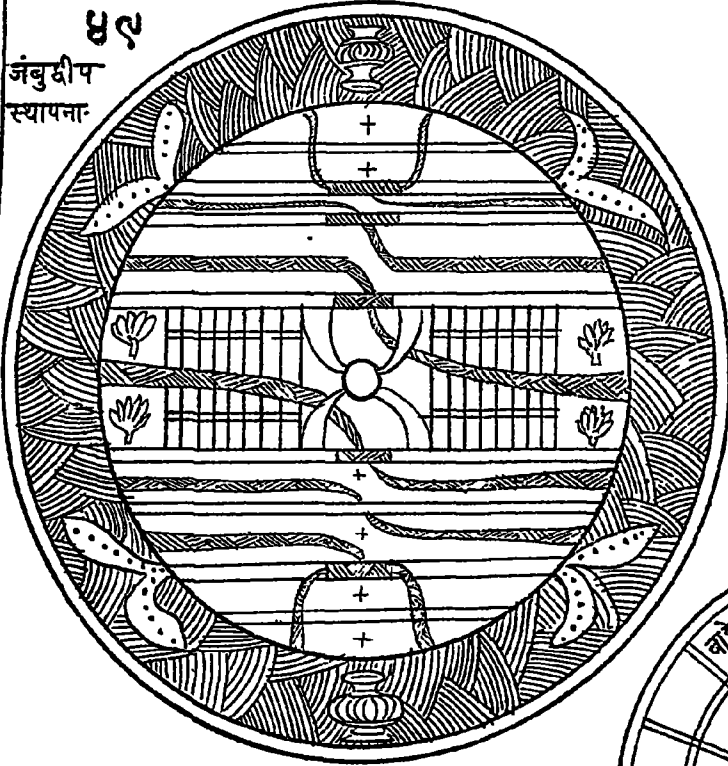
हवे धातकीखंडने विषे बे मेरु ठे, ते वखाणे ठे.

धातकीखंरुना जे बे मेरु पर्वत ठे, ते जंबूद्वीपना मेरु सरखा जाणवा. पण एटलुं विशेष ठे के, जंबूद्वीपना मेरुनी जूमिथी पांचशे योजन उपर चमिये, त्यां नंदनवन ठे; तेथकी उपर साडीचासठ हजार योजन चडीये. तेवारे सौमनस्य वन ठे, त्यांथकी ठ त्रीश हजार योजन उंचुं पांडुक वन ठे, अने धातकीखंरुना मेरुनुं एटलुं विशेष जे जूमिथकी पांचशें योजन उंचुं नंदनवन ठे, ते थकी साडीपंचावन हजार योजन उंचे चडीये, त्यां सौमनस्य वन ठे, त्यांथी अष्टयावीश हजार योजन उंचा चडीये, त्यां पांडुक वन ठे, ए चोराशी हजार योजन थया. अने एक हजार योजन जूमिमांहे उंमा ठे, एम सर्व मली पंचाशी हजार योजन उंचा ठे.

तथा नव हजार ने पांचशें योजन मूलमां नीचे विस्तार ठे, अने नव हजार ने चारशें

४९

जंबुद्वीप
स्थापना

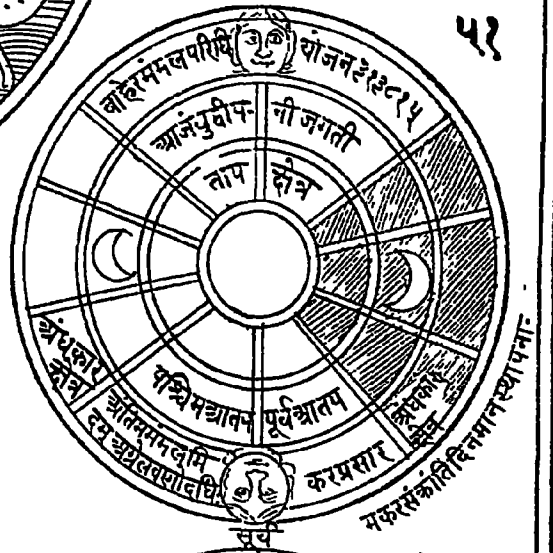


५०

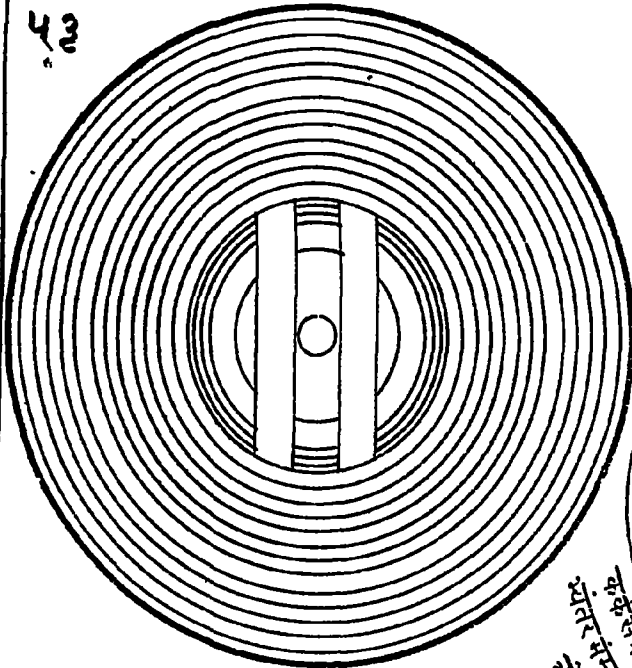


सूर्य

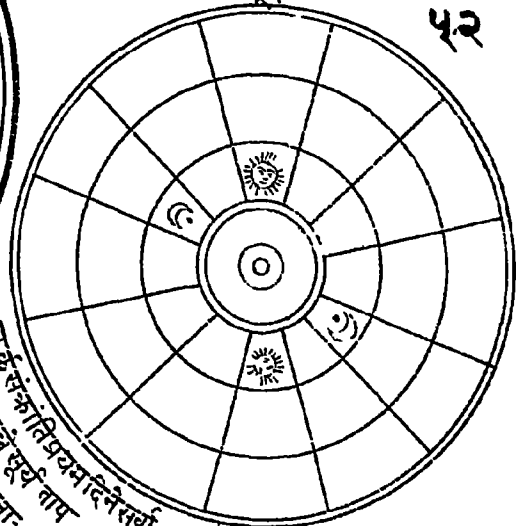
५१



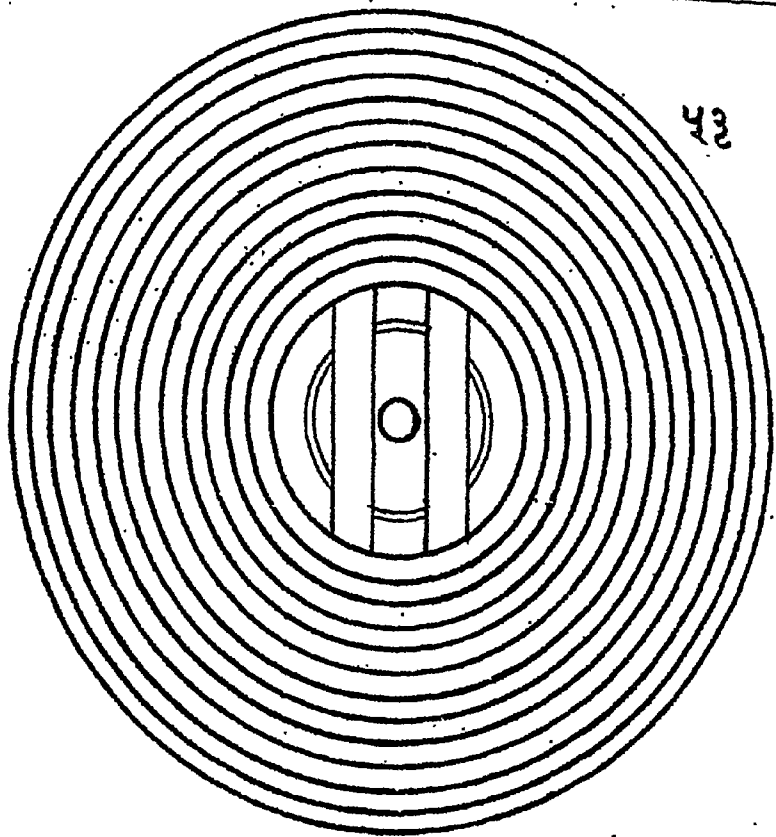
५३



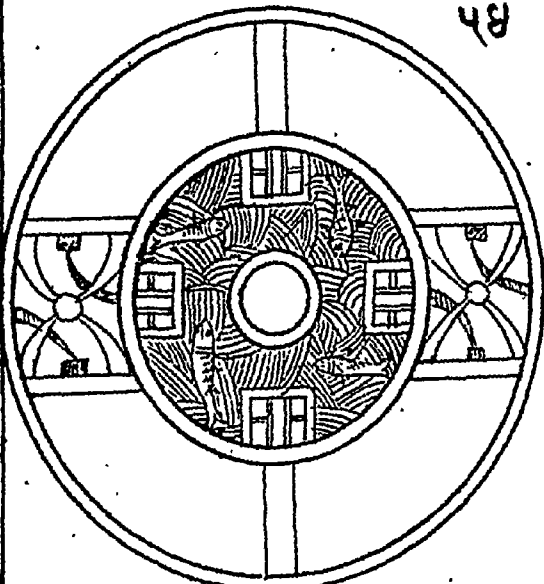
५२



कर्म संक्राति प्रथम दिने सर्वा-
 यान्तर मन्त्रे सूर्य ताप
 क्षेत्र स्थापना

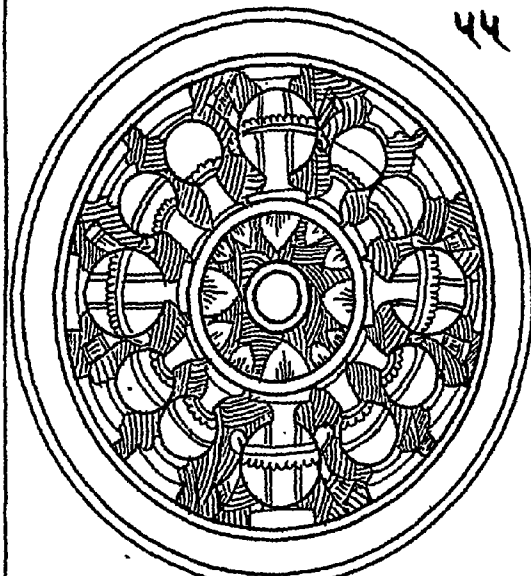


५३



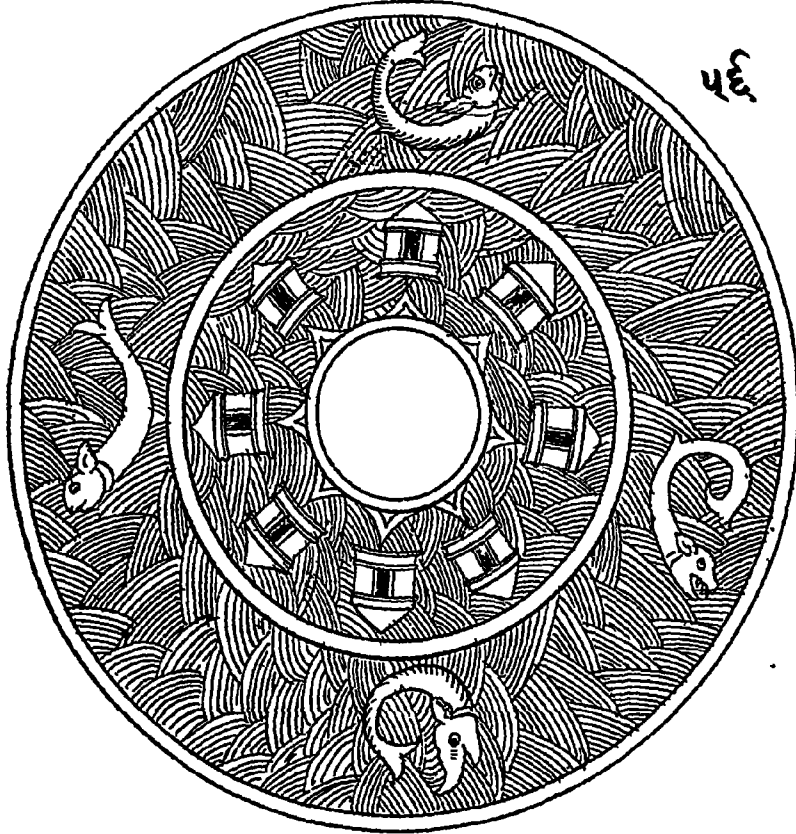
५४

द्वयण समुद्र अने धातकी खंभनी स्थापना.



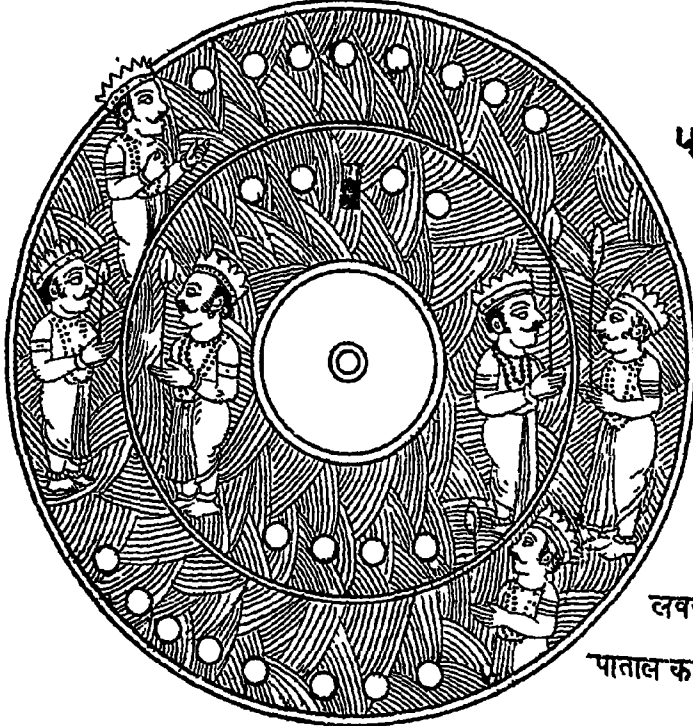
५५

लवण समुद्रे पाताल कलश स्थापना.



५६

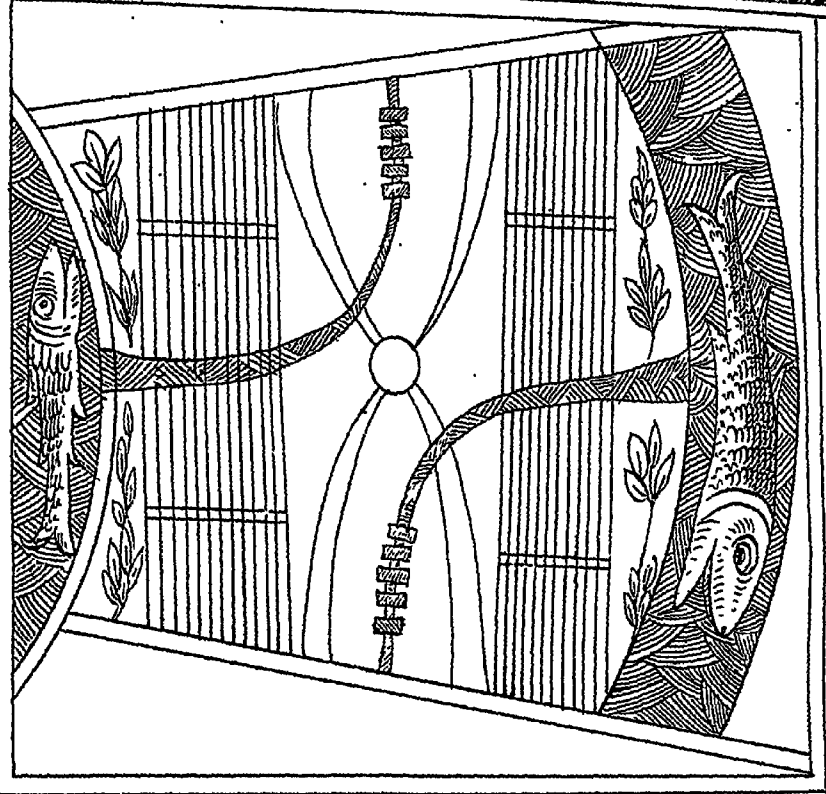
लवणा समुद्र अने नदन्तरगत वेलंधरावास
पर्वत स्थापना.



५७

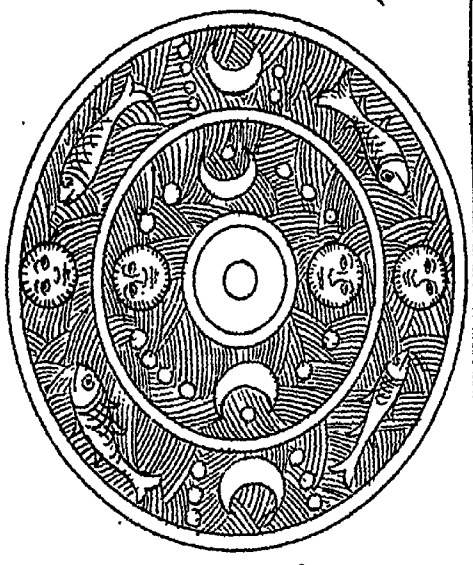
लवणा समुद्रगत
पाताल कलदा संख्या स्थापना.

धातकी खंभे मां हेजा नका वि देह की ननी स्थापना-

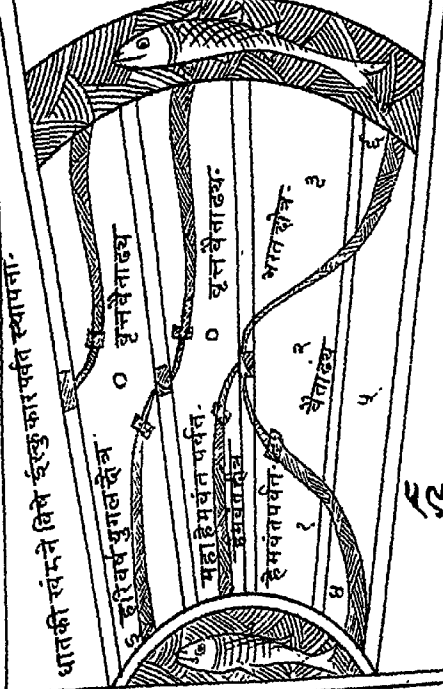


५३

५८



खवला समुद्रगत सूर्य चंद्राकृति स्थापना-



धातकी खंभे ने विषे इत्युकार पर्यंत स्थापना-

६ हरिवर्ष युगल दोन
 ७ वृत्तवैनाढ्य
 ८ वृत्तवैनाढ्य
 ९ महाहिमवत पर्यंत
 १० महाहिमवत पर्यंत
 ११ हिमवत पर्यंत
 १२ भारत क्षेत्र
 १३ वैनाढ्य
 १४

५८

योजन चूतल विस्तार ठे, तथा नव हजार ने साडा त्रणशे योजन नंदनवननो विस्तार जाणवो, त्रण हजार ने आठशे योजन सौमनस्य वननो विस्तार जाणवो, अने एक हजार योजन शिखानो विस्तार जाणवो.

हवे वांछित स्थानकने विषे विस्तार आणवानो विधि आवी रीते केः—चूतलनुं पही खपणुं नव हजार ने चारशे योजन ठे, तेमांथी शिखरनुं पहोलपणुं एक हजार योजन काढीये, तो बाकी आठ हजार ने चारशे योजन रहे. ते चूतलथकी उंचुं चोराशी हजार योजन ठे, तेनी साथे जाग आपतां, जाग पहोंचे नहीं. तेमाटे आठ हजार चारशेने दशगुणा करिये. तेवारे चोराशी हजार थाय, ते उंचपणाना चोराशी हजार योजन साथे गुणीये, तेवारे एक योजननो दशमो जाग आवे. तो चूतलथकी जेवारे एक योजन उंचे चढीये, तेवारे विष्कंभमांहे एक योजनना दश जाग मांहेलो एक जाग घटे अने उतरतां वधे, एम प्रथमनी पेरे जाणवुं.

प्रथम जंबूद्रीपने विषे जे नदी, प्रपातकुंरु, कुंडमांहेला द्वीप, वनमुख, डह, लां वा पर्वत तथा कमल, एटला पदार्थनो विस्तार तथा नदीनुं उंरुपणुं, वली डहनं लां वपणुं जे कछुं, तेथी आ धातकीखंरुने विषे ब्रमणुं जाणवुं.

हवे चद्रशालवननुं परिमाण कहे ठे.

एक लाख सात हजार आठशे ने उंगण्यांशी योजन मेरुपर्वतथकी पूर्व पश्चिम दिशाये लांबपणे चद्रशालवन ठे. एने जेवारे अष्टयाशी जागे वेहेंचीये, तेवारे बारशे ने ठवी श योजन कांश्क ऊणा आवे; एटलुं मेरुथकी चद्रशालवन उत्तर तथा दक्षिण दिशा पहो लुं ठे. कुरुक्षेत्रनी जीवा बे लाख त्रेवीश हजार एकशो ने अष्टावन योजन जेटली जाणवी.

हवे गयदंत गिरि वखाणे ठे.

पूर्व अने पश्चिम दिशाना बेहु धातकीखंरुने विषे बाहेरनी दिशाये धातकीखंरुनी जगतीना पासाना चार गयदंत गिरि ठे. ते पांच लाख उंगणोतेर हजार बशे ने उंगणसाठ योजन लांबा जाणवा. अने बीजा जंबूद्रीपनी जगतीनी दिशाना मांहेला चार गयदंत गिरि जे ठे, ते त्रण लाख लपन हजार बशे ने सत्तावीश योजन लांबा जाणवा. तथा एक बाहेरनो गयदंतगिरि, अने एक मांहेनो गजदंतगिरि, ए बन्ने एक ठा करीये, तेवारे कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ थाय, तेनुं प्रमाण नव लाख पच्चीश हजार चारशे ने ल्याशी योजन थाय. एटलुं धातकीखंरुने विषे कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं ॥ १३३ ॥

हवे वक्षस्कार अंतर नदी प्रमुखनां प्रमाण कहे ठे.

कुलगिरि तथा गजदंतनां प्रमाण कहां अने तेथकी अन्य जे वक्षस्कार, अंतरन

दी विजय, अने वनमुख तेनो विस्तार ते क्षेत्रना अनुमाने करी जाणवो. एटवे पूर्व धातकी खंरु तथा पश्चिमधातकी खंरुनुं बन्ने इखुकार दिशिये जेवुं क्षेत्रनुं लांबपणुं ठे; तेवुं वक्षस्कारादिकनुं पण लांबपणुं जाणवुं. तथा पूर्व धातकीखंरुनां सात क्षेत्र, अने पश्चिम धातकीखंडनां सात क्षेत्र, ते चार लाख योजन लांबां जाणवां.

हवे वासक्षेत्रना विजयनो विस्तार कहे ठे.

क्षेत्रना आंक जे एक, चार, सोल ने चोशठ ए एनी साथे ध्रुवांक गणीये, पढी बशे ने बार जागे वेहेंचीये, तेवारे वासक्षेत्रनो सर्वत्र आदि, मध्य अने अंत्यनो विस्तार होय .

हवे धातकी खंरुना ध्रुवांक कहे ठे.

प्रथम क्षेत्रना चउद लाख बे हजार बशे ने सत्ताणुं एटला ध्रुवांक जाणवा. तथा मध्यक्षेत्रना ढवीश लाख सडसठ हजार बसो ने आठ ध्रुवांक जाणवा. तथा अंतक्षेत्रना ध्रुवांक ३९३२१९ जाणवा.

अंहीयां प्रथम क्षेत्रना ध्रुवांक जे चौद लाख बे हजार बशे ने सत्ताणुं ठे, अने क्षेत्रनो आंक एक ठे, माटे एके गुणीये, तेवारे तेहीज आंक आवे, तेने बशे ने बार जागे वेहेंचतां ४ हजार बसो ने चौद योजन जाफेरा, एटलो जरत तथा ऐरवतनो आदि विस्तार जाणवो. अने बार हजार पांचशे ने एक्याशी योजन जाफेरो मध्यविस्तार ठे, तथा अठार हजार पांचशे ने सुफतालीश योजन जाफेरो अंत्यविस्तार ठे.

हेमवंतने ऐरणवतनो आदिविस्तार ढवीश हजार चारशे ने अठवन योजन जाफेरो ठे, मध्यविस्तार पचास हजार त्रणशे ने चोवीश योजन जाफेरो ठे अने अंत्यविस्तार चम्मोतेर हजार, एकसो ने नेवुं योजन जाफेरो ठे ए सर्व चारे गुणतां चौगुणा थया.

हरिवर्ष अने रम्यक क्षेत्रनो आदिविस्तार एक लाख पांच हजार आठशे ने तेत्रीश योजन जाफेरो ठे, अने मध्यविस्तार बे लाख एक हजार बशे ने अछाणुं योजन जाफेरो ठे, तथा अंत्यविस्तार बे लाख, ढवुं हजार, सातशे ने त्रेशठ योजन जाफेरो ठे.

विदेहनो आदिविस्तार चार लाख, त्रेवीश हजार, त्रणशे ने चोत्रीश योजन जाफेरो ठे, अने मध्यविस्तार आठ लाख, पांच हजार एकसो ने चोराणुं योजन जाफेरो ठे, तथा अंत्यविस्तार अगियार लाख सत्याशी हजार ने चोपन्न योजन जाफेरो ठे, ए रीते ए चार स्थानकनो आदि, मध्य तथा अंत्यनो विस्तार कह्यो. ए ध्रुवांक चोशठांके गुण्या.

अंहीयां आदि ध्रुवांक चौद लाख. बे हजार, बशे ने सत्ताणुं योजन जाफेरा ठे. तेने एक, चार, सोल, चोसठनी साथे गणीये, पढी बन्ने ने बार जागे वेहेंचतां यथोक्त मान लाप्ते. अने मध्यध्रुवांक ढवीश लाख, सडसठ हजार, बशे ने आठ ठे. तेने एक, चार

सोल ने चोसठ साथे गुणीने पढी बशे बार जागे वेहेंचतां पूर्वोक्त मध्यविस्तार लाजे, तथा अंत्यनो विस्तार (३९३११९) ठे, तेने एक, चार, सोल, अने चोसठसाथे गणीये, पढी बशे ने बार जागे वेहेंचतां पूर्वोक्त क्षेत्रनो अंत्यविस्तार आवे. अने उपरजे योजन रहे, तेनी कला करी बशे ने बार जागे वेहेंचीये, तेटलुं उपर आवे. तेमाटे जाकेरा ठे.

हवे विजयनुं परिमाण कहेठे.

अंतरनदीये पन्नरशे योजन रुंध्याठे, वृद्धस्कारे आठ हजार योजन रुंध्या ठे, मेरुथकी पूर्व पश्चिमे जडशालवने तथा मेरुपर्वते बे लाख पच्चीशहजार एकसो ने अछावन्न योजन रुंध्या ठे, वनमुखे अगिआर हजार बशे ने अठ्याशी योजन रुंध्या ठे, ए सर्व एकठा क रिये, तो बे लाख, ठेतालीश हजार, त्रणशे ने ठेतालीश योजन थाय. ते धातकीखंरुनो विस्तार चार लाख योजननो ठे. ते मांहेथी काढीये, तेवारे एक लाख, त्रेपन हजार बशे ने चो पन योजन बाकी रहे-तेने सोल विजय ठे. माटे सोल जागे वेहेंचीये, तेवारे नवहजार बशे ने त्रण योजन उपर सोलहीआठ जाग आवे. एटलुं एकेका विजयनुं प्रमाण पहोलपणेठे.

ए नदी, गिरि, वन अने विजय ए सर्वनां प्रमाण जेवारे एकठां करिये, खंडना तेवारे चार लाख योजन, धातकीखंडनो विस्तार पूर्ण थाय, अने ए धातकी खंडना बत्रीश विजयनां नाम प्रथम जगतक्षेत्रनां सरखां कछादिक जाणवां.

हवे नगरी अने वृद्ध वखाणे ठे.

ए धातकी खंरुने विषे नगरी अने वृद्ध ते पहेला जंबूछीपने विषे जे रीते कह्यां, ते रीते जाणवां, परंतु एटलुं विशेष ठे के जे पूर्व अने पश्चिमना बेहु खंरुने विषे बे उ त्तर कुरुक्षेत्रमांहे धातकीने महाधातकी एवे नामे जे बे वृद्ध ठे, ते बे वृद्धने विषे सु दर्शन अने प्रियदर्शन एवे नामे बे देवता अनुक्रमे वसे ठे, अने बे देवकुरुक्षेत्रने वि षे तो जंबूछीपनी पेरे गरुड देवताने वसवायोग्य बे शाढमढी वृद्ध ठे.

हवे धातकी खंरुना त्रण परिधि कहे ठे.

प्रथम कही जे ध्रुवांकनी त्रण राशि तेनी साथे एक लाख अठयोतेर हजार आठशे ने बे हेंतालीश. एटला योजन मेलवीये, तेवारे अनुक्रमे धातकी खंडना त्रणे परिधिनुं परिमा ण थाय, ते यंत्रथी समजवुं. हवे ए ध्रुवांक केवी रीते नीपजे ? तेनो विधि ग्रंथातरथी कहे ठे ॥ यडुक्तं ॥ इहवासहराजंबू, सेलडुगुणविठराचउसु आरा ॥ खिक्तं फुसंति लखो, अडसयरिसहस बियाला ॥१॥ तण्णलवणपरिहि, धायइसंडस्सआइ धुवरासी ॥ गिरि पितुणा तम्मज्ज, परिहीसमज्ज धुवरासी ॥१॥ अंतस्सविजा परिही, गिरिविठर रहिय अं तधुवरासी ॥ गिरिविठरेण मित्थियं, परिहिंतिगणुकमेण जवे ॥३॥ इतिधातकी खंडाधिकारः

હવે કાલોદ સમુદ્રનો ચોથો અધિકાર કહે છે.

કાલોદધિ નામે જે સમુદ્ર તે ધાતકીઁંડની જગતી બાહેર વલયને આકારે છે, તે સર્વત્ર હજાર યોજન ઁંડો છે ઁટલે ગોતીર્થની પરે નથી. વઢી ઁમાં પાણીની હાની વૃદ્ધિ થતી નથી. તે કાલોદ સમુદ્રને વિષે લવણસમુદ્રના સુસ્થિતદેવ સરસા કાલ, અને મહાકાલ નામે જે બે દેવતા તેને રહેવા યોગ્ય પૂર્વ અને પશ્ચિમદિશાને વિષે ગૌતમઢીપસરસા બે ઢીપ છે.

લવણ સમુદ્રની પરે ધાતકી ઁંડની જગતીથકી બાર હજાર યોજન કાલોદ સમુદ્ર માંહે પૂર્વદિશાને વિષે ધાતકીઁંડના બાર ચંદ્રમાના બાર ઢીપ છે, અને પશ્ચિમદિશાને વિષે બાર સૂર્યના બાર ઢીપ છે, તથા કાલોદની જગતીથકી કાલોદ સમુદ્રમાંહે બાર હજાર યોજને પૂર્વદિશાને વિષે કાલોદધિના બહેંતાલીશ ચંદ્રમાના બહેંતાલીશ ઢીપ છે, અને પશ્ચિમ દિશાએ બહેંતાલીશ સૂર્યના બહેંતાલીશ ઢીપ છે. તે સર્વ ઢીપ બાહેરની દિશાએ સર્વત્ર જોતાં પાણીથકી ઁપરબે કોશ ઁંચા છે, તથા ઁકાણું લાલ સત્યોતેર હજાર ઁશે ને પાંચ યોજન કાલોદ સમુદ્રનો પરિધિ જાણવો. અને બાવીશ લાલ બાણું હજાર ઁશે ને બહેંતાલીશ યોજન અને ઁપર ત્રણ કોશ ઁટલું જગતીના ઢાર ઢારતું અંતર જાણવું ॥

હવે પાંચમો પુષ્કરદલ ઢીપનો અધિકાર કહે છે. કાલોદ સમુદ્રની જગતીથી બાહેર વલયને આકારે સોલ લાલ યોજન પહોલો પુષ્કર ઢીપ છે, તે પુષ્કર ઢીપતું અર્ધ આઠ લાલ યોજન છે, ત્યાંથકી બાહેરની દિશાએ જગતીની પરે વલય સરસો માનુષ્યોત્તર ઁવે નામે પર્વત છે, તે વેલંધરગિરિને માને છે. મૂલને વિષે ઁક હજાર બાવીશ યોજન, અને શિલ્ખરને વિષે ચારશે ને ચોવીશ યોજન પહોલો છે, અને સત્તરશે ઁકવીશ યોજન ઁંચો છે. વઢી જેમ સિંહ બેસે, તેવારે આગલે જાગે ઁંચો હોય, અને પાઠલે જાગે ની ચો હોય, તેમ માનુષ્યોત્તર પણ માંહેની દિશાએ ઁંચો છે, અને બાહેરની દિશાએ ની ચો ઢાલ માંહે છે. વઢી નિષધ પર્વતને વણે માનુષોત્તર પણ રાતા સુવર્ણનો છે.

હવે ત્યાં ક્ષેત્ર અને પર્વતનાં સ્વરૂપ વલ્ખાણે છે.

જેમ જરતાદિક ક્ષેત્ર અને હેમવંત પ્રમુલ પર્વત તેનાં સંસ્થાન જે આકારવિશેષ ધાતકીઁંડને વિષે કહ્યાં છે. ઁટલે ત્યાં જેમ ચક્રના આરા અને વિવર સરસા છે, તેમ જ ઁ પુષ્કરવર ઢીપને વિષે પણ જાણવા. ધાતકીઁંડના જઢ્રશાલ વનથકી પુષ્કરાર્કતું જઢ્રશાલ વન તે લાંબપણે અને પહોલપણે બમણું જાણવું. તો મેરુની પૂર્વ પશ્ચિમદિશાએ જઢ્રશાલવનનો ધાતકી ઁંડને વિષે વિસ્તાર ઁક લાલ સાત હજાર આઠશે ને ઁંગ ઁયાઁંશી યોજન છે. તેને બમણો કરીએ, તેવારે બે લાલ પત્તર હજાર સાતશે ને અઠાવન યોજન થાય. ને ઁને જેવારે અઠ્યાશી જાગે વેહેંચીએ, તેવારે બે હજાર ચારશે ઁકાવત્ત

योजन उपर एक योजनना अठ्याशी जाग करीये. तेवा सिन्हेर जाग एटलो मेरु थ की दक्षिण उत्तर दिशाना जडशाल वननो विस्तार पुष्करार्कने विषे जाणवो. तथा पुष्करार्कना बे मेरु अने इखुकार पर्वत तेनो विस्तार धातकीखंड सरखो जाणवो.

हवे बाहेरना चार गजदंता वखाणे ठे.

ए पुष्करार्कने विषे मानुषोत्तर पर्वतनी दिशाये बाहेरना चार गजदंतगिरि जे ठे, ते बीश लाख, त्रैतालीश हजार, बशे ने उगणीश योजन लांबा ठे. काळोद समुद्रनी जग तीनी दिशाना मांहेला चार गजदंतगिरि जे ठे, ते सोल लाख, षठीश हजार एकशो ने सोल योजन एटला लांबा ठे. तथा चार लाख, षठीश हजार, नवशें ने सोल योजन एटली कुरुक्षेत्रनी जीवा ठे. वली सत्तर लाख, सात हजार, सातशें ने चउद उपर एक योजनना बशे बार जाग करीये, तेवा आठ जाग एटलो कुरुक्षेत्रनो विस्तार जाणवो. त्रणशें तैत्रीश योजन उपर एक योजननो त्रीजो जाग एटलुं कंचनगिरितुं मा होमांहे अंतर जाणवुं. बे लाख, चालीश हजार, नवशे ने उगणसाठ योजन उपर सा तीयो एक जाग एटलुं कुलगिरि, जमक अने डहनं मांहोमांहे अंतर जाणवुं. तथा ष त्रीश लाख, उगणोतेर हजार, त्रणशें ने पांत्रीश योजन एटलुं कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं.

हवे शेष नदी तथा पर्वतनां परिमाण कहे ठे.

शेष बीजां क्षेत्र, नदी अने डह प्रमुखनुं प्रमाण ते जेम जंबूद्वीपथकी कोइक बम णा, कोइक सरखा, इत्यादि धातकी खंरुने विषे जेम कहा ठे, तेम अर्हियां पुष्करार्कने विषे पण कोइक धातकीखंरुथी बमणा, कोइक धातकीखंरु सरखा पण जाणवा. एटले जे जंबूद्वीप सरखा धातकीखंरुमांहे ठे, ते धातकीखंरु सरखा पुष्करार्कमांहे ठे, अने जे जंबूद्वीपथकी धातकीखंरुमांहे बमणा कहा ठे, ते पुष्करार्कने विषे धात कीखंरुथकी बमणा जाणवा ॥ हवे धातकीखंडने विषे दीर्घ वैताढ्य जंबूद्वीप सरखा वखाणे ठे ॥ यथा ॥ कंचण यमसुरकुरु नग, वेयडूा चव वट्ट दीहाय ॥ विरकंजबाहस सु, स्सएणजह जंबूदीबुञ्जा ॥ १ ॥ पुष्करार्कने विषे तो दीर्घ वैताढ्यनो विस्तार बशें योजन कह्यो ठे ॥ यथा ॥ उवेहो वेयट्टाणं, जोयणाइं तु ढसय कोसाइं ॥ पण विसं उच्चिडो, दोचेव सयाइं विच्चिन्ना ॥ २ ॥ अर्हियां निश्चयनी वात तो ह्यानी जाणे.

पुष्करार्क क्षेत्रनो धुवांक कहे ठे. अठ्याशी लाख, चउद हजार, नवशें ने एकवीश एटला योजन आदिक्षेत्रना धुवांकनी राशि जाणवी. ते सर्व प्रथमनी पेरे क्षेत्रना आंक साथे गणीये. पठी बशे ने बार जागे वेहेंचतां परिमाण लज्यमान थाय. एक को रनी, ते लाख, चुम्मालीश हजार, सातशें ने त्रैतालीशयोजन. एटली पुष्करवरद्वीपना

मध्यक्षेत्रनी ध्रुवांकराशि जाणवी. एक करोड, आठतीश लाख, चम्मोतेर हजार, पांचशें ने पांसठ, एटली पुष्करार्कना अंत्यक्षेत्रनी ध्रुवांकराशि जाणवी. हवे ए ध्रुवांक जाणवा नी पेरे लखीचे ठैये ॥यथा॥ पुस्करदलंमिउसुया, र धायइसंडा उ डुगुण वासहरा ॥ खित्तं फुसंति लस्कति, पणवन्न सहस्स ठसय चुलसी ॥१॥ तेणूणा काळोयहि, परीही इहपढ महो धुवरासी ॥ दीवरू मव परिही, गिरिपीढूणोय मज्झि धुवो ॥२॥ नरखित्त अंतपरि ही, गिरिपिढूणाय अंत धुवरासि ॥ पुवंचगणणहरणो, खित्तपमाणं जवे पयनं ॥ ३ ॥

हवे अनुक्रमे क्षेत्रप्रमाण विवरीने लखीचे ठैये. पुष्करार्कने विषे जरत ऐरवतना आदिध्रुवांक अष्टयाशी लाख, चउद हजार, नवशें ने एकवीश तेने एक साथे गुणीये, ते वारे तेहीज आंक आवे, तेने बशे ने वार जागे वेहेंचीये, तेवारे एकतालीश हजार, पांचशें ने उंगण्यांशी योजन लज्यमान थाय. उपर एकशो ने तहोंतेर योजन वधे, ते एक योजनना बशें वार जाग करी, तेने बशें ने वार जागे वेहेंचीये, तेवारे उपर बशें ने बारीया एकशो ने तहोंतेर जाग आवे, एटलो प्रथम विस्तार ठे. तेमज त्रेपन हजार, पांचशें ने वार योजन उपर बशें बारीया, एकशो ने नवाणुं जाग, एट लो मध्यविस्तार जाणवो. पांसठ हजार चारशें ने ठेतालीश योजन उपर बशें ने बारीया तेर जाग, एटलो अंत्यविस्तार जाणवो.

हेमवंत ऐरण्यवंतनो आदिविस्तार एक लाख, ठासठ हजार, त्रणशें ने उंगणीश योजन उपर बशें ने बारीया ठप्पन जाग ठे, अने मध्यविस्तार बे लाख, चउद हजार ने ए कावन योजन उपर बशें बारीया एकसो ने साठ जाग ठे, तथा अंत्यनो विस्तार बे लाख, एकसठ हजार, सातशें ने चोराशी योजन उपर बशें ने बारीया बावन जाग ठे.

हरिवर्ष तथा रम्यकूनो आदिविस्तार ठ लाख, पांसठ हजार, बशें ने सत्योतेर योजन उपर बशें ने बारीया वार जाग ठे, अने मध्यविस्तार आठ लाख, ठप्पन हजार, बशें ने सात योजन उपर बशे ने बारीया चार जाग ठे, तथा अंत्यविस्तार, दश लाख, सुरता लीश हजार, एकशो ने ठत्रीश योजन उपर, बशें ने बारीया बशे ने आठ जाग ठे.

विदेह क्षेत्रनो आदिविस्तार, ठवीश लाख, एकसठ हजार, एकशो ने आठ योजन उपर बशें ने बारीया अमृतालीश जाग ठे, अने मध्यविस्तार चोत्रीश लाख, चोवीश हजार, आठशें ने अष्टयावीश योजन उपर बशें ने बारीया सोळ जाग ठे, तथा अंत्यविस्तार एकतालीश लाख, अष्टयाशी हजार, पांचशे ने ठेतालीश योजन उपर बशें ने बारीया एकशो ने ठनुं जाग ठे. ए गुणांक, क्षेत्रांक अने ध्रुवांक, ते सर्व यंत्रधी जाणवा. हवे प्रथमनी पेरे नदी, गिरि अने वनमुखनुं परिमाण काढीने शेष रहे, तेने सोळ

मे जागे एक विजयनुं परिमाण उंगणीश हजार, सातशें ने सवाचोराणुं योजन थाय-
तथा ए पुष्करार्द्ध द्वीपने विषे, बाहेरनी दिशाये जेनां पाणी वहे ठे; एवी जे नदी
तेनी नजीक कोइ समुद्र नथी, तेमाटे मानुषोत्तरने हेठे मूलमां पेसे ठे.

ए पुष्करार्द्धने विषे बन्ने उत्तर कुरुक्षेत्रमांहे पद्म अने महापद्म एवे नामे बे वृद्ध
ठे, तेने विषे पद्म तथा पुंरुरीक एवे नामे बे देवता रहे ठे, अने देव कुरुक्षेत्रने विषे
तो जंबूद्वीपनी पेरे गरुडदेवने वसवायोग्य बे शात्मलीनां वृद्धो ठे.

पुष्करार्द्ध क्षेत्रने विषे पूर्व पश्चिम दिशाना बन्ने खंफमांहे बे हजार योजन पद्म
ला एवा बे कूट कहा ठे, ते कूटनां स्थानक गीतार्थ ज्ञानवंत होय ते जाणे.

हवे मनुष्यक्षेत्रमांहे सर्व पर्वतनी संख्या कहे ठे.

एक मेरु, ठ कुलगिरि, चार गजदंता, सोल वक्षस्कार, चोत्रीश लांबा वैताढ्य, चार
वृत्त वैताढ्य, चार यमलगिरि, अने बशे कांचनगिरि. ए सर्व मली बशे ने उंगणयोतेर
पर्वत जंबूद्वीपमांहे जाणवा. अने आठ पर्वत लवणसमुद्रमांहे ठे, बीजा धातकीखंरु
मांहे जंबूद्वीपना बशें ने उंगणयोतेरने बमणा करीने बे श्खुकार पर्वत जेळीये, तेवारे
पांचशे ने चालीश थाय. अने त्रीजा पुष्करार्द्धने विषे पण पांचशें ने चालीश पर्वत
जाणवा. एम तैरशो ने सत्तावन पर्वत सर्व मलीने मनुष्य क्षेत्रमांहे जाणवा; तेमां
पांच मेरुपर्वत विना सर्व पर्वतो उंचपणाने चोथे जागे चूमिमांहे जाणवा. अने मानु
षोत्तर पर्वत पण एज रीते उंचपणाने चोथे जागे चूमिमांहे ठे.

पुष्करार्द्ध द्वीपना आदि, मध्य अने अंत्यना त्रण परिधि कहे ठे.

प्रथम जे ध्रुवांकनी श्रेणी कही ठे, तेमांहे त्रण लाख, पंचावन हजार, ठशें ने चोराशी
एटला योजन जेवारे त्रणे परिधिमांहे मेलवीये, तेवारे अनुक्रमे पुष्करार्द्धना त्रण परिधि
होय, ते संख्या यंत्रथकी जाणवी ॥ उक्तं च ॥ अड्ढाशदीव दु समु, इ रूव तप्परिहिं
जोयणिग कोनी ॥ बायाल लख तीसं, सहसा दोसय श्युणवन्ना ॥१॥ सोलस कोनी लखा,
नव कोडिसयातिकोडि श्ग लख ॥ पणवीस सहस्सासे, गणियपयं पुणसु करणेहिं ॥२॥

हवे मनुष्यक्षेत्र बाहेर जे पदार्थ न होय, ते कहे ठे.

नदी, डह, मेघ, मेघनो गर्जारव, बादर अग्नि काय, तीर्थकर, बलदेव, वासुदेव,
चक्रवर्ती अने बीजा पण सामान्य मनुष्य तेना जन्म अने मरण तथा मुहूर्त्त, प्रहर,
दिवस, चंद्र सूर्यनां परिवेष, विजली, चय, अपचय अने उपराग, एटला पदार्थ पी
स्तालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यक्षेत्रमांहे होय. पण बाहेर न होय. एवुं नरक्षे
त्रना स्वजावनुं विशेष जाणवुं ॥ इति पंचमोऽधिकारः ॥ ५ ॥

हवे पुष्करार्द्धादिकना पर्वत प्रमुखनेविषे जिनजवन ठे, ते कहे ठे.

प्रथम कह्या जे धातकीखंरु तेने विषे वे झखुकार, अने वे झखुकार पुष्करार्द्धना, ते चारे झखुकार पर्वतने विषे प्रत्येके चार कूट ठे. तेमाहे ठेह्या सिरुकूटने विषे चार पर्वते एकेक जिनजवन ठे, बधां मली चार जिनजवन ठे, अने मानुषोत्तर पर्वतनां चार कूटनी उपर चार जिनजवन ठे, ते जिनजवन कुलगिरिना जिनजवनने परिमाणे पचास योजन लांबां, पच्चीश योजन पहोलां अने त्त्रीश योजन उंचां जाणवां.

हवे नंदीश्वर, कुंडल अने रुचकछीपनेविषे जिनजवन कहे ठे.

एकसो योजन लांबा अने पचास योजन पहोलां तथा बहोंतेर योजन उंचा अने चार बारणे सहित एवां आठमा नंदीश्वरछीपनेविषे बावन जिनजवन ठे, तथा कुंरु लांछीपनेविषे कुंडलने आकारे जे मध्यगिरि ठे, तेने कुंडलगिरि कहे ठे, तेनी चारदिशाने विषे एवाज प्रकारना चार जिनजवन जाणवां. एम रुचकछीपने विषे पण चार जिनजवन ठे, ए सर्व साठे जिनजवन ते चार बारणानां ठे.

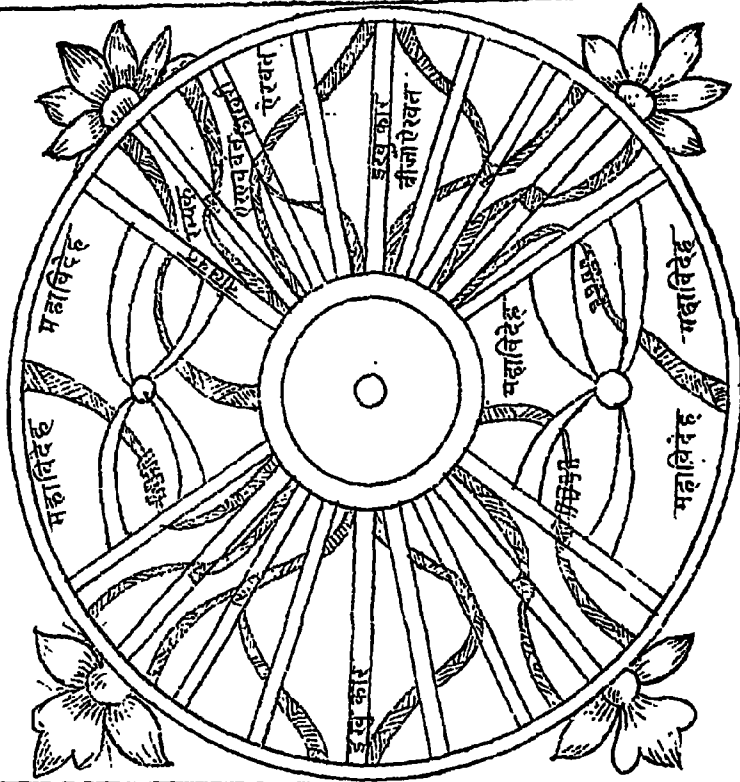
अढीछीपने विषे गर्जज मनुष्य संख्याये केटलां ठे? ते कहे ठे.

सात क्रोड कोनाकोनी कोनी, बाणुं लाख कोडाकोडी कोनी, अठयावीश हजार कोना कोडी कोडी, एकशो कोनाकोडी कोनी, बाशठ कोनाकोडी कोडी, एकावन लाख कोना कोडी, बहेंतालीश हजार कोनाकोनी, ठशे कोडाकोनी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, सामत्रीश लाख कोडी, उंगणसाठ हजार कोनी, त्रणशे कोडी, चोपन कोडी, उंगणचालीश लाख, पच्चास हजार, त्रणशे ने त्त्रीश, एटले आंके स्त्री पुरुषनी संख्या जाणवी.

एटले सात क्रोड, बाणुं लाख, अठयावीश हजार, एकशो ने बासठ कोनाकोनी कोनी, तथा एकावन लाख, बहेंतालीश हजार, ठशे ने त्रेंतालीश कोडाकोनी, तथा सा डत्रीशलाख, उंगणशाठ हजार, त्रणशे ने चोपन कोनी, तेनी उपर उंगणचालीश लाख, पच्चास हजार त्रणशे ने त्त्रीश, एटला आंक स्त्री पुरुषना एकठा साथे जाणवा. एटले ७७३३८२६३, ५२४३६४३, ३७५७३५४, ३७५०३३६, ए उंगणत्रीश आंकनी संख्या जाणवी.

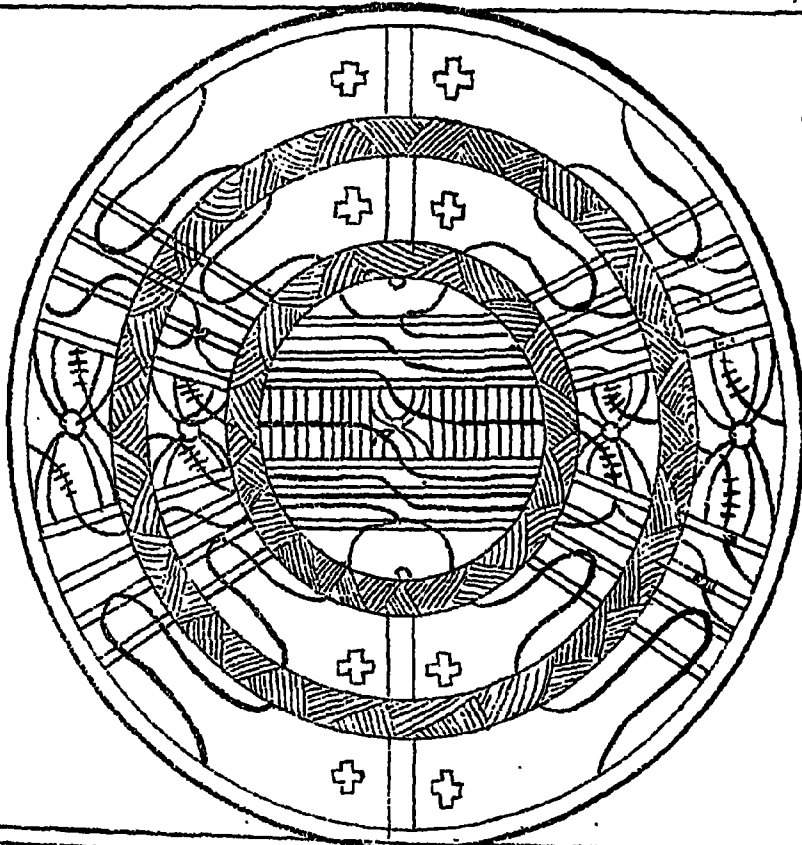
ए आंकना अठयावीश जाग करीये, तेवारे एक जागमां ३८३७५७७, ३३३६५३३, ७७७७३३६, ए अठयावीश आंक आवे, एटले अठयावीश लाख कोनाकोनी कोनी, उंगणत्रीश हजार कोडाकोडी कोडी, पांचशे कोडाकोडी कोनी, सत्योतेर कोनाकोनी कोडी, तथा त्रेवीश लाख कोडाकोडी, त्तीश हजार कोनाकोडी, पांचशे कोनाकोनी, बावीश कोनाकोनी, सत्ताणुं लाख कोनी, सत्योतेर हजार कोनी, एकशो कोनी अने उंगणीश कोनी, तेनी उपर उंगण्यांशी लाख, अठ्याणुं हजार, बशे ने त्तीश,

धातकी खंम स्थापना.



६१

अढी ङी प स्थापना.



६२

श्राश्वत जिन प्रासाद संख्या यंत्र.

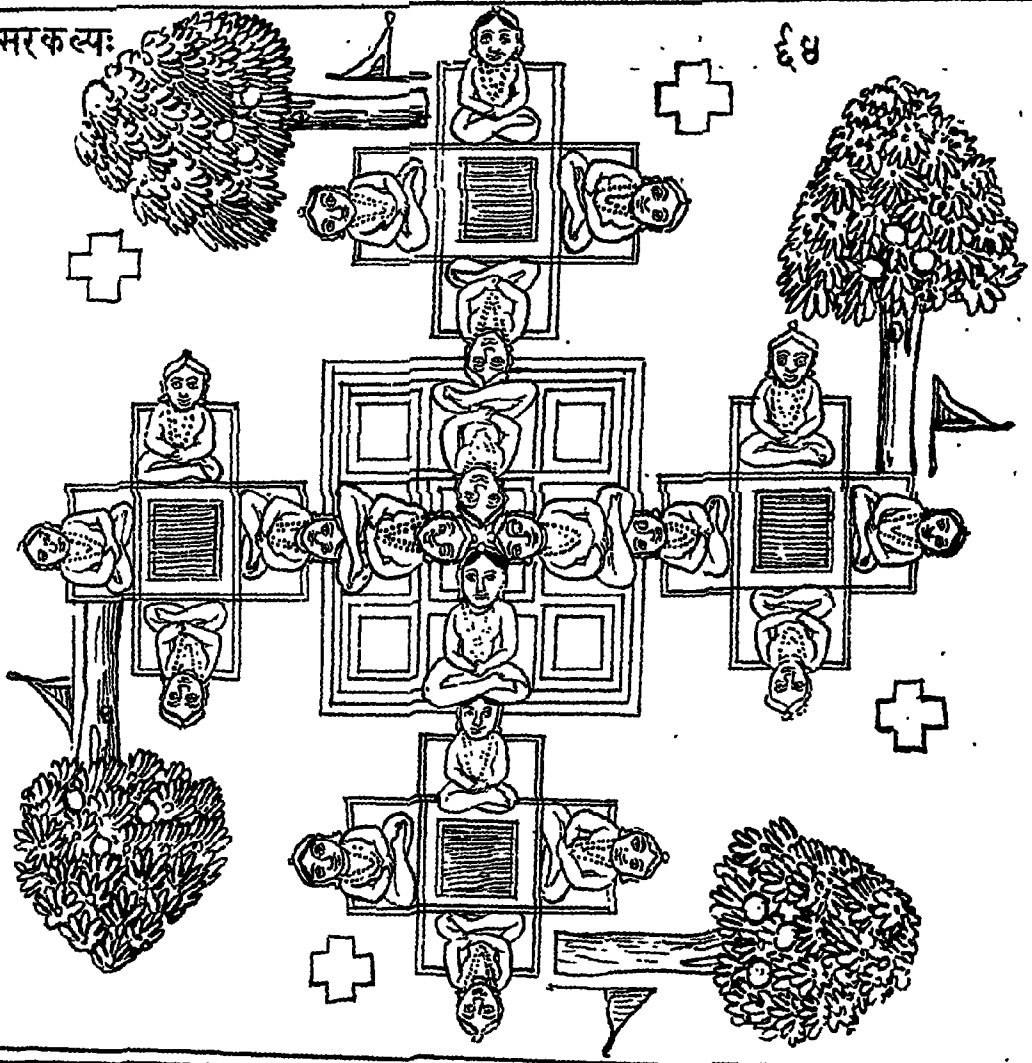
एवं मनुष्य के नैऋत संख्या.

| स्थान | प्रासाद | प्रतिमा | अंक | स्थान | प्रासाद | प्रतिमा |
|-----------------|----------|-----------|-----|-------------------|---------|---------|
| सौधर्म | ३२००००० | ५७६०००००० | ५ | मेरु | ८५ | १०२०० |
| ईशान | २८००००० | ५०४०००००० | २० | गजदंनगिरि | २० | २४०० |
| सनकुमार | १२००००० | २१६०००००० | ८० | वरकाश पर्वत | ८० | ८६०० |
| महेंद्र | ८०००००० | १४४०००००० | १०० | कांचनगिरि | १००० | १२०००० |
| ब्रह्म | ४०००००० | ७२००००००० | ५ | विचित्रपर्वत | ५ | ६०० |
| बानक | ५००००० | ९००००००० | ५ | चित्रपर्वत | ५ | ६०० |
| शुक | ४००००० | ७२०००००० | १० | यमकाचल | १० | १२०० |
| सहस्रार | ६०००० | १०८००००० | ३० | वर्षधर पर्वत | ३० | ३६०० |
| आनत | २०० | ३६०००० | ४ | इक्षु कार पर्वत | ४ | ४८० |
| प्राणत | २०० | ३६०००० | २० | बृत्तवैतालय | २० | २४०० |
| आरण्य | १५० | २७०००० | १७० | दीर्घवैतालय | १७० | २०४०० |
| अस्युत | १५० | २७०००० | ४० | दिग्गजकूट | ४० | ४८० |
| प्रथमत्रिक ३ | १११ | १३३२० | १० | जंज्वादिवृक्ष | ११७० | १४०४०० |
| द्वितीयत्रिक ३ | १०७ | १२८४० | ३८० | कुंभ | ३८० | ४५६०० |
| त्रितीयत्रिक ३ | १०० | १२००० | ७० | महानदिक्कुंभ | ७० | ८४०० |
| पंचानुत्तर | ५ | ६०० | ८० | हृद चैत्य | ८० | ९६०० |
| एवमूर्द्ध्वलोके | ८४९७०२३ | १५२९४४४७६ | १ | १ मातुषीत्तरपर्वत | ४ | ४८० |
| एवंत्रिभुवने | ८५७००२८२ | १५४२५८३६ | १ | १ नक्षीश्वरद्वीप | ६८ | ८३६८ |
| | | | १ | १ रुचकद्वीप | ४ | ४८६ |
| | | | १ | १ कुंभलद्वीप | ४ | ४८६ |

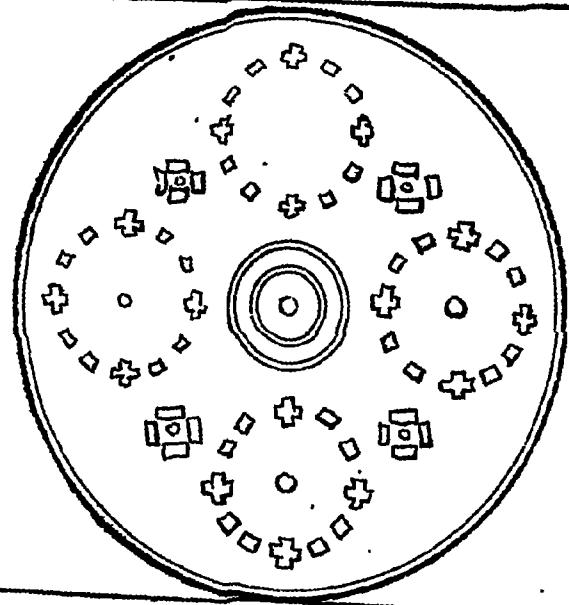
मनुष्य के नैऋत संख्या.

| स्थान | प्रासाद | प्रतिमा |
|---------------|----------|-------------|
| आसुरकुमार | ६४००००० | ११५२०००००० |
| नासुरकुमार | ८४००००० | १५१२०००००० |
| सुवर्णकुं | ७२००००० | १२९६०००००० |
| सुवर्णकुं | ७६००००० | १३६८०००००० |
| आग्निकुं | ७६००००० | १३६८०००००० |
| दीपकुं | ७६००००० | १३६८०००००० |
| अरिपुं | ७६००००० | १३६८०००००० |
| दिशाकुं | ७६००००० | १३६८०००००० |
| सामिनाकुं | ७६००००० | १३६८०००००० |
| वासुकुं | ८६००००० | १७२८०००००० |
| एवमर्धावालोके | ७७७००००० | १३८२६०००००० |

नंदीसरकल्पः



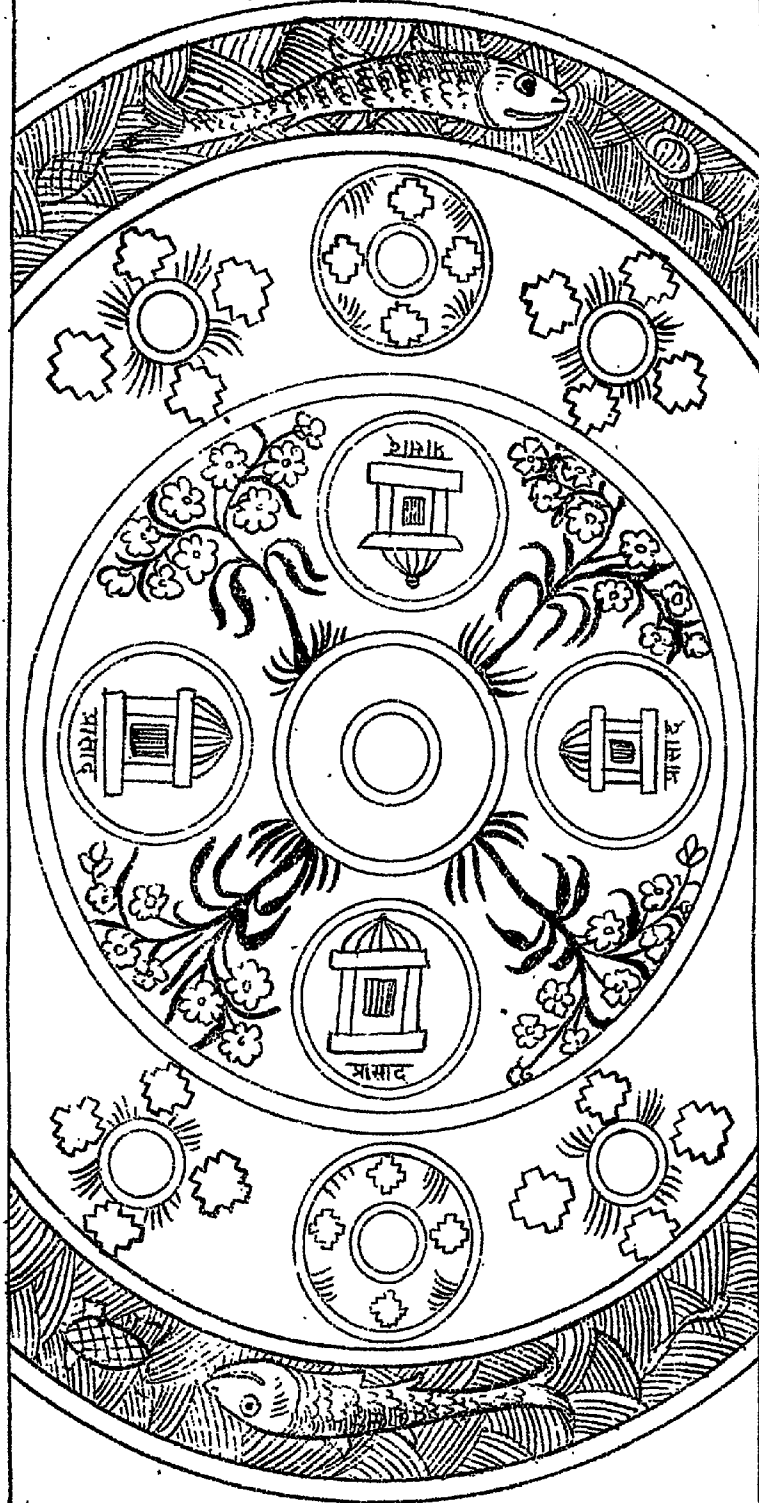
ई४



ई५

नंदीसरद्वीपस्थापना.

कुंमल द्वीप स्थापना.



एटला आंक अठ्यावीशमा जागमां आवे, उपर आठनो आंक वधे. एटली संख्याये पुरुष जाणवा. एटले १७१७५९९ एटली कोनाकोनी कोनी, अने १३१६५११ एटली को डाकोडी तथा १७९९१११ एटली कोनी तेनी उपर १७७७११६ एटला पुरुष जाणवा.

हवे पुरुषथी सत्तावीश गुणी स्त्री ठे, माटे ए आंकने सत्तावीश गुणो करीये, तेवारे ९६३७७५७५, १७१६११०, ३७७१३३४, ५७५११०१ ए उंगणत्रीश आंक आवे, तेटली संख्याये स्त्री जाणवी. एटले सात कोड कोडाकोनी कोनी, त्रेशठ लाख कोनाकोडी कोनी, अछाणुं हजार कोडाकोनी कोनी, पांचशें कोडाकोनी कोडी, पंचाशी कोनाको डी कोडी, तथा अठ्यावीश लाख कोडाकोडी, शोल हजार कोडाकोडी, एकशो कोडाको डी, वीश कोडाकोडी, तथा उंगणचालीश लाख कोडी, बासी हजार कोडी, बशे कोडी, चोत्रीश कोडी, उपर उंगणसाठ लाख, बावन हजार, एकशो ने बे. एटले आंके स्त्री जाणवी. अर्थात् (९६३७७५७५) एटली कोडाकोडी कोडी, तथा (१७१६११०) एट ली कोडाकोडी, तथा (३७७१३३४) एटली कोडी तेनी उपर (५७५११०१) एटले आं के स्त्री ठे. ए स्त्रीना आंकनी साथे पूर्वोक्त पुरुषना आंकनी संख्यानो आंक तथा जे अ ठ्यावीशे जाग आपतां उपर आठ वध्या ठे, ते सर्व एकठा मेलवीये, तेवारे पूर्वोक्त उ गणत्रीश आंक पूर्ण थाय. एटला आंके गर्जज मनुष्य ठे. ए प्रकारे गर्जज मनुष्य पूर्वोक्त आंक जेटला होय परंतु आंक न्हाना महोटा न होय, तेमां पुरुषथी स्त्री सत्तावीश गुणी अधिक होय. अटपबहुत्वमां पुरुषथकी स्त्री संख्यातगुणी अधिक कही ठे. इहां पूर्वोक्त आंकने अठ्यावीशे जाग आपतां उपर आठनो आंक वधे ठे, पण सत्यावी श वधता नथी ते वात गीतार्थगम्य जाणवी. तेनो निर्णय गीतार्थ करी आपे.

वली अटपबहुत्वना अछाणुं द्वार जोतां सर्वथी थोडा गर्जज मनुष्य कहां ठे, ते संख्याती कोडाकोनी प्रमाण पूर्वोक्त उंगणत्रीश आंके संख्या जाणवी.

इहां केटलाएक एम कहे ठे के उंगणत्रीश आंके गर्जज मनुष्य ठे, ते आंकखरे खरा ठे परंतु तेमां कालविशेषे न्हाना महोटा आंक लेवा जोइये. जेम बे एकडाये अगीयारनो आंक थाय अने बे नवडाये नवाणुं आंक पण थाय. तेम श्रीअजितनाथ जीना वखतमां मनुष्यनी संख्या घणी होय तेवारे महोटा आंक लेवा अने बडा आ राने विषे माणस खटप होय तेवारे न्हाना आंक लेवा, एवी रीते केटलाक श्रीजिन शासनना रहस्यना अनजिज्ञपणथी कहे ठे. ते असत्य कहे ठे. जेमाटे पंचांगीने वि षे एटलाज आंक कहा ठे ते न्हाना महोटा केम थाय ?

जे कारणे श्रीअनुयोगद्वारसूत्रमध्ये कछुं ठे के:- जेवारे जघन्यथी मनुष्य होय, ते

वारे एकडानो आंक मांमी तेने बन्नुं वार बमणो करीये, तेवारे जे आंक आवे ते आंक प्रमाण मनुष्य ठे. अथवा एकनो वर्ग न होय अने बेनो वर्ग चार थाय, ए प्रथम वर्ग कहेवाय. चारनो वर्ग शोल थाय ए बीजो वर्ग. शोलनो वर्ग बरो ठप्पन थाय, ते त्रीजो वर्ग. तेनो वर्ग ६५५३६ थाय ते चोथो वर्ग. तेनो वर्ग ४२५५६९५६ थाय ते पांचमो वर्ग. तेनो वर्ग १८४६९४४०९२९०५५१६१६ ए ठठो वर्ग. इहां पांचमो वर्ग ठठो वर्ग साथे गणतां पूर्वोक्त आंक आवे ते आंकप्रमाणे गर्जज मनुष्य ठे.

हवे ए पूर्वोक्त उगणत्रीश आंकप्रमाणे जे गर्जज मनुष्यनी संख्या कही, ते सर्व मनुष्य जो अढीद्वीपमां विचरता लहीये, तो समाइ शके नही. केम के अढीद्वीपनी चूमि पीस्तादीश लाख योजन प्रमाण ठे. तेनी परिधि १४३३०२४ ए योजन एक गाउ १९६६ धनुष्य उपर चार अंगुल ठे. अने अढीद्वीपनुं गणितपद करीये, तो पीस्तादीश लाख विष्कंजनो चोथो जाग सवा अगीयार लाख योजन थाय, तेने पूर्वोक्त परिधि ना योजन साथे गणीये, तो १६००००३०६१५४४५ योजन, त्रण गाउ, ७७१ धनुष्य थाय. ए सर्व प्रमाणांगुले योजन जाणवा. ते एक प्रमाणांगुल योजन मनुष्य संबंधी दश लाख योजन थाय, तेनी रीत बतावे ठे.

उक्तं च ॥ अंगुलसप्ततिकायां ॥ सहस्समाणे चउरं, सजोयणे दीह पिहुल जावा एं ॥ हुंति परुप्परगणणे, लस्का दस जोयणाण फुडं ॥ १ ॥ एक प्रमाणांगुल योजन ठे, ते उत्सेधांगुल सहस्सगुणं जाणवुं. तो एक जोयण चउरस्र प्रमाणांगुले ठे, ते सहस्सगुणं लांबु अने सहस्सगुणं पहोळुं होय, तेवारे सहस्सने सहस्सगुणं करतां माणसना दश लाख योजन स्फुट एटले प्रगट थाय.

हवे एक योजनचूमिना प्रमाणांगुल ५०००२४०००००० एटले अठावन हजार को डी, नवरो कोमी, बासी कोमी, उपर चादीश लाख थाय. ते आवी रीते के:- एक योजन चूमिनां आठ हजार धनुष्य थाय. तेने एक धनुष्यना बन्नुं अंगुले गुणतां ९६०००० थाय, ते समचउरस्र योजन ठे, माटे तजुणा करीये तेवारे पूर्वोक्त ५०००२४०००००० प्रमाणांगुल थाय. तेने पूर्वोक्त अढीद्वीप संबंधी गणितपदना जेटला योजन कह्या ठे, तेनी साथे गुणीये तेवारे ५४४५१०४६८१२९५४९६८१००००००० एटला प्रमाणांगुल गणितपदना जे योजन, गाउ, धनुष्य तथा अंगुल कह्या तेना थाय.

एवुं एक समचउरस्र प्रमाणांगुल ते मनुष्यना हजार आंगुल लांबुं अने हजार आंगुल पहोळुं समचउरस्र जाणवुं. माटे हजारने हजार गुणं करतां दश लाख उडेद अंगुल थाय, तेने एक समचउरस्र हाथनी चोवीशआंगुलने चोवीशे गुणतां ५९६ आंगुल

थाय. ते आंगुले जाग आपीये, तेवारे १७३६ हाथ लाजे. शेष ६४ अंगुल वधे. हवे ते पूर्वोक्त गणितपदना अंगुलने सत्तरशे ने ठत्रीश हाथे गुणीये, तेवारे १६३७८१ए८२२२४६७०११७१७४३८ए२१११३६ एटला हाथ उहेद अंगुले थाय. तथा चोशठनो आंक वधयो ठे. ते गणितपदना अंगुल साथे चोशठ गुणो करी ५७६ जागे वहेचतां १०४ए१६७८३ए७ए७२१०५ए७७ए६८२२ हाथ थाय. शेष ४ए७ वधे. हवे ए हाथनी राशि पूर्वोक्त मूलहाथनी राशि मध्ये प्रहेपिये, तेवारे १६३७ए७४७३ए०२ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ एटला हाथ थाय. ते सर्व गणितपदना उहेद आंगुले हाथ जाणवा. आ वे पानाना गणित तपास्या नथी.

हवे ए सर्व त्रीश आंक ठे, ते पीस्तालीश लाख योजन मनुष्य क्षेत्र ठे, माटे पीस्तालीश लाखने जागे वहेचीये, तेवारे एक जागे ३६३ए८३२७५३३ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ एटला आवे. शेष २१०७ए७ एटला आंक वधे, तेने जाग पहेचने नही.

हवे पीस्तालीश लाख योजनमां पण वीश लाख समुद्रनी जूमि ठे, अने पच्चीश लाख द्वीपनी जूमि ठे, तिहां समुद्रनी जूमिमां माणसनी वस्ती नथी. मात्र अंतरद्वीप ठे ते खटप ठे तेनी विवहा करता नथी. ते माटे समुद्रनी जूमि रहित मात्र द्वीपनी पच्चीश लाख योजन जूमि ठे, तेने एक जागमां आवेली पूर्वोक्त हाथनी राशि साथे गुणतां १०७ए७५८१८८३४ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ए७ एटली राशि आवे. ए पण उंगण त्रीश आंक ठे, ते पूर्वोक्त सातकोनी इत्यादि गर्ज मनुष्यना उंगणत्रीश आंकनी राशिने वहेची आपतां एकेका माणसने जागे एकेक हाथ जूमिजाग आवे ठे तेमां सुवाय वेसाय नही. तेमज पर्वत, नदी, डह, वन, अटवी प्रमुख माणस विनानी जूमि पण घणी बूटी पडेली देखाय ठे अने अटपमात्र जूमिमध्ये मनुष्य रहे ठे माटे पूर्वोक्त संख्याना मनुष्य एटली जूमिमां समाइ शके नही? एवी शंका उत्पन्न थाय.

हवे पूर्वोक्त शंकानुं समाधान करे ठे. जे माटे श्रीवीतरागना वचनमां कांइ पण संदेह नथी. जे उंगणत्रीश आंक प्रमाण गर्ज मनुष्य कहां ठे. ते सदा सर्वदा काल एटलांज ठे, पण उठां अधिकां नथी. इहां समाधान आ ठे, के:-पुरुषथी स्त्री सत्यावीश गुणी अधिक ठे. अने गर्ज धारण करनारी पण तेज ठे अने तेना गर्जमां उत्कृष्टथी नवलाखनी संख्याये पण गर्ज मनुष्य होय ठे. अने जघन्य मध्यम पण होय ठे पण स्त्रीनी राशि महोटी ठे तेथी तेना गर्जमां गर्ज मनुष्योनी महोटी संख्या सर्वदा रही शके एवो निर्धार ठे माटे घणा जीव गर्जमां होवा जोइये. अने खटपजीव गर्ज आवे होवाथी तेटला जीव पृथ्वीमां सुखथी रही शके ठे. एम कहेवाथी जैनक्रियानो

लोप न थाय. पढी केवली कहे ते सत्य जाणवुं. पण गोखवुं, चिंतवुं, अने पूढवुं. एनुं नाम त्रिपद्दीविद्या कहेवाय. जगतमां त्रिपद्दी विद्यानी कहेवत ते तैथी सांशयिक वातोनुं समाधान थाय ते ॥ इति अढीद्वीप मनुष्य संख्याप्रमाणं समाप्तम् ॥

॥ अथ चोवीश दंडक उपर पांत्रीश बोल उतारवानो थोकडो प्रारंजिये ठैये ॥
समस्त संसारीजीव, चारगतिमां रहेला चोवीश दंडकोने विषे परित्रमण
करे ते. ते चोवीश दंरुकनां नाम कहे ते.

१ प्रथम सात नारकीनो एक दंडक, ते साते नारकीनां नाम तथा गोत्र नीचे प्रमाणे ते.
नाम. १ धमा. २ वंसा. ३ सैला. ४ अंजणा. ५ रिष्ठा. ६ मघा. ७ माघवती.
गोत्र. रत्नप्रजा. शर्करप्रजा. वालुकप्रजा. पंकप्रजा. धूमप्रजा. तमःप्रजा. तमस्तमःप्रजा.

॥ ११ त्यार पढी दश जुवनपतिदेवोना जे दश दंरुक ते तेमां नाम लखिये ठैये ॥

१ असुरकुमार निकायनो दंडक. २ नागकुमार निकायनो दंडक.
३ सुवर्णकुमार निकायनो दंडक. ४ विद्युत्कुमार निकायनो दंरुक.
५ अशिकुमार निकायनो दंडक. ६ द्दीपकुमार निकायनो दंडक.
७ उदधिकुमार निकायनो दंरुक. ८ दिशिकुमार निकायनो दंरुक.
९ वायुकुमार निकायनो दंरुक. १० स्तनितकुमार निकायनो दंरुक.

११ बारमो पृथिवीकायनो दंरुक, तेनां मूल नाम ठ ते. ते लखिये ठैये.

१ सुना. २ सुधा. ३ वालुया. ४ मणसिल. ५ शर्करा. ६ खरपुढवी.

॥ हवे ए पृथिवीकायना जेद कहे ते ॥

१ स्फाटिकरत्न २ मणिरत्न. ३ परवालां. ४ रागरत्न. ५ हिंगलो. ६ हरताळ.
७ मणसिल. ८ पारो. ९ सोनुं. १० रूपुं. ११ त्रांबुं. १२ लोडुं.
१३ जसत. १४ शींसुं. १५ कथिर. १६ खडीमाटी १७ हरमजी वानी.
१८ अरणेटो पाषाण. १९ पदेवो पाषाण. २० अबरखनी जाति. २१ तूरी माटीनी जाति.
२२ खारी माटीनी जाति. २३ माटीनी सर्व जाति. २४ पाषाणनी सर्व जाति.
२५ सुरमानी जाति. २६ अंजननी जाति. २७ दूणनी जाति. इत्या
दि पृथिवीकायना असंख्य जेद जाणवा.

२३ तेरमो अप्रकायनो दंडक, तेना जेद कहे ते.

१ जमीननुं पाणी. २ आकाशनुं पाणी. ३ ठारनुं पाणी. ४ हिमनुं पाणी.
५ रोयडानुं पाणी. ६ नीलीवनस्पति उपर पाणीना बिंडु. ७ मांकनुं पाणी. ८ घनोदधि.

१४ चौदमो तेजकायनो दंडक ठे, तेना जेद कहे ठे.

- १ अंगारानो अग्नि. २ ज्वालानो अग्नि. ३ त्रासडनो अग्नि.
४ उदकापातनो अग्नि. ५ कणियानो अग्नि. ६ विजलीनो अग्नि.

१५ पंदरमो वाजकायनो दंडक ठे, तेना जेद कहे ठे.

- १ उद्दामकवायु. २ मंदवायु. ३ औत्कलिकवायु. ४ मांडलिकवायु.
५ मुखशुद्धवायु. ६ गुंजवायु. ७ घनवात. ८ तनुवात.

१६ शोलमो वनस्पतिकायनो दंडक ठे, तेनी मूलजाति पांच ठे, ते कहे ठे.

- १ गुह्या. २ गुमा. ३ वलया. ४ वल्ली. ५ पतिरण.

हवे एना वे जेद कहे ठे.

१ जे एक शरीरमां अनंता जीव होय, ते साधारण वनस्पति. २ जे एक शरीरमां एक जीव होय, ते प्रत्येक वनस्पति. ए रीते एना पण जेदानुजेद असंख्य ठे.

१७ सत्तरमो बेंद्रियनो दंडक ठे, तेना जेद कहे ठे.

- १ शंख. २ कोडा. ३ गंमोला. ४ जलो. ५ अलसीयां
६ लारीयां. ७ मेहरी. ८ क्रमिया. ९ पाणीना पूरा.

१८ अठारमो त्रींद्रियनो दंडक ठे, तेना जेद कहे ठे.

- १ कानखजुरा. २ मांकड. ३ जू. ४ कीकियो. ५ उहेही. ६ मंकोडा
७ ईल. ८ घीमेल. ९ सावा. १० गोक्रीना. ११ गदहीयां. १२ विष्टाना कीडा.
१३ गोबरना कीडा. १४ धनेडियां. १५ कंथुआ. १६ गोपालिक. १७ इंद्रगोप.

१९ उगणीशमो चौरिंद्रियनो दंडक ठे, तेना जेद कहे ठे.

- १ वींठी. २ ठंकण. ३ त्रमरा. ४ त्रमरी. ५ टीनी. ६ माखी.
७ डांस. ८ मडर. ९ पतंगिया. १० कंसारी. ११ कोईवाना.

२० वीशमो तिर्यच पंचेंद्रियनो दंडक ठे, तेना जेद कहे ठे.

- १ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर. ४ उरःपरिसर्प. ५ जुजपरिसर्प. ए पांच गर्पज
तिर्यच अने एज पांच संमूर्धिम तिर्यच पंचेंद्रिय एम सर्व दश जेदें थाय.

२१ एकवीशमो मनुष्यनो दंडक ठे, तेना जेद कहे ठे.

- १५ पंदर कर्मभूमिदेत्रना. ३० त्रीश अकर्मभूमिदेत्रना. ५६ ठप्पन अंतरद्वीप
ना. ए सर्व मली एकशो ने एक क्षेत्रवासी होवाथी एटलाज जेदो थया.

चोवीश दंडके पांत्रीश द्वारः

२२ बावीशमो व्यंतरदेवनो दंडक ठे, ते बे प्रकारे ठे.

तिहां एक व्यंतर निकाय, तेना आठ जेद ठे.

१ पिशाच. २ जूत. ३ यक्ष. ४ राक्षस. ५ किन्नर. ६ किंपुरुष. ७ महोरग. ८ गंधर्व.
बीजी वाणव्यंतरनिकाय, तेना पण आठ जेद ठे.

१ अणपनि. २ पणपनि. ३ हसिवादी. ४ जूतवादी. ५ कंदी. ६ महाकंदी. ७ कोहंड. ८ पतंग.

२३ त्रेवीशमो ज्योतिषी देवनो दंडक, पांच प्रकारे ठे.

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

२४ चोवीशमो वैमानिक देवनो दंडक, तेना मूल बे जेद ठे.

१ एक कल्प एटले आचारवाला देवो, ते बार देवलोकना जेदे करी बार प्रकारे ठे,
ते बार देवलोकनां नाम कहिये ठैये.

१ सौधर्म देवलोक. २ ईशान देवलोक. ३ सनत्कुमार देवलोक. ४ माहेंद्र देवलोक.

५ ब्रह्मदेवलोक. ६ लांतक देवलोक. ७ महाशुक्र देवलोक. ८ सहस्रार देवलोक.

९ आनंत देवलोक. १० प्राणत देवलोक. ११ आरण देवलोक. १२ अच्युत देवलोक.

१ बीजा कल्पतीत एटले जेने विषे स्वामी सेवक संबंध नथी एवा देवो तेनां मूल

बे प्रकार ठे. एक नव ग्रैवेयकवासी, बीजा पांच अनुत्तरविमानवासी.

तेमां प्रथम नवग्रैवेयकनां नाम कहे ठे.

१ सुदर्शन. २ सुप्रतिवक्र. ३ मनोरम. ४ सर्वतोन्नद. ५ विशाल.

६ सुमनस. ७ सोमनस. ८ प्रतिकर. ९ आदित्य.

हवे पांच अनुत्तरविमाननां नाम कहे ठे.

१ विजय. २ विजयंत. ३ जयंत. ४ अपराजित. ५ सर्वार्थसिद्ध.

ए रीते ए चोवीश दंडकनां जेद सहित नाम कहां.

हवे ए प्रत्येक दंडके पांत्रीश द्वार कहेशे, तेनां नाम लखीये ठैये.

तिहां पहेलुं शरीरद्वार पांच प्रकारे ठे तेनां नाम कहे ठे.

१ औदारिक शरीर. २ वैक्रिय शरीर. ३ आहारकशरीर. ४ तैजसशरीर. ५ कार्मणशरीर

६ बीजुं श्रवगाहनद्वार, ते प्रत्येक दंडके जघन्य तथा उत्कृष्ट ए बेजेदे शरीरनुं प्रमाण कहेंबुं.

३ त्रीजुं संघयणद्वार ते ठ प्रकारे ठे.

१ वज्ररुषज्जनाराच संघयण. २ रुषज्जनाराच संघयण. ३ नाराच संघयण.

४ अर्द्धनाराच संघयण. ५ कीलिका संघयण. ६ ठेवहुं संघयण.

४ चोथुं संज्ञाद्वार, दश प्रकारे ठे. तेनां नाम कहे ठे.

१ आहारसंज्ञा. २ जयसंज्ञा. ३ मैथुनसंज्ञा. ४ परिग्रहसंज्ञा. ५ क्रोधसंज्ञा.
६ मानसंज्ञा. ७ मायासंज्ञा. ८ लोभसंज्ञा. ९ लोकसंज्ञा. १० उषसंज्ञा.

तथा नीचे लखेद्वी ठ संज्ञा साथे मेलवतां शोल प्रकार पण थाय ठे. तेनां नाम कहे ठे.

१ सुखसंज्ञा. २ दुःखसंज्ञा. ३ मोहसंज्ञा. ४ दुर्गंठासंज्ञा. ५ शोकसंज्ञा. ६ धर्मसंज्ञा

५ पांचमुं संस्थानद्वार ठ प्रकारे ठे. तेनां नाम कहे ठे.

१ समचतुरस्र संस्थान. २ निगोहपरिमंरुल संस्थान. ३ सादि संस्थान.

४ कुब्ज संस्थान. ५ वामन संस्थान. ६ हुंडक संस्थान.

आहीं पंचेंद्रियनां संस्थान कहे ठे.

१ स्पर्शेंद्रियनुं नाना प्रकारनुं संस्थान ठे. २ रसेंद्रियनुं खुरपा सरखुं संस्थान ठे.

३ घ्राणेंद्रियनुं अचंता वृद्धना सरखुं संस्थान ठे. ४ चक्षुरिंद्रियनुं मसूरनी दाळ

सरखुं अर्द्ध चंद्राकारे संस्थान ठे. ५ श्रोत्रेंद्रियनुं कटपवृद्धना फूल सरखुं संस्थान ठे.

६ ठतुं कषाय द्वार, ते १ क्रोध. २ मान. ३ माया. अने ४ लोभ. ५ चार प्रकारे ठे,

७ सातमुं लेश्याद्वार ठ प्रकारे ठे.

१ कृष्णलेश्या. २ नीललेश्या. ३ कापोतलेश्या. ४ तेजोलेश्या. ५ पद्मलेश्या. ६ शुक्ललेश्या.

आठमुं इंद्रियद्वार, पांच प्रकारे ठे.

१ स्पर्शेंद्रिय. २ रसेंद्रिय. ३ घ्राणेंद्रिय. ४ चक्षुरिंद्रिय. ५ श्रोत्रेंद्रिय.

६ नवमुं समुद्घात द्वार सात प्रकारे ठे.

१ वेदना समुद्घात. २ कषाय समुद्घात, ३ मरण समुद्घात. ४ वैक्रिय समुद्घात.

५ तैजससमुद्घात. ६ आहारक समुद्घात. ७ केवलि समुद्घात.

१० दशमुं दृष्टिद्वार. १ सम्यक्दृष्टि. २ मिथ्यादृष्टि. ३ मिश्रदृष्टि. ४ त्रण प्रकारे ठे.

११ अगीयारमुं दर्शनद्वार, चार प्रकारे ठे.

१ चक्षुर्दर्शन, २ अचक्षुर्दर्शन. ३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

१२ बारमुं ज्ञानद्वार आठ प्रकारे ठे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनः पर्यवज्ञान.

५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ८ विचंगज्ञान.

९ रीते पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञान मदीं, आठ प्रकारे ज्ञानद्वार ठे.

१३ तेरमुं योगद्वार पन्नर प्रकारे ठे.

१ सत्यमनोयोग. २ असत्यमनोयोग. ३ सत्यामृषामनोयोग. ४ असत्यामृषामनोयोग

५ सत्यवचनयोग. ६ असत्यवचनयोग. ७ सत्यामृषावचनयोग. ८ असत्यामृषावचनयोग.
 ९ औदारिक काययोग. १० औदारिकमिश्र काययोग. ११ वैक्रियकाययोग.
 १२ वैक्रियमिश्र काययोग १३ आहारक काययोग. १४ आहारकमिश्र काययोग.
 १५ कर्मण काययोग. एवं पन्नर योग जाणवा.

चौदमुं उपयोगद्वार. ते पांच ज्ञान, तथा त्रण अज्ञान अने चार दर्शन मली, बार प्रकारे ते.

| | | | |
|-----------------|-------------------|----------------|------------------|
| १ मतिज्ञान. | २ श्रुतज्ञान. | ३ अवधिज्ञान. | ४ मनःपर्यवज्ञान. |
| ५ केवलज्ञान | ६ मतिअज्ञान. | ७ श्रुतअज्ञान. | ८ विजंगज्ञान. |
| ९ चक्षुर्दर्शन. | १० अचक्षुर्दर्शन. | ११ अवधिदर्शन. | १२ केवलदर्शन. |

१५ पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंरुकने विषे एक समयमां केटला जीव आवी उपजे? तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१६ सोलमुं च्यवनद्वार ते प्रत्येक दंरुकने विषे एक समयमां केटला जीव च्यवे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१७ सत्तरमुं आयुष्य ते चार गतिआश्री चार प्रकारे ते. तेमां कया कया दंरुके केटलुं आयुष्य ते? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

१८ अठारमुं पर्यासितुं द्वार ७ प्रकारे ते.

| | | |
|-----------------------|------------------|-------------------|
| १ आहारपर्यासि. | २ शरीरपर्यासि. | ३ इंद्रियपर्यासि. |
| ४ श्वासोष्वासपर्यासि. | ५ ज्ञाषापर्यासि. | ६ मनःपर्यासि. |

१९ उगणीशमुं दिग्आहार द्वार ७ प्रकारे ते.

| | | |
|--------------------|--------------------|-------------------|
| १ अधोदिशि आहार. | २ ऊर्ध्वदिशि आहार. | ३ पूर्वदिशि आहार. |
| ४ पश्चिमदिशि आहार. | ५ दक्षिणदिशि आहार. | ६ उत्तरदिशि आहार. |

२० वीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारे ते.

१ दीर्घकालिकी संज्ञा. २ हितोपदेशिकी संज्ञा. ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा.

एकवीशमुं गतिद्वार ते कयादंरुकनो जीव मरीने कया कया दंडकमां जाय? ते कहेवानुं द्वार.

बावीशमुं आगति ते कया दंरुकने विषे कया दंरुकना जीव, आवी उपजे? ते कहेवानुं द्वार.

२३ त्रेवीशमुं वेद द्वार. १ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद. ए त्रण प्रकारे ते.

२४ चौबीशमुं अट्पाबहुत्वनुं द्वार. अष्टाणुं प्रकारे ते. ते प्रकार कहे ते.

१ सर्वथकी थोना गर्जज मनुष्यसंख्याती कोडाकोडी प्रमाण ते, तेमाटे अल्पते.

२ तेथकी मनुष्यनी स्त्री संख्यातगुणी अधिक ते, एटले सत्यावीश गुणी ते. ए वे

बोल मली अढीढीपमांहेला एकशो ने एक क्षेत्रना मनुष्यनी संख्या कहे ते.

(७९९९७१६९५१२३४६४३३७५९३५४३९५०३३६) एटले सात क्रोड कोडा कोडीकोडी, बाणुं लाख कोडाकोडीकोडी, अठ्यावीश हजार कोडाकोडीकोडी, एकशो कोडा कोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, बहेंतालीश हजार कोडाकोडी, बशो कोडाकोडी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्रीश लाख कोडी, उंगणशाठ हजार कोडी, त्रणशो कोडी, चोपन कोडी, उंगणचालीश लाख, पचास हजार, त्रणशो ने बत्रीश. एटली संख्याये मनुष्य ठे. तेना अठ्यावीश जाग करी ये, तेमां एक जाग जेटला पुरुष ठे, अने सत्यावीश जाग जेटली स्त्री ठे.

- ३ तेथकी बादर तेजकायपर्यासा असंख्यातगुणा एक आवलिकाना समयनो वर्ग करी तेने कांझक न्यून आवलिकाना समयसाथे गुणतां जेटला समय थाय, तेटला ठे.
- ४ तेथकी अनुत्तरविमानवासी देवो असंख्यात गुणा ठे. क्षेत्र पद्योपमने असंख्यात मे जागे जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला ठे.
- ५ तेथकी उपरला त्रण ग्रैवेयकना देवता संख्यात गुणा ठे. विमान घणा ठे माटे.
- ६ तेथकी मध्य त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा ठे.
- ७ तेथकी नीचला त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा ठे.
- ८ तेथकी अच्युतदेवलोकना देवता संख्यात गुणा ठे.
- ९ तेथकी आरण्यदेवलोकना देवो संख्यात गुणा ठे.
- १० तेथकी प्राणात देवलोकना देवो संख्यात गुणा ठे.
- ११ तेथकी आनत देवलोकना देवो संख्यात गुणा ठे.
- १२ तेथकी सातमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे. घनीकृत लोकनी एक श्रेणिना असंख्याता जागमां जेटला आकाश प्रदेशनी राशि ठे, तेटली संख्याये ठे.
- १३ तेथकी ठठी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे, केम के नरकावासा घणा ठे, तथा उत्कृष्ट पापी जीवोथकी हीनपापी जीवो घणा होय ते इहां उपजे.
- १४ तेथकी सहस्रार देवलोकना देवो असंख्यात गुणा ठे.
- १५ तेथकी महाशुक देवलोकना देवता असंख्यात गुणा ठे, तिहां विमान घणां ठे माटे.
- १६ तेथकी पांचमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे.
- १७ तेथकी लांतकदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा ठे.
- १८ तेथकी चौथी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे.
- १९ तेथकी ब्रह्मदेवलोकना देवो असंख्यात गुणा ठे.
- २० तेथकी त्रीजी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे.

- २१ तेथकी माहेंद्रदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा ठे.
- २२ तेथकी सनत्कुमार देवलोकना देवता असंख्यात गुणा ठे.
- २३ तेथकी बीजी शर्करप्रजा नरक पृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे. बारमा बो लथी मांकीने आ त्रेवीशमा बोल पर्यतना बार बोलमां प्रत्येके सर्व घनीकृत लोक नी एक श्रेणीने असंख्यातमे जागे जेटला आकाश प्रदेश होय, ते प्रमाणे ठे अने एकेकथी असंख्यात गुणा कख्या ठे. कारण के असंख्याताना असंख्याता जेद ठे तेमाटे एमां विरोधता समजवी नहीं.
- २४ तेथकी संमूर्धिम मनुष्य असंख्यात गुणा ठे. अंगुल प्रमाण क्षेत्र प्रदेश रासिसंबंधी त्रीजा वर्ग मूलने प्रथम वर्ग मूलसाथे गुणतां जे प्रदेश थाय तेटला ठे.
- २५ तेथकी ईशानदेवलोकना देवता असंख्यातगुणा ठे. अंगुल मात्र आकाश क्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी बीजो वर्ग मूल तेने त्रीजा वर्ग मूल साथे गुणतां जेटला प्रदेश थाय, तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणियो लेवी, तेने विषे जेटला आकाश प्रदेश होय, तेटला ईशानदेवलोकना देवता ठे.
- २६ तेथकी ईशानदेवलोकनी वसनारी देवीयो संख्यातगुणी अधिक ठे, बत्रीश गुणीठे माटे
- २७ तेथकी सौधर्मदेवलोकना देवता संख्यातगुणा ठे, केम के तिहां विमान घणां ठे, अने वली दक्षिणदिशिये कृष्णपक्षी जीव घणा ठे माटे.
- २८ तेथकी सौधर्म देवलोकवासी देवी, बत्रीश गुणी ठे, माटे संख्यातगुणी ठे.
- २९ तेथकी जवनपति देवता असंख्यात गुणा ठे. कारण के एक अंगुलमात्र आकाश क्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी प्रथम वर्गमूल तेने त्रीजा वर्गमूल साथे गुणतां जे प्रदेशराशि थाय, तेटली घनीकृत लोकनी एकप्रदेशिक श्रेणिंठेने विषे जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला ठे. इहां यद्यपि प्रदेश असंख्याता ठे तथापि असत्कल्पनाये २५६ कल्पिये तेनो प्रथम वर्ग मूल १६ थाय, बीजो वर्गमूल चार थाय अने त्री जो वर्गमूल वे थाय माटे शोलने वे साथे गणीये तेवारे बत्रीश थाय.
- ३० तेथकी जवनपतिनी देवीयो बत्रीश गुणी ठे, माटे संख्यातगुणी ठे.
- ३१ तेथकी पहेला रत्नप्रजा नामा नरकपृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा ठे, अंगुल प्रमाण आकाशक्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी प्रथमवर्ग मूल तेने बीजा वर्गमूलनी साथे गुणतां जे प्रदेश थाय, तावत् प्रमाण श्रेणियोमां जे आकाश प्रदेश थाय तेटला ठे.
- ३२ तेथकी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिया पुरुष असंख्यात गुणा ठे, जेमाटे एकप्रदेशी प्र तरना असंख्यातमा जागमां असंख्याती आकाश प्रदेशनी श्रेणिगत प्रदेश प्रमाण ठे.

- ३३ तेथकी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यच योनिनी स्त्रीयो त्रिगुणी ठे. माटे संख्यात गुणी ठे.
- ३४ तेथकी स्थलचर पंचेंद्रिय योनिया पुरुष संख्यात गुणा ठे जेमाटे एक बृहत्प्रतरना असंख्यातमा जागमां जे आकाश प्रदेशनी असंख्याती श्रेणी ठे, तेटली श्रेणीमां जेटला आकाश प्रदेश ठे, तावत् प्रमाण ए जीवो ठे.
- ३५ तेथकी स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यचयोनि संबंधी स्त्रीयो त्रिगुणी ठे, संख्यातगुणी जाणवी.
- ३६ तेथकी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिया पुरुष संख्यात गुणा ठे, जे माटे अतिप्रभूत एक प्रतरना असंख्यातमा जागमां असंख्य आकाश प्रदेशनी श्रेणीगत जेटला आकाश प्रदेश ठे, तावत् प्रमाण ठे.
- ३७ तेथकी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यच योनिवाली स्त्रीयो त्रिगुणी ठे, माटे संख्यातगुणी
- ३८ तेथकी व्यंतरनिकायना देवो संख्यातगुणा ठे, संख्यात कोडाकोडी योजन प्रमाण एक प्रतरने विषे जेटला सूचीरूप खंड थाय, तावत् प्रमाण ठे.
- ३९ तेथकी व्यंतरदेवीयो संख्यातगुणी ठे, बत्रीश गुणी माटे.
- ४० तेथकी ज्योतिषी देवता संख्यातगुणा ठे, एक प्रतरने विषे बरो ढप्पन अंगुल प्रमाण एक सूचीरूप खंड एवा जेटला खंड थाय तेटली संख्याये ठे.
- ४१ तेथकी ज्योतिषिक देवीयो बत्रीश गुणी ठे माटे संख्यात गुणी कहेवी.
- ४२ तेथकी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा ठे.
- ४३ तेथकी स्थलचर पंचेंद्रितिर्यचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा ठे.
- ४४ तेथकी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा ठे.
- ४५ तेथकी चौरिंद्रिय पर्यासा संख्यातगुणा ठे. एक प्रतरने विषे जेटला एक अंगुलना संख्यातमा जाग प्रमाणवाला जेटला सूचीखंड थाय, तेटला ठे.
- ४६ तेथकी सर्व पंचेंद्रिय पर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ४७ तेथकी बेंद्रिय पर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ४८ तेथकी त्रींद्रिय पर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ४९ तेथकी पंचेंद्रिय अपर्यासा विशेषाधिक ठे. एक प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा जाग प्रमाण जेटला सूची खंड थाय, तेटला ठे.
- ५० तेथकी चौरिंद्रिय अपर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ५१ तेथकी त्रींद्रिय अपर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ५२ तेथकी बेंद्रिय अपर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ५३ तेथकी प्रत्येक शरीरवाला वादर वनस्पतिकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ठे.

- एक प्रचूत प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा जागप्रमाण जेटला सूचीखंरु थायतेटलावे.
- ५४ तेथकी बादरनिगोद पर्यासा अनंतकायनां शरीर असंख्यात गुणां ठे. जे माटे संख्याता प्रतरमां एक अंगुलना असंख्याता जाग जेवना जेटला सूचीखंड समाइ शके, तेटला खंड प्रमाण ठे.
- ५५ तेथकी बादर पृथ्वीकायिया पर्यासा जीव असंख्यात गुणा ठे, जेमाटे प्रचूत संख्याता प्रतरमध्ये अंगुलना असंख्यात जाग मात्र सूचीखंरु जेटला समाइ शके तेटला ठे.
- ५६ तेथकी बादर अप्रकायिया पर्यासा असंख्यात गुणा ठे.जेमाटे अत्यंत प्रचूत संख्याता प्रतर मध्ये अंगुलना असंख्य जागमात्र जेटला सूचीखंड समाइ शके, तेटला ठे.
- ५७ तेथकी बादरवायुकायिया पर्यासा जीव असंख्यात गुणा ठे, घनीकृत लोकना अ संख्याता प्रतरने विषे जेटला आकाश प्रदेश ठे तेटला प्रदेश प्रमाण ठे.
- ५८ तेथकी बादर तेजकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ठे, जेमाटे असंख्याता लोकाकाश प्रदेश राशि प्रमाण ठे.
- ५९ तेथकी प्रत्येक शरीरवाला बादर वनस्पतिकायिया अपर्यासा जीव असंख्यात गुणाठे.
- ६० तेथकी बार निगोदीया अपर्यासाना शरीर असंख्यात गुणा ठे.
- ६१ तेथकी बादर पृथ्वीकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ठे.
- ६२ तेथकी बादर अप्रकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ठे.
- ६३ तेथकी बादर वायुकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ठे.
- ६४ तेथकी सूक्ष्म तेजकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ठे. सर्वलोक व्यापी माटे.
- ६५ तेथकी सूक्ष्मपृथ्वीकायिया अपर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ६६ तेथकी सूक्ष्मअप्रकायिया अपर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ६७ तेथकी सूक्ष्मवायुकायिया अपर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ६८ तेथकी सूक्ष्म तेजकायिया पर्यासा संख्यात गुणा ठे. इहां ए सूक्ष्म मध्ये स्वजावे ज अपर्यासाथी पर्यासा घणा ठे माटे.
- ६९ तेथकी सूक्ष्म पृथ्वीकायिया पर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ७० तेथकी सूक्ष्म अप्रकायिया पर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ७१ तेथकी सूक्ष्म वाजकायिया पर्यासा विशेषाधिक ठे.
- ७२ तेथकी सूक्ष्म निगोदनां शरीर अपर्यासा असंख्यात गुणां ठे.
- ७३ तेथकी सूक्ष्म निगोदनां शरीर पर्यासा संख्यात गुणां ठे.
- ७४ तेथकी अजव्यसिद्धिया जीव अनंतगुणा ठे.जघन्ययुक्त चौथा अनंता जेटला ठे माटे.

- ७५ तेथकी पन्निवाइ प्रतिपत्ति सम्यग्दृष्टि जीव अनंतगुणा ठे.
- ७६ तेथकी सिद्धना जीव अनंतगुणा ठे. मध्यमयुक्त पांचमा अनंता जेटवा ठे, माटे.
- ७७ तेथकी बादर वनस्पतिकायिया पर्यासा जीव अनंतगुणा ठे. जेमाटे एक निगोदने अनंतमे जागे सिद्ध ठे, एवा असंख्याता निगोद पर्यासा बादर वनस्पतिमांहे ठे, माटे.
- ७८ तेथकी बादर पर्यासा जीव विशेषाधिक ठे. बादर पर्यासा पृथिव्यादिक प्रक्षेपवाथकी.
- ७९ तेथकी बादर वनस्पतिकायिया अपर्यासा असंख्यातगुणा ठे, जेमाटे एकेक बादर निगोद पर्यासानी निश्राये असंख्याता अपर्यासा निश्चें होय, ते माटे.
- ८० तेथकी बादर अपर्यासा विशेषाधिक ठे, बादर अपर्यासा पृथिव्यादिक प्रक्षेपवाथकी.
- ८१ तेथकी सर्वपर्यासा बादर जीव विशेषाधिक ठे.
- ८२ तेथकी सूक्ष्मवनस्पतिकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ठे, केम के बादर जीवो श्री सूक्ष्म घणा ठे अने वली सर्व लोकव्यापी ठे माटे.
- ८३ तेथकी सूक्ष्म अपर्यासा विशेषाधिक ठे. केम के सूक्ष्म अपर्यासा पृथिव्यादिकने तेमां प्रक्षेपवाथकी विशेषाधिक थाय.
- ८४ तेथकी सूक्ष्मपर्यासा वनस्पतिकायिया जीव संख्यातगुणा ठे, केम के सूक्ष्मपर्यासा मांहे सूक्ष्म अपर्यासा खजावे सदैव संख्यात गुणा प्राप्त होय, माटे.
- ८५ तेथकीसर्व सूक्ष्मपर्यासाजीवविशेषाधिकठे.सूक्ष्मपर्यासा पृथिव्यादिकसाथे जेलवाथी.
- ८६ तेथकी सर्व पर्यासा अपर्यासा सूक्ष्मजीव विशेषाधिक ठे.
- ८७ तेथकी जव्यसिद्धिक जव्यजीव विशेषाधिक ठे जेमाटे जघन्ययुक्त अनंता प्रमाण अजव्य जीवो ठे तेने टालीने बीजा सर्व जव्यजीवो ठे ते माटे.
- ८८ तेथकी निगोदना जीव विशेषाधिक ठे, जे जणी निगोदना जीव टाली बीजां सर्व जीव असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाणज ठे, माटे.
- ८९ तेथकी वनस्पतिना जीव विशेषाधिक ठे, निगोदमां प्रत्येक वनस्पति प्रक्षेपवाथकी.
- ९० तेथकी एकेंद्रिय जीव विशेषाधिक ठे. वनस्पतिमां वली पृथिव्यादिकना प्रक्षेपवाथकी.
- ९१ तेथकी तिर्यचयोनिया विशेषाधिक ठे, बेंद्रियादिकना जेलवाथकी.
- ९२ तेथकी मिथ्यादृष्टि विशेषाधिक ठे, ए जीव चारे गतिमां लाजे, माटे.
- ९३ तेथकी अविरति जीव विशेषाधिक ठे, अविरति सम्यग्दृष्टि जीव एमां जलवाथकी.
- ९४ तेथकी सकषायिजीव विशेषाधिक ठे, देशविरत्यादिना जलवाथकी.
- ९५ तेथकी ब्रह्मस्थ जीव विशेषाधिक ठे, उपशांत मोहीपण एमां जलवाते थकी.
- ९६ तेथकी सयोगी विशेषाधिक ठे, सयोगी केवलीना जलवा थकी.

ए७ तैथकी सर्व संसारी जीव विशेषाधिक ठे, एमां अयोगी केवली पण चढ्या.

ए८ तैथकी सर्वजीव विशेषाधिकठे, एमां सिरुनाजीव पण चढ्या. इतिअद्वयबहुत्वसमाप्ता।

१५ पच्चीशमुं जवन द्वार. ते प्रत्येक दंरुकने विषे जवन कहेवानुं द्वार जाणवुं.
१६ ठवीशमुं विरहकालद्वार. एटले अमुक दंरुके जघन्य तथा उत्कृष्टथी अमुक काल पर्यंत कोइ जीव मरे नहीं अथवा उपजे नहीं, ते विचार कहेवानुं द्वार.

१७ सत्यावीशमुं चउद गुणगणानुं द्वार. चौद प्रकारे ठे.

- | | | | |
|--------------|-------------------|------------------|-----------------------|
| १ मिथ्यात्व. | २ सास्त्रादन | ३ मिश्र गुणगणुं. | ४ अविरतिसम्यग्दृष्टि. |
| ५ देशविरति. | ६ प्रमत्त. | ७ अप्रमत्त. | ८ अपूर्वकरण. |
| ९ अनिवृत्ति. | १० सूक्ष्मसंपराय. | | ११ उपशांतमोह. |
| १२ क्षीणमोह. | १३ सयोगीकेवली. | | १४ अयोगी केवली. |

१८ अठ्यावीशमुं प्राणद्वार दश प्रकारे ठे.

- | | | | | |
|---------------|--------------|-----------------|------------------|-------------------|
| १ स्पशेंद्रिय | २ रसेंद्रिय. | ३ घ्राणेंद्रिय. | ४ चक्षुरेंद्रिय. | ५ श्रोत्रेंद्रिय. |
| ६ कायबल. | ७ वचनबल. | ८ मनोबल. | ९ श्वाशोह्वास. | १० आयु. |

१९ उगणत्रीशमुं संयतिद्वार, त्रिजंगी पूर्वक आठ प्रकारे ठे.

- | | | | |
|-----------|----------|---------------|-----------------|
| १ संयती, | २ व्रती, | ३ पञ्चस्काणी, | ४ पंडिया, |
| ५ संवुमा, | ६ जगरा, | ७ धम्मिया, | ८ धम्मविवसाइया. |

- | | | | |
|------------|-----------|----------------|------------------|
| १ असंयति, | २ अव्रती, | ३ अपञ्चस्काणी. | ४ बाला. |
| ५ असंवुमा, | ६ च्युता, | ७ अधम्मिया, | ८ अधम्मविवसाइया. |

१ संयतासंयती, २ व्रताव्रती, ३ पञ्चस्काणापञ्चस्काणी. ४ बालापंनिया.

५ संवुमाअसंवुंडा, ६ च्युताजगरा, ७ धम्माधम्मीया, ८ धम्माधम्मविवसाइया.

३० त्रीशमुं आहारद्वार, त्रण प्रकारे ठे. १ सचित्ताहार. २ अचित्ताहार. ३ कवलाहार.

३१ एकत्रीशमुं आहारजातिनो द्वार त्रण प्रकारे ठे. १ उंजाहार. श्लोमाहार. ३ कवलाहार.

३२ वत्रीशमुं आहारनी इच्छानुं द्वार. ते प्रत्येक दंरुकवालाने जघन्य तथा उत्कृष्टथी केटले काले आहार लेवानी इच्छा थाय? तेनो विवरो कहेवो, ते आहार इच्छाद्वार.

३३ तेत्रीशमुं कायस्थितितुं द्वार. ते प्रत्येक दंडकवालाने पोतानी कायाने विषे अनुक मे पुनः पुनः उपजवुं, केटली वार थाय? तेना कालनुं प्रमाण कहेवुं.

३४ चोत्रीशमुं योनिद्वार, ते चोराशी लाख जेदे प्रसिरु ठे.

३५ पांत्रीशमुं कुलकोडिद्वार, ते प्रत्येक दंरुकमां केटला लाख कुलकोडि ठे? एम क हेवानुं द्वार. ए रीते पांत्रीश द्वारनां नाम कहां.

हवे पूर्वोक्त चोवीश दंडकमांना प्रत्येक दंम्के ए पांत्रीश द्वार कहिये ठैये.

१ तिहां प्रथम सात नारकीना दंम्के पांत्रीश द्वार कहे ठे.

- २ वैक्रिय, तैजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
- ३ श्रवणाहना जवधारणीय शरीर जघन्य श्री मांडी उत्कृष्ट पांचशे धनुष्य होय तथा उत्तर वैक्रिय शरीर तेशी बमणुं होय. तेमां जघन्यथी साडा पन्नर धनुष्य ने बार अंगुल अने उत्कृष्टुं एक हजार धनुष्य होय. उपजतां जवाधारणीय अंगुल नो असंख्यातमो जाग होय अने उत्तर वैक्रिय अंगुलनो संख्यातमो जाग होय.
- ३ नारकीने संघयण नथी. असंघयणी ठे.
- ४ संज्ञा आश्रयी संज्ञा, दश पण होय, अथवा शोल होय.
- ५ नारकीने हुंडसंस्थान होय.
- ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
- ७ नारकीने कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण लेश्या होय.
- ८ इंद्रियो पांचे होय.
- ९ वेदना, कषाय, मरण अने वैक्रिय ए चार समुद्रघात होय.
- १० सम्यक्तवादिक त्रणे दृष्टि होय. सम्यक्तव, मिश्र अने मिथ्यात्व.
- ११ चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन अने अवधि दर्शन, ए त्रण दर्शन होय.
- १२ मत्यादि त्रण ज्ञान तथा त्रण अज्ञान होय.
- १३ मनना चार योग, वचनना चार योग, तथा कायना त्रण योग, वैक्रियकाययो

- ग, वैक्रियमिश्रकाययोग तथा कार्मण काययोग मलीने अगीयार योग होय.
- १४ उपयोग प्रथमना त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने चक्षुरादिक त्रण दर्शन सर्व मलीने नव होय.
- १५ उपपात एक समयमां जघन्यथी एक, बे, त्रण, जीव उपजे अने उत्कृष्टथी संख्याता असंख्याता जीव पण उपजे.
- १६ उपपातनी परे च्यवनद्वार पण समज बुं. एटले जेम उपजे, तेम चवे.
- १७ आयुष्य जघन्यथी दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम जाणबुं.
- १८ पर्याप्ति ठ होय, परंतु जाषा अने मन ए बे पर्याप्ति साथेज उपजे, तेशी प्रकारांतरे पांच पर्याप्ति पण कहेवाय.
- १९ आहार, ठ दिशिनो लिये ठे.
- २० दीर्घकालिकी संज्ञा एकज होय.
- २१ चवीने गर्जज मनुष्य तथा गर्जज तिर्यच ए बे दंडकमां आवे.
- २२ तिर्यच पंचेन्द्रिय तथा गर्जज मनुष्य ए दंडकना जीवो नारकीमां आवी उपजे.
- २३ वेदद्वारमां नारकीने एकनपुंसकवेद होय.
- २४ अद्वय बहुत्वमां सर्वथकी शोभा, सात मी नरकपृथ्वीना नारकी जाणवा. पठी अद्वयपापना सेवनार घणा माटे तेथकी ठठीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी पांचमीना असंख्यात गुणाधि

- क. तेथकी चोथीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी त्रीजीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी बीजीना असंख्यातगुणाधिक. तेथकी पहेलीना असंख्यातगुणाधिक जाणवा.
- ३५ जवनद्वारआश्री साते नरक पृथिवी ना मली, उंगणपचास प्रतर अने चो राशी लाख नरकावासा जाणवा.
- ३६ ढवीशमा विरहकाल द्वारमां जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो ठ महिनानो विरह जाणवो. प्रथम नरके जघन्य एक समय उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त्त. बीजीमां सात दिवस, त्रीजीमां पंदर दिवस, चोथीमां एक मास, पांचमीमां बे मास, षठीमां चार मास, अने सातमीमां ठ मास. तथा जघन्यथी सर्वमां एक समय.
- ३७ गुणठाणा प्रथमना चार लाखे.
- ३८ नारकीने दश प्राण जाणवां.
- ३९ संयतिद्वार आश्री असंयती, अव्रती, अपचरकाणी, बाला, असंबुमा, च्युता, अधार्मिक अने अधर्मव्यवसायिका, ए आठ जांगा होय.
- ३० आहारद्वारमां नारकी जीवो एकज अचेत आहार लिये.
- ३१ आहार जातिना द्वारमां नारकीने ठ जाहार अने लोमाहार. ए बे रीते आहार लेवानुं होय.
- ३२ आहारनी इडा आश्रयी साते नरक पृथ्वीना नारकीने जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टी अंतर मुहूर्त्त उपजे.
- ३३ कायस्थितिआश्री जेटली जवस्थिति होय, तेठलो काल कायस्थिति पण जाणवी. कारण के नरकनो जीव मरीने फरी नरकमां न जाय.
- ३४ योनिद्वार आश्रयी नारकी जीवोनी चार लाख योनि उपजवानी जाणवी.
- ३५ कुलकोफीद्वार आश्रयी नारकी जीवो ना पच्चीश लाख कोडी कुल जाणवां.

ए नरकाश्री पांतीशद्वारनो विचार कह्यो.

११ हवे दश जवन पतिना दश दंडकने विषे पांतीश द्वार कहे ठे.

- १ शरीरद्वार आश्रयी, वैक्रिय तेजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
- २ अवगाहनाद्वार आश्रय उपजतां वखत, अंगुलनो असंख्यातमो जाग शरीर होय. पठी उत्कृष्ट, सात हाथनुं शरीर होय. अने उत्तरवैक्रिय करे तो एक लाख योजन सुधी करे.
- ३ संघयण आश्रयी देवोने कोइ पण संघयण नथी असंघयणी ठे माटे.
- ४ संज्ञा आश्रयी दश अथवा शोल होय.
- ५ संस्थानआश्रयी देवोने एकज समचतुरस्र संस्थान होय.
- ६ कषायाश्रयी क्रोधादिकचारे कषायहोय.
- ७ लेश्या आश्रयी कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो, ए चार लेश्या होय.

- ८ इंद्रिय आश्रयी पांचे इंद्रिय होय.
 ९ समुद्रघात आश्रयि वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय अने तैजस, ए पांच होय.
 १० दृष्टि सम्यक्तवादिक सम्यक्त्व, मिथ्यात्व अने मिश्र. ए त्रणे होय.
 ११ दर्शन, आश्रयी चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन, ए त्रण होय.
 १२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान.
 १३ योग आश्रयी नारकीनी पेरे चार मना, चार वचनना अने त्रण कायना मलीने ए अगीचार योग होय.
 १४ उपयोगद्वार आश्रयी प्रथमना त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने प्रथमनां त्रण दर्शन. ए रीतें नव उपयोग होय.
 १५ जघन्यथी एक समयमां एक, बे, त्रण, उपजे अने उत्कृष्टपणे संख्याता अथवा असंख्याता पण एक समयमां उपजे
 १६ उपजवानी पेरे च्यवनद्वार पण जाणवुं
 १७ आयुष्यद्वार आश्रयी, जघन्यथी दश हजार वर्ष, अने उत्कृष्ट, एक सागरोपम जाजेरुं आयुष्य जाणवुं.
 १८ पर्याप्ति ठ होय परंतु जाषा अने मन, ए बे पर्याप्ति साथे होय. तेथी प्रकाशंतरे पांच पण कहेवाय.
 १९ आहारआश्री जवनपति देवो ठए दिशिनो आहार लिये ठे.
 २० संज्ञामां एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
 २१ च्यवीने मनुष्य, तिर्यच पंचेंद्रिय, पृथ्वी काय, अप्रकाय अने वनस्पति काय, ए पांच दंडकने विषे जाय.

- २२ एक गर्जज मनुष्य अने नीजा तिर्यच पंचेंद्रिय, ए बे दंरुकवाला आवी, जवनपतिनी दशे निकायने विषे उपजे.
 २३ वेदमां पुरुषवेद अने स्त्रीवेद, ए बे होय.
 २४ अल्पबहुत्वमां सौधर्म, देवलोकनी देवीयोथकी असंख्यात गुणा ठे.
 २५ जवनद्वारमां दशे निकायना वाश इंद्रना जवननी संख्या ७७१००००० ठे.
 २६ विरहकाल, जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त जाणवो.
 २७ गुणगणां आश्रयी प्रथमनां चार होय.
 २८ प्राणद्वारआश्रयी एमनेदशे प्राण होय.
 २९ संयतीना ८ चांगा नारकीनी पेरे होय.
 ३० आहारआश्री अचित्ताहार लिये.
 ३१ उजाहार ने लोमाहार बे आहार करे.
 ३२ दश हजार वर्षेना आयुष्य वालाने चोथजत्तें आहारनी इडा उपजे. पट्योपमना आयुष्यवालाने दिवस पृथक्त्वे आहारनी इडा उपजे. एकसागरोपम आयुवाला ने एक हजार वर्षे आहारनी इडा उपजे. सागरोपम जाजेरा आयुष्यवालाने हजार वर्ष जाजेरे आहारनी इडा उपजे.
 ३३ जवनपति मरीने जवनपति न थाय. माटे जेटली जवस्थिति होय, तेटलीज एमनी कायस्थिति पण जाणवी.
 ३४ जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी ने वैमानिक, ए चारे निकायना देवोनी चार लाख योनि उपजवानी कही ठे.
 ३५ ए देवोना तेरे दंरुकने विषे ठवीश लाख कोमी कुल जाणवां.

१२ हवे बारमा पृथ्वी कायना दंरुकने विषे पात्रीश द्वार कहे ठे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ अवगाहना जघन्य तथा उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो जाग होय.

३ एक ठेवहु संघयण होय.

४ संज्ञा, आहार, जय, मैथुन अने परिग्रह, ए चार अथवा दश होय.

५ एक हुंरुक संस्थान मसूरने आकारे ठे.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ अपर्याप्ताने प्रथमनी चार देख्यायो होय अने पर्याप्ताने कृष्ण, नील ने कापोत, ए त्रण देख्या होय.

८ इंद्रियद्वारे एक स्पर्शेंद्रियज होय.

९ समुद्घात द्वार आश्रयी वेदन, कषाय ने मरण, ए त्रण समुद्घात होय.

१० दृष्टि आश्रयी एक मिथ्यादृष्टि होय.

११ दर्शन आश्रयी एक अचक्षुदर्शन होय.

१२ ज्ञानद्वार आश्रयी मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान, ए वे अज्ञान होय.

१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय. मन अने वचन एने नथी.

१४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन, ए त्रण उपयोग होय.

१५ उपपात द्वार आश्रयी एक समयमा असंख्याता पृथिवीकाय जीव उपजे.

१६ एक समयमा असंख्यात जीव च्यवे.

१७ जघन्य, अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट वावीश हजार वर्षेनं आयुष्य जाणवुं.

१ सुनानुं हजार वर्षे.

२ सुधानुं बार हजार वर्षे.

३ वालुकानुं चौद हजार वर्षे.

४ मणसिलनुं शोल हजार वर्षे.

५ शर्करानुं अठार हजार वर्षे.

६ खरपुढवीनुं बावीश हजार वर्षे.

१८ आहार, शरीर, इंद्रिय अने श्वासोच्छ्वास. ए चार पर्याप्त होय.

१९ आहारद्वारआश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा षट् दिशिनो आहार लिये.

२० त्रण संज्ञामांहेली कोइ पण संज्ञा ए दंरुके न होय.

२१ पृथिवीकाय मरीने पांच स्थावरना पांच दंरुक तथा विकलेंद्रियना त्रण दंरुक, पंचेंद्रियतिर्यचनो दंडक अने मनुष्यनो दंरुक, ए दश दंडकमां जइ उपजे.

२२ नारकी वजीने बाकी त्रेवीशे दंरुकना जीव, पृथिवीकायमां आवी उपजे.

२३ एकज नपुंसक वेद होय. परंतु स्त्री अने पुरुष ए वे वेद एमां नथी.

२४ अल्पबहुत्वमां त्रिंद्रियथकी पृथिवीकायिजा जीव अधिक ठे.

२५ जुवनद्वारे पृथिवीकायमां जवन नथी.

२६ ए दंरुकने विषे विरहकाल पण नथी.

२७ ए दंडकने विषे एकज मिथ्यात्व गुण गाणुं लाजे. केम के सर्व मिथ्यादृष्टि ठे.

३० स्पर्शेंद्रिय, कायबल, श्वासोद्वास अने
आयु, ए चार प्राण होय.
३१ नारकीनी पेरे संयतीना आठ चांगाहोय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ जज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इच्छा उपजे.
३३ सूक्ष्म पृथिवीकायनी कायस्थिति जघ

न्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी असंख्या
ती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालनी जा
णवी. बादरपृथिवीकायनी कायस्थिति
जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी सि
त्तेर कोमाकोमी सागरोपमनी जाणवी.
३४ सात लाख योनि जाणवी.
३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

१३ हवे तेरमा अप्कायना दंरुकने विषे पांत्रीश द्वार कहे ठे.

१ शरीरद्वार आश्रयी औदारिक, तैजस
अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अने उत्कृष्टी अवगाहना अंगु
लनो असंख्यातमो जाग होय.
३ एक ठेवतुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एक हुंरु संस्थान पाणीना पपोटाने
आकारे होय.
६ क्रोधादिक चारे कषाय, ए दंरुके होय.
७ अपर्याप्ताने प्रथमनी चार लेश्या होय,
अने पर्याप्ताने प्रथमनी कृष्ण, नील ने
कापोत ए त्रण लेश्या होय,
८ एक स्पर्शेंद्रियज होय, एकेंद्रिय ठे माटे.
९ समुद्घात आश्रयी वेदना, कषाय ने
मरण ए त्रण समुद्घात होय.
१० दृष्टिद्वारमां एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ दर्शनद्वारमां एक अचक्षुर्दर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ योगद्वार आश्रयी औदारिक काययोग,
औदारिक मिश्रकाययोग अने कार्मण
काययोग, ए त्रण योग होय.

१४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षु
दर्शन. ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता मरण पामे.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट सात
हजार वर्षायु होय.
१८ पर्याप्ति, आहार, शरीर, इंद्रिय अने
श्वासोद्वास, ए चार होय.
१९ आहारआश्रयी त्रण, चार, पांच अथ
वा ठ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिक कोश पण संज्ञा न होय.
२१ ए दंरुकवालाजीव पण पृथिवीकायनी
पेरे दश दंरुकने विषे जाय.
२२ एक नारकी वर्जी बाकी त्रेवीश दंरुक
ना जीवो अप्कायमां आवी उपजे.
२३ वेद आश्रयी एकज नपुंसक वेद होय.
२४ अल्प बहुत्वमां पृथ्वीकायथी अप्का
यिक. जीव अधिक ठे.
२५ अप्कायने जवन नथी.
२६ विरहकाल पण नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लाजे.

२७ पृथिवीकायनी पेरे चार प्राण होय.
 २८ संयतीना आठ जांगा, नारकी पेरे जाणवा.
 २९ सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
 ३० उज अने लोमे करी आहार लीये.

३१ समय समय आहारनी इहा उपजे.
 ३२ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरे जाणवी.
 ३३ सात लाख जीवायोनि जाणवी.
 ३४ सात लाख कोडी कुल जाणवां.

१४ हवे तेउकायना दंरुके पांत्रीश द्वार कहे ठे.

१ शरीर आश्रयी औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
 २ जघन्य तथा उत्कृष्टी अवगाहना अं गुलनो असंख्यातमो जाग होय.
 ३ एकज ठेवतुं संघयण होय.
 ४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
 ५ हुंरु संस्थान सूझनी आणीने आकारे.
 ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
 ७ कृष्ण, नील ने कापोत, त्रण लेश्या होय.
 ८ एक स्पर्शेंद्रिय होय.
 ९ प्रथमनी त्रण समुद्घात होय.
 १० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
 ११ एकज अचक्षुर्दर्शन होय.
 १२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
 १३ औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र काययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय.
 १४ प्रथमनां बे अज्ञान अने अचक्षुर्दर्शन ए त्रण उपयोग होय.
 १५ एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.
 १६ एक समयमां असंख्याता जीव च्यवे.
 १७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट त्रण अहोरात्रितुं आयुष्य होय.

१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
 १९ आहार आश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा ठ दिशिनो आहार लीये.
 २० दीर्घ कालादिक त्रणे संज्ञारहित होय.
 २१ मरीने पांच स्थावर, त्रण विकर्षेंद्रिय अने एक तिर्यंच, पंचेंद्रियनो दंडक मलीने नवदंरुकने विषे जाय.
 २२ एमां दश दंडकना जीवो आवी उपजे.
 २३ एमां एकज नपुंसक वेद होय.
 २४ अद्वयबहुत्व अछाणुं बोलमां कहुं ठे.
 २५ जुवन ए दंडकमां नशी.
 २६ विरहकाल नशी, निरंतर उपजे ठे.
 २७ एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाजे.
 २८ स्पर्शेंद्रिय, कायबल, श्वासोद्वास अने आयु, ए चार प्राण होय.
 २९ संयतीना नारकीनी पेरे आठ जांगा होय.
 ३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
 ३१ उज अने लोमे करी आहार लीये.
 ३२ समय समय आहारनी इहा उपजे.
 ३३ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरे जाणवी.
 ३४ सात लाख योनि उपजवानी ठे.
 ३५ त्रण लाख कोनी कुल जाणवां.

१५ हवे पन्नरमा वायुकायना दंडके पांतीश द्वार कहे ठे.

- | | |
|--|--|
| <p>१ औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मेण, ए चार शरीर होय.</p> <p>२ जघन्योत्कृष्ट अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो जाग होय.</p> <p>३ एकज ठेवहुं संघयण होय.</p> <p>४ संज्ञा चार अथवा दश होय.</p> <p>५ हुंससंस्थान, ध्वजा ने पताकाने आकारे.</p> <p>६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.</p> <p>७ कृष्ण, नील ने कापोत, ए त्रण लेश्या होय.</p> <p>८ एक स्पर्शेंद्रिय होय.</p> <p>९ प्रथमना चार समुद्रघात होय.</p> <p>१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.</p> <p>११ एकज अचक्षुर्दर्शन होय.</p> <p>१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.</p> <p>१३ औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्र काययोग अने कार्मेणकाययोग. ए पांच योग होय.</p> <p>१४ प्रथमनां बे अज्ञान अने एक अचक्षुर्दर्शन, ए त्रण उपयोग होय.</p> <p>१५ एक समयमां असंख्याता उपजे.</p> <p>१६ एक समयमां असंख्याता च्यवे.</p> <p>१७ जघन्यथी अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टं</p> | <p>त्रण हजार वर्षायु होय.</p> <p>१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.</p> <p>१९ त्रण, चार, पांच अथवा ठ दिशिनो पण आहार लीये.</p> <p>२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा रहित होय.</p> <p>२१ तेजकायनी पेरे नव दंडकने विषे जाय.</p> <p>२२ पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, पंचेंद्रिय तिर्यच अने मनुष्य, ए दश दंडक वाला जीवो एमां आवी उपजे.</p> <p>२३ वेदद्वारे एक नपुंसक वेद होय.</p> <p>२४ अद्वयबहुत्वद्वारमां अप्रकायथकी वायु कायिया जीव अधिक ठे.</p> <p>२५ ए दंडके जवन नथी.</p> <p>२६ विरहकाल नथी.</p> <p>२७ एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाजे.</p> <p>२८ तेजकायनी पेरे चार प्राण होय.</p> <p>२९ नारकीनी पेरे संयतीना आठ बोल ठे.</p> <p>३० सचित्तादिक त्रण प्रकारनो आहार लीये.</p> <p>३१ उंज अने लोमे करी आहार लीये.</p> <p>३२ समय समय आहारनी इच्छा उपजे.</p> <p>३३ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरे जाणवी.</p> <p>३४ सात लाख जीवा योनि ठे.</p> <p>३५ बार लाख कोमी कुल जाणवां.</p> |
|--|--|

१६ हवे सोलमा वनस्पतिकायना दंडके पांतीश द्वार कहे ठे.

- | | |
|---|---|
| <p>१ औदारिक, तैजस अने कार्मेण, ए त्रण शरीर होय.</p> <p>२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग उत्कृष्टी एक हजार योजन प्रमाण शरी</p> | <p>रनी अवगाहना जाणवी.</p> <p>३ एकज ठेवहुं संघयण होय.</p> <p>४ संज्ञा चार अथवा दश होय.</p> <p>५ हुंससंस्थान नाना प्रकारना आकारनुं.</p> |
|---|---|

- ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
- ७ कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो. ए चार-
लेश्या अपर्याप्ताने होय, अने पर्याप्ताने
पहेली त्रण लेश्या होय.
- ८ एक स्पर्शेंद्रियज होय.
- ९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
- १० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
- ११ एकज अचक्षुर्दर्शन होय.
- १२ मति अने श्रुत, ए वे अज्ञान होय.
- १३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रका-
ययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण
योग होय.
- १४ तेजकायनी पेरे त्रण उपयोग होय.
- १५ एक समयमां अनंता जीव उपजे.
- १६ एक समयमां अनंता जीव च्यवे.
- १७ जघन्य अंतर मुहुर्त्त अने उत्कृष्ट दश
हजार वर्षायु होय.
- १८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
- १९ त्रण, चार, पांच अथवा ठ दिशिनो
आहार लीये.
- २० दीर्घकालादिक संज्ञा रहित होय.
- २१ पांच स्थावरना, त्रण विकलेंद्रियना, एक

- तिर्यच पंचेंद्रियनो अने एक मनुष्यनो.
ए रीते दश दंडकने विषे जइ उपजे.
- २२ नारकी वर्जिने बाकी त्रेवीश दंडकवा
ला जीवो, ए दंडकमां आवी उपजे.
- २३ एक नपुंसक वेद होय.
- २४ अद्वयबहुत्वमां वायुकायथी वनस्पति
कायिया जीव अधिक ठे.
- २५ जवन नथी.
- २६ विरहकाल नथी.
- २७ एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाजे.
- २८ तेजकायनी पेरे चार प्राण होय.
- २९ संयतीना आठ जेद नारकीनी पेरे.
- ३० सचित्तादिक त्रण प्रकारनो आहार लीये.
- ३१ उंज अने लोमे करी आहार लीये.
- ३२ समय समय आहारनी इहा उपजे.
- ३३ कायस्थिति प्रत्येक वनस्पति आश्रयी
असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी
होय अने अनंतकाय आश्रयी अनंती
उत्सर्पिणी ने अवसर्पिणी होय.
- ३४ प्रत्येकनी दश लाख अने साधारणनी
चौदलाख मली चोवीश लाखयोनि ठे.
- ३५ अठ्यावीश लाख कोडी कुल जाणवां.

१७ हवे सत्तरमा वे इंद्रियना दंडके पांत्रीश द्वार कहे ठे.

- १ औदारिक, तेजस ने कार्मण, ए त्रण
शरीर होय.
- २ अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यात
मो ज्ञाग उत्कृष्टी बार योजन होय.
- ३ एकज ठेवठुं संघयण होय.
- ४ संज्ञा चार अथवा दश होय.

- ५ एकज हुंडसंस्थान जाणवुं.
- ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
- ७ कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण लेश्या.
- ८ स्पर्शेंद्रिय अने रसेंद्रिय, ए वे इंद्रियहोय.
- ९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
- १० सम्यक् अने मिथ्या, ए वे दृष्टि होय.

- ११ एकज अचक्षुर्दर्शन होय.
- १२ अपर्याप्तावस्थाये कोइएकने मति अने श्रुत ए बे ज्ञान होय अने एज बे अज्ञान पण होय. तथा पर्याप्तावस्थाये तो बे अज्ञानज होय.
- १३ औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र काययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यमृषा वचनयोग, ए चार योग होय.
- १४ कोइएक अपर्याप्ताने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने अचक्षुर्दर्शन. ए पांच उपयोग होय, अने पर्याप्ताने बे ज्ञान होय, माटे त्रणज उपयोग होय.
- १५ एक समयमां जघन्य, एक, बे त्रण जीव उपजे अने उत्कृष्टी संख्याता अथवा असंख्याता जीव आवी उपजे.
- १६ उपजवानी पेरे मरण पण जाणी लेवुं.
- १७ आयुष्य आश्रयी जघन्य अंतर मुहुर्त्त अने उत्कृष्टी बार वर्षायु होय.
- १८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
- १९ ठ दिशिनो आहार लीये.
- २० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.

- २१ वनस्पतिनी पेरे दश दंरुकमां जइ उपजे.
- २२ दश दंरुकना जीव एमां आवी उपजे.
- २३ एक नपुंसक वेद होय.
- २४ अटपबहुत्वमां पंचेंद्रिय तिर्यचथकी बे द्रिय जीव अधिक होय.
- २५ जवन नथी.
- २६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो एक मुहुर्त्त विरहकाल होय.
- २७ एमां मिथ्यात्व अने सास्वादन ए बे गुण ठाणां लाजे.
- २८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोद्वास अने आयु. ए ठ प्राण होय-
- २९ संयतीना आठ जेद नारकीनी पेरे.
- ३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
- ३१ उजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
- ३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टी अंतरमुहुर्त्ते आहारनी इहा उपजे.
- ३३ कायस्थिति संख्याता वर्षनी जाणवी.
- ३४ बे लाख योनि जाणवी.
- ३५ सात लाख कोडी कुल जाणवां.

१८ हवे अठारमा त्रींद्रियना दंरुके पात्रीश छार कहे ठे.

- १ औदारिक, तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय.
- २ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग अने उत्कृष्टी त्रण गाउनी अवगाहना.
- ३ एकज ठेवतुं संघयण होय.
- ४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
- ५ एकज हुंडसंस्थान जाणवुं.

- ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
- ७ कृष्ण, नील अने कापोत. ए त्रण लेश्या होय.
- ८ स्पर्शेंद्रिय रसेंद्रिय अने प्राणेंद्रिय, ए त्रण इंद्रियो होय.
- ९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
- १० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.

- ११ एकज अचक्षुर्दर्शन होय.
- १२ ज्ञान द्वीन्द्रियनी पेरे जाणी लेवुं.
- १३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग, अने असत्य अमृषा वचनयोग, ए चार योग होय.
- १४ द्वीन्द्रियनी पेरे उपयोग जाणवा.
- १५ द्वीन्द्रियनी पेरे उपपात जाणवा.
- १६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
- १७ जघन्य अंतरमुहुर्त्त अने उत्कृष्टं उगण पचास दिवसायु जाणवुं.
- १८ मनःपर्याप्ति वर्जिने पांच पर्याप्ति होय.
- १९ ठ दिशिनो आहार लीये.
- २० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
- २१ वनस्पतिनी पेरे दश दंरुकमां जइ उपजे.
- २२ दश दंरुकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
- २३ एक नपुंसक वेद होय.

- २४ अल्पबहुत्वमां बैन्द्रियथकी तैन्द्रियजीव अधिक होय.
- २५ जवन नथी.
- २६ जघन्य एक समय ने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
- २७ प्रथमना बे गुणगणां लाजे.
- २८ स्पशैन्द्रिय, रसेन्द्रिय, घ्राणैन्द्रिय, वचन बल, कायबल, श्वासोन्वास अने आयु, ए सात प्राण होय.
- २९ संयतीना आठ जंग, नारकीनी पेरे.
- ३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
- ३१ उजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
- ३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्त आहारनी इडा उपजे.
- ३३ कायस्थिति संख्यातादिवसनी जाणवी.
- ३४ बे लाख योनि ठे.
- ३५ आठ लाख कोमि कुल जाणवां.

१९ हवे उगणीशमा चउरिन्द्रियना दंरुके पांत्रीश द्वार कहे ठे.

- १ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
- २ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमां जाग अने उत्कृष्टी चार गाउनी अवगाहना.
- ३ एकज ठेवतुं संघयण होय.
- ४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
- ५ एकज हुंडसंस्थान जाणवुं.
- ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
- ७ कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण लेश्या.
- ८ स्पर्श, रस, घ्राणनेचक्षु, ए चार इंद्रियोहोय.
- ९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.

- १० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.
- ११ चक्षु ने अचक्षु, ए बे दर्शन होय.
- १२ ज्ञान, द्वीन्द्रियनी पेरे जाणी लेवुं.
- १३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्य अमृषावचनयोग ए चार योग होय.
- १४ अपर्याप्ता लगे कोशकने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शन. ए ठ उपयोग होय, अने पर्याप्ताने प्रथमनां बे ज्ञान विना चार उपयोग होय.
- १५ द्वीन्द्रियनी पेरे उपपात जाणवां.

- १६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
 १७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त, उत्कृष्टुं ठ मासायु.
 १८ मनःपर्याप्ति वर्जिने पांच पर्याप्ति होय
 १९ ठ दिशिनो आहार लीये.
 २० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
 २१ वनस्पतिनी पेरे दश दंडकमां जाय.
 २२ एमां दश दंरुकवाला जीवो आवी उपजे.
 २३ एक नपुंसक वेद होय.
 २४ अद्वयबहुत्वमां ज्योतिषी देवोद्यकी चौ
 रिंद्रिय जीव अधिक होय.
 २५ जवन नशी.
 २६ जघन्य एक समय अमे उत्कृष्टो एक
 मुहूर्त्त विरहकाल होय.
- २७ प्रथमनां बेज गुणागणां लात्ते.
 २८ स्पेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षु
 रिंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोद्वा
 स अने आयु. ए आठ प्राण होय.
 २९ संयतीना आठ जंग नारकीनी पेरे ठे.
 ३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहारलीये.
 ३१ उजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
 ३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक
 अंतर मुहूर्त्त आहारनी इष्टा उपजे.
 ३३ कायस्थिति संख्याता मासनी जाणवी.
 ३४ बे लाख योनि ठे.
 ३५ नव लाख कोडी कुल जाणवां.

२० हवे बीशमा पंचेन्द्रिय तिर्यचना दंरुके पांतीश द्वार कहे ठे.

- १ समूर्द्धिमने औदारिक, तैजस अने का
 र्मण. ए त्रण शरीर होय. तथा गर्जज
 ने औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने का
 र्मण, ए चार शरीर होय.
 २ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग
 अने उत्कृष्टो एक हजार योजन शरी
 र, तेमां गर्जज जलचरनुं हजार योज
 ननुं, स्थलचरनुं ठ गज, खेचरनुं धनुष्य
 पृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं हजार योजन
 अने जुजपरिसर्पनुं गाढ पृथक्त्व. तेमज
 उत्तर वैक्रियशरीर करे, तो नवशे यो
 जन प्रमाण जाणवुं. तथा समूर्द्धिममां
 जलचरनुं एक हजार योजन, स्थलचर
 नुं गाढ पृथक्त्व, खेचरनुं धनुष्यपृथक्त्व,
 उरःपरिसर्पनुं योजनपृथक्त्व, जुज प
 रिसर्पनुं गाढपृथक्त्व जाणवुं.
 ३ समूर्द्धिमने एकज ठेवतुं संघयण होय.
 अने गर्जजने ठए संघयण होय.
 ४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
 ५ समूर्द्धिमने एक दुंरुसंस्थान अने ग
 र्जजने ठ ए संस्थान होय.
 ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
 ७ समूर्द्धिमने प्रथमनी त्रण लेख्या होय.
 अने गर्जजने ठए लेख्या होय.
 ८ इंद्रिय पांचे होय.
 ९ समूर्द्धिमने प्रथमना त्रण समुद्घात हो
 य अने गर्जजने पांच समुद्घात होय.
 १० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि हाय.

११ चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन अने अवधि दर्शन, ए त्रण दर्शन होय.

१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान मली ठ ज्ञान होय.

१३ संमूर्द्धिमने औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यअमृषावचनयोग. ए चार योग होय. तथा गर्जजने मनना चार, वचनना चार अने औदारिककाय योग, औदारिकमिश्रकाय योग, वैक्रियकाय योग, वैक्रियमिश्रकाय योग, कार्मणकाय योग. ए तेर योग होय.

१४ संमूर्द्धिममां कोइएकने अपर्याप्तावस्थाये चौरिंद्रियनी पेरे ठ उपयोग होय अने पर्याप्तावस्थाये चार होय, ने गर्जजने नारकीनी पेरे नव उपयोग.

१५ द्विंद्रियनी पेरे उपपात जाणवो.

१६ उपपातनी पेरे मरण जाणवुं.

१७ जघन्य अंतरमुहुर्त्त आयु होय अने उत्कृष्टं त्रण पल्योपमायु होय. तेमां गर्जज तिर्यचनुं आयु आ प्रमाणे ठे.

१ जलचरनुं पूर्वकोटी वर्षायु जाणवुं,

२ खेचरनुं पल्योपमनो असंख्य जाग.

३ स्थलचरनुं त्रण पल्योपमायु.

४ उरःपरिसर्पनुं पूर्वकोटी वर्षायु.

५ जुजपरिसर्पनुं पूर्वकोटी वर्षायु. संमूर्द्धिम पंचेंद्रिय तिर्यचनुं आयु कहे ठे.

१ जलचरनुं पूर्वकोटी वर्षायु.

२ स्थलचरनुं चोराशी हजार वर्षायु.

३ खेचरनुं बहोतेर हजार वर्षायु.

४ उरःपरिसर्पनुं पूर्वकोटी वर्षायु.

५ जुजपरिसर्पनुं पूर्वकोटी वर्षायु.

१८ संमूर्द्धिमने मनपर्याप्ति वर्जी बाकीनी पांच पर्याप्ति अने गर्जजने ठ पर्याप्ति होय.

१९ ठ दिशिनो आहार लीये.

२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा होय.

२१ संमूर्द्धिम, तिर्यच तो एक ज्योतिषी तथा बीजा वैमानिक, ए बे दंडक वर्जिने बाकीना बावीश दंडकमां जइ उपजे अने गर्जज तिर्यचतो चौबीश दंडकमां जइ उपजे.

२२ संमूर्द्धिममां दश दंमकवाला जीवो. आवी उपजे अने गर्जजमां चौबीशे दंडकना जीवो आवी उपजे.

२३ संमूर्द्धिमने एक नपुंसकवेद होय अने गर्जजने त्रणे वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां चौरिंद्रिय जीवथकी पंचेंद्रिय तिर्यच जीव अधिक ठे.

२५ ऋवन नथी.

२६ संमूर्द्धिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चौबीशमुहुर्त्त, तथा गर्जजने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो बार मुहुर्त्त विरहकाल जाणवो.

२७ संमूर्द्धिममां प्रथमनां बे गुणठाणां लाजे अने गर्जजमां प्रथमनां पांच गुणठाणां लाजे.

२८ संमूर्द्धिमने मन विना नव प्राण होय अने गर्जजने दशे प्राण होय.

२९ संमूर्द्धिममां संयतीना आठ जंग ना

रकीनी पेरे होय अने गर्जजमां संयती
तथा असंयतासंयती, ए बे जंग होय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
३२ संमूर्धिमने जघन्य एक समय अने उ
त्कृष्टी एक अंतरमुहूर्त्तें तथा गर्जजने

जघन्य, एक अंतरमुहूर्त्तें अने उत्कृष्टी
उत्कृष्टकें आहारनी श्वा उपजे.
३३ कायस्थिति सात आठ त्रवनी जाणवी.
३४ चार लाख योनि जाणवी.
३५ सानी त्रेपन लाख कोमी कुल जाणवां.

११ हवे एकवीशमा मनुष्यना दंडकें पांत्रीश द्वार कहे ठे.

१ संमूर्धिमने औदारिक, तैजस अने का
र्मण, ए त्रण शरीर होय अने गर्जजने
पांचे शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग
अने उत्कृष्टी त्रण गाजनी अवगाहना.
३ संमूर्धिमने एक ठेवतुं संघयण होय
अने गर्जजने ठे संघयण होय.
४ संज्ञा चार, दश अने शोख होय.
५ संमूर्धिमने एक हुंरसंस्थान. अने ग
र्जजने ठ संस्थान होय.
६ केवली अने क्षीणमोही विना बाकी
ना सर्व मनुष्यने चारे कषाय होय.
७ गर्जजने ठ लेश्या अने संमूर्धिमने
प्रथमनी त्रण लेश्या होय.
८ इंद्रिय पांचे होय.
९ संमूर्धिमने प्रथमी त्रण समुद्घात होय
अने गर्जजने साते समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुआदिक चारे दर्शन होय.
१२ गर्जजने पांच ज्ञान अने त्रण आज्ञान, ए
आठे ज्ञान लाजे, अने संमूर्धिमने प्र
थमनां बे ज्ञान, अने बे अज्ञान होय.

१३ संमूर्धिमने औदारिककाययोग, औदा
रिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययो
ग, ए त्रण योग होय अने गर्जजने प
न्नरे योग होय.
१४ संमूर्धिमने प्रथमनां बे अज्ञान अने प्र
थमनां बे दर्शन, ए चार उपयोग होय
अने गर्जजने बारे उपयोग होय.
१५ संमूर्धिमने विषे एक समयमां असंख्या
ता जीव उपजे. ते सर्वमिथ्यादृष्टि जाण
वा अने गर्जजने विषे जघन्यथी एक,
बे, त्रण तथा उत्कृष्टा संख्याता उपजे.
१६ उपजवानी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं त्रण
पट्योपमायु जाणवुं.
१८ संमूर्धिमने प्रथमनी चार पर्याति अने
गर्जजने सर्वे ठे पर्याति होय.
१९ ठ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा होय.
२१ संमूर्धिम मरीने वनस्पतिनी पेरे दश
दंडकमां जाय अने गर्जज मरीने चो
वीशे दंडकमां जाय.
२२ संमूर्धिममां पृथिवी, अप, वनस्पति,

- त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यच अने मनुष्य,
ए आठ दंरुकवाला जीवो आवी उप
जे. अने गर्जजमां तो तेउ अने वाउ,
ए बे दंरुक वर्जीने शेष बावीश दंरुक
ना जीवो आवी उपजे.
- २३ समूर्द्धिमने एक नपुंसक वेद होय अ
ने गर्जजने त्रणे वेद होय.
- २४ अल्पबहुत्वमां गर्जज मनुष्य, संख्याये
सर्वदंरुकथकी स्वल्प ठे.
- २५ एमनां जवन नथी.
- २६ विरहकाल तिर्यच पंचेंद्रियनी पेरे ठे.
- २७ समूर्द्धिममां एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं ला
जे अने गर्जजमां चउदे गुणठाणां लाजे.
- २८ समूर्द्धिमने मनोबल अने वचनबल

- विना आठ अथवा सात प्राण होय,
अने गर्जजने दशे प्राण होय.
- २९ समूर्द्धिमने संघतीना आठ जंग नार
कीनी पेरे होय, अने गर्जजने विषे सं
घतीना चौबीश जंग सर्व प्रकारे लाजे.
- ३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारना आहार लीये.
- ३१ उजादिक त्रण प्रकारे आहार लीये.
- ३२ समूर्द्धिमने जघन्य एक समय अने उ
त्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्तें अने गर्जजने
जघन्य एक अंतरमुहूर्तें अने उत्कृष्ट
थी अष्टमजक्तें आहारनी इहा उपजे.
- ३३ कायस्थिति सात आठ जवनी जाणवी.
- ३४ चौद लाख योनि जाणवी.
- ३५ बार लाख कोनी कुल जाणवां.

२२ हवे बावीशमा व्यंतर देशोना दंरुकें पांतीश द्वार कहे ठे.

- १ वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए त्रण
शरीर होय.
- २ उपजतां जघन्यथी अंगुलनो असंख्या
तमो जाग अने उत्कृष्टी सात हाथनी
अवगाहना होय तथा उत्तरवैक्रिय करे
तो जघन्यथी अंगुलनो संख्यातमो जाग
अने उत्कृष्ट एक लाख योजन जाणवो.
- ३ संघयण रहित होय असंघयणी ठे माटे.
- ४ संज्ञा चार, दश, शोल, होय.
- ५ एक समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
- ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
- ७ तेजो पर्यंत प्रथमनी चार देख्या होय.
- ८ पांचे इंद्रिय होय.
- ९ प्रथमना पांच समुद्घात होय.

- १० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
- ११ प्रथमनां त्रण दर्शन होय.
- १२ प्रथमनां त्रण ज्ञान तथा त्रण अज्ञान
मली ठ होय.
- १३ मनना चार, वचनना चार तथा वैक्रिय
काययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग अने
कामर्ण काययोग. ए अगीयारयोग होय.
- १४ नारकीनी पेरे नव उपयोग होय.
- १५ एकसमये जघन्यथी एक, वे, त्रण अने
उत्कृष्टा संख्याता असंख्याता उपजे.
- १६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
- १७ जघन्य दश हजारवर्ष अने उत्कृष्टुं ए
क पद्योपमायु जाणवुं.
- १८ पर्याप्ति ठ होय परंतु जाबा अने मन सा

- थे उपजे माटे पांच पर्यासि पण कहिये.
- १ए ठ दिशिनो आहार लीये
- २० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
- २१ पृथिवी, अप्स, वनस्पति, तिर्यच पंचेंद्रिय अने मनुष्य. ए पांच दंडकमां जइ उपजे.
- २२ गर्जज तिर्यच अने गर्जज मनुष्य. ए बे दंडकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
- २३ पुरुष अने स्त्री, ए बे वेद होय.
- २४ अल्पबहुत्वमां जलचर पंचेंद्रिय तिर्यचिणीयकी एजीव संख्यातगुणा ठे. अथवा नारकीयकी अधिक ठे.
- २५ एमनां जवन असंख्यातां ठे.
- २६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त विरहकाल जाणवो.
- २७ प्रथमना चारें गुणगणां लाजे.
- २८ प्राण आश्रयी दशे प्राण होय.
- २९ संयतीना आठ जंग त्रीजे प्रकारे लाजे.
- ३० एकज अचित्ताहार लीयें.
- ३१ उंज अने लोमे करी आहार लीये.
- ३२ दशहजार वर्षायुवालाने चोथजक्ते आहारनी इहा अने पळ्योपमायुवालाने दिवल प्रथक्त्वे आहार इहा उपजे.
- ३३ कायस्थिति जवस्थिति जेटली जाणवी. ए मरीने फरी देव गतिमां न उपजे.
- ३४ चारे निकायनी ४ लाखयोनि जाणवी.
- ३५ कुलकोडी पण चारे निकायनी साथेज जवनपतिना दंडकमां कही ठे.

२३ हवे त्रेवीशमा ज्योतिषीदेवोना दंडकें पांत्रीश द्वार कहे ठे.

- १ वैक्रिय, तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय.
- २ जघन्य तथा उत्कृष्टावगाहना व्यंतर देवोनी पेरे जाणवी.
- ३ संघयण रहित ठे असंघयणी ठे.
- ४ संज्ञा, चार, दश, शोल होय.
- ५ एक समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
- ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
- ७ एकज तेजोवेश्या होय.
- ८ पांचे इंद्रियो होय.
- ९ प्रथमना पांच समुद्घात होय.
- १० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
- ११ चक्षुरादि त्रण दर्शन होय.
- १२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान.
- १३ व्यंतरनी पेरे अगीयार योग होय.
- १४ नारकीनी पेरे नव उपयोग होय.
- १५ व्यंतरदेवोनी पेरे उपपात जाणवो.
- १६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
- १७ जघन्य एक पळ्योपमनो आठमो जाग अने उत्कृष्टुं एक पळ्योपम एक लाख वर्षे अधिक एटवुं आयु जाणवुं.
- १८ पर्यासि ठ होय परंतु जाषा अने मन साथे लेतां पांच पर्यासि पण कहिये.
- १९ ठ दिशिनो आहार लीये.
- २० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
- २१ व्यंतरनी पेरे पांच दंडकमां जइ उपजे.
- २२ व्यंतरनी पेरे बे दंडकना जीवो एमां आवी उपजे.

- ३३ पुरुषवेद अने स्त्रीवेद, ए बे वेद होय.
 ३४ अद्वयबहुत्वमां व्यंतरिकदेवोयकी ज्यो
 तिषी देवो अधिक ठे.
 ३५ एमनां जवन असंख्यातां ठे.
 ३६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवी
 श मुहूर्त पर्यंत विरहकाल जाणवो.
 ३७ प्रथमना चारे गुणगणां लाजे.
 ३८ एमने दशे प्राण होय.

- ३९ संयतीना आठ जंग त्रीजे प्रकारे लाजे.
 ३० एक अचित्ताहार लीये.
 ३१ उज अने लोमे करी आहार लीये,
 ३२ जघन्योत्कृष्ट दिवस पृथक्त्वे आहार
 नी इच्छा उपजे.
 ३३ ज्योतिषी मरी फरी ज्योतिषी न थाय.
 ३४ योनिद्वार बद्धा देवोनुं साथे कहेवाणुं ठे.
 ३५ कुलकोनी द्वार पण साथे कहेवाणुं ठे.

३४ चोवीशमा वैमानिक देवोना दंडके पांत्रीश द्वार कहे ठे.

- १ वैक्रिय तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर.
 २ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग अ
 ने उत्कृष्टी सात हाथनी अवगाहना
 तथा उत्तर वैक्रिय शरीर करे तो जघन्य
 अंगुलनो संख्यातमो जाग अने उत्कृष्ट
 लाख योजन सुधी ते बारमा देवलोक
 सुधीना देवो करे, उपरांतना न करे.
 ३ संघयण रहित ठे असंघयणी ठे.
 ४ संज्ञा चार, दश, शोल होय.
 ५ एकज समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
 ६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
 ७ तेजो, पद्म अने शुक्ल ए त्रण वेश्या होय.
 ८ इंद्रियद्वार आश्रयी पांचे इंद्रिय होय.
 ९ प्रथमना पांच समुद्रघात होय.
 १० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
 ११ चक्रुरादि त्रण दर्शन होय.
 १२ प्रथमनां त्रण ज्ञान, त्रणअ ज्ञान होय.
 १३ व्यंतरनी पेरे अगीयार योग होय.
 १४ बार देवलोक अने नव त्रैवेयकना दे
 वोने विषे नारकीनी पेरे नव उपयोग

होय अने पांच अनुत्तर विमानवासी
 देवो, बद्धा सम्यक्दृष्टि ठे, माटे तेमने तो
 प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण दर्शन म
 ली ठ उपयोग होय.

- १५ जघन्यशी एक समयमां एक, बे, त्रण
 उपजे अने उत्कृष्टशी तो आठमा देव
 लोक पर्यंत संख्याता असंख्याता पण
 उपजे. परंतु नवमा देवलोकशी मांकी
 ने सर्वार्थसिद्धनामा पांचमा अनुत्तर
 विमान पर्यंत संख्याताज उपजे, कारण
 के, त्यां मात्र मनुष्यमांशीज आवी उ
 पजे ठे अने फरी च्यवे, तेवारे पण म
 नुष्यमांज जाय, बीजे कयांहि न जाय.
 १६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणी लेवुं.
 १७ जघन्य एक पद्योपम अने उत्कृष्ट ते
 त्रीश सागरोपमायु जाणवुं.
 १८ ठ पर्यासि होय पण जाषा अने मन
 ए बे पर्यासि एके वखत साथेज उपजे
 ठे तेशी पांच पर्यासि पण कहिये.
 १९ ठ दिशिनो आहार द्विये.

- १० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
 ११ पहिला अने बीजा देवलोकना देवो मरीने पृथिवीकायनी पेरे पांच दंरुकमां जइ उपजे अने त्रीजाथी आठमा सुधी ठ देवलोकना देवो गर्जज तीर्यच अने गर्जज मनुष्यमां आवी उपजे.
 १२ आठमा देवलोक सुधी गर्जज तीर्यच अने गर्जज मनुष्य, ए बे दंरुकना जीवो जाय अने उपरांतना देवलोकमां तो एक गर्जज मनुष्य आवी उपजे.
 १३ पहिला अने बीजा देवलोकने विषे पुरुष तथा स्त्री, ए बे वेद होय अने उपरांतना देवोमां एकज पुरुष वेद होय.
 १४ अद्वयबहुत्वमां बादर अग्निकायिया जीवोथकी वैमानिक देवो अधिक ठे.
 १५ जवन (७४९७०२३) ठे पाचडा ६२ ठे.
 १६ जघन्य सर्व स्थानके एक समय अने उत्कृष्टो पद्योपमनो संख्यातमो जाग विरहकाल जाणवो. तिहां जुदे जुदे स्थानके उत्कृष्टो विरह आ प्रमाणे.
 १ पहिला बीजा देवलोकें चौबीस मुहूर्त्त.
 २ त्रीजा देवलोकें नव दिवसवीसमुहूर्त्त.
 ३ चौथा देवलोकें बार दिवस दशमुहूर्त्त.
 ४ पाचमां देवलोकें साडी बावीस दिवस.
 ५ षष्ठा देवलोकें पीस्तालीश दिवस.
 ६ सातमा देवलोकें एंशी दिवस.
 ७ आठमा देवलोकें एकशो दिवस.
 ८ नवमा तथा दशमा देवलोकें संख्याता महीनानो विरहकाल जाणवो.

- ए अगीयारमा तथा बारमा देवलोकें संख्याता वर्षनो विरहकाल जाणवो.
 १० त्रैवेयकना पहिला त्रिकनेविषे संख्याता शेंकडा वर्षनो विरह जाणवो.
 ११ बीजा मध्यम ते वचला त्रिकने विषे संख्याता हजार वर्षनो विरह जाणवो.
 १२ त्रीजा उपरला त्रिकने विषे संख्याता लाख वर्षनो विरहकाल ठे.
 १३ विजयादि चार अनुत्तर विमाने पद्योपमनो असंख्यातातमो जाग विरह काल जाणवो.
 १४ पांचमा सर्वार्थसिद्धविमाने पद्योपमनो संख्यातमो जाग विरह ठे.
 १५ गुणगणां द्वार आंश्री बे जेद ठे.
 १ बार देवलोक अने नव त्रैवेयकना देवोमां प्रथमना चारे गुणगणां लाजे.
 २ पांच अनुत्तरविमानना सर्व देवोमां एकज चोथुं गुणगणुं लाजे.
 १६ वैमानिक देवोमां दशे प्राण होब.
 १७ संयतिना आठबोल त्रीजा प्रकारे लाजे.
 १८ एकज अचित्त आहार लीये.
 १९ उंज अने लोमे करी आहार लीये.
 २० आहारनी श्वा आ प्रमाणे उपजे.
 १ एक पद्योपमायुवाला देवोने बे दिवसथी मांडीने नव दिवस पर्यते आहारनी श्वा उपजे.
 २ जेनुं एकसागरोपमायु होय, तेने एक हजारवर्षे आहारनी श्वा उपजे.
 ३ एक सागरोपम उपरांत जेटला सा

गरोपमनुं आयु होय तेटला हजार वर्षे आहारनी श्वा उपजे.
 ४ सर्वार्थसिद्ध विमाने तेत्रीश सागरो पमायु ठे माटे तेने तेत्रीश हजार वर्षे आहारनी श्वा उपजे.
 ३३ वैमानिक देवोनी कायस्थिति तो एम नी जवस्थिति जेटळी जाणवी. मरीने वैमानिकमां पाठा उपजता नथी.
 ३४ चारेनिकायना देवोनी ४ लाख योनिठे.

३५ चारे निकायना देवो संबंधी तेरे दंडक मां छवीश लाख कोडी कुल जाणवां.
 ए रीते चोवीश दंडक मांहेला प्रत्येक दंडकने विषे पांत्रीश द्वारनो विचार संक्षेपथी लख्यो अने ए संबंधि देव नरकादिकोनां प्रतरे प्रतरे जूदां जूदां आयु तथा शरीरनी अवगाहना प्रमुख अनेक वातो विस्तारे समज वामां आववा माटे आगल तेना खुलासा पूर्वक थंत्रो दाखल करेला ठे, ते जोड् देवा.

तिहां चार निकायनां देवोमां प्रथम जवनपति देवोनी वक्तव्यता कहे ठे

एक लाख एंशी हजार योजन रत्नप्रज्ञानो पृथ्वीपिंरु ठे, तेमां एक हजार योजन उपर मूकी आपीये अने एक हजार योजन तळीये मूकी आपीये, बाकी वच्चेंनां १९०००० योजननो पिंरु तेमांहे यथायोग्य पणे दशजातिना जवनपति देवतानां जवन ठे.

जवन एटले देवतानी काया प्रमाण महामंडप समान आवास जाणवा. ते बाहेर वाटला गोलाकारे ठे अने मांहे चोखूणां तथा तळीयामां कमलना कोना सरखां ठे.

ते जवनमध्ये जे न्हानामां न्हानां जवन ठे, ते जंबूद्वीप प्रमाण एक लाख योजन लांबां पहोलां ठे. अने जे मध्यमजवन ठे, ते संख्याता कोटि योजन प्रमाण ठे, तथा जे अत्यंत महोटां जवन ठे, ते असंख्याता कोटाकोटि योजन प्रमाण ठे. ते महोटा एकेका जवनमां असंख्य देवोनी निवास ठे.

मेरुमध्यवर्ती जे आठ रुचक प्रदेश ठे, तिहांथी अर्द्धोअर्द्ध बे खंरु करीये, एक दक्षिण दिशिनुं अर्द्ध अने बीजुं उत्तरदिशिनुं अर्द्ध. एवा बे जागे वहेचतां एकेक निकायनो एक दक्षिणदिशिनो इंद्र अने बीजो उत्तरदिशिनो इंद्र जूदा जूदा गणतां दश निकायना वीश इंद्र ठे. ते दशनिकायमां पद्देल्ला निकायनुं नाम असुरकुमार निकाय ठे, केम के वैमानिक देवोने सुर कहीये, ते वैमानिक ए नही माटे एने असुर कहीये, तथा बालकनी घेरे क्रीडाना करनार माटे कुमार कहीये. तेमनुं आयु आ प्रमाणे ठे, ते कहे ठे.

१ दक्षिणदिशिनो अधिपति असुरकुमारनो राजा चमरेंद्र, तेनुं उत्कृष्टायु एक सागरोपम.

२ उत्तरदिशिनो अधिपति बलींद्र असुरकुमारो राजा, तेनुं उत्कृष्टायु सागरोपम जाजेरुं.

३ चमरेंद्रनी देवीनुं उत्कृष्टायु साडा त्रण पदयोपम जाणवुं.

- ४ बलींद्र देवीनुं उत्कृष्टायु सामुचार पद्योपम जाणवुं.
 ५ शेष दक्षिणदिशिना धरणेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनुं उत्कृष्टायु प्रत्येके दोढ पद्योपम जाणवुं.
 ६ उत्तरदिशिना नूतानंदेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनुं उत्कृष्टायु देशे ऊणा बे पद्योपम जाणवुं.
 ७ धरणेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीनुं उत्कृष्टायु अरुं पद्योपम जाणवुं.
 ८ नूतानंदेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीनुं उत्कृष्टायु देशोन एक पद्योपम जाणवुं.
 ९ ए सर्वनुं जघन्यायु दश हजार वर्षनुं जाणवुं. अने जघन्यथी उपरांत उत्कृष्टथी नीचुं ज्यां सुधी उत्कृष्ट पूर्ण न थाय, त्यांसुधीनुं सर्व मध्यमायु कहेवुं. एम ए दशे निकायनां नाम तथा प्रत्येक निकायना दक्षिण उत्तरदिशिना बे बे इंद्रोनां नाम तथा दक्षिण उत्तरना जेदे करी प्रतिनिकायना जवननी संख्या तथा ते देवोसंबंधी पोतपोताना निकाय जेथकी उलखाय तेवां चिन्ह, तेमना आचरणोने विषे होय ते ते चिन्ह तथा तेमना शरीरना वर्ण, तथा वस्त्रना वर्ण, तथा ते इंद्रोना सामानिक देवो जे इंद्रसरखी कृद्धिना धणी होय ते प्रत्येक इंद्रने केटवा होय? तेनी संख्या तथा प्रत्येक इंद्रना आत्मरक्षक देवोनी संख्या तथा कटकना देवो इत्यादिक वातो सर्व नीचे लखेला यंत्रोथी जाणवी.

जवनपतिनी दशनिकायनां चिन्ह तथा वर्ण, वस्त्रवर्ण, अने सामानीक देव, तथा आत्मरक्षक देवोनी संख्यानो यंत्र.

| निकायनां नाम. | निकाय चिन्ह. | निकाय शरीरवर्ण. | निकायना वस्त्रवर्ण. | दक्षिणश्रेणिसामानिकदेव. | उत्तरश्रेणिसामानिकदेव. | दक्षिणश्रेणिना आत्मरक्षकदेवता. | उत्तरश्रेणिना आत्मरक्षकदेव. |
|----------------|--------------|-----------------|---------------------|-------------------------|------------------------|--------------------------------|-----------------------------|
| असुरकुमार, | चूनामणि | कृष्णवर्ण. | रक्तवर्ण. | ६४००० | ६०००० | २५६००० | २४०००० |
| नागकुमार. | फणी | धवलवर्ण. | नीलवर्ण. | ६००० | ६००० | २४००० | ४०००० |
| सुवर्णकुमार. | गरुड. | कनकवर्ण. | धवलवस्त्र. | ६००० | ६००० | २४००० | २४००० |
| विद्युत्कुमार. | वज्र. | रक्तवर्ण. | नीलांवस्त्र. | ६००० | ६००० | २४००० | २४००० |
| अग्निकुमार. | कलश. | रक्तवर्ण. | नीलांवस्त्र. | ६००० | ६००० | २४००० | २४००० |
| द्रीपकुमार. | सिंह. | रक्तवर्ण. | नीलांवस्त्र. | ६००० | ६००० | २४००० | २४००० |
| उदधिकुमार. | अश्व. | धवलवर्ण. | नीलांवस्त्र. | ६००० | ६००० | २४००० | २४००० |
| दिशिकुमार. | हाथी. | रक्तवर्ण. | धवलांवस्त्र | ६००० | ६००० | २४००० | २४००० |
| वायुकुमार. | मकर. | नीलवर्ण. | संध्यराग. | ६००० | ६००० | २४००० | २४००० |
| स्तनितकुमार. | वर्द्धमान. | कनकवर्ण. | धवलांवस्त्र | ६००० | ६००० | २४००० | २४००० |

जवनपति अने व्यंतर देव तथा तेमनी देवीयोनां जे जघन्य उत्कृष्टायु तेनो यंत्र.

| इंद्रोनां नाम. | देवोनुं जघन्यायु. | देवोनुं उत्कृष्टायु. | देवीनुं जघन्यायु. | देवीनुं उत्कृष्टायु. |
|----------------------|-------------------|----------------------|-------------------|----------------------|
| दक्षिण चमरेंद्र. | दश हजार वर्ष. | एक सागरोपम. | दश सहस्र वर्ष. | ३॥ पद्योपम. |
| उत्तरश्रेणि बलींद्र. | दश हजार वर्ष. | १ सागर जाकेरुं. | दश सहस्र वर्ष. | ४॥ पद्योपम. |
| दक्षिण ए निकाय. | दश हजार वर्ष. | दोन पद्योपमनुं. | दश सहस्र वर्ष. | अर्द्ध पद्योपमनुं. |
| उत्तर नव निकाय. | दश हजार वर्ष. | बे पद्यदेशे उणो. | दश सहस्र वर्ष. | एकपद्यदेशे उणुं. |
| व्यंतर. | दश हजार वर्ष. | एक पद्योपम. | दश सहस्र वर्ष. | अर्द्ध पद्योपम. |
| वाणव्यंतर. | दश हजार वर्ष. | एक पद्योपम. | दश सहस्र वर्ष. | अर्द्ध पद्योपम. |

दशजवनपतिना तथा दक्षिणोत्तरेंद्रनां नाम तथा दक्षिण उत्तर जवन संख्यानो यंत्र.

| दशनिकायनां नाम. | दक्षिणेंद्रनां नाम. | उत्तरेंद्रनां नाम. | दक्षिणेंद्रजवन संख्या. | उत्तरेंद्रजवन संख्या. | उजयमलीजवन संख्या. |
|-----------------|---------------------|--------------------|------------------------|-----------------------|-------------------|
| असुरकुमार. | चमरेंद्र. | बलींद्र. | ३४००००० | ३०००००० | ६४ लाखजवन. |
| नागकुमार. | धरणेंद्र. | भूतानंदेंद्र. | ४४००००० | ४०००००० | ८४ लाखजवन. |
| सुवर्णकुमार. | वेणुदेव. | वेणुदादी. | ३०००००० | ३४००००० | ७२ लाखजवन. |
| विद्युत्कुमार. | हरिकांत. | हरिशिख. | ४०००००० | ३६००००० | ७६ लाखजवन. |
| अग्निकुमार. | अग्निशिख. | अग्निमाणव. | ४०००००० | ३६००००० | ७६ लाखजवन. |
| द्वीपकुमार. | पूर्णेन्द्र. | वशिष्ठेंद्र. | ४०००००० | ३६००००० | ७६ लाखजवन. |
| उदधिकुमार. | जलकांत. | जलप्रज. | ४०००००० | ३६००००० | ७६ लाखजवन. |
| दिशिकुमार. | अमितगति. | अमितवाहन. | ४०००००० | ३६००००० | ७६ लाखजवन. |
| पवनकुमार. | वेदंबक. | प्रजंजन. | ५०००००० | ४६००००० | ९६ लाखजवन. |
| स्तनितकुमार. | घोष. | महाघोष. | ४०००००० | ३६००००० | ७६ लाखजवन. |
| शरवाले संख्या. | | | ४०६००००० | ३६६००००० | ७७२०००००. |

हवे व्यंतरदेवोनी वक्तव्यता कहे ठे.

रत्नप्रजा पृथ्वीनी उपर मूकेलो जे एकहजार योजननो रत्नमयकांड, तेमांथी एक शो योजन नीचेंना तथा शो योजन उपरना मूकीने वचला आठशें योजननी भूमि कामध्ये व्यंतरदेवोनां महारमणीय असंख्यातां नगर ठे, तेमां रहां थकां व्यंतरिक देवो वरप्रधान तरुणीयोनां गीत गानना अने वाजित्रो वजाववाना शब्द सांजलवे क री प्रमुदित थया थका गत कालने पण जाणता नथी.

ते व्यंतरदेवोना आठ निकाय ठे, तेना पण दक्षिण श्रेणि अने उत्तर श्रेणिना प्रत्येके एकेक इंद्र गणतां आठ निकायना शोल इंद्रो ठे.

ते व्यंतरोनां नगर, उत्कृष्टां महोटां ते जंबूद्वीप जेवनां लांबां पहोलां ठे, अने घणां न्हानां ठे, ते नरतक्षेत्र जेवनां (५१६) योजनने ठ कला प्रमाण ठे. तथा मध्यम विमान ते महाविदेह समान (३३६७४) योजननी उपर उंगणीया चार चाग जेवना ठे, ते आठ व्यंतर निकायनां नाम तथा तेमना इंद्रोनां नाम तेमज चिन्ह प्रमुख पूर्वोक्त ऋचनपतिनी पेठे सर्व वातो नीचेना यंत्रथी जोइ लेवी.

हवे जेम व्यंतर देवोना आठनिकाय कह्या तेम वली रत्नप्रज्ञाना उपरलां एकशो योजनना पिरुमांहे दश योजन नीचे तलीये मूकीये अने दश योजन उपर मूकीये, शेष एंशी योजन पृथ्वीपिंडमांहे बीजा वाणव्यंतरना आठ निकाय ठे, एटले मेरुमध्यवर्ती गोस्तनने आकारे आठ रुचक प्रदेशथी नीचे दश योजन मूकीने नीचला एंशी योजनमां आठ निकायना दक्षिणदिशि अने उत्तरदिशिना जेदे करी बे बे इंद्रो ठे, तेमनां नाम तथा निकायनां नाम आदिक चिन्ह वर्ण प्रमुख सर्व, नीचला यंत्रोथकी जाणवां.

इहां व्यंतरना शोल तथा वाणव्यंतरना शोल मली बत्रीश इंद्र व्यंतर देवोना अने वीश ऋचनपतिना. तेमज यद्यपि सूर्य अने चंद्र असंख्याना इंद्र ठे, तथापि जातिनी अपेक्षाये एक चंद्रमा अने एक सूर्य, ए बे इंद्र ज्योतिषीना लेवा अने पहेलां देवलोकथी आठमा देवलोक सुधी एकेक इंद्र ठे, अने नवमा दशमा ए बे देवलोकनो एक, तथा अगीयारमा, बारमा, ए बे देवलोकनो एक, मली बार देवलोकना दश इंद्र गणतां सरवाले चोशठ इंद्र संख्याये जाणवा.

वली एटलुं विशेष ठे जे, ज्योतिषी अने व्यंतर, ए बे निकायने विषे इंद्रोना लोकपाल तथा गुरुस्थानीया जे त्रयस्त्रिंशद्देवता, ते नथी.

हवे व्यंतर देव देवीयोनुं जघन्योत्कृष्टायु कहे ठे.

व्यंतर अने वाणव्यंतरना देवो तथा देवीयोनुं जघन्यायु दश हजार वर्ष जाणवुं, अने देवोनुं उत्कृष्टायु संपूर्ण एक पद्योपमनुं जाणवुं. तथा देवीयोनुं उत्कृष्टायु अर्ध पद्योपमनुं जाणवुं. अने श्रीं क्ली धृति, कीर्त्ति, बुद्धि अने लक्ष्मी, ए ठ देवीयोनुं जे एक पद्योपमायु कहुं ठे, ते देवीयो ऋचनपतिनी ठे, पण व्यंतरनी नथी. व्यंतरना आयुना यंत्रनी स्थापना नीचे करीये ठैये, तेथी तेनुं आयु जाणवुं.

आठ जातिना व्यंतरदेवी संबंधि प्रतिज्ञेद कहे ठे.

| | | |
|------------------|----|---|
| पिशाचनाप्रकार. | ५१ | १ कूष्माण्ड २ पटक ३ जोष ३ आन्हिक ४ काल ५ महाकाल ६ मोक्ष ७ आमोक्ष ८ तालपिशाच. ९ पिखरपिशाच १० अधस्ता रक ११ देव १२ महादेव १३ उशिक १४ वनपिशाच १५. |
| चूतनाप्रकार. | ९ | १ सुरूप २ प्रतिरूप ३ श्वेतजड ३ चूतोत्तम ४ स्कंदिक ५ अति पातकजड ६ महावेग ७ प्रतिवेग ८ आकाशवेग ९. |
| यक्षनाप्रकार. | १३ | ३ पूर्णजड १ माणिकजड २ श्वेतजड ३ हरिकजड ४ सुमनोजड ५ व्यतिपाकजड ६ सुजड ७ सर्वतोजड ८ मनुष्यजड ९ धनाधि पति १० धनहार ११ सुपयक्ष १२ यक्षोत्तम १३. |
| राक्षसनाप्रकार. | ७ | ४ जीम १ महाजीम २ विघ्नविनायक ३ जलराक्षस ४ रुद्रराक्ष स ५ ब्रह्मराक्षस ६ दत्तराक्षस ७. |
| किन्नरनाप्रकार. | १० | ५ किन्नर १ किंपुरुष २ किंपुरुषोत्तम ३ हृदयंगम ४ रूपशाली ५ अ निंदतर्ह ६ किन्नरोत्तम ७ मनोरम ८ रतिप्रिय ९ रतिश्रेष्ठ १० |
| किंपुरुषनाप्रकार | १० | ६ पुरुष १ सत्पुरुष २ महापुरुष ३ पुरुषवृषज ४ पुरुषोत्तम ५ अ तिपुरुष ६ माहादेव ७ मरुत ८ मेरुकांत ९ ज्ञास्वत १० |
| महोरगनाप्रकार | १० | ७ जुजंग १ जोगशाली २ महाकाय ३ अतिकाय ४ स्कंधशाली ५. मनोरम ६ माहावेग ७ महेश्वर ८ मेरुकांत ९ ज्ञास्वत १० |
| गंधर्वनाप्रकार. | १२ | ७ हाहा १ हूहू २ तुंबरु ३ नारद ४ ऋषिवादक ५ चूतवादक ६ कांदंब ७ महाकादंब ८ रैवत ९ विश्वावसु १० गीतरति ११ गीतयशा १२ हवे ज्योतिषी देवोनी वक्तव्यता कहे ठे. |

मेरुमध्य रुचकथकी नवशें योजन उपर अने नवशें योजन नीचे मली अठारशें योजन प्रमाण तिर्यक् लोक ठे. तिहां समचूतला पृथ्वीथकी ७९० योजन उपरांत ए कशो ने दश योजनमांहे ज्योतिषचक्र रहे ठे, ते केवी रीते? तो के प्रथम समचूत ल थकी ७९० योजने तारानां विमान ठे ८०० योजने सूर्यनुं विमान ठे, अने ८०० योजने चंद्रमानुं विमान चाले ठे, ८०७ योजने नक्षत्रनां विमान चाले ठे, ८०८ योज ने बुधनुं विमान चाले ठे, ८०९ योजने शुक्रनुं विमान चाले ठे. ८१४ योजने बृहस्प तिनी तारो चाले ठे, ८१७ योजने मंगलनुं विमान चाले ठे, अने ९०० योजने शनिनुं विमान चाले ठे. एम ११० योजनमां ज्योतिषचक्र चार चाले ठे.

१ ज्योतिषीयोनां विमान मेरुपर्वतथकी ११२१ योजन उरहां एटलां दूर मनुष्य

लोकमांहे चरे ठे, जमे ठे अने ११११ नुं योजन अलीकथी उरहां एटले चारे दिशाये लोक ना ठेहनाथकी ११११ योजनमांहेली कोरे अलोकनी अबाधाये ज्योतिषचक्र स्थिर रहेठे.

हवे सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र अने तारा, ए पांच जातिना ज्योतिषी देव देवीयोनुं ज घन्योत्कृष्टायु कहे ठे. ते ज्योतिषी देवो अढी द्वीपमांहे जेटला ठे, ते सर्व चर ठे, अने अढीद्वीपथी बाहिर जे असंख्याता द्वीप समुद्र ठे, तेमां जेटला ज्योतिषीदेवो ठे, ते सर्व स्थिर जाणवा. ए चर तथा स्थिर, बेहु प्रकारना ज्योतिषी देव तथादेवीनुं आयु कहेठे

१ चंद्रमानुं तथा चंद्रमाना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु एक पद्योपम एक लाख वर्षे अधिक तथा तेमनी देवीयोनुं अर्द्धपद्योपम पन्नास हजार वर्षे अधिक जाणवुं.

२ सूर्य तथा तेना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु एक पद्योपम एक हजारवर्षे अधिक तथा तेमनी देवीयोनुं आयु पांचशे वर्षे अधिक अर्द्धपद्योपम जाणवुं.

३ ग्रह तथा ग्रहना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु संपूर्ण एक पद्योपम जाणवुं तथा तेमनी देवीयोनुं उत्कृष्टायु अर्द्धपद्योपमनुं जाणवुं.

४ नक्षत्र तथा नक्षत्रना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु अर्द्धपद्योपम अने तेमनी देवीयोनुं आयु एक पद्योपमनो चोथो जाग जाणवुं.

५ तारा तथा ताराना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु पद्योपमनो चोथो जाग कांश्क जाजेरुं अने तेमनी देवीयोनुं एक पद्योपमनो आठमो जाग विशेषाधिक जाणवुं.

६ जघन्यायुमां चंद्रमा अने सूर्य, ए बे तो इंद्र ठे, तथा ग्रह, नक्षत्र अने तारा, ए त्रण विमानना धणी ठे तेमनुं आयु जघन्य मध्यम न होय परंतु उत्कृष्टज होय, तेथी चं घना विमानवासी देव तथा देवीयो एक युगल तथा सूर्यना विमानवासी देव तथा देवीयो ए बीजुं युगल, तथा ग्रहना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए त्रीजुं युगल, तथा नक्षत्रना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए चोथुं युगल. ए चार युगलनुं जघन्यायु पद्योपमनो चोथो. जाग तथा ताराना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए पांचमुं युगल ठे, तेनुं आयु पद्योपमनो आठमो जाग जाणवुं एना यंत्रो आगल आवशे

हवे वैमानिकदेवोनुं जघन्य तथा उत्कृष्टायु कहे ठे.

१ सौधर्मदेवलोकने ठेहला तेरमे प्रतरें उत्कृष्टायु बे सागरोपमनं जाणवुं अने जघन्यथी तो सर्व तेरे प्रतरे एक पद्योपमायु जाणवुं.

२ ईशान देवलोकें उत्कृष्ट बे सागरोपम पद्योपमना असंख्यातमे जागे अधिक अने जघन्यथी पद्योपमने असंख्यातमे जागे अधिक, एक पद्योपम जाणवुं.

३ सनत्कुमारें उत्कृष्ट सात सागरोपम अने जघन्य बे सागरोपम जाणवुं.

- ४ माहेंद्र उक्कृष्टथी पद्योपमना असंख्यातमे जागे अधिक सात सागरोपम अने जघन्यथी बे सागरोपम जाजेरुं जाणवुं.
- ५ ब्रह्मदेवलोके उक्कृष्ट दश सागरोपम अने जघन्यथी सात सागरोपम.
- ६ वांतक देवलोके उक्कृष्ट चौद सागरोपम, अने जघन्यथी दश सागरोपम.
- ७ शुक्रदेवलोके उक्कृष्ट सत्तर सागरोपम. अने जघन्यथी चौद सागरोपम.
- ८ सहस्रारे उक्कृष्ट अठार सागरोपम अने जघन्य सत्तर सागरोपम.
- ९ आनत देवलोके उक्कृष्ट उंगणीश सागरोपम अने जघन्यथी अठार सागरोपम.
- १० प्राणत देवलोके उक्कृष्ट वीश सागरोपम अने जघन्यथी उंगणीश सागरोपम.
- ११ आरण देवलोके उक्कृष्ट एकवीश सागरोपम अने जघन्यथी वीश सागरोपम.
- १२ अच्युत देवलोके उक्कृष्ट बावीश सागरोपम अने जघन्यथी एकवीश सागरोपम.
- १३ पठी नवग्रैवेयके प्रत्येक एकका ग्रैवेयके जघन्य उक्कृष्ट बेहुमां अच्युतदेवलो कथी एकेक सागरोपमनी वृद्धि करीये, तेवारे नवमा ग्रैवेयके उक्कृष्टा एकवीश सागर अने जघन्यथी त्रीश सागरोपमायु थाय.
- १४ पांच अनुत्तर विमानमांहेला पहेला विजयादि चार विमाने उक्कृष्ट तेत्रीश सा गर अने जघन्य एकत्रीश सागरायु कळुं ठे, अने पांचमा सर्वार्थसिद्ध विमाने तो अजघन्योक्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु ठे, एमां वध घट नथी.

हवे वैमानिक देवीयोनुं जघन्य उक्कृष्ट आयु कहे ठे.

वैमानिक देवीयोनी उत्पत्ति मात्र प्रथमना सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकमांज ठे, ते देवीयो बे प्रकारनी ठे एक तो परिग्रहीता ते परणेळी कुलांगना सरखी जाणवी अने बीजी अपरिग्रहीता ते वेश्या सरखी जाणवी. ए देववेश्या कहेवाय.

१ तिहां सौधर्मदेवलोके परिग्रहीता अपरिग्रहीता ए बेहुनुं जघन्यायु एक पद्यो पम ठे, अने ईशान देवलोके बेहुनुं जघन्यायु एक पद्योपम जाजेरुं जाणवुं.

२ सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीयोनुं उक्कृष्टायु सात पद्योपम ठे, तथा अपरि ग्रहीतानुं उक्कृष्टायु पच्चास पद्योपम ठे, तेमज ईशानदेवलोके परिग्रहीतानुं उ कृष्टायु नव पद्योपम ठे अने अपरिग्रहीतानुं पच्चावन पद्योपम ठे.

हवे चारे निकायना देवो संबंधि इंद्रोनी सर्व अंतेउरमां प्रधान मुख्य पहराणी स रखी जे देवीयो, तेने अग्रमहीषी कहीये, ते कया कया इंद्रने केटली केटली होय ?

१ जवनपतिनी पहेली निकायना चमरेंद्र तथा बलींद्रने प्रत्येके पांच पांच होय.

- २ जवनपतिनी नागकुमारादिक नव निकायना धरणींद्र अने चूतानंदेंद्र आदिक अठार इंद्रोने प्रत्येके ठ ठ अग्रमहीषी होय.
- ३ व्यंतर देवोना काल महाकालादिक बत्रीश इंद्रोने प्रत्येके चार चार अग्रमहीषी होय
- ४ ज्योतिषीना इंद्र जे चंद्रमा अने सूर्य, तेने प्रत्येके चार चार अग्रमहीषीयो होय.
- ५ सौधर्म तथा ईशान, ए वे देवलोकना इंद्रोने प्रत्येके आठ आठ अग्रमहीषीयो होय.
- ६ वे देवलोकथी उपरांतना देवलोकमां देवीयोनी उत्पत्ति नथी माटे तिहांना इंद्र तथा तिहांना निवासी देवोने जेवारे विषय सेववानी बांठा थाय, तेवारे सौधर्म ईशानवासी अपरिग्रहीता देवीयो यथायोग्य पणे तेमने उपजोगमां आवे.

हवे वैमानिक देवोनुं प्रतरे प्रतरे जूडुं जूडुं आयु कहेवा माटे प्रतरसंख्या कहेठे. तिहां जेम घरनी उपर जूदा जूदा चार पांच मजला होय, तेम पहेला अने बीजा देव लोकनी उपराउपर तेर चूमिरूप तेर मजला ठे, तेने प्रतर कहीये. ते आवी रीते के:- वे देवलोक मट्यां वलयाकारे ठे. तिहां पूर्वमहाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी उपर आवेली देवलोकसंबंधी चूमिनी वचमांहे अर्द्धवलयाकार खंरुथकी एक दक्षिणदिशिखंरु अने बीजो उत्तरदिशिखंरु, एवा वे खंड अर्द्धो अर्द्ध करीये, तेनां दक्षिणदिशिखंडना अर्द्धवलयाकार खंरु प्रतर सौधर्मेंद्रना अने उत्तरदिशिना अर्द्धवलयाकार खंड प्रतर ई शानेंद्रना जाणवा. एम बीजा पण वलयाकार देवलोकना युगलमां एज व्यवस्था क रवी. एटले त्रीजा, चोथा, देवलोकना मट्या वलयाकार बार प्रतर ठे, तेमां दक्षिण दिशि सनत्कुमारनी अने उत्तरदिशि माहेंद्रनी जाणवी. पांचमे ठ प्रतर, षठे पांच प्र तर, सातमे चार प्रतर, आठमे चार प्रतर, नवमां दशमा मली वेहुना चार प्रतर, अ गीथारमा बारमाना चार प्रतर, तथा नव त्रैवेयके प्रत्येक एकेक प्रतर गणतां नवप्रतर ठे, अने पांच अनुत्तरविमाननो एकज प्रतर ठे. एम सर्व मली ऊर्ध्वलोके वासठ प्रतर ठे.

हवे ए प्रत्येक प्रतरे जघन्य उत्कृष्ट आयुष्य जाणवां, माटे प्रथम सौधर्मदेवलोके उ पाय कहे ठे. सौधर्मदेवलोके उत्कृष्टी स्थिति वे सागरोपमनी ठे अने प्रतर तेर ठे, माटे एक सागरना तेर जाग करी प्रतरे प्रतरे एकेका सागरोपमे एकेको जाग आपीये, ते एवी रीते के तेरैया वे सागरोपमना ठवीश जाग थाय, तेने प्रतरे प्रतरे वहेंचीये, तो प हेला प्रतरे तेरैया वे जाग आवे, तेटलुं पहेला प्रतरे उत्कृष्टायु जाणवुं. पठी बीजे प्रत रे वे साथे गुणीये, तेवारे बीजे प्रतरे चार जाग, त्रीजे त्रणथी गुणीये तेवारे ठ जाग, एम यावत् तेरमे प्रतरे वेहु सागरना ठवीशे जाग पूर्ण थाय. तिहां उत्कृष्टी स्थिति वे सागरोपम पूर्ण थाय. एम ईशानदेवलोके पण प्रतरे प्रतरे एज जाग जोजेरा कहेवा.

यावत् तेरमे प्रतरे बे सागरोपम जाजेरा कहेवा, अने जघन्य तो सौधर्म देवलोकना तेरे प्रतरे एक पद्योपम पूर्ण आयु जाणवुं. अने ईशान देवलोके जघन्यथी एक पद्योपम उपर पद्योपमनो असंख्यातमो जाग अधिक एटली स्थिति प्रतरे प्रतरे कहेवी.

हवे इंद्रना लोकपालोनुं आयु कहे ठे. सघला इंद्रना लोकपाल पोतपोताना देव लोकना ठेहला प्रतरे इंद्रना विमाननी फरता चारे दिशाये चार लोकपाल रहे, ते लोकपाल पोतपोताना विमानना धणी ठे, तथापि तेमनुं आयु आ प्रमाणे ठे.

सौधर्मैंद्रना सोम अने यम ए बे लोकपालनुं उत्कृष्टायु एक पद्योपमनी उपर एक पद्योपमना त्रण जाग मांहेलो एक जाग जाणवुं. अने वरुणनुं देशे जणां बे पद्योपमायु जाणवुं तथा वैश्रमणनुं उत्कृष्टायु बे पद्योपम पूर्ण जाणवुं.

ईशानैंद्रना सोम तथा यमनुं उत्कृष्टायु एक पद्योपमनी उपर एक पद्योपमना त्रण जाग करीये, तेवा बे जाग जाणवा. तथा वरुणनुं आयु बे पद्योपम पूर्ण जाणवुं. अने कुबेरनुं बे पद्योपमनी उपर एक पद्योपमना त्रण जाग करीये तेवुं एक जाग जाणवुं, तथा सौधर्मैंद्रना पुत्र सरखा अपत्य देवोनुं आयु एक पद्योपम जाणवुं.

हवे सनत्कुमारादि देवलोके प्रतरे प्रतरे उत्कृष्ट जघन्यस्थिति जाणवा जणी उपाय कहे ठे.

जेम के सौधर्मदेवलोके उत्कृष्टीस्थिति बे सागरोपम ठे अने सनत्कुमार देवलोके उत्कृष्टी स्थिति सात सागरोपम ठे, तेमांथी बे सागरोपम काहाडीये, बाकी पांच सागरोपम रहे, तेने सनत्कुमारना बार प्रतर ठे. तेनो जाग पहोंचे नही, माटे एकेक सागरना बार बार जाग करीये, तेवारे पांच सागरना शाठ जाग थाय, तेने बार जागे वहे चतां एकेक प्रतरे पांच पांच जाग आवे, तिहां पहेले प्रतरे एक आंक ठे, माटे पांच एकां पांच जाग आवे. तेनी साथे सौधर्म देवलोकनी उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपम ठे, ते जेळीये, तेवारे पहेले प्रतरे बे सागरोपमनी उपर बारश्या पांच जाग आयु जाणवुं. बीजे प्रतरे बे आंक ठे तो पांच डु दश जाग बारश्या आवे, तेवारे बे सागरोपम उपर दशजा गायु जाणवुं, त्रीजे प्रतरे त्रण आंक ठे, तो पांच त्रिक पन्नर जाग आवे, तेमां बार जागनुं एक सागरोपम थाय. उपर त्रण जाग वधे, तेनी साथे बे सागरोपम जेळतां त्रण सागरने बारश्या त्रण जागआयु ठे. एम यावत् बारमे प्रतरे सात सागरोपम उत्कृष्टायु थाय. अने जघन्यस्थिति तो बारे प्रतरे सनत्कुमार देवलोकनी बे सागरोपमनी जाणवी. तेमज चोथा माहेंद्र देवलोके प्रतरे प्रतरे सनत्कुमार देवलोकथी साधिक स्थिति कहेवी. ए प्रमाणे पांचमा ब्रह्म आदिक देवलोके पण प्रतरे प्रतरे आयु जाणवा, माटे एज उपाय करवो, ए सर्वना यंत्रोनी स्थापना आगल करी ठे, ते जोवुं.

बार देवलोक. नवं ग्रैवेयक, अने पांच अनुत्तरविमान. एटलां स्थानक

एक बीजानी उपर केवी रीते ठे ? ते देखाडनारो तथा ते प्रत्येक

स्थानके जघन्य उत्कृष्टायु दर्शावनारो यंत्र.

| बीजा विजयंत विमाने. जघन्यायु सागर एकत्रीशं. अने उत्कृष्ट सागर तेत्रीश. पहेला विजयविमाने. | सर्वार्थ सिद्धिविमाने. अजघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु ठे. | त्रीजा जयंतविमाने जघन्य सागर एकत्रीश अने उत्कृष्ट सागर तेत्रीश. चोथा अपराजित विमाने. |
|---|--|---|
| नवमा आदित्य ग्रैवेयके. आठमा प्रीतिकर ग्रैवेयके. सातमा सौमनस्य ग्रैवेयके. ठछा सुमनस ग्रैवेयके. पांचमा विशाल ग्रैवेयके. चोथा सर्वतोन्नद ग्रैवेयके. त्रीजा मनोरम ग्रैवेयके. बीजा शुक्रंकर ग्रैवेयके. पहेला सुदर्शन ग्रैवेयके. | जघन्य सागर ३० जघन्य सागर १ए जघन्य सागर १० जघन्य सागर १७ जघन्य सागर १६ जघन्य सागर १५ जघन्य सागर १४ जघन्य सागर १३ जघन्य सागर १२ | ९ उत्कृष्ट सागर ३१ ० उत्कृष्ट सागर ३० ७ उत्कृष्ट सागर १ए ६ उत्कृष्ट सागर १० ५ उत्कृष्ट सागर १७ ४ उत्कृष्ट सागर १६ ३ उत्कृष्ट सागर १५ २ उत्कृष्ट सागर १४ १ उत्कृष्ट सागर १३ |
| बारमा अच्युत देवलोक. अगीयारमा आरण्यदेवलोक. दशमा प्राणतदेवलोक. नवमा आनतदेवलोक. आठमा सहस्रार देवलोक. सातमा शुक्रदेवलोक. ठछा लांतक देवलोक. पांचमा ब्रह्मदेवलोक. चोथा माहेंद्र देवलोक. त्रीजा सनत्कुमार देवलोक. बीजा ईशान देवलोक. पहेला सौधर्म देवलोक. | जघन्य सागर ११ जघन्य सागर १० जघन्य सागर १ए जघन्य सागर १० जघन्य सागर १७ जघन्य सागर १४ जघन्य सागर १० जघन्य सागर ७ जघन्य साधिकसागर १ जघन्य सागर १ जघन्य साधिकपद्योपम१ जघन्य एक पद्योपम. | १२ उत्कृष्ट सागर १२ ११ उत्कृष्ट सागर ११ १० उत्कृष्ट सागर १० ९ उत्कृष्ट सागर १ए ० उत्कृष्ट सागर १० ७ उत्कृष्ट सागर १७ ६ उत्कृष्ट सागर १४ ५ उत्कृष्ट सागर १० ४ उत्कृष्ट साधिकसागर ७ ३ उत्कृष्ट सागर ७ २ उत्कृष्ट साधिकसागर १ १ उत्कृष्ट सागर १ |

| | | | | | |
|----------------------|--------------------------|------------------------|--------------------------|---|-----------------------------------|
| चंद्रउत्कृष्टा. | एक पद्य एक लक्षवर्षाधिक. | जघन्य पद्य चतुर्थ जाग. | चंद्रदेवी उत्कृष्टायु | अर्द्धपद्य पञ्चा | जघप्यपद्य च |
| सूर्यउत्कृष्टायु. | एक पद्य सहस्र वर्षाधिक. | जघन्यपद्य चोथो जाग. | सूर्यदेवी उत्कृष्टायु. | सहस्रवर्षाधिक अर्द्धपद्य पांच सोवर्षाधिक. | तुर्थ जाग. जघन्यपद्य च तुर्थ जाग. |
| ग्रहउत्कृष्टायु. | एक पद्योपम. | जघन्यपद्य चोथो जाग. | ग्रहदेवी उत्कृष्टायु. | अर्द्ध पद्योपम | जघन्यपद्य च तुर्थ जाग. |
| नक्षत्र उत्कृष्टायु. | अर्धपद्योपम. | जघन्यपद्य चोथो जाग. | नक्षत्रदेवी उत्कृष्टायु. | ॥ पद्यनो चोथो जाग. | जघन्यपद्य च तुर्थ जाग. |
| ताराणामुत्कृष्टायु. | पद्य चतुर्थ जाग साधिक. | जघन्यपद्या ष्टम जाग. | तारादेवी उत्कृष्टायु. | पद्य अष्टम जाग साधिक. | जघन्यपद्य ष जागसाधिक. |

सौधर्म अने ईशानदेवलोके परिग्रहिता अपरिग्रहिता देवीना चारे निकायना देवोनी आयुनो यंत्र.

| | | | | |
|--|------------------------------------|--------------------|-------------|------------|
| सौधर्मपरि०देवी आ० | जघन्य पद्योपम. १ | उत्कृष्ट पद्यो० ७ | सौधर्मै० | अग्रमहिषी० |
| ईशानपरि०देवी आ० | जघन्य पद्यो०जाजेरुं. | उत्कृष्ट पद्यो० ९ | ईशानै० | अग्रमहिषी० |
| सौधर्मपरि०देवी आ० | जघन्य पद्योपम. १ | उत्कृष्ट पद्यो० १० | ज्योतिषी० | अग्रमहिषी० |
| ईशानपरि०देवी आ० | जघन्य पद्यो०जाजेरुं. | उत्कृष्ट पद्यो० १५ | व्यंतरै० ३३ | अग्रमहिषी० |
| सौधर्मइंद्रने आयुष्यमांहे केटली देवी आय? तेहनी संख्या कहेठे. वे करोरु, पंचासी लाख, एकोतेर हजार, चारशेने अठ्ठावीश कीडी उपर सत्तावनलाख चौदहजार बशेने पञ्चासी एटली देवी | सौधर्म इंद्रना एक जन्मने विषे चवे. | नागकु० १० | अबर्ली० | अग्रमहिषी० |
| | | चामरें० | | अग्रमहिषी० |

हवे सौधर्मदेवलोक प्रमुखने विषे प्रतरनी संख्या कहे ठे.

| | |
|--|------------------------------------|
| १३ सौधर्म अने ईशान बे देवलोक प्रतरतेर. | ४ सहस्रार देवलोकें चार प्रतर. |
| १४ सनकुमार अने माहेंद्र ए बेना बार प्रतर | ४ आणत अने प्राणत बेना चार प्रतर. |
| ६ ब्रह्मदेवलोकें ४ प्रतर. | ४ आरण अने अच्युत ए बेना चार प्रतर. |
| ५ लांतक देवलोकें पांच प्रतर. | ९ नवग्रैवेयके मली नव प्रतर. |
| ४ शुक्रदेवलोकें चार प्रतर. | १ अनुत्तरविमाने एक प्रतर. |

एम सर्व मली ऊर्ध्वलोकने विषे ६२ प्रतर ठे, ते कह्या.

सौधर्मादि देवलोके प्रत्येक प्रतरे उत्कृष्टायु दर्शानारो यंत्र.

त्वां प्रथम सौधर्म अने ईशान, ए बे देवलोके प्रतर तेर बे तेहनुं आयु लिखिये बैये.

| | | | | | | | | | | | | | |
|--------------------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| सागर. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| एक सागरना तेरीया जाग. | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | ० |
| वेदांक. | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | ० |

सनत्कुमार अने माहेन्द्र, ए बे देवलोके प्रतर बार बे, तेहने विषे आयु.

| | | | | | | | | | | | | |
|-------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| सागर. | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ |
| बारैया जाग. | ५ | १० | ३ | ८ | १ | ६ | ११ | ४ | ९ | २ | ७ | ० |
| वेदांक. | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | ० |

ब्रह्मदेवलोके ठ प्रतरे आयुःप्रमाणं. लांतकदेवलोके पांच प्रतरे आयुःप्रमाणं ॥

| | | | | | | | | | | | | |
|------------|---|---|---|---|---|----|-------------|----|----|----|----|----|
| प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| सागर. | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | सागर. | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| बैयां जाग. | ३ | ० | ३ | ० | ३ | ० | पांचीयाजाग. | ४ | ३ | २ | १ | ० |
| वेदांक. | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | वेदांक. | ५ | ५ | ५ | ५ | ० |

शुक्रदेवलोके चार प्रतरे आयुःप्रमाणं. | सहस्रार देवलोके चार प्रतरे आयुःप्रमाणं.

| | | | | | | | | | |
|-------------|----|----|----|----|------------|----|----|----|----|
| प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ |
| सागर. | १४ | १५ | १६ | १७ | सागर. | १७ | १७ | १७ | १८ |
| चोथीया जाग. | ३ | २ | १ | ० | चोथीयाजाग. | १ | २ | ३ | ० |
| वेदांक. | ४ | ४ | ४ | ० | वेदांक. | ४ | ४ | ४ | ० |

आणत अने प्राणतना चार प्रतरे आयुर्मान, आरण अने अच्युते चार प्रतरे आयु.

| | | | | | | | | | |
|------------|----|----|----|----|------------|----|----|----|----|
| प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ |
| सागर. | १८ | १९ | १९ | २० | सागर. | २० | २१ | २१ | २२ |
| चोथीयाजाग. | २ | ० | २ | ० | चोथीयाजाग. | २ | ० | २ | ० |
| वेदांक. | ४ | ४ | ४ | ० | वेदांक. | ४ | ० | ४ | ० |

नव ग्रैवेयके नव प्रतरे आयुःप्रमाण.

पांच अनुत्तर विमाने आयु.

| | | | | | | | | | | | |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---------|----|
| प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | प्रतर. | १ |
| सागर. | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | सागर. | ३३ |
| जाग. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | जाग. | ० |
| ढेदांक. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ढेदांक. | ० |

वैमानिक देवोमां वाशठ प्रतर ठे, ते एकेका प्रतरना मध्यजागने विषे एकेक इंद्र क विमान ठे एम सर्व वाशठ प्रतरे वाशठ इंद्रक विमान ठे.

हवे पहेला प्रतरना उरु नामे वाटला इंद्रकविमानथकी चारे दिशाये वाशठ वा शठ विमानोनी पंक्ति निकली ठे अने बीजा प्रतरना इंद्रक विमानथकी पूर्वादि चारे दिशाये एकशठ एकशठ विमानोनी पंक्ति नीकली ठे. एम प्रतरे प्रतरे चारे दिशानी पंक्तिये पंक्तिये प्रत्येके एकेकुं विमान घटारुतां जश्ये, तेवारे ठेहले वाशठमे प्रतरे अ नुत्तर विमाने इंद्रक विमानथकी चारे दिशाये चार पंक्ति एकेका विमाननी थइ ठे.

हवे मध्यनुं विमान वाटलुं होय ते पठी चारे दिशाये पंक्तिनुं पहेलुं एकेकुं विमान त्रिखूणुं होय, पठी चोखूणुं होय, पठी वली वाटलुं होय, पठी वली त्रिखूणुं, वली चौ खूणुं होय, पठी वाटलुं होय. ए रीते त्रण प्रकारनां विमानो पंक्तिमां ठे.

अने ए चार पंक्तियोना आंतराने वच्चें जे विमानो ठे ते जेम रायणना फूल बूटां बूटां विखरेलां जेम तेम पड्यां होय, तेनी पेठे नंदावर्त्त, स्वस्तिक प्रमुख विविध सं स्थानवालां पुष्पावकीर्ण विमानो ठे. तेनी पंक्तियो नथी.

सघला वाटला गोल विमानने एक वारणुं होय अने त्रिखूणा विमानने त्रण वारणां होय. तथा चोखूणा विमानने चार वारणां होय.

पहेला प्रतरना चारे दिशि संबंधि पंक्तिगत एकेकुं विमान देवद्वीपे ठे, तेमज बे बे विमान नाग समुद्रनी चारे दिशाये ठे, चार चार विमान यद्द द्वीपनी चारे दिशाये ठे, तथा आठ आठ विमान जूतसमुद्रनी चारे दिशाये ठे, शोल शोल विमान, स्वयंजु रमण नामा द्वीपनी चारे दिशिने विषे ठे. तथा एकत्रीश एकत्रीश विमान स्वयंजूरमण समुद्रनी चारे दिशाये ठे. एम मेलवतां एक दिशानां वाशठ आय अने चारे दिशानां शशठ आय. तेनी साथे वच्चमांतुं इंद्रक विमान मेलवीये तेवारे शशए विमान थाय.

चोखूणा विमानने चारे दिशाये कांगरा विमानो सादो गढ होय तेने वेदिका कहिये. अने वाटला विमानने कांगरा सहित कोट होय तथा त्रिखूणीया विमानने तो जे दि

शाये वाटलां विमान होय ते दिशाये वेदिका एटले कांगरां विनानो कोट होय अने बाकीनी सर्व दिशाये कांगरां सहित कोट होय.

आवलिकागत विमानोने मांहोमांहे अंतर असंख्याता योजननुं ठे अने पुष्पाव कीर्णने मांहोमांहे संख्याता तथा असंख्याता योजननुं पण अंतर ठे.

सौधर्म तथा ईशान, ए बे देवलोकना तेर प्रतर ठे. तेमां प्रथम प्रतरनी चार दिशिनी पंक्तिनां विमान ३४ए थाय. तेने मुख्य विमान कहिये. अने बेहला तेरमा प्रतरनी चार दिशिनां पंक्तिगत विमान ३०१ थाय, तेने भूमि कहिये. ए बेहुने एकठां करतां ४५० थाय. तेने समास कहिये. पठी एतुं अर्द्ध करीने बेहला तेरमा प्रतर साथे गुणीये तो ३९३५ पंक्तिगत विमाननी संख्या थाय. एम सघला देवलोकने विषे गणित करतां वांठित देवलोकना पंक्तिगत विमानोनी संख्या थाय.

हवे जेम सौधर्म तथा ईशान मली बे देवलोकनां पंक्तिगत विमान ३९३५ थया. शेष ५९९०७५ पुष्पावकीर्ण विमान जाणवां. सर्व मली ६०००००० विमान ठे. ते समजवामां आववा माटे सर्व देवलोकनां वाटलां, त्रिखूणां, तथा चोखूणां अने पुष्पावकीर्ण विमान संबंधि गणतरीनो यंत्र आ पुस्तकमां दाखल कस्यो ठे ते जोवो.

हवे वैमानिक देवोने विषे प्रत्येक देवलोकने विमाननी संख्या कहे ठे.

| देवलोकनां नाम. | विमान संख्या. | देवलोकनां नाम. | विमान संख्या. |
|---------------------|-----------------|-------------------------|---------------|
| सौधर्म देवलोकने. | बत्रीश लाख. | सहस्रार देवलोकने. | ठ हजार. |
| ईशान देवलोकने. | अष्टात्रीश लाख. | आणत प्राणत देवलोकने. | चारसो विमान. |
| सनत्कुमार देवलोकने. | बार लाख. | आरण अच्युत देवलोकने. | त्रणसो विमान. |
| माहेंद्र देवलोकने. | आठ लाख. | प्रैवेयकना हेठिमत्रिके. | एकसो अगियार. |
| ब्रह्मदेवलोकने. | चार लाख. | प्रैवेयकना मध्यमत्रिके. | एकसो सात. |
| लांतक देवलोकने. | पच्चास हजार. | प्रैवेयकना उवरिमत्रिके. | एकसो विमान. |
| शुक देवलोकने. | चाहीश हजार. | पांचेअनुत्तरविमाने मली | पांच विमान. |

सर्व मली ऊर्ध्वलोके ८५९०७३३ विमानो ठे. ए विमान अत्यंत सुरजिगंध वाला माखणनी पेरे सुकुमार अने सुखकारी फरस वाला तथा उद्योतवंत मनोहर एवी देवोनी पोतानी कांतिये करीने बिराजमान ठे.

लोकपालनां विमान बार लाख योजन लांबां पहोलां देवलोकना प्रतरमांहे जिहां इंद्रोनां निजकल्प अवतंसक विमान ठे, तेनी चारदिशिने विषे चार लोकपालनां विमान ठे. जवनपतिना वीशे इंद्र जंबूद्वीपने ठत्र अने मेरुपर्वतने दंमनी पेठे करवा समर्थ ठे.

सौधर्म देवलोके अपरिग्रहीता देवीयोनां षट् लाख विमाने, ते देववेश्या कहेवाय
 ठे, तेमां पण जे त्रीजा देवलोकनी निश्राये ठे, ते त्रीजे देवलोकें जाय.

ईशान देवलोके अपरिग्रहीता देवीयोनां चार लाख विमाने, तेमां पण जे चोथा
 प्रमुख देवलोकना देवताउने जोगयोग्य ठे, ते चोथे देवलोकें जाय.

बधा देवो केटला प्रकारना ठे? ते कहे ठे.

- | | |
|--|---|
| १ इंद्र पोते सर्वचारनिकायना इंद्रोजाणवा. | ५ इंद्रोना शरीरनी रक्षा करनारा देवो ते अंगरक्षक आत्मरक्षक देवो जाणवा. |
| २ सामानिकदेव जे इंद्रसरखी रुद्रिना धणी होय तेने कहेवा. | ६ चारलोकपालना देवो ते सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार जाणवा. |
| ३ इंद्रसरखी रुद्रिना धणी होय इंद्रने गुरु स्थानीया सत्वाह पूठवा योग्य, सर्वने पूजनीय जे देवो तेने तायत्रिंशक देवोकहीये | ७ सात प्रकारना कटकना देवो. |
| ४ इंद्रोनी बाह्य अन्तर अने मध्य एवी त्रण पर्षदाना देवो. | ८ प्रजाना देवो. |
| | ९ आग्नियोगिक ते किंकर देवो. |
| | १० कैट्विषिक देवो. |

ए दश जातिना देवो जवनपति, व्यंतर तथा वैमानिकमां ठे.
 जवनपतिनी दश निकायनां आचरण उपर चिन्ह तथा शरीरना वर्ण.

| | | | | | | | | | |
|-----------------------|------------|------------------|-----------------|--------------|--------------|----------------|-------------|----------------|---------------|
| दश निकायनां असुर नाम. | नाग कुमार. | कु सुवर्ण कुमार. | विद्युत् कुमार. | अग्नि कुमार. | द्वीप कुमार. | कु उदधि कुमार. | दिशि कुमार. | वायु कुमार. | स्तनित कुमार. |
| आचरण उपर चिन्ह. | चूरा मणि. | सर्प. | गरुड पंखी. | वज्र. | पूर्ण कलश. | सिंह. | घोमो. | हाथी मठ. | वर्द्धमानस |
| वस्त्र वर्ण. | रातां | नीलां | उज्ज्वल नीलां | नीलां | नीलां | नीलां | नीलां | उज्ज्वल संध्या | उज्ज्वल |
| शरीर वर्ण. | कालो | गौर. | कनक | रक्तवर्ण | रक्त. | रक्त. | गौर. | कनक | नीलो कनक. |

कटकना देवो सात प्रकारना ठे, ते कहे ठे.

| | | | | | | |
|--|---------------------------|-------------------|-------------------|--------------------|-------------------|--------------------------------------|
| पहेला गंधर्वानीक गंधर्वदेवो ते धर जाणवा. | वीजा नटानी ते नाटक करनार. | त्रीजुं कानुं टक. | घोचोथुं कानीं टक. | हापाचमुं कथनुं टक. | रठुं पालानुं कटक. | सातमुं वृषजनुं कटक तथा पानुं कटक ठे. |
|--|---------------------------|-------------------|-------------------|--------------------|-------------------|--------------------------------------|

एमां प्रथमनां षट् कटक सर्व इंद्रोने होय अने सातमुं वृषजनुं कटक वैमानिक देवोने होय तथा अधोनिवासी जे जवनति अने व्यंतर देवो ठे तेने सातमुं महिषनुं कटक होय. एम साते प्रकारनुं कटक सर्व इंद्रोने होय.

अढीछीप समुद्रने विषे चंद्रमा तथा सूर्य केटला ठे ? तेनी संख्या कहे ठे.

| | |
|--|--|
| <p>१ जंबूद्वीपमां बे सूर्य अने बे चंद्र. २ लवण समुद्रमां चार सूर्य ने चार चंद्र ३ धातकी खंमनां बार चंद्र ने बार सूर्य. ४ कालोद समुद्रमां धातकी खंमना बारने त्रिगुणा करतां ढत्रीश थाय तेमां जंबूद्वीपने लवण समुद्रना ढ जेवीये,तेवारे बेहेंतालीश चंद्र अने बेहेंतालीश सूर्य थाय. ५ पुष्करवर द्वीपमां धातकी खंमना बेहेंतालीने त्रिगुणा करतां १२६ थाय तेनी साथे जंबूद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार</p> | <p>अने धातकीखंमना बार मली अढार मे लवीये, तेवारे १४४ थाय, तेमां अरुद्वीपे ७२ चंद्र अने ७२ सूर्य आवे. सर्व मेलवतां जंबूद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार, धातकीखंमना बार, कालोद समुद्रना बेहेंतालीश अने पुष्करार्कना बहों तेर मली १३२ चंद्र अने १३२ सूर्य थाय. अढीद्वीपमां सूर्यनीपंक्ति बे तथा चंद्रमानी पंक्ति बे एकेक पंक्तिमांएकेकने आंतरेढाशठ ढाशठ सूर्य तथा ढाशठ ढाशठ चंद्र ठे.</p> |
|--|--|

| | |
|---|---|
| <p>१ ज्योतिषीनां महा रमणिक स्फाटिकरत्नमय विमान, अरुं कोठ फलने आकारे ठे. २ ते विमान व्यंतरना नगरोथकी असंख्यात गुणां ठे. ३ लवण समुद्रमां ज्योतिषीनां विमान पाणीने फाकी नाखे एवा दिगस्फाटिक रत्नमय ठे तेथी लवण शिखामांथी चाल्या जता बाधा थती नथी. हवे ज्योतिषीनी शीघ्रशीघ्रतरगति कहेठे. १ सर्वथकी थोडो चंद्रमा चाले.</p> | <p>२ तेथकी सूर्य शीघ्र चाले. ३ तेथकी ग्रह शीघ्र चाले. ४ तेथकी नक्षत्र शीघ्र चाले. ५ तेथकी तारा शीघ्र चाले. हवे ए ज्योतिषीनी रुद्धि कहे ठे. १ सर्वथकी तारानी खटप रुद्धि ठे. २ तेथकी नक्षत्रनी रुद्धि अधिक ठे. ३ तेथकी ग्रहनी महोटी रुद्धि ठे. ४ तेथकी सूर्यनी महोटी रुद्धि ठे. ५ तेथकी चंद्रमानी महीटी रुद्धि ठे.</p> |
|---|---|

हवे चंद्रसूर्यादिक ज्योतिषीना विमानवाहक देनोनी संख्या कहे ठे.

| | |
|---|--|
| <p>१ चंद्र विमान वाहक शोलहजार देवो ठे. २ सूर्य विमान वाहक शोलहजार देवो ठे. ३ ग्रह विमान वाहक आठ हजार देवो ठे. ४ नक्षत्र विमान वाहक चार हजार देवो ठे. ५ ताराना विमान वाहक बे हजार देवो ठे. ६ ए पांचे ज्योतिषीयोना जे विमान वाहक</p> | <p>ठे ते बराबर सरखे चोथे जागे एकेकी दिशिये जूदे जूदे रूपे वहे ठे, तेमां चंद्रमाना पूर्वदिशाये सिंहने रूपे तथा दक्षिणदिशे हाथीने रूपे, पश्चिमदिशिये वृषजने रूपे अने उत्तरदिशिये अश्वने रूपे शार चार हजार किंकर देवो वहे ठे.</p> |
|---|--|

- १ एक चंद्रमानी पठवाडे अष्टाशी ग्रह, अष्टावीश नक्षत्र, ६६९५ एटली कोना कोनी तारा, एटलो परिवार चाले.
 २ राहुनुं विमान काळुं ठे सर्वदा चंद्रमा नी हेठे चार अंगुल ठेठे चाले ठे. तिहां राहु वे प्रकारे ठे एक नित्यराहु अने बी जो पर्वराहु ठे, ते पर्वराहु जघन्यशी ठ महीने चंद्र विमानने ग्रहण करे ठे.

ज्योतिषी देवोना विमानोनी लंबाइ पहोलाइ तथा उंचपणानो यंत्र.

| | मनुष्य क्षेत्र मांहेला | मनुष्यक्षेत्रशी बाहि | मनुष्यक्षेत्रशी बा |
|-------------------------|--|---------------------------------------|--|
| ज्योतिषी देवोना प्रकार. | विमानोनी लंबाइ पहोलाइ एक योजनना एकशठिया जाग. | विमानोनुं उच्चपणं योजनना एकशठिया जाग. | विमानोनी लंबाहिरला विमानोनुं उच्चपणं योजनना एकशठिया जाग. |
| १ चंद्रमा. | ठप्पन जाग. | अष्टावीश जाग. | चौद जाग. |
| २ सूर्य. | अकतालीश जाग. | चोवीश जाग. | बार जाग. |
| ३ ग्रह. | वे गाउ. | एक गाउ. | अर्द्ध गाउ. |
| ४ नक्षत्र. | एक गाउ. | अर्द्ध गाउ. | गाउनो चोथो जा. |
| ५ तारा. | अर्द्ध गाउ. | गाउनोचोथो जा. | गाउनो आठमो |

ज्योतिषीनां विमानो समञ्चूतलथकी केटलां उंचां ठे ? तेना यंत्रनी स्थापना.

| समञ्चूतला० पृथ्वी थकी. | तारा, ९९० | सूर्य, ८०० | चंद्र, ८८० | नक्षत्र, ८८४ | बुध, ८८८ | शुक्र, ८९२ | बृहस्पति, ८९४ | मंगल, ८९९ | शनि, ९०० |
|------------------------|-----------|------------|------------|--------------|----------|------------|---------------|-----------|----------|
|------------------------|-----------|------------|------------|--------------|----------|------------|---------------|-----------|----------|

सर्व नक्षत्रमां सर्वथकी हेठे जरणी नक्षत्र चाले ठे अने स्वाति नक्षत्र उपर चाले ठे तथा सर्वशी बाहिर मूल नक्षत्र चाले ठे अने सर्वनी वचाले अजिजित् नक्षत्र चाले ठे.

केटला एक समुद्र संबंधी पाणीना स्वाद तथा तेमां रहेला मत्स्योना अल्प बहुत्व अने ते मत्स्यना शरीर माननो यंत्र.

| समुद्रनां नाम. | वारुणिव. र समुद्र. | क्षीरवर समुद्र. | घृतवर समुद्र. | लवण समुद्र. | कालोद धिसमुद्र. | पुष्करव र समुद्र. | स्वयंचूरम ण समुद्र. | बाकीअसं ख्याता स० |
|--|---------------------------------|---------------------------------------|--|-------------------------|------------------------|---------------------------------|------------------------------|--|
| पाणी. नो स्वाद. मत्स्यसं० मत्स्यदेह मान. | मदिरास मान. अल्प. तुष्ठदेह मान. | क्षीरदुध नो स्वाद. अल्प. अल्पदेह मान. | चोखाघृत नो स्वाद. अल्प. तुष्ठ देह मान. | लुणनो स्वाद. बहु. योजन. | मधनो स्वाद. बहु. योजन. | मेहनुं पाणी. अल्प. ठोटोदेह मान. | मेहनुं पाणी. बहु. १००० योजन. | इक्षुरस जे वो स्वाद. अल्प. तुष्ठदेह मान. |

देवादिक संबंधि आयु प्रमुखना यंत्रो.

सर्वे इंद्रोना सामानिक देवो, गुरुस्थानीया तायत्रिंशक देवो, आत्मरक्षक देवो,
लोकपाल तथा पर्षदानी संख्या, कटकना प्रकार कटकाधिपनी संख्यानो यंत्र.

| इंद्रोनां नाम | सामानिकदेव. | ताय० | आत्मरक्ष. | लोकपा. | पर्षदा. | अनीक. | अनीकाधि. |
|---------------------|-------------|------|-----------|--------|---------|-------|----------|
| चमरेंद्र. | ६४००० | ३३ | १५६००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| बलींद्र. | ६०००० | ३३ | १४०००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| धरणेंद्रप्रमुख १० | ६००० | ३३ | १४००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| व्यंतरेंद्र बत्रीश. | ४००० | ० | १६००० | ० | ३ | ७ | ७ |
| चंद्रसूर्य ३. | ४००० | ० | १६००० | ० | ३ | ७ | ७ |
| सौधमेंद्र. | ८४००० | ४३ | ३३६००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| ईशानेंद्र. | ८०००० | ३३ | ३३०००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| सनत्कुमारेंद्र. | ७१००० | ३३ | १८८००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| माहेंद्र. | ७०००० | ३३ | १८०००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| ब्रह्मेंद्र. | ६०००० | ३३ | १४०००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| लांतकेंद्र. | ५०००० | ३३ | १००००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| शुकेंद्र. | ४०००० | ३३ | १६०००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| सहस्रारेंद्र. | ३०००० | ३३ | ११०००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| आनतप्राणत. | १०००० | ३३ | ८०००० | ४ | ३ | ७ | ७ |
| आरण अच्युत. | १०००० | ३३ | ४०००० | ४ | ३ | ७ | ७ |

व्यंतर तथा वाणव्यंतर देवोना दक्षिण उत्तर इंद्र तथा चिन्ह अने शरीरना वर्ण.

| वाणव्यंतर | दक्षिणेंद्र. | उत्तरेंद्र. | व्यंतरनि० | दक्षिणेंद्र. | उत्तरेद्र. | चिन्ह. | वर्ण. |
|-----------|--------------|-------------|-----------|--------------|------------|-------------|-----------|
| अणपत्री. | सन्निहित. | सन्मान. | पिशाच. | काल. | माहाकाल. | कदंबवृक्ष. | कालेवर्ण. |
| पणपत्री. | धाता. | विधाता. | भूत. | सुरूप. | प्रतिरूप. | शूलसवृक्ष. | कालेवर्ण. |
| ऋषिवादी. | ऋषि. | ऋषिपाल. | यक्ष. | पूर्णजद्र. | मणिजद्र. | वरुवृक्ष. | कालेवर्ण. |
| भूतवादी. | ईश्वर. | महेश्वर. | राक्षस. | जीम. | माहाजीम. | खड्ग. | धवलवर्ण. |
| कंदी. | सुवह. | विशाल. | किन्नर. | किन्नर. | किंपुरुष. | अशोकवृक्ष. | नीलवर्ण. |
| महाकंदी | हास्य. | हास्यरति. | किंपुरुष. | सुपुरुष. | महापुरुष. | चंपकवृक्ष. | धवलवर्ण. |
| कोहंरुग. | श्वेत. | महाश्वेत. | महोरग. | अतिकाय | महाकाय. | नागवृक्ष. | कालेवर्ण. |
| प्लवक. | प्लवक. | प्लवकपति. | गंधर्व. | गीतरति. | गीतयश. | टीबरुवृक्ष. | कालेवर्ण. |

प्रत्येक देवलोके प्रतरे प्रतरे चतुरस्र प्रमुख जूदी जूदी जातना विमानोनी संख्यानो यंत्र.

| सौधर्मेशाने प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | सर्वसंख्या. |
|--------------------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-------------|
| त्र्यंश विमान. | ७४ | ७४ | ७० | ७० | ७० | ७६ | ७६ | ७६ | ७६ | ७२ | ७२ | ६८ | ६८ | ६८० |
| चतुरस्र विमान. | ७४ | ७० | ७० | ७० | ७६ | ७६ | ७६ | ७६ | ७६ | ७२ | ७२ | ६८ | ६८ | ६७२ |
| वृत्त विमान. | ७४ | ७० | ७० | ७० | ७६ | ७६ | ७६ | ७६ | ७६ | ७२ | ७२ | ६८ | ६८ | ६६५ |
| सर्व संख्या. | २४६ | २४५ | २४१ | २३७ | २३३ | २२९ | २२५ | २२१ | २१७ | २१३ | २०९ | २०५ | २०१ | २०१५ |
| सनत्कुमार माहेंडे प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | सर्वसंख्या. |
| त्र्यंश विमान. | ६८ | ६४ | ६४ | ६४ | ६० | ६० | ६० | ६० | ६० | ५६ | ५६ | ५२ | ५२ | ५२२ |
| चतुरस्र विमान. | ६४ | ६४ | ६४ | ६४ | ६० | ६० | ६० | ६० | ६० | ५६ | ५६ | ५२ | ५२ | ५२२ |
| वृत्त विमान. | ६५ | ६५ | ६१ | ६१ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५३ | ५३ | ४९ | ४९ | ६६६ |
| सर्व विमान संख्या | २१७ | २१३ | २०९ | २०५ | २०१ | १९७ | १९३ | १८९ | १८५ | १८१ | १७७ | १७३ | १६९ | १६९५ |
| ब्रह्मदेवलोके प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | सर्वसंख्या. |
| त्र्यंश विमान. | ५२ | ४८ | ४४ | ४४ | ४४ | ४० | ४० | ४० | ४० | ३६ | ३६ | ३२ | ३२ | ३२५ |
| चतुरस्र विमान. | ४८ | ४८ | ४४ | ४४ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ३६ | ३६ | ३२ | ३२ | ३२५ |
| वृत्त विमान. | ४९ | ४५ | ४५ | ४५ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ३७ | ३७ | ३३ | ३३ | ३२५ |
| सर्व विमानसंख्या. | १४९ | १४५ | १४१ | १३७ | १३३ | १२९ | १२५ | १२१ | ११७ | ११३ | १०९ | १०५ | १०१ | १०१५ |
| बांतकदेवलोके प्र० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | सर्वसंख्या. |
| त्र्यंश विमान. | ४४ | ४० | ४० | ४० | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३२ | ३२ | २८ | २८ | २९६ |
| चतुरस्र विमान. | ४० | ४० | ४० | ४० | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३२ | ३२ | २८ | २८ | २९६ |
| वृत्त विमान. | ४१ | ४१ | ३७ | ३७ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | २९ | २९ | २५ | २५ | २९६ |
| सर्वविमानसंख्या. | १२५ | १२१ | ११७ | ११३ | १०९ | १०५ | १०१ | ९७ | ९३ | ८९ | ८५ | ८१ | ७७ | ३३२ |

| | | | | | | | | | | | |
|---------------------------|----|----|----|-------------|---------------------------|------------------|----|----|-------------|----|-------------|
| आनत, प्राणत दे० प्र. | १ | २ | ३ | ४ | सर्वसंख्या. | अरण्यनेअच्युतदे. | १ | २ | ३ | ४ | सर्वसंख्या. |
| त्र्यंश विमान. | २४ | २४ | २४ | २० | ९२ | त्र्यंश विमान. | २० | २० | २६ | २६ | ७२ |
| चतुरस्र विमान. | २४ | २४ | २० | २० | ८८ | चतुरस्र विमान. | २० | २६ | २६ | २६ | ६८ |
| वृत्त विमान. | २५ | २२ | २२ | २५ | ८८ | वृत्त विमान. | २७ | २७ | २७ | २३ | ६४ |
| सर्वविमानसंख्या. | ७३ | ६९ | ६५ | ६२ | २६८ | सर्वविमानसंख्या. | ५७ | ५३ | ४९ | ४५ | २०४ |
| त्रैवेयकपहेलात्रिके प्र० | १ | २ | ३ | सर्वसंख्या. | त्रैवेयकपपरिस्त्रिके प्र. | १ | २ | ३ | सर्वसंख्या. | | |
| त्र्यंश विमान. | २६ | २२ | २२ | ४० | त्र्यंश विमान. | ८ | ४ | ४ | २६ | | |
| चतुरस्र विमान. | २२ | २२ | २२ | ३६ | चतुरस्र विमान. | ४ | ४ | ४ | २२ | | |
| वृत्त विमान. | २३ | २३ | ९ | ३५ | वृत्त विमान. | ५ | ५ | २ | २२ | | |
| सर्वविमानसंख्या. | ४२ | ३७ | ३३ | १२२ | सर्वविमानसंख्या. | १७ | १३ | ९ | ३९ | | |
| त्रैवेयकमध्यत्रिके प्रतर. | १ | २ | ३ | सर्वसंख्या. | पंचानुत्तरविमाने प्रतर. | १ | २ | ३ | सर्वसंख्या. | | |
| त्र्यंश विमान. | २२ | ८ | ८ | २८ | त्र्यंश विमान. | ४ | ४ | ४ | ४ | | |
| चतुरस्र विमान. | ८ | ८ | ८ | २४ | चतुरस्र विमान. | ० | ० | ० | ० | | |
| वृत्त विमान. | ९ | ५ | ५ | २३ | वृत्त विमान. | २ | २ | २ | २ | | |
| सर्वविमानसंख्या. | ३९ | ३५ | ३२ | ७५ | सर्वविमानसंख्या. | ५ | ५ | ५ | ५ | | |

वैमानिकमां प्रत्येक देवलोके वाटलां, त्रिखूणां, चौखूणां अने पुण्यावकीर्ण विमानोनी संख्यानो यंत्र.

| | | | | | | | | | | | | | |
|---------|--------------|---------|--------|----------|--------|---------|---------|-------|-------|------|-----|-------|--------------|
| देवलोप | सौधर्म-ईशान. | सनत्कुण | माहेडे | ब्रह्मो. | लांतके | शुक्रे. | सहस्रा. | आ.जा. | आ.अधो | मध्य | उपण | पंचाण | सर्व संख्या. |
| वाटलां० | ७२७ | ५२२ | २७० | २७४ | २९३ | २२८ | २०८ | ८७ | ३५ | ३३ | १२ | २ | २५८२ |
| खूणां. | ४९४ | ३५५ | ३५६ | २०४ | २०० | २३६ | २१६ | ९२ | ४० | २८ | ४ | ४ | २५८८ |
| चौखूणां | ४८६ | ३४८ | ३४८ | २७६ | २९२ | २३२ | २०८ | ८८ | ३६ | २४ | ० | ० | २६०४ |

वैमानिक देवोनां चिन्ह तथा मुख्य विमाननुं नाम तथा विमानोना वर्षं अने विमानोनुं उंचपणुं तथा पृथ्विंपिंरु ते कया देवलोक केटलो उंचपणे ठे? तथा तेमनां विमान शेने आधारे रखां ठे? तेनो यंत्र-

| देवलोकनुं नाम. | शेने आधारें रखा. | चिन्ह. | इंद्रविमान. | पृथ्विंपिंरु उंचपणुं. | विमान वर्षं. | | |
|--------------------|------------------|----------|---------------|-----------------------|--------------|-------|-------|
| | | | | | कालो. | नीलो. | रातो. |
| सौधर्मदेवलोक. | धनोदधि आधारे. | मृगनुं. | सर्वतोत्रङ्ग. | ५०० | नीलो. | रातो. | धोलो. |
| ईशानदेवलोक. | धनोदधि आधारे. | महिष. | विमल. | ५५०० | नीलो. | रातो. | धोलो. |
| सनकुमारदेव. | धनवात आधारे. | वाराह. | मनोरम. | ६०० | नीलो. | रातो. | धोलो. |
| मार्हेन्द्रदेवलोक. | धनवात आधारे. | सिंह. | प्रियंगम. | ६०० | नीलो. | रातो. | धोलो. |
| ब्रह्म देवलोक. | धनवात आधारे. | बकरो. | कामग. | ७०० | ० | रातो. | धोलो. |
| लांतकदेवलोक. | धनोदधि घनवात. | देडको. | नंदावर्त्त. | ७०० | ० | रातो. | धोलो. |
| शुक देवलोक. | धनोदधि घनवात. | अश्व. | श्रीवत्स. | ७०० | ० | ० | धोलो. |
| सहस्रारदेवलोक. | धनोदधि घनवात. | हाथी. | सौमनस्य. | ७०० | ० | ० | धोलो. |
| आनतदेवलोक. | आकाशने आधारे. | सर्प. | पुष्पकवि | ७०० | ० | ० | धोलो. |
| प्राणतदेवलोक. | आकाशने आधारे. | गेंको. | पलक. | ७०० | ० | ० | धोलो. |
| आरणदेवलोक. | आकाशने आधारे. | वृषज. | | ७०० | ० | ० | धोलो. |
| अच्युतदेवलोक. | आकाशने आधारे. | मृगविशे. | ० | ७०० | ० | ० | धोलो. |
| नवधैवेयक. | आकाशने आधारे. | ० | | १००० | ० | ० | धोलो. |
| पंचानुत्तरविमा- | आकाशने आधारे. | ० | ११०० | ० | ० | ० | धोलो. |

- १ एकलवण समुद्रमां जंबूद्वीप सरखा चोवीश खंड समाथ.
 - २ धातकी खंडमां जंबूद्वीप सरखा १४४ खंड समाथ.
 - ३ कालोद समुद्रमां जंबूद्वीप सरखा ६५२ खंड समाथ.
 - ४ पुष्कराद्रुमां जंबूद्वीप सरखा २४०४ खंड समाथ.
 - ५ आखा पुष्कराद्रुमां जंबूद्वीप सरखा ११७०४ खंड समाथ.
- १ जेवा विमानोना वर्षं तेवाज ते विमानोनी ध्व जालना वर्षं पण जाणी लेवा.
 - २ जवनपत्ति, व्यंतर अने ज्योतिषी देवोना विमानो कोइ कालां, कोइ नीलां, कोइ पीलां, कोइ रातां अने कोइ श्वेत एम विविध वर्षं वालां ठे.

- १ सौधर्म ईशान देवलोके दक्षिणदिशिना विमानोनी पंक्ति ते दक्षिणेंद्रनी जाणवी. ४ पूर्वपश्चिमे जे आवलिकागत त्रिंशच्चतुरस्र विमान, ते बहु इंद्रोनां अर्द्धोर्द्धू ठे.
- २ उत्तरदिशिना विमानोनी पंक्ति उत्तरेंद्रनी. ५ पूर्वपश्चिमे जे वचला मध्यनां इंद्रकवृत्त विमान ठे, ते सर्व दक्षिणेंद्रनां ठे.
- ३ पूर्व अने पश्चिमदिशाये जे आवलिकागत वाटलां विमान ठे, ते सर्व दक्षिणेंद्रनां ठे. ६ पुष्पावकीर्ण विमान अर्द्धोर्द्धू ठे.

वैमानिकदेवोमां प्रत्येकदेवलोके विमानोनीसंख्याआणवामाटे मुख जूमिसमासादिनोयंत्र

| देवलोक नाम. | सौधर्मेशान. | सनत्कुमाहेंद्र | ब्रह्म देवलोक. | लांतकदेवलोक. | शुक्रदेवलोक |
|-----------------|-------------|----------------|----------------|--------------|-------------|
| मुख. | २४९ | १९७ | १४९ | १२५ | १०५ |
| जूमि. | २०१ | १५३ | १२९ | १०९ | ९३ |
| समास. | २५० | ३५० | २७० | २३४ | १९० |
| तदरू. | २२५ | १७५ | १३९ | ११७ | ९९ |
| प्रतरे गुणवाना. | १३ | १२ | ६ | ५ | ४ |
| आवली संख्या. | २९२५ | २१०० | ०३४ | ५०५ | ३९६ |
| पुष्पावकीर्ण. | ५९९७०७५ | १९९७००० | ३९९१६६ | ४९४१५ | ३९६०४ |
| सर्वसंख्या. | ६०००००० | २०००००० | ४००००० | ५०००० | ४०००० |

| सहस्रार देवलोक. | आनत प्राणत. | आरण्यच्युत. | अधोयकत्रिक. | ग्रैवेमध्ययकत्रिक. | ग्रैवेऊर्ध्वयकत्रिक. | पंचानुत्तर. | ऊर्ध्वलोके सर्व संख्या. |
|-----------------|-------------|-------------|-------------|--------------------|----------------------|-------------|-------------------------|
| ९० | ७३ | ५७ | ४१ | २९ | १७ | ५ | २४९ |
| ७७ | ६१ | ४५ | ३३ | २१ | ९ | ० | ५ |
| १६६ | १३४ | १०२ | ७४ | ५० | २६ | ० | २५४ |
| ०३ | ६७ | ५१ | ३७ | २५ | १३ | ० | १२७ |
| ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | ३ | १ | ६२ |
| ३३२ | २६० | २०४ | १११ | ७५ | ३९ | ५ | ७०७४ |
| ५६६० | १३२ | ९६ | ० | ३२ | ६१ | ० | ०४०९१४९ |
| ६००० | ४०० | ३०० | १११ | १०७ | १०० | ५ | ०४९७०२३ |

हवे जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने पहेला बीजा देवलोकना देवो कायाये करी संजोग सेवे ठे. मनुष्यनी पेठे जोगवे ठे, परंतु मनुष्यने, स्त्रीनी सेवा करतां वीर्य खरे एटले कामथी निवृत्ति पामे. अने देवताने वीर्य होय नही, माटे अतृसाज होय. जेवारे क्यारेक मन निवर्ते, तेवारेज संजोग न होय, नहीकां अतृसा थका सर्वदा जोग जोगवताज रहे ठे.

त्रीजा चोथा देवलोकना देवो मुख, हाथ, नख, स्तन प्रमुखना फरसे संजोग सुख पामे. पांचमा षष्ठा देवलोकना देवो देवांगनानां रूप देखी संजोगसुख पामे.

सातमा आठमा देवलोकना देवो देवांगनाना गीत, हास्यना शब्द सांजलीने संजोगसुखपामे उपरांत आणतादि चार देवलोकना देवता तो पोताने स्थानके रह्या थकाज जे देवांगनानी मनमां चिंतवणा करे, तेवारे ते देवी पण पोताने स्थानके बेठी जलीबुरी कामचेष्टा मनमां धरतीजोग माटे सावधान थाय, तेवारे ते देवो तिहांज रह्या मनःसंकल्पे सुरत सुख पामे.

नवथैवेयक तथा अनुतर विमानवासी देवोने विषयविकार अल्प ठे, तेश्री ते कोश्र रीते देवांगनाने सेवता नथी तथापि तेमने सुख बीजा देवोथी पण अनंतशुणुं ठे.

सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी देविउं कया देवलोकवालाने केटला आयुवाली जोग

मां आवे? तथा ते देवोने जोगनी इहा केवी रीते पूर्ण थाय? तेनो यंत्र.

जवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी देवो सर्व काय सेवीठे. अने वैमानिक देवो नो यंत्र आप्योठे.

| | | | | | |
|--------------|-----------|------------------|-------------|-----------|-------------------|
| सौधर्म. १ | पद्यो० १ | काय जोग सेवी. | ईशान. १ | पद्यो० १ | काय जोग सेवी. |
| सनत्कु० ३ | पद्यो० १० | फरसजोग सेवी. | माहेंद्र. ४ | पद्यो० १५ | फरसजोग सेवी. |
| ब्रह्मदेव. ५ | पद्यो० २० | रूपदेखी जोगसेवी. | लांतक. ६ | पद्यो० २५ | रूपदेखी जोग सेवी. |
| शुक्रलोक. ७ | पद्यो० ३० | शब्दजोग सेवी. | सहस्रा. ७ | पद्यो० ३५ | शब्दसंजोग सेवी. |
| आनत. ९ | पद्यो० ४० | मनेकरी, मनसेवी. | प्राणत. १० | पद्यो० ४५ | मनेकरी जोग सेवी. |
| आरण. ११ | पद्यो० ५० | मनेकरी जोग मनसे. | अच्युत. १२ | पद्यो० ५५ | मनेकरी जोग सेवी. |

सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी देवीयोनुं गमनागमन कया कया देवलोक सुधी ठे. तेनो यंत्र तथा त्रण प्रकारना किट्बिषीया देवोनुं आयु अने उत्पत्ति स्थाननो यंत्र.

| | | | | |
|------------------|---------|-------------------|----------|-----------------------|
| सौधर्मदेवलोकनी. | १-२-३-४ | किट्बिषी देवोनुं. | आयुष्य. | उत्पत्तिस्थान. |
| देवीनुं गमनागमन. | ५-६-७-८ | किट्बिषी देवोनुं. | पद्य. ३ | सौधर्म ईशाननी नीचे. |
| ईशान देवलोकनी. | १-२-३-४ | किट्बिषी देवोनुं. | सागर. ३ | सनत्कु० माहेंद्रनीचे. |
| देवीनुं गमनागमन. | ५-६-७-८ | किट्बिषी देवोनुं. | सागर. १३ | ब्रह्मलांतकनी नीचे. |

हवे किट्बिषीया देवो नो अधिकार कहे ठे.

ए देवो अशुजकर्मना उदयथी देवंतामांहे चंराल सरखा जाणवा, तेमनां स्थानक कहे ठे.
 १ जे देवो सौधर्म तथा ईशान देवलोकने तळे वसे ठे, तेनुं त्रण पद्योपमायुं ठे.
 २ जे देवो सनत्कुमार देवलोकने तळे वसे ठे, तेनुं त्रण सागरोपम आयु ठे.
 ३ जे देवो लांतक देवलोकने अधोजागे वसे ठे, तेनुं तेर सागरोपमायु ठे.

हवे वैमानिक देवोनां शरीरना वर्ण कहे ठे.

- १ सौधर्मईशान ए वे देवलोकना देवोनां शरीर सुवर्ण सरखी कांतिवालां ठे.
- २ त्रीजा चोथा अने पांचमा देवलोकना देवोनां शरीरनी कांति कमलना केसरा जेवी ठे.
- ३ ठठा लांतक आदिक सर्व देवोनां शरीर एक बीजाथी उत्तरोत्तर उज्ज्वल उज्ज्वलतर अने उज्ज्वलतम शरीरवाला जाणवा.

हवे लोकांतिक देवोनुं स्वरूप कहे ठे.

आ जंबूद्वीपथकी असंख्याता द्वीप समुद्र उल्लंघीये, तेवारे अरुणवर नामा द्वीप नी वेदिकाना ठेहेनाथी अरुणवर नामा समुद्रमां वेहेतालीश हजार योजन जश्ये, तिहां पाणीनी उपरना तलीयाथी उंचो अप्कायमय, महांधकाररूप तमस्काय निकळ्यो ठे, ते अगीयारसो योजन सुधी जींत सरखो थशने पठी तीर्णो विस्तार पामतो पामतो सौधर्मादि चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्मदेवलोकना अरिष्टनामा त्रीजा प्रतरे जइ रह्यो ठे.

हवे पांचमा देवलोकनो जे त्रीजो प्रतर ठे तेना अरिष्टनामा विमाननी चारे दिशाये सचित्त पृथ्वीमय वे वे कृष्णराजियो ठे,

एम चारे दिशिनी आठ कृष्णराजि नाटकना अखाकाने आकारे ठे, ते आठे कृष्णराजिना आठ आंतरामां आठ विमान ठे. अने नवमुं कृष्णराजिनी वचमां मध्यजागे विमान ठे. ए नव विमानवासी देवो ते ब्रह्मलोकना समीपे वसे, माटे लोकांतिक देवो कहेवाय अथवा वचला मध्यजागना विमानवासी देवता सर्व एकावतारी ठे माटे लोकांतिक संसार, तेने अंते थया, माटे लोकांतिक देव कहेवाय ठे.

बीजा आठ विमानमां वसनारा देवता एकांते एकावतारी न होय पण नवमा विमानना देवो एकांते एकावतारीज होय, ए नव प्रकारना लोकांतिक देवो पांचमा देवलोकने ठेहडे वसे ठे, तेमनुं आठ सागरोपमायु ठे. तेमना विमानोनां नाम तथा पोतानां नाम अने जेमने जेटला देवोनी परिवार ठे, तेनी संख्या नीचे लखीये ठैये.

| विमाननां नाम | देवोनां नाम | परिवार संख्या | ५ चंद्राक्षविण | गर्दंतोय देव. | सात हजार देव |
|---------------|--------------|---------------|-------------------|----------------|---------------|
| १ अर्चिविण | सारस्वत देव. | सातशे देवो. | ६ सूर्याक्षविण | तुषित देव. | सात हजार देवो |
| २ अर्चिमाद्री | आदित्य देव. | सातशे देवो. | ७ शुक्राक्षविण | अव्याबाध देव | नवशे देवो. |
| ३ वैरोचन. | वन्हि देव. | चौदशे देवो. | ८ सुप्रतिष्ठाक्ष. | आग्नेय देव. | नवशे देवो. |
| ४ प्रजंकर. | वरुण देव. | चौदशे देवो. | ९ रिष्ठाक्षविण | रिष्ठाक्ष देव. | नवशे देवोपरि. |

हवे पीस्तालीश लाख योजनना त्रण पदार्थ ठे, तेनां नाम कहे ठे.

- १ सीमंतनामे नरकावासो. २ मनुष्यक्षेत्र अढीद्वीप प्रमाण. ३ उडुविमान. ४ सिद्धशिला.

हवे त्रण पदार्थ एक लाख योजनना ठे, ते कहे ठे,

१ अपशृणाणो सातमा नरकनो नरकावासो, २ सर्वार्थसिद्ध विमान, अने ३ जंबूद्वीप.

हवे देवता कहेवा होय? तेनुं स्वरूप कहे ठे.

१ सर्व देवता शुभकर्मना उदयशी केश, हारु, मांस, दाढी मूठना रोमनी वृद्धि, नख, रुधिर, वसा, चरबी, चामनी, मूत्र, विष्टा, एणे करी रहित निर्मल होय अने कर्पूर, कस्तूरीना सुगंध सरखो मुखनो निःश्वास होय, रजःप्रखेदादिक उ पक्षेप रहित, कास श्वासादिक रोग रहित निरुज होय. तेजवंत शरीर होय.

२ उपजती वेलाये शालिज्ज प्रमुखना पितानी पेठे अंतरमुहूर्त्तमांहे पर्याप्ति पूरी करी पढी तरुण पुरुष सरखा निरंतर होय.

३ उपजतांज शरीरने विषे सर्व आचूषण पहेच्यां थकां उपजे.

४ सदा यौवनावस्था रहे, पण वयारे वृद्धावस्था न आवे.

५ समचतुरस्र संस्थान होय. ६ आंख मटकावे नही निरंतर उघादी रहे.

७ फूलनी माला पहेरेली कुमलाय नही. ८ चार आंगुल धरतीथी उंचा चाले.

हवे जे कारणे देवोने मनुष्यलोकमां आववुं पडे, ते कारणो कहे ठे.

१ श्रीतीर्थकरना पांच कल्याणिके आवे. २ महाऋषीश्वरनी तपस्याना प्रजावे आवे.

३ जन्मांतरना स्नेहशी इहां आवे. ४ संगमानी पेठे क्रोधशी इहां आवे.

५ शीलना प्रजावे आवे, सुज्जा शोभाणी माटे आव्या तेनी पेठे जाणवुं.

हवे देवता इहां कारण विना शामाटे न आवे? ते कहे ठे.

१ देवांगनाना प्रेममां मग्न रह्या ठे माटे. २ विषयसुखमां घणा आसक्त ठे माटे.

३ मनुष्यने आधीन रहेवानुं काम नथी. ४ इहां जेवारे मनुष्य, तिर्यचनां कक्षेवर

घणा मुवेलां होय, तेवारे पांचशे योजन गंध उंचो जाय अशुभ गंध जाणे माटे न आवे,

हवे वैमानिक देवोना अवधिज्ञाननी स्थिति कहे ठे.

१ सौधर्मदेवलोकना देवता तीर्था असंख्याता द्वीप समुद्र देखे अने उपरला देवता तेशी घणा असंख्याता द्वीप समुद्र देखे. अने उंचुं पोताना विमाननी चूलिका ध्वजा सुधी देखे.

हवे नीचे क्यांसुधी देखे? ते कहे ठे.

१ पहेला वे देवलोकवाला पहेली नरक लगे देखे. २ त्रीजा चोथावाला बीजी नरक लगे.

३ ब्रह्मलांतक वाला त्रीजी नरक लगे देखे. ४ शुक्रसहस्रार वाला चोथी नरक लगे देखे.

५ आणतादि चारवाला पांचमी नरक लगे देखे. ६ ठ प्रैवेयकना देवो बघी नरक लगे देखे.

७ उपरला त्रण प्रैवेयक सातमी लगे देखे. ८ अनुत्तरना देवो कांश्क ऊणुं लोकनाल देखे.

हवे सामान्यथी शेष देवोनो अवधि कहे ठे.

- १ जे सागरोपमथी किंचित् न्युन आजखावाला एवा जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी देवता ठे ते अवधिज्ञाने करी संख्याता योजन पर्यंत देखे.
- २ अर्द्ध सागरोपमथी वधता आजखावाला देवता असंख्याता योजन पर्यंत देखे.
- ३ जघन्यथी दश हजार वर्षायुवाला एवा जवनपति व्यंतर पच्चीश योजन लग्गे देखे.
- ४ जवनपति व्यंतर देवो जंचुं घणुं देखे, सौधर्म देवलोक सुधी देखे. ५ वैमानिक देवो नीचुं घणुं देखे. ६ नारकी अने ज्योतिषी तीर्हुं घणुं देखे. ७ मनुष्य तिर्यचने अनेकरीते अवधि ज्ञान होय. इहां सुधी देवोनुं आयु तथा शरीरमान प्रमुख केटलि एक वातो कही.

हवे नारकी जीवोना आयु प्रमुख कहेवा माटे प्रथम आयु कहे ठे.

सामान्यथी जघन्योत्कृष्टायुं साते नरकनुं प्रथम पांत्रीशद्वारना अधिकारे कहेवाणुं ठे, अने इहां पाथडे पाथडे प्रथम उत्कृष्टायु कहे ठे.

रत्नप्रज्ञाना तेर पाथका मांहेला पहेले पाथडे नेवुं हजार वर्ष, बीजाने विषे नेवुं लाख वर्ष, त्रीजाने विषे एक पूर्वकोटि वर्ष, चोथाने विषे एक सागरोपमना दश जाग करीये तेवो एक जागायु अने पांचमाने विषे बे जाग एम पाथडे पाथडे एकेक जाग वधारतां यावत् तेरमे पाथके संपूर्ण एक सागरोपम उत्कृष्टायु थाय ठे,

अने जघन्यायु तो पहेले पाथडे दश हजार वर्ष, बीजे पाथके दशलख वर्ष, त्रीजे नेवुं लाख वर्ष, चोथे पाथके एक पूर्वकोटि वर्ष, पांचमे एक सागरोपमना दश जाग करीये तेवो एक जाग पढी पाथडे पाथडे एकेको जाग वधारतां यावत् तेरमे पाथके एक सागरना दशैय्या नवजाग आयु थाय.

हवे बीजी नरकपृथ्वीआदिकमां उत्कृष्टी आयुःस्थिति आणवाने अर्थे उपाय कहे ठे. शर्करप्रज्ञाने विषे उत्कृष्टी स्थिति त्रण सागरोपम ठे, तेमांथी रत्नप्रज्ञाने विषे उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी ठे ते काढीये, तेवारे शेष बे सागरोपम रहे, ते बे सागरोपमने शर्करप्रज्ञाना अगीयार प्रतरे जाग आपीये, तेवारे एक जागमां एक सागरोपमना अगीयारीया बे जाग आवे, ते बेने वांछित प्रतर साथे गुणीये, तेवारे प्रथम प्रतरे एकनी साथे गुण्यां थकां बे जागज आवे. तेनी साथे वली रत्नप्रज्ञा पृथ्वीने विषे उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी ठे ते जेहीये, तेवारे प्रथम प्रतरे एक सागरोपमनी उपर एक सागरोपमना अगीयार जाग करीये, तेवा बे जाग आवे. एटली शर्करप्रज्ञाना प्रथम प्रतरे उत्कृष्टी आयुःस्थिति जाणवी, पढी प्रतरे प्रतरे बे बे जाग वधारतां यावत्

अगीयारमे प्रतरे पूर्ण त्रण सागरोपम आयु थाय, अने पहेला प्रतरनी उत्कृष्टी स्थिति तेटलीज बीजे प्रतरे जघन्य स्थिति होय. एम सर्व प्रतरे कहेवुं.

एमज त्रीजी वालुकाप्रज्ञाने विषे सात सागरोपम उत्कृष्टायु ठे, तेमांथी शर्करप्रज्ञाना त्रण सागरोपम काढीये, शेष चार सागरोपम रहे. ते त्रीजी पृथ्वीना नव प्रतर ठे, तेनी साथे वहेंचीये, तेवारे एक जागमां एक सागरोपमना नव जाग करीये, तेवा चार जाग आवे. तेनी साथे शर्करप्रज्ञानी उत्कृष्ट स्थितिना त्रण सागरोपम मेलवीये, एटलुं प्रथम प्रतरे उत्कृष्टायु होय, तेम बीजे प्रतरे त्रण सागरोपमनी उपर आठ जाग आयु होय यावत् नवमे प्रतरे सात सागरोपमायु पूर्ण थाय, अने जघन्यायु पूर्वली रीते कहेवुं.

प्रत्येक नरके प्रतरे प्रतरे जघन्योत्कृष्टायु जाणवानो यंत्र.

| | | | | | | | | | | | | | |
|-------------------|---------|---------|---------|---------|----|----|----|----------|----|----|---------|-----------|----|
| रत्नप्रज्ञाप्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| जघन्यसागर. | दशस. | दशला | नेवुंला | पूर्वको | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दशैयाजाग. | ० | ० | ० | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| उत्कृष्टसाग. | नेवुंस. | नेवुंला | पूर्वको | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| दशैयाजाग. | ० | ० | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ० |
| शर्करप्रज्ञाप्र० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | तमस्त० | १ |
| जघन्यसागर. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | जघन्य. | १२ |
| अग्यारियाज्ञा | ० | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | उत्कृष्ट. | ३३ |
| उत्कृष्टसागर. | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | | |
| अग्यारियाज्ञा | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ० | | |
| वालुप्रज्ञाप्र० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | तमःप्र | १ | २ |
| जघन्यसागर. | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | जघ० | १७ | १८ |
| नवैयाजाग. | ० | ४ | ८ | ३ | ७ | २ | ६ | १ | ५ | ९ | त्राङ्. | ० | २ |
| उत्कृष्टसागर. | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | उत्कृ. | १८ | २० |
| नवैयाजाग. | ४ | ८ | ३ | ७ | २ | ६ | १ | ५ | ० | ० | त्राङ्. | २ | १ |
| पंकप्रज्ञाप्रत० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | धूमप्र. | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| जघन्यसागर. | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | जघन्य | १० | ११ | १२ | १४ | १५ |
| सातैयाजाग. | ० | ३ | ६ | २ | ५ | १ | ४ | पांचि० | ० | २ | ४ | १ | ३ |
| उत्कृष्टसागर. | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | उत्कृष्ट | ११ | १२ | १४ | १५ | १७ |
| सातैया जाग. | ३ | ६ | २ | ५ | १ | ४ | ० | पांचि० | २ | ४ | १ | ३ | ० |

हवे साते नरके मली चोराशी लाख नरकावासा ठे ते सर्व मांहेली वाजुये गोल ठे, वा हेर चोखुणा ठे, हेठे धरतीनुं तलीयुं पाषाणनी धार सरखुं ठे, ते अत्यंत दुर्गमय ठे.

हवे ए नरकावासानुं आयाम, विष्कंज अने उंचपणुं कहे ठे. सर्व साते पृथिवी सं बंधि नरकावासा त्रण त्रण हजार योजन उंचपणे ठे. तेमां एक हजार योजन नीचे ठे, अने एक हजार योजन वचमां पहोला ठे. तथा एक हजार योजन उपर पृथ्वी पिंड ठे, तेमज पहोला अने लांबा असंख्याता योजन ठे. मात्र रत्नप्रज्ञाने पहेले पा थके सीमंतो नरकावासो ठे, ते पीस्तालीश लाख योजन लांबो पहोलो ठे अने सा तमी नरकनो अपश्छाणो इंद्रक नरकावासो एक लाख योजन लांबो पहोलो ठे.

हवे पाथरानुं मांहोमांहे अंतरकहेठे. रत्नप्रज्ञा पृथिवीये १००००० योजन पृथ्वीपिंड ठे, तेमांथी एकेक हजार योजन नीचे उपरथी काढीये, बाकी १७०००० रहे, तेमांथी तेर पाथरानी उंचाइना ३६०००० योजन काढीये बाकी १३६०००० योजन रहे, ते तेर पाथराना आंतरा वार आय, तेनी साथे वहेंचीये तेवारे एक जागमां ११५०३ योजन नी उपर एक योजनना वार जाग करीये, तेवा चार जाग आवे, एटळुं पहेली नरक ना प्रतरे प्रतरे अंतर ठे, एमज बीजी नरक प्रमुखने विषे आंतरानुं गणित करवुं.

पहेली नरकना वार आंतरामां पहेलो तथा ठेहलो ए वे आंतरा शून्य ठे अने शेष दश आंतरामां जुवनपति देवोनी दश निकाय ठे, पण बीजी आदिक नरक पृथि वीना आंतरा सर्व शून्य जाणवा. एना यंत्रोनी स्थापना नीचे करी ठे ते जोइ लेवी.

हवे साते नरकना प्रत्येक प्रतर मांहेला मध्यना वचला इंद्रक नरकावासाथी चार दिशाये चार श्रेणि अने चार विदिशाये चार श्रेणि एम आठ श्रेणि नरकावासानी निकली ठे, तिहां पहेले पाथडे प्रत्येक चार दिशानी एकेक श्रेणिमां उंगणपच्चास नर कावासा ठे अने चार विदिशानी प्रत्येक श्रेणिमां अडतालीश नरकावासा ठे. पठी पाथ डे पाथके एकेक नरकावासो घटाडतां यावत् सातमी नरके उंगणपच्चासमे प्रतरे चारे दि शानी पंक्तिमां एकेक नरकावासो ठे अने विदिशानी पंक्तिमां नरकावासो नथी तेनी साथे एक मध्यने इंद्रक नरकावासो मेलवीये, तेवारे सातमी नरके पांच नरकावासा ठे.

रत्नप्रज्ञा पृथ्वीने पहेले पाथके चारे दिशिना १६ अने चार विदिशाना १६ तथा एक वचमानो मेलवतां ३६ पंक्तिगत नरकावासा आय. पठी बीजे पाथडे चार दि शिना चार अने चार विदिशिना चार मली आठ घटे, तेवारे ३६१ आय. एम बीजा आदिकमां आठ आठ घटावतां यावत् उंगणपच्चासमे प्रतरे पांच नरकावासा पंक्तिगत रहे, शेष्य नरकावासा सर्व पुष्पावकीर्ण जाणवा. अथवा आवदिकागत नरकावासा

देवादिक संबंधि आयु प्रमुखना यंत्रो.

१९३

जाणवानो उपाय कहे ठे. पहेली नरकना पहेला पाथराना नरकावासाने मुख्य क हीये अने पहेली नरके तेर पाथरु ठे, माटे तेरमा पाथराना नरकावासाने भूमि क हीये, ए बेतो शरवालो करी तेनुं अरु करी वांठित प्रतरे गुणीये, तेवारे ते प्रतरना पंक्तिगत नरकावासांनी संख्या आवे. एना यंत्रो दाखल करेला ठे, ते जोश लेवा.

रत्नप्रज्ञाने पहेले कांनिं रत्न घणां ठे, माटे एतुं रत्नप्रज्ञा गोत्र कहीये, बीजी शर्क राये कांकरा घणा ठे, त्रीजी वालुकाये वेदु एटले रेती घणी ठे, चोथी पंकप्रज्ञाये का दव घणो ठे, पांचमी धूमाये धूम घणो ठे, ढठी तमःप्रज्ञाये अंधकार घणो ठे, अने सातमी तमस्तमः प्रज्ञाये अंधकारनुं बहुलपणुं ठे, एम साते नरकना गुणनिष्पन्न गोत्र ठे. ए सात नरक संबंधि गोत्रना हेतु जाणवा.

सात नरकनां नाम, गोत्र, नरकावासांनी संख्या, प्रतरसंख्या, पृथ्वीपिंरु, सामान्य श्री जघन्य उत्कृष्टायु, तेमज देहमान, अवधिज्ञाननुं क्षेत्र, एक नारकी उपना पढी बीजो नारकी केटले काले उपजे, तेनो विरहाकाल ए सर्वनो यंत्र.

| साते नारकीनां नाम. | सात नारकीनां गोत्र. | नरकावासांनी संख्या. | प्रतरसंख्या पाथरु. | नरकनुं उंचपणुं पृथ्वीपिंरु. | सामान्ये ज घन्यायु. |
|--------------------|---------------------|---------------------|--------------------|-----------------------------|---------------------|
| घस्मा. | रत्नप्रज्ञा. | ३०००००० | १३ | १००००० | दश हजारवर्ष. |
| वंशा. | शर्करप्रज्ञा. | २५००००० | ११ | १३२००० | एक सागर. |
| शैला. | वालुकप्रज्ञा. | १५००००० | ९ | १२०००० | त्रण सागर. |
| अंजणा. | पंकप्रज्ञा. | १०००००० | ७ | १२०००० | सात सागर. |
| रिंछा. | धूमप्रज्ञा. | ३००००० | ५ | ११०००० | दश सागर. |
| मघा. | तमःप्रज्ञा. | ९९९९९ | ३ | ११६००० | सत्तर सागर. |
| माघवती. | तमस्तमप्रज्ञा. | ५ | १ | १००००० | बावीश सागर. |

| सामान्ये उत्कृष्टायु. | सामान्य देहमान धनुष्य. | उत्कृष्ट वैक्रिय देहमान. | उत्कृष्ट अवधि ज्ञानके क्षेत्र. | जघन्य विरहकाल. | उत्कृष्ट विरहकाल. |
|-----------------------|------------------------|--------------------------|--------------------------------|----------------|-------------------|
| एक सागर. | ध०७॥ अं० ६ | ध० १५॥ अं० १२ | गाउ. ४ | एक समय. | चोवीशमुहूर्त |
| त्रण सागर. | ध.१५॥ अं. १२ | ध० ३१ | गाउ. ३॥ | एक समय. | सात दिवस. |
| सात सागर. | ध० ३१ | ध० ६१॥ | गाउ. ३ | एक समय. | पन्नर दिवस. |
| दश सागर. | ध० ६१॥ | ध० १२५ | गाउ. २॥ | एक समय. | एक मास. |
| सत्तर सागर. | ध० १२५ | ध० २५० | गाउ. २ | एक समय. | बे मास. |
| बावीश सागर. | ध० २५० | ध० ५०० | गाउ. १॥ | एक समय. | चार मास. |
| तेत्रीश सागर. | ध० ५०० | ध० १००० | गाउ. १ | एक समय. | ठ मास. |

देवादिक संबंधि आयु प्रमुखना यंत्रो.

साते नरकना उगणपचास प्रतरे दिशि अने विदिशि संबंधी नरकावासानी पंक्तिनी संख्यानो तथा एकंदर पंक्तिगत नरकावासानी संख्यानो यंत्र.

| | | | | | | | | | | | |
|---------------------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| प्रतर. दिशि. विदिशि. सर्वसं० | १ ४ए | २ ४८ | ३ ४७ | ४ ४६ | ५ ४५ | ६ ४४ | ७ ४३ | ८ ४२ | ९ ४१ | १० ४० | ११ ३९ |
| १२ ३८ ३७ ३०२ | १३ ३७ ३६ ३ए३ | १४ ३६ ३५ ३८५ | १५ ३५ ३४ ३७७ | १६ ३४ ३३ ३६ए | १७ ३३ ३२ ३६२ | १८ ३२ ३१ ३५३ | १९ ३१ ३० ३४५ | २० ३० २९ ३३७ | २१ २९ २८ ३२९ | २२ २८ २७ ३२५ | २३ २७ २६ ३१७ |
| प्र० दि० वि० सर्व. | २५ २५ २४ १ए७ | २६ २४ २३ १८ए | २७ २३ २२ १८२ | २८ २२ २१ १७३ | २९ २१ २० १५७ | ३० २० १९ १५७ | ३१ १९ १८ १४९ | ३२ १८ १७ १४२ | ३३ १७ १६ १३३ | ३४ १६ १५ १२५ | ३५ १५ १४ ११७ |
| ३७ ३३ ३२ ३०२ | ३८ ३२ ३१ ए३ | ३९ ३१ ३० ८५ | ४० ३० ए ७७ | ४१ ए ८ ६ए | ४२ ८ ७ ६२ | ४३ ७ ६ ५३ | ४४ ६ ५ ४५ | ४५ ५ ४ ३७ | ४६ ४ ३ ३ए | ४७ ३ २ २२ | ४८ २ १ १३ |

सात नरक पृथिवीमां आवलिकागत नरकावासानी संख्या आणवा माटें मुख, जूमि समासादिक करणनो यंत्र तथा पुष्पावकीर्ण नरकावासानी संख्या

| | | | | | | | | |
|---|-------------------|------------------|----------------|------------------|-----------------|-----------------|---------------|----------------|
| पृथिवी. मुखानि. जूमयः समास. समासा० प्रतराः पंक्तिगत. पुष्पाव० शरवाले. | १ रत्नप्र० ३८ए | २ शर्करा. ३८५ | ३ वालु० १ए७ | ४ पंकप्र० १२५ | ५ धूमप्र० ६ए | ६ तमःप्र० ३ए | ७ तमस्त० ४ | सर्वसं० ३८ए |
| | २९९५५६७ | २४९७३०५ | १४९८५१५ | ९९९२९३ | ३एए७३५ | एएए३३ | ० | ८३९०३४७ |
| | ३०००००० | २५००००० | १५००००० | १०००००० | ३०००००० | एएएएए | ५ | ८४००००० |

ठ नारकीना पृथ्वीपिंक्रमंथी नीचें तथा उपरना एकेक हजार योजन न्युन करवा अने सातमी नरक पृथ्वीचें सामी बावन हजार योजन नीचें अने सामी बावन हजार योजन उपर मूकीयें. तेवारें बाकी त्रण हजार योजन रहे. तेमां एकज पाथडो ठे. शेष ठ नरक पृथ्वी संबंधि पाथडाना आंतरानो यंत्र.

| नरकनां नाम. | रत्नप्रज्ञा. | शर्करप्रज्ञा. | बाहुकप्रज्ञा. | पंकप्रज्ञा. | धूमप्रज्ञा. | तमःप्रज्ञा. | तमस्तःप्रज्ञा |
|-------------------|-------------------------------------|---------------|---------------|------------------------------------|-------------|-------------|---------------|
| पृथ्वी पिंड. | १००००० | १३१००० | ११०००० | ११०००० | ११०००० | ११६००० | १००००० |
| द्विसहस्रोपकरतां | ११०००० | १३०००० | १६०००० | ११०००० | ११६००० | ११४००० | ३००० |
| प्रतरसंख्या. | १३ | ११ | ९ | ११ | ११ | ३ | १ |
| प्रतरनुं उंचपणुं. | ३००० | ३००० | ३००० | ३००० | ३००० | ३००० | ३००० |
| पाथरुण पृण पिंड | ३९०००० | ३३०००० | ३१०००० | ३१०००० | ३१०००० | ३१०००० | ३००० |
| शेष पाण विना पृण | ३३९०००० | ९१०००० | ९९०००० | ९१०००० | १०१०००० | १०१०००० | १०१०००० |
| पाथडानी संख्या. | ११ | १० | ८ | ६ | ४ | ३ | ० |
| प्रतरांतर मान. | ११५०३२ ^४ / _{१३} | ९१००० | ११३१५ | १६१६६ ^६ / _{१३} | १५११५० | ५११५०० | ० |

प्रत्येक नरक पृथिवीचें आवलिकागत वाटला नरकावासानी तथा त्रिखूणा अने चौखूणा नरकावासानी तथा बूटा पुष्पावकीर्ण नरकावासानी संख्यानो यंत्र. अने वचलो इंद्रक नरकावासो गोल होय पठी पंक्तिमां पहेलो त्रिखूणो, चौखूणो पठी वाटलो एम आवलिकाना ठेहेडा सुधी कहेडुं.

| नरकनाम. | घग्ग्मा. १ | वंशा, २ | शोला. ३ | अंजणा. ४ | रिठा. ५ | मघा. ६ | माघण ७ | आवलिकागत. |
|---------------|------------|---------|---------|----------|---------|--------|--------|-----------|
| वाटला. | १४५३ | ८१५ | ४११ | ४१३ | ११३ | १५ | १ | ३१११ |
| त्रिखूणा. | १५०८ | ९१४ | ५१६ | ५१२ | १०० | १८ | ४ | ३३३३ |
| चौखूणा. | १४११ | ८९६ | ४९१ | ४३१ | ८८ | १० | ० | ३१०० |
| सर्वसंख्या. | ४४३३ | ३६९५ | १४८५ | १४८५ | ३६५ | ६३ | ५ | ९६५३ |
| पुष्पावकीर्ण. | १९९५५६१ | ३४९१३०५ | १४९८५१५ | ९९९१९३ | १९९१३५ | ९९९३३ | ० | ८३९०३४१ |
| सर्वसंख्या. | ३०००००० | ३५००००० | ३५००००० | ३०००००० | ३०००००० | ९९९९९५ | ५ | ८४००००० |

पहेली रत्नप्रज्ञा नारकी संबंधि १००००० योजन पृथिवीपिंममांहे नारकीना तेर पाथडा त्रण त्रण हजार योजननां उंचा एक बीजानी उपर ठे, तेनी वचमां केटलुं के टलुं एकेका प्रतरनी मांहोमांहे अंतर ठे? तथा जवनपति देवोनी दश निकाय कया कया प्रतरना अंतरमां ठे! अने कयुं अंतर शून्य ठे? तथा नीचैना हजार योजन शून्य ठे अने उपरना हजार योजनमां व्यंतर तथा वाणव्यंतर देवोनी निकाय कया कया स्थानके ठे? ते देखाडवानो यंत्र.

उत्तरश्रेणि.

रत्नप्रज्ञा बीजी उत्तरश्रेणि.

सुवन्न आदिक आठ इंद्र.
शून्यपिंम ठे.

माहाकालादि आठ इंद्र.
शून्यपिंम ठे.

पहेलो पाथडो उंचो ठे.

पहेलुं प्रतरांतर मान.

बीजो पाथडो उंचो ठे.

असुरकुमार निकाय वलींद्र.
त्रीजो पाथडो.

नागकुमार निकायचुतानंदेंद्र.
चोथो पाथडो.

सुवर्णकुमार वेणुदालींद्र.
पांचमो पाथडो.

विद्युत्कुमार निकाय हरिशिं
ठगो पाथडो.

अशिकुमारनि.अग्निमाणवेंद्र.
सातमो पाथडो.

छीपकुमार निकाय विशिष्टेंद्र.
आठमो पाथडो.

उदधिकुमारनिकायजलप्रज्ञे
नवमो पाथडो.

पिंड योजन प्रमाण.

१० योजन मृतपिंड.

८०अणपत्नीयादिकवाणव्यं.

१० योजन मृतपिंड.

८०० योजनपिशाचव्यंतर.

१०० योजननो पिंड.

३००० योजन प्रमाण उंचो.

११५८३ $\frac{४}{९२}$ योजनमां.

३००० योजन प्रमाण.

११५८३ $\frac{४}{९२}$ आंतरामां.

३००० योजन प्रमाण.

११५८३ $\frac{४}{९२}$ आंतरामां.

३००० योजन प्रमाण.

११५८३ $\frac{४}{९२}$ आंतरामां.

३००० योजन प्रमाण.

११५८३ $\frac{४}{९२}$ आंतरामां.

३००० योजन प्रमाण.

११५८३ $\frac{४}{९२}$ आंतरामां.

३००० योजन प्रमाण.

११५८३ $\frac{४}{९२}$ आंतरामां.

३००० योजन प्रमाण.

११५८३ $\frac{४}{९२}$ आंतरामां.

३००० योजन प्रमाण.

दक्षिणश्रेणि.

पहेली दक्षिणश्रेणि रत्नप्रज्ञा.

सन्निहित आदि आठ इंद्र.

शून्यपिंड ठे.

कालेंद्रप्रमुख आठ इंद्र.

शून्य पिंड ठे.

एमां नरकावासा ठे.

एटलामां आकाश शून्य ठे.

एमां नरकावासा ठे.

असुरकुमार निकाय चमरेंद्र.

एमां नरकावासा ठे.

नागकुमारनिकायधरणींद्र.

एमां नरकावासा ठे.

सुवर्णकुमारनिकायवेणुदेवेंद्र.

एमां नरकावासा ठे.

विद्युत्कुमार निकायहरिकांतें.

एमां नरकावासा ठे.

अशिकुमारनि.अग्निशिखेंद्र.

एमां नरकावासा ठे.

छीपकुमारनिकाय पूर्णेंद्र.

एमां नरकावासा ठे.

उदधिकुमारनि.जलकांतेंद्र.

एमां नरकावासा ठे.

| | | |
|----------------------------|--------------------------------|-------------------------------|
| दिशिकुनि०अमितवाहनैन्द्र. | ११५७३ $\frac{४}{१२}$ आंतरामां. | दिशिकुमार निकायअमितेंद्र |
| दशमो पाथडो. | ३००० योजन प्रमाण. | एमां नरकावासा ठे. |
| पवनकुमारनि० प्रजंजनैन्द्र. | ११५७३ $\frac{४}{१२}$ आंतरामां. | पवनकुमारनिकायवेलंबकेंद्र. |
| अगियारमो पाथडो. | ३००० योजन प्रमाण. | एमां नरकावासा ठे. |
| स्तनितकुमारनिकाय घोषेंद्र. | ११५७३ $\frac{४}{१२}$ आंतरामां. | स्तनितकुमारनि०महाघोषेंद्र |
| बारमो पाथको. | ३००० योजन प्रमाण. | एमां नरकावासा ठे. |
| ए आंतरामां शून्य ठे. | ११५७३ $\frac{४}{१२}$ आंतरामां. | ए आंतरो शून्य ठे. |
| तेरमो पाथडो. | ३००० योजन प्रमाण. | एमां नरकावासा ठे. |
| अधो जाग. | १००० योजन प्रमाण. | नरकावासा रहित ठे. |
| सर्वसंख्यां. | १००००० योजन. | रत्नप्रज्ञानो पिंड प्रमाण ठे. |

हवे नारकीमां प्रतरें प्रतरें जूंड जूंड उत्कृष्ट देहमान कहे ठे.

रत्नप्रज्ञाना प्रथम प्रतरें उत्कृष्ट देहमान त्रण हाथतुं ठे, अने तेरमे प्रतरें सात धनुष्य त्रण हाथ ने ठ अंगुल ठे, तेमांशी पहेला प्रतरना त्रण हाथ काढीयें, तेवारें शेष सात धनुष्य ने ठ अंगुल रहे. ते सात धनुष्यना अष्टावीश हाथ थाय. तेने तेर प्रतर मांशी प्रथमनो प्रतर एक मूकी शेष बारने आंके वहेचीयें, तेवारें एक जागमां बे हाथ आवतां बार डुचोवीश हाथ जाय, बाकी चार हाथ रहे. तेनां ठनु अंगुल थाय तेनी साथें प्रथमनी ठ अंगुल उपर ठे, ते मेलवियें, तेवारें १०५ अंगुल थाय, तेने बार ने आंके वहेचतां एक जागमां साडाआठ अंगुल आवे, तेवारें बे हाथ ने सामाआठ अंगुलनी वृद्धि करतां बीजो पांच हाथ ने सामाआठ अंगुल देहमान थाय. एम प्रतरें प्रतरें बे हाथने सामाआठ अंगुल वधारतां यावत् तेरमे प्रतरें सात धनुष्यनी उपर त्रण हाथ ने ठ अंगुल देहमान थाय. फरी तेतळुंज देहमाण बीजा नरकना प्रथम प्रतरें कहेतुं. वली शर्कराने अगियारमे प्रतरें एथी बमणुं देहमान थवानुं ठे, माटे उत्कृष्टामांशी जघन्य देहमान काढीयें, एटळे पोणा आठ धनुष्य ने ठ अंगुल वधे, तेना अंगुल करीयें, तो ९५० थाय, ते शर्कराना अगियार प्रतरमांशी पहेला प्रतरनुं आयु कहेवाणुं माटे तेने पडतुं मूकी बाकी दश प्रतरें वहेचीयें तेवारे पंचोतेर अंगुल एक जागमां आवे तेना त्रण हाथ ने त्रण अंगुल थाय, तेतळुं प्रत्येक प्रतरें देहमान वधारतां अगियारमे प्रतरें साडा पन्नर धनुष्य ने बार अंगुल देहमान थाय, तेतळुं देहमान वली त्रीजी नरकने प्रतरें आणीने पठी तेज करण करतुं एम सर्व नरकपृथ्वीयें करतां देह प्रमाण थाय. ते सर्व नीचेंना यंत्रशी जोड लेजो.

देवादिक संबंधि आयु प्रमुखना यंत्रो.

रत्नप्रज्ञादिक प्रत्येक पृथ्वीना जूदा जूदा प्रतरें शरीरना प्रमाणनो यंत्र.

१ रत्नप्रज्ञा.

| | | | | | | | | | | | | | |
|---------|---|----|----|----|----|-----|---|-----|----|----|----|-----|----|
| प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| धनुष्य. | ० | १ | १ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ |
| हस्त. | ३ | १ | ३ | २ | ० | २ | १ | ३ | १ | ० | २ | ० | ३ |
| अंगुल. | ० | ८॥ | १७ | १॥ | १० | १८॥ | ३ | ११॥ | २० | ४॥ | १३ | २१॥ | ६ |

२ शर्करप्रज्ञा.

| | | | | | | | | | | | |
|---------|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| प्रतर. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| धनुष्य. | ७ | ८ | ९ | १० | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १४ | १५ |
| हस्त. | ३ | २ | १ | ० | ३ | २ | २ | १ | ० | ३ | २ |
| अंगुल. | ६ | ९ | १२ | १५ | १८ | २१ | ० | ३ | ६ | ९ | १२ |

३ वालुकप्रज्ञा.

४ पंकप्रज्ञा.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|----|----|-----|----|-----|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|
| प्र० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | प्र० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ध० | १५ | १७ | १९ | २१ | २३ | २५ | २७ | २९ | ३१ | ध० | ३१ | ३६ | ४१ | ४६ | ५२ | ५७ | ६२ |
| ह० | २ | २ | २ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ह० | १ | १ | २ | ३ | ० | १ | २ |
| अं० | १२ | १॥ | ३ | २१॥ | १८ | १३॥ | ९ | ४॥ | ० | अं० | ० | २० | १६ | १२ | ८ | ४ | ० |

५ धूमप्रज्ञा.

६ तमःप्रज्ञा.

७ तमस्तणप्रज्ञा.

| | | | | | | | | | | | |
|------|----|----|----|-----|-----|------|-----|-----|-----|------|-----|
| प्र० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | प्र० | १ | २ | ३ | प्र० | १ |
| ध० | ६२ | ७८ | ९३ | १०९ | १२५ | ध० | १२५ | १८७ | २५० | ध० | ५०० |
| ह० | २ | ० | ३ | १ | ० | ह० | ० | २ | ० | ह० | ० |
| अं० | ० | १२ | ० | १२ | ० | अं० | ० | ० | ० | अं० | ० |

इवे ए साते नरक पृथ्वी शेने आधारेँ रहेली ठे ते कहे ठे. नारकीना मध्यमां वच्चें घनोदधिनो पिरु वीश हजार योजन ठे, अने घनवात, तनुवात तथा आकाश असंख्याता योजननो पिरु ठे, तेमां घनवातथी असंख्यातगुणो तनुवात ठे, अने तनुवातथी असंख्यातगुणो आकाशनो पिरु ठे. घनोदधि, घनवात उपर प्रतिष्ठित ठे, घनवात तनुवात उपर प्रतिष्ठित ठे, तनुवात आकाश उपर प्रतिष्ठित ठे आकाश कोइ उपर प्रतिष्ठित नथी. ए घनोदध्यादिक चार वलयें करी सर्व पृथ्वीयो वीटेली ठे, ते अनुक्रमें मध्य जागथी चारे दिशायें चारे वलय प्रदेशें प्रदेशें घटतां घटतां यावत् आप आपणी

पृथ्वीने ठेहडे ठेक घणाज खल्प थया थका वलयकारे वींटी रह्यां ठे त्यां सर्व नरक पृथ्वी योने ठेहडे केटला केटला योजननां वलय रह्यां ठे, तेना यंत्र, तथा साते नरक पृथिवी जे वी कस्या थकां ठत्रातिठत्र आकार ने, एटले उपर न्हानुं ठत्र तेनी नींचे महोदुं ठत्र, तेनी नींचे महोदुं एम हेठली हेठली नरक महोटीमहोटी ठे. वीश हजार योजन घनोदधिनो पिरु कह्यो, अने असंख्याता योजन घनवातादिकनो पिरु कह्यो. ते सर्व नरकनी वचाले होय, पढी अनुक्रमे प्रदेशे प्रदेशे घटतो घटतो ठेहडे आ यंत्रमां लख्या प्रमाणे वलय होय. नरक. घनोदधिवलयप्रमाण. घनवातवलय. तनुवातवलयप्रमाण. त्रणेनोसरवालो

| नरक आंक. | गाउत्रै | | | गाउना | | | गाउत्रइ | | | | |
|-------------|---------|------|---------|-------|------|-------|---------|---------|-------|------|----------|
| | योजन | गाउ. | यात्राग | योजन. | गाउ. | योजन. | गाउ. | त्र.जाग | योजन. | गाउ. | यात्राग. |
| १ | ६ | ० | ० | ४ | २ | १ | २ | ० | १२ | ० | ० |
| २ | ६ | १ | १ | ४ | ३ | १ | २ | १ | १२ | २ | २ |
| ३ | ६ | २ | २ | ५ | ० | १ | २ | २ | १३ | १ | १ |
| ४ | ७ | ० | ० | ५ | १ | १ | ३ | ० | १४ | ० | ० |
| ५ | ७ | १ | १ | ५ | २ | १ | ३ | १ | १४ | २ | २ |
| ६ | ७ | २ | २ | ५ | ३ | १ | ३ | २ | १५ | १ | १ |
| ७ | ७ | ० | ० | ६ | ० | २ | ० | ० | १६ | ० | ० |

रत्नप्रजा पृथ्वीना १००००० पिरुमां पहेलो खरकांरु १६००० योजन ठे बीजो पंकव हुलकांरु ०४००० योजन ठे, त्रीजो जलबहुलकांरु ००००० योजन ठे. अने बीजी सर्व पृथ्वी पृथ्विकायमय जाणवी. साते नरक पृथ्वी घनोदधि, घनवात, तनुवातने वलये करी वीटली ठे, माटे आयाम विष्कंजे करी चारे दिशाये अलोकने फरसे नही. चारे दिशाये ठेहलो तनुवात वलय अलोकने फरशे ठे माटे. तथा नारकीने वेदनानुं ख रूप जैनप्रबोध पुस्तक तथा सूयगगांग सूत्र तथा संघयणादि ग्रंथोमां ठपायुं ठे.

हवे आ पुस्कमां देव नारकियादिकनां आयु तथा छीपसमुद्रनां प्रमाण सर्वपद्यो पम अने सागरोपमे करी कहां ठे, माटे पद्योपम अने सागरोपमनुं खरूप लखीये ठैये.

ते पद्योपम तथा सागरोपम एकेका त्रण प्रकारना बादर तथा त्रण प्रकारना सू क्षमली ठ प्रकारे ठे; तेमां बादर कोइ काममां नथी आवता परंतु सूक्ष्म काममां आवे ठे. पद्य एटले जेमां धान्य जरीये तेनी जेने उपमा ठे तेने पद्योपम कह्ये. ते अथवा जेणे करी काळादिकनां प्रमाण मवीये उपमीजे; तेने पद्योपम कह्ये. ते

एक उद्धार पट्योपम बीजो अरु पट्योपम अने त्रीजो क्षेत्रपट्योपम, एवात्रण प्रका रे ठे. ते उद्धारदिक एकेको वली एक सूक्ष्म अने बीजो बादर एवा बे बे जेदे ठे.

हवे पट्यनुं प्रमाण कहे ठे. उत्सेधांगुले एक योजननो कूवो वाटलो गोलाकारे जा एवो, ते लांबपणे तथा पहोलपणे अने उंडपणे सर्वत्र एक योजन प्रमाण कहेवो तेनो परिधि त्रण योजन अने एक योजनना ठ जाग करीये, तेवो एक जाग ऊपर थाय.

ते कूवो देवकुरु उत्तरकुरु नामे जे युगलियानां क्षेत्र ठे, तिहां जघन्य एक बे त्रण दिवसना उत्कृष्टथी सात दिवसना जन्मेला गारुना रोम अंगुल प्रमाण लेवा, ते रो मना प्रथम आठ कटका करीये वली ते एकेका कटकाना आठ आठ कटका करतां ६४ कटका थाय. त्रीजी वार आठ खंरु करतां ५१२ थाय. चौथी वार आठ खंरु कर तां ४०९६ थाय. पांचमी वार आठ खंरु करतां ३२७६८ थाय. षष्ठी वार आठ खंरु करतां २६२१४४ थाय. सातमी वार आठ खंरु करतां २०९९१५२ थाय.

ए बीश लाख सत्ताणुं हजार एकशो ने बावन खंरु थया, ते सर्व बादर खंरु थया तेणे करी पूर्वोक्त पालो संपूर्ण गंशीने एवो जरवो के ते अग्निथी बले नही, वायराथी रोमखंरु उडे नही, गंगानदीनो प्रवाह उपरथी चाड्यो जाय तो पण तेने ताणी शके नही, चक्रवर्तीनुं कटक उपर चाड्युं जाय, तो पण धसके नही. एवो ते कूवो जरी ने पठी ते मांहेथी अकेक समये अकेक केश खंरु काहाडतां थकां जेटले काले ते पालो खाली थाय, तेटलो बादर उद्धार पट्योपमनो संख्याता समय प्रमाण काल हो य, जे त्रणी ते खंड संख्याताज होय, माटे संख्यातो काल कह्यो, ए बादर उद्धार प ट्योपम जे कह्यो ते मात्र सूक्ष्म उद्धार पट्योपमनुं स्वरूप समजाववामांज उपयोगी होय. परंतु बीजा कशामां पण काम आवे नही.

हवे पूर्वे जे वालाग्रखंडे पट्य जख्यो ठे, ते बादर एकेक खंरुना असंख्याता सूक्ष्म खंरु कटपिये, ते एवा कटपिये, के जे एक खंडनो वली बीजो खंड केवली केवल ज्ञाने करी पण कटपी न शके, सतेजवंत नेत्रनो धणी जे जालीमांहेथी सूक्ष्म पुजल सूर्यना तेजे करी देखे, तेनो असंख्यातमो जाग अथवा बादर पर्याप्त पृथिवी कायिया जीवनुं जेवुं सूक्ष्म शरीर होय, तेवडे खंडे करी पूर्वोक्त कूवो जरीये, ते एकेको खंड समय समय काहाडतां असंख्याता समय लागे, अर्थात् संख्याता वर्षेनी कोटिये करी ते कूप खाली थाय तेने सूक्ष्म उद्धार पट्योपम कहीये. तेवा दश कोनाकोनी पट्यो पमे एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय. तेवा अढी सागरोपमना जेटला समय थाय तेटले प्रमाणे असंख्याता द्वीप समुद्र ठे. ए सूक्ष्म उद्धार पट्योपम कहां.

तथा तेहीज योजन प्रमाण पद्य बादर वालाग्रे जस्यो, ते मध्येथी शो शो वर्षे एकेक केशखंड काहाइतां, ते पद्य संख्याता वर्षेनी कोनी प्रमाण काले निर्लेप थाय, तेवारे बादर अरु पद्योपम संख्याता वर्षे प्रमाण थाय.

वली तेहीज खंडना पूर्वोक्त रीतें असंख्याता खंड कटपी ते कटपना खंड शो शो वर्षे एकेक कहाडतां जेवारे ते पद्य निर्लेप थाय, तेवारे सूक्ष्म अरु पद्योपम असंख्याता वर्षेनी कोनी प्रमाण थाय. तेवा दश कोनाकोडी सूक्ष्म अरु पद्योपमे एक सूक्ष्म अरु सागरोपम थाय. तेवा वली दश कोनाकोनी सागरोपमे एक अवसर्पिणी काल थाय. वली तेवा दश कोनाकोनी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी काल थाय. ए अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणीना बेहु काल मली वीश कोडाकोडी सागरोपमे एक काल चक्र थाय. ए सूक्ष्म अरु पद्योपम अने सागरोपमे करी देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यचना आयुनुं मान तथा कर्मस्थितिमान तथा कायस्थितिमान तथा जवस्थितिनां कालमानादिक मवीये, ए चोथुं सूक्ष्म अरु पद्योपम कहुं, एटले ए सूक्ष्म अरु सागरोपमना अनंता पुजलपरावत्तें अतीत अरु तथा अनंता पुजलपरावत्तें अनागत अरु थाय. तिहां अनागत अरु अनी अनंतता ठे अने अतीत अरु आयुं आदि नथी, तेथी बेहुने समानपणुं ठे. अन्य आचार्य वली एम कहे ठे के, जो पण समयादिके करी अनागत अरु हीयमान ठे, तो पण अनागत अरु अनी हय नथी थतो, ते माटे अतीत अरु थकी अनागत अरु अनंतगुणी ठे.

सांप्रत बे प्रकारना क्षेत्र पद्योपमनुं निरूपण करीये ठैये. ते पूर्वोक्त बादर वालाग्र खंडे करी जस्यो जे पद्य ते मध्ये कटपना करेला वालाग्रे स्पर्शा जे आकाशप्रदेश ते मांहेथी एकेक आकाश प्रदेश समय समय काहाइतां जेवारे सर्व वालाग्रे स्पष्ट थयेला एवा सर्व आकाश प्रदेश निर्लेप थाय, तेवारे असंख्याती उत्सर्पिणी अने असंख्याती अवसर्पिणी कालप्रमाण एक बादर क्षेत्रपद्योपम थाय.

हवे ते पद्यना सूक्ष्म एकेका वालाग्रने स्पर्शा आकाश प्रदेश तथा अणुस्पर्शा एवा समस्त आकाशप्रदेशने समय समय काहाडतां जेवारे ते पद्य निर्लेप थाय, ते वारे पूर्वोक्त बादरक्षेत्र पद्योपमना कालमानथकी असंख्यातगुणुं असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी प्रमाण सूक्ष्म क्षेत्र पद्योपमनुं कालमान थाय. तेवा दश कोडाकोनी सूक्ष्म क्षेत्रपद्योपमे एक सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम थाय, एणे करी त्रसादिक जीवनुं परिमाण करनुं, एटले दृष्टिवादाने विषे उच्य प्रमाण चिंतवीये तथा पृथिव्यादिक एके जिय त्रसांत जीवनुं परिमाण करीये, तेने विषे एनुं प्रयोजन ठे.

अही शिष्य पूढे ठे के, जो स्पष्ट, अस्पष्ट, नजःप्रदेश सूद्धम क्षेत्र पढ्योपमे करीने ग्रहण करीये ठैये, तो वालाग्रोतुं शुं प्रयोजन ठे ? यथोक्त पढ्यांतरगत नजःप्रदेशाप हारमात्रथीज सामान्यपणे कहेवुं उचित ठे ? तत्र गुरु कहे ठे, के ए सत्य ठे. किंतु सूद्धम क्षेत्र पढ्योपमे करी दृष्टिवादन विषे द्रव्य मवीये ठैये, ने केटलाएक यथोक्त वालाग्र स्पष्ट नजःप्रदेशे करी मवीये ठैये, माटे दृष्टिवादोक्त द्रव्यमानोपयोगीपणा थकी वालाग्र प्ररूपण प्रयोजनवाळुं ठे.

एम सूद्धम पढ्योपम शास्त्रने विषे उपयोगी होय अने त्रण बादर पढ्योपमकळां, ते सूद्धमनुं स्वरूप समजाववा माटेज जाणवां. अहीयां घणुं तो सूद्धम अक्षापढ्योप मनुं प्रयोजन ठे, ते अक्षापढ्योपमे करी बीश कोणाकोडी सागरोपमनुं कालचक्र थाय, तेवा अनंते कालचक्रें एक पुजलपरावर्त थाय, एवा अनंत पुजलपरावर्तें अतीत अक्षा अतिक्रम्या ते जणी एने विषे पुजलपरावर्त एवी संज्ञा करीये ॥ इति ॥

हवे पृथ्वीने विषे सो प्रकारनां जे रत्नो कहेवाय ठे, तेना जेदो कहे ठे.

- १ तेमां प्रथम ज्वनना त्रण जेद ठे, ते कहे ठे. १ देवज्वन, २ मनुष्यज्वन, ३ नागज्वन.
- २ बीजा स्थानना त्रण जेद ठे, ते कहे ठे. १ मनुष्यस्थान, २ देवस्थान, ३ नारकीस्थान.
- ३ त्रीजा जूमिना त्रण जेद ठे, ते कहे ठे. १ उत्तम, २ नीच, ३ सम.
- ४ चोथा पुरुषना त्रण जेद ठे, ते कहे ठे. १ उत्तम, २ मध्यम, ३ अधम.
- ५ पांचमा पदार्थना त्रण जेद ठे, ते कहे ठे, १ धातु, २ मूल, ३ जीव.
- ६ षष्ठा पुरुषार्थना चार जेद ठे, ते कहे ठे. १ धर्म, २ अर्थ, ३ काम, ४ मोक्ष.
- ७ सातमा राजवंशीना षत्रीश जेद ठे, ते कहे ठे. १ सूर्य, २ सोमवंश, ३ यादव,
- ४ कदंब, ५ परमार, ६ इद्रवाकु, ७ चहुआण, ८ मोरी, ९ शिलार, १० सिंधव, ११ बिंदक,
- १२ चाउडा, १३ प्रतिहार, १४ लुंडक, १५ राठोर, १६ शक, १७ करठपाल, १८ क रंड,
- १९ चंचिद्ध, २० गोहिल, २१ मकुआणक, २२ पौलक, २३ राजपाल, २४ धान्य पाल,
- २५ अनंग, २६ निकुल, २७ दधिकर, २८ कोल, २९ तुर, ३० दधिपक, ३१ हूल,
- ३२ हरिय, ३३ सेढहार, ३४ डोडीया. ३५ जाडिया. ३६ कुलठरकुल.

७ आठमा राज्यनां सात अंग ठे, तेनां नाम कहे ठे. १ स्वामी, २ अमात्य, ३ जनपद, ४ जंकार, ५ दुर्ग एटले गढ, ६ बल, ७ मित्रांग.

८ नवमा राजगुणना षट्ठु जेद ठे, ते कहे ठे. १ वंश, २ विनय, ३ विजय, ४ विवेक, ५ विद्या, ६ विचार ७ सदाचार, ८ विस्तार, ९ परिच्छेद, १० अनुग्रह, ११ सदा

ग्रह, ११ यश, १२ सदोदित, १४ सर्वसह, १५ धर्मबल, १६ सत्य, १७ शौच, १८ सन्मान, १९ संस्थान, २० समाधान, २१ सौख्य, २२ सौजन्य, २३ सौजाग्य, २४ रूप, २५ स्वरूप, २६ सागत्य, २७ विजाग, २८ संयोग, २९ वियोग, ३० सत्व, ३१ संपूर्णत्व, ३२ सकलत्व, ३३ प्रसन्नत्व, ३४ सखजात्व, ३५ पालकत्व, ३६ पांक्त्य, ३७ प्रणय, ३८ प्रसरण, ३९ प्रमाण, ४० प्रताप, ४१ प्रमोद, ४२ प्रारंभ, ४३ प्रजा वहेद, ४४ संग्रह, ४५ विग्रह, ४६ पुष्टि, ४७ तुष्टि, ४८ प्रीति, ४९ प्राप्ति, ५० प्रशं सा, ५१ प्रतिष्ठा, ५२ प्रतिज्ञा, ५३ स्थैर्य, ५४ धैर्य, ५५ शौर्य, ५६ गांजीर्य, ५७ चा तुर्य, ५८ बुद्धि, ५९ बल, ६० अध्यक्ष, ६१ विबोध, ६२ वृद्धि, ६३ सिद्धि, ६४ कां ति, ६५ कीर्त्ति, ६६ स्फूर्त्ति, ६७ व्युत्पत्ति, ६८ वात्सल्य, ६९ मांगल्य, ७० महोत्सव, ७१ मंत्र, ७२ रसिकत्व, ७३ चातुकत्व, ७४ समृद्धित्व, ७५ गुरुत्व, ७६ शक्ति, ७७ शु क्ति, ७८ अयुक्ति, ७९ अशक्ति, ८० अनुक्रम, ८१ अजिमान, ८२ वदान्य, ८३ कारुण्य, ८४ दाक्षिण्य, ८५ वर्त्तन, ८६ स्पर्शन, ८७ रसन, ८८ घ्राण, ८९ श्रवण, ९० मर्यादा, ९१ मंजन, ९२ उदय, ९३ उदात्त, ९४ उत्साह, ९५ उत्तमत्व गुण.

१० दशमा राजपात्रना बत्रीश जेद ठे, ते कहे ठे. १ धर्मपात्र, २ काम, ३ विनोद, ४ विद्या, ५ विद्यास, ६ विन्यास, ७ ज्ञान, ८ क्रीमा, ९ हास्य, १० शृंगार, ११ वीर, १२ स्नेह, १३ जगन्मान्य, १४ मंत्री, १५ संधि, १६ महत्तम, १७ अमाल्य, १८ प्रधान, १९ अध्यक्ष, २० सेनापात्र, २१ नागर, २२ पुष्प, २३ मान्य, २४ पदस्थ, २५ देशी, २६ राज्ञी, २७ कुलपुत्रिका, २८ पुनर्जू, २९ वेश्या, ३० दासी, ३१ दास, ३२ आजिचारिक,

११ अगीयारमा राजविनोदना बत्रीश जेद ठे, ते कहे ठे. १ गीत, २ विनोद, ३ लि खित, ४ शिक्षा, ५ वक्तृत्व, ६ कवित्व, ७ शास्त्र, ८ शस्त्र, ९ युद्ध, १० नियुद्ध, ११ गणित, १२ गज, १३ तुरग, १४ पक्षी, १५ आखेटक, १६ द्यूत, १७ जलयंत्र, १८ मंत्र, १९ महोत्सव, २० फल, २१ पुष्प, २२ कला, २३ गुण, २४ प्रहेलिका, २५ चित्र, २६ क्षेत्र, २७ खेलन, २८ वित्तमूत्र, २९ नृत्य, ३० श्रवण, ३१ कर, ३२ बुद्धि, ३३ विद्या, ३४ रथ, ३५ कथा, ३६ कलत्र.

१२ बारमा आस्थानना अठार जेदो ठे, ते कहे ठे. १ मह्व, २ आपूहित, ३ लिंगध, ४ मंत्री, ५ महत्तम, ६ अमाल्य, ७ प्रधान, ८ बुद्धिमुख, ९ उन्नयमुख, १० आघ्रायक, ११ सांग्रामिक, १२ देश्य, १३ पुरुषधर्म, १४ पुरुषविज्ञान, १५ पुरुषराज, १६ पुरुषकर्म, १७ पात्र, १८ विनोदपात्र. इति अष्टादशः जेदाः समाप्ताः ॥

१३ तेरमा राजविद्याना चार जेद ठे, ते कहे ठे. १ आन्विकिकी, २ चर्चा, ३ वार्त्ता, ४ दंडनीति,

१४ चौदमा राजनीतिना चार जेद ठे, ते कहे ठे. १ साम, २ दामं, ३ जेद, ४ दंड,
 १५ पन्नरमा आयुधना बत्रीश जेद ठे, ते कहे ठे. १ चक्र, २ धनु, ३ धनुष्य, ४
 वज्र, ५ अंकुश, ६ बुरिका, ७ तोमर, ८ कुंत, ९ शूल, १० त्रिशूल, ११ शक्ति, १२ पा
 श, १३ मुजर, १४ गुलिका, १५ मुसटी, १६ लुंढी, १७ गदा, १८ शंकु, १९ पर्नु, २०
 पट्टीश, २१ रिष्ट, २२ करण, २३ यकपन, २४ हल, २५ मुशल, २६ मुहलिका, २७
 कर्त्तरी, २८ करपत्र, २९ तरवार, ३० कोदाली ३१ डुफोट, ३२ गोफण, ३३ डार्ड,
 ३४ रुब्रस, ३५ हडश्व, अने ३६ शस्त्र.

१६ शोलमा शास्त्रना सत्यावीश जेद ठे, ते कहे ठे. १ शब्दशास्त्र, २ अलंकारशास्त्र,
 ३ तर्कशास्त्र, ४ आगम, ५ गणित शास्त्र, ६ कल्प, ७ कला, ८ शिक्षा, ९ विनोद, १०
 विज्ञान, ११ मंत्र, १२ सामुद्रिक, १३ शकुन, १४ चिकित्सा, १५ सत्काव्य, १६ मोक्ष,
 १७ धर्म, १८ अर्थ, १९ वास्तुशास्त्र, २० प्रवरतर, २१ महानामकोश, २२ सुविद्या, २३
 ठंद, २४ स्वप्नशास्त्र, २५ नवरसयुक्तकाव्य, २६ नाद्य, २७ धीनादिशास्त्र.

१७ सत्तरमा तत्त्वना बावन जेद ठे, ते कहे ठे. १ पृथ्वी, २ अपू, ३ तेज, ४ वायु,
 ५ आकाश, ६ शब्द, ७ रूप, ८ रस, ९ स्पर्श, १० गंध, ११ घ्राण, १२ चक्षु, १३ श्रोत्र,
 १४ त्वक्, १५ पाणि, १६ पाद, १७ गुद, १८ उपस्थान, १९ बुद्धि, २० अलंकार,
 २१ प्रकृति, २२ पुरुषरक्त, २३ मांस, २४ मेद, २५ मज्जा, २६ शुक्र, २७ अस्थि, २८
 वातरस, २९ गंध; ३० स्पर्श, ३१ घ्राण, ३२ चक्षु, ३३ पित्त, ३४ कफ, ३५ मल,
 ३६ काम, ३७ क्रोध, ३८ लोभ, ३९ जय, ४० मोह, ४१ मात्सर्य, ४२ राग, ४३ नि
 यति, ४४ काल, ४५ विद्या, ४६ युद्धविद्या, ४७ माया, ४८ शक्ति, ४९ नाद, ५० बिंदु,
 ५१ कला, ५२ ईश्वर शिवतत्त्व.

१८ अठारमी कलाना बहोतेर जेद ठे, ते कहे ठे. १ वाद्य, २ नृत्य, ३ गणित, ४
 पठित, ५ लिखित, ६ लेख्य, ७ वक्तृत्व, ८ कथा, ९ वंचन, १० नाटक, ११ ठंद, १२
 अलंकार, १३ दर्शन, १४ अजिधान, १५ धातुकर्म, १६ अर्थमान, १७ वाद, १८ वृद्धि,
 १९ शोच, २० मंत्र, २१ विनोद, २२ विचार, २३ नेपथ्य, २४ विलास, २५ शस्त्रक
 र्म, २६ नीति, २७ शकुन, २८ गीत, २९ चित्र, ३० संयोग, ३१ हस्तलाघव, ३२ सूत्र,
 ३३ कुसुम, ३४ इंद्रजाल, ३५ स्नेह, ३६ पान, ३७ आहार, ३८ विहार, ३९ सौभाग्य,
 ४० प्रयोग, ४१ गंधवाद, ४२ वस्तु, ४३ रत्न, ४४ पात्र, ४५ वैद्य, ४६ देशज्ञापित, ४७
 विजय, ४८ वाणिज्य, ४९ आयुध, ५० युद्ध, ५१ नियुद्ध, ५२ वर्तन, ५३ हस्ती, ५४
 तुरंग, ५५ पक्षी, ५६ नारी, ५७ जूमिलेप, ५८ दंतकाष्ठ, ५९ इष्टिका, ६० पाषाण,

६१ हास्य, ६२ उत्तर, ६३ प्रत्युत्तर, ६४ शरीर, ६५ शास्त्र, ६६ ताल, ६७ ढोल, ६८ मृदंग, ६९ विणा, ७० वांसली, ७१ जेरी, ७२ पलितविनाश,

१९ ओगणीशमा विज्ञान हेतुना चोराशी जेद ठे, ते कहे ठे. १ तत्त्वज्ञान, २ चर्म विज्ञान, ३ कर्म विज्ञान, ४ लक्ष्मीयोग, ५ शंख, ६ दंत, ७ गुटिका, ८ रसायन, ९ वचन, १० कवित्व, ११ यंत्र, १२ मंत्र, १३ तंत्र, १४ मदन, १५ नेपथ्य, १६ ख्यंतक, १७ इष्टिका, १८ लेख्य, १९ सूत्र, २० चित्र, २१ कर्मरंग, २२ शुचिकर्म, २३ शकुन, २४ ब्रह्मकर, २५ नैर्मल्य, २६ गंधयुक्ति, २७ आराम, २८ शिल्प, २९ काव्य, ३० कांस्य, ३१ काष्ठ, ३२ कुंज, ३३ लोह, ३४ पत्र, ३५ वंश्य, ३६ नख, ३७ दशन, ३८ प्रासाद, ३९ धातु, ४० विचूषण, ४१ स्वरोदय, ४२ द्यूत, ४३ अध्यात्म, ४४ अग्नि, ४५ विद्वेषण, ४६ उच्चाटन, ४७ स्तंजन, ४८ मोहन, ४९ वशीकरण, ५० वस्तु, ५१ स्वयंभु, ५२ हस्ति शिक्षा, ५३ अश्वशिक्षा, ५४ पक्षी, ५५ स्त्री, ५६ काम, ५७ चक्र, ५८ वज्रीकरण, ५९ पशुपालन, ६० कृषी, ६१ वाणिज्य, ६२ लक्षण, ६३ कालमानविधि, ६४ आसनविधि, ६५ शास्त्रबंध, ६६ नियुक्तकरण, ६७ आखेटक, ६८ कुतुहल, ६९ केश, ७० पुष्प, ७१ इंद्रजाल, ७२ विनोद, ७३ सौभाग्य, ७४ प्रयोग, ७५ शौच, ७६ ज्ञान, ७७ ज्ञेय, ७८ प्रीति, ७९ आयु, ८० चाट्ट, ८१ व्यापार, ८२ धारणा, ८३ हेय, ८४ उपादेय.

१० वीशमा देशसंख्या ते चारेदिशामां यज्ञे चोराशीजेदे ठे, ते कहे ठे. तेमां पूर्व दिशामां १ गौरु, २ कान्यकुब्ज, ३ कलिंग, ४ गोल, ५ अंग, ६ कुरंग, ७ बंगाल, ८ अराच्य, ९ वरेंद्र, १० वामन, ११ गंगापार, १२ अंतर्वेदी, १३ मागध, १४ मध्य कुरु, १५ काहल, १६ कामरूप, १७ ऊद्र, १८ पुंड्र, १९ वोडास, २० अग्नि, २१ मालव, २२ पांचाल, २३ जालंधर, २४ शूरसेन, २५ लोहितपात. पश्चिमदिशामां. २६ काठेल, २७ वालंज, २८ सौराष्ट्र, २९ कुंकुम, ३० लाम्प्री, ३१ अर्बुद, ३२ मेवाक, ३३ अवंति, ३४ नागणित, ३५ किरात, ३६ शकट, ३७ सौवीर, ३८ कोंकण, उत्तर दिशामां. ३९ गुर्जर, ४० सिंधु, ४१ केकाण, ४२ नेपाल, ४३ लाट, ४४ जोट, ४५ तुरक, ४६ तायक, ४७ बर्बर, ४८ वर्जुर, ४९ कीर, ५० काश्मीर, ५१ हिमालय, ५२ लोहपुर. ५३ श्रीकाष्ठ. दक्षिणदिशामां. ५४ मलय, ५५ सिंहल, ५६ कोशल, ५७ पामल, ५८ आंग्र, ५९ वंधव, ६० कर्कट, ६१ डविरु, ६२ श्रीपर्वत, ६३ वैदर्ज, ६४ धाराजराला, ६५ तापीतट, ६६ माहाराष्ट्र, ६७ आजीरदेश, ६८ नर्मदातट, ६९ छीपदेश.

११ एकवीशमा स्थानना बत्रीश जेदो ठे, ते कहे ठे. १ स्वर्ग, २ मृत्यु, ३ पाताल, ४ तनु, ५ विद्या, ६ वास्तु, ७ विनोद, ८ वाद, ९ गीत, १० वाद्य, ११ नृत्य, १२

रूप, १३ धर्म, १४ अर्थ, १५ काम, १६ मोक्ष, १७ देश, १८ काल, १९ यात्रा, २० समय, २१ पुरुष, २२ स्त्री, २३ गज, २४ तुरंगम, २५ पक्षी, २६ रत्न, २७ पान, २८ आहार, २९ शय्या ३० व्यापार, ३१ वस्तु, ३२ विज्ञान लक्षण.

३२ बावीशमा गृहना चोवीश जेदो ठे, ते कहे ठे. १ प्रासाद, २ हर्म्य, ३ आयतन, ४ गृह, ५ कोश, ६ कोष्ठागार, ७ पानीयगृह, ८ शौचगृह, ९ शाला, १० माळ्य, ११ मठ, १२ सत्रागार, १३ शृंगारस्थान, १४ धर्मस्थान, १५ विनोदस्थान, १६ मंदिर, १७ हस्तिशाला, १८ वीशमंडप, १९ माहानस, २० जोजनशाला, २१ गुप्तस्थान, २२ आदिस्थान, २३ अर्धस्थान, २४ राजांगण.

३३ त्रेवीशमा मंगल वस्तुना एक शो आठ जेदो ठे, ते कहे ठे. १ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ माहेश्वर, ४ वीतराग, ५ स्कंद, ६ आदित्य, ७ लोकपाल, ८ अग्नि, ९ अमर, १० सागर, ११ पर्वत, १२ गगन, १३ ग्रहण, १४ गांधर्व, १५ चंद्र, १६ विनायक, १७ ज्योतिक, १८ तीर्थ, १९ द्विज, २० धर्मशास्त्र, २१ वेदशास्त्र, २२ वेद, २३ पद्म, २४ पर्यक, २५ कौस्तुभ, २६ कांचन, २७ रौप्य, २८ ताम्र, २९ घृत, ३० मधु, ३१ सिद्धांत, ३२ चंदन, ३३ श्वेत, ३४ वस्त्र, ३५ वैश्या, ३६ गोरोचन, ३७ मृत्तिका, ३८ गोमय, ३९ शस्त्र, ४० अंजन, ४१ रत्न, ४२ मनसिल, ४३ मोदक, ४४ शंख, ४५ प्रियंगु, ४६ वचा, ४७ श्वेतपुष्प, ४८ सर्षप, ४९ दधि, ५० दूर्वा, ५१ अक्षत, ५२ उदंबर, ५३ आम्र, ५४ ठत्र, ५५ वाजिन्न, ५६ दर्त, ५७ हस्ती, ५८ बीज, ५९ मुक्ताफल, ६० खंजरीट, ६१ वृषज, ६२ राजहंस, ६३ कन्या, ६४ दर्पण, ६५ दीप, ६६ अंकुश, ६७ तुरंगम, ६८ हीत, ६९ वेणु, ७० वीणाध्वनि, ७१ जूमि, ७२ सिंह, ७३ मय, ७४ स्वस्तिक, ७५ तोरण, ७६ कुंज, ७७ चामर, ७८ वत्स, ७९ गो, ८० आर्द्र, ८१ मांस, ८२ स्त्री, ८३ पुरुषयुग्म, ८४ वाहन, ८५ प्रधान, ८६ विद्या, ८७ विनय, ८८ तुष्टि, ८९ पुष्टि, ९० प्रसाद, ९१ उल्लोच, ९२ मदिरा, ९३ सत्य, ९४ पूर्णपात्र, ९५ आर्द्रशाक, ९६ पिष्फलपत्र, ९७ श्रीवृक्ष, ९८ तालवृक्ष, ९९ पूजा, १०० निधि, १०१ गौरी, १०२ गंगा, १०३ सरस्वती, १०४ नर्मदा, १०५ यमुना, १०६ सिद्धि, १०७ प्रीति, १०८ कीर्ति. ए सर्व मांगलिक वस्तु जाणवी.

३४ चोवीशमा दानना त्रण जेद ठे. ते कहे ठे. १ अन्नय, २ द्रव्य, ३ परोपकार.

३५ पच्चीशमा यशना पांच जेद ठे, ते कहे ठे. १ जन्मकृत प्रताप यश, २ कीर्ति, ३ पराक्रमयश, ४ रूपयश, ५ सदाचारमां प्रवर्तन करवुं ते यश.

३६ ढवीशमा कीर्तिना सात प्रकार ठे, ते कहे ठे. १ दानकीर्ति, २ पुण्यकीर्ति,

३ विद्वज्जनकीर्त्ति, ४ नवकृतकाव्यकीर्त्ति, ५ आवर्त्तनकीर्त्ति, ६ शौर्यकीर्त्ति, ७ यशःकीर्त्ति.

११ सत्यावीशमा रसना नवजेद ठे, ते कहे ठे. १ शृंगाररस, २ हास्यरस, ३ करुणा रस, ४ रौद्ररस. ५ वीररस, ६ जयानकरस, ७ बीजत्सरस, ८ अद्भुतरस, ९ शांतरस.

१० अष्टयावीशमा जावना उगणपच्चास जेदो ठे, ते कहे ठे. १ रति, २ हास्य, ३ शोक, ४ क्रोध, ५ उत्साह, ६ जय, ७ जुगुप्सा, ८ विस्मय, ९ स्तंभन, १० खेद, ११ खर, १२ जेद, १३ रोमांच, १४ वेपथु, १५ वैवर्ण्य, १६ अश्रु, १७ प्रलाप, १८ निर्वेद, १९ ग्लानि- २० शंका, २१ आश्रम, २२ आलस्य, २३ देशचिंता २४ मोह, २५ धृति, २६ स्मृति, २७ क्रीडा, २८ चपलता, २९ जम्त. ३० हर्ष, ३१ अवश, ३२ विषाद, ३३ असुख, ३४ वर्ग, ३५ अपस्मार, ३६ निद्रा, ३७ स्वप्न, ३८ विबोध, ३९ अमर्ष, ४० उग्रता, ४१ उन्माद, ४२ मति ४३ व्याधि, ४४ विरक्त, ४५ वितर्क, ४६ त्रास, ४७ सूमरण, ४८ माया, ४९ लोभ.

१० उगणत्रीशमा अजिनयना चार जेद कहे ठे. १ आंगिक, २ वाचक, ३ सात्त्विक, ४ अहार्य.

३० त्रीशमा वृत्तिना चार जेद कहे ठे. १ चारती, २ सात्वती, ३ कौशिकी, ४ अरजटी.

३१ एकत्रीशमा माहान्पुरुषना चार जेदो ठे, ते कहे ठे. १ धीरोद्भूत, २ धीरोदात्त, ३ धीरललित, ४ धीरशांत.

३२ बत्रीशमा नायकना चार जेदो ठे. ते कहे ठे. १ दक्षिण, २ अनुकूल, ३ शठ, ४ धष्ट.

३३ तेत्रीशमा नायकना गुण वत्रीश प्रकारना ठे, ते कहे ठे. १ कुलीन, २ शीलवान्, ३ नयस्थ, ४ शौचवान्, ५ प्रियंवद, ६ प्रीतिमान्, ७ सुजग, ८ विनयवान्, ९ कीर्त्तिमान्, १० त्यागी, ११ विवेकी, १२ शृंगारवान्, १३ अजिमानी, १४ श्लाघ्यवान्, १५ स मुज्ज्वलवेष, १६ सकलकला कुशल, १७ प्रिय, १८ सत्यवान्, १९ अवदान्य, २० स्वजन, २१ सुगंधप्रिय, २२ सुवृत्त, २३ मंत्रवान्, २४ क्लेशसह, २५ प्रस्तावप्रकाशक. २६ पंक्ति, २७ उत्तम सत्त्व, २८ धार्मिक, २९ महोत्साही, ३० गुणग्राही, ३१ हामी, ३२ प्राज्ञाविक.

३४ चोत्रीशमा माहानायिकाना त्रण जेद कहे ठे. १ स्वकीया, २ परकीया, ३ पणांगना. वाग्जहालंकारमां नायिकाना चार जेद कहे ठे. १ अनूढा, २ स्वकीया, ३ परकीया, ४ पणांगना.

३५ पांत्रीशमा नायिकाना आठ जेद कहे ठे. १ वासकसज्जा, २ विरहोत्कंमिता, ३ खंमिता, ४ विप्रलब्धा, ५ प्रोषितचर्तुका, ६ कलहांतरिता, ७ अजिसारिका, ८ स्वार्थीनचर्तुका.

३६ षत्रीशमा वलीपण नायिकाना गुणो एकत्रीश प्रकारना ठे, ते कहे ठे. १ कुलजा, २ सुजगा, ३ सुरूपा, ४ सुसत्त्वा, ५ सुवेषा, ६ सुविनीता, ७ सुरतप्रवीणा, ८ सुखप्रिया, ९ विज्ञोगिनी, १० विचक्षणा, ११ प्रियजाबिणी, १२ प्रसन्नमुखी, १३ पीनस्तनी, १४ रसिका,

१५ लज्जान्विता, १६ लक्षणयुता, १७ पठितज्ञा, १८ गीतज्ञा, १९ विद्याज्ञा, २० नृत्यज्ञा, २१ सुकुमारशरीरा, २२ सुगंधप्रिया २३ चारुनेत्रा, २४ नातिमानिनी, २५ मधुरवाच्या, २६ स्नेहवती, २७ विमर्षवती, २८ सत्यवती, २९ शीलवती, ३० प्रज्ञावती, ३१ गुणान्विता.

३२ सारुत्रीशमा सौख्यकरणना चार जेद ठे, ते कहे ठे. १ अज्यासकरण, २ अजिमान, ३ संप्रियकरण, ४ विषयकरण.

३७ आडत्रीशमा सौख्यना त्रण प्रकार ठे, ते कहे ठे. १ आंगिक, २ वाचक, ३ मानसिक.

३९ उगणचावलीशमा शौचना दश जेदो ठे, ते कहे ठे. १ मुखशौच, २ स्नान, ३ मृत्तिका, ४ स्कंध, ५ कक्षा, ६ श्मश्रु, ७ जल, ८ नख, ९ अनल, १० सत्यशौच.

४० चावलीशमा कामना बे जेद ठे, ते कहे ठे. १ स्वाभाविक, २ कृत्रिम.

४१ एकतालीशमा कामावस्थाना दश जेदो ठे, ते कहे ठे. १ अजिलापता, २ स्मृति, ३ गुणोत्कीर्तन, ४ उद्वेग, ५ प्रलाप, ६ उन्माद, ७ व्याधि, ८ जडता, ९ मरण, १० चिंता.

वली कामना बाण, कोइ ठेकाणे पांच जेदे कहेला ठे, ते कहे ठे. १ संगम, २ विगम, ३ हर्ष, ४ मोह, ५ मरणाधिक.

वली पण कामना पांच बाण कहेला ठे, ते कहे ठे. १ संमोहन, २ उत्पादन, ३ तापन, ४ शोषण, ५ मरण.

४२ बहेंतालीशमा मूर्खना आठ प्रकार ठे, ते कहे ठे. १ निर्लज्ज, २ शठ, ३ क्लीब, ४ निर्धृण, ५ व्यसनी, ६ अतिजोगी, ७ गर्वित, ८ निष्ठुर.

४३ त्रेंतालीशमा नागरिक जननां चोवीश करण ठे, ते कहे ठे. १ विषयसुखनो उर को जुदो राखे. २ कायचिंतानुं स्थानक राखे, ३ पाणीनुं स्थानक, ४ रसोश्नुं स्थानक, ५ नेपथ्यनुं गृह राखे, ६ नेपथ्यनां उपकरण घणां राखे, ७ घरनां उपकरण घणां राखे, ८ शस्त्र घणां राखे, ९ आसन घणा प्रकारनां राखे. १० रम्यपणुं, ११ माढ्यादि जोगतुं राखवुं, १२ बेसवा उठवानुं गुप्तस्थान राखे, १३ प्रजातमां विराम लेवा माटे स्थान राखे, १४ मध्यान्हने विषे जोजन करवा स्थान राखे, १५ छानुं जंकारनुं स्थानक राखे, १६ निरंतर विद्यानो अज्यास करे, १७ कुलोचित मार्गवर्तन करे, १८ प्रदोषने विषे गीतविनोद करे, १९ सुरतोपचार करे, २० क्यारेक उद्यानमां गमन करे, २१ कदाचित् क्षेत्रनिरीक्षण करे, २२ निरंतर गृहकार्यमां रहे, २३ जौंगमां व्याप्त रहे २४ विजक्तस्थान.

४४ चुम्मावलीशमा रूपना त्रण जेद ठे, ते कहे ठे. १ संपूर्ण लक्षणावयव, २ अ संपूर्ण लक्षणावयव, ३ निर्लक्षणावयव.

४५ पीस्तालीशमा स्वजावना त्रण जेद १ मुग्धस्वजाव, २ मुग्धचतुरस्वजाव, ३ चतुरस्वजाव.

४६ ठहेंतालीशमा पार्थिवना दश प्रकारे प्रमोद ठे, ते एक श्लोके करी कहे ठे. ज्ञाने दाने बले राज्ये, विनोदे वैरिसंग्रहे ॥ शौर्ये धर्मे च सौख्ये च, प्रमोदा दशधा स्मृता ॥१॥

४७ सुमतालीशमो चार प्रकारनो बोध कहे ठे:- १ बालसंस्कारप्रबोध, २ प्रज्ञाप्रबोध, ३ शास्त्रप्रबोध, ४ तत्त्वनिश्चयप्रबोध.

४८ अडतालीशमी चार प्रकारनी बुद्धि कहे ठे:- १ उत्पातिकी, २ विनयकी, ३ कार्मिकी, ४ पारिणामिकी.

४९ लंगणपच्चाशमी बुद्धिना आठ प्रकारे गुण ठे, ते कहे ठे. १ शुश्रुषा, २ श्रवण, ३ ग्रहण, ४ धारणा, ५ ऊह, ६ आपोह, ७ अर्थ, ८ विज्ञान.

५० पच्चाशमा गांधर्वना चार प्रकार कहे ठे:- १ स्वरगत, २ तालगत, ३ पदगत, ४ अवधानगत.

५१ एकावन्नमा त्रण प्रकारना महागीत कहे ठे:- १ महागीति, २ उपगीत, ३ अनुगीति.

५२ बावन्नमा गीतना ठत्रीश गुण ठे, ते कहे ठे:- १ सुखर, २ सुताल, ३ सुपद, ४ शुरु, ५ ललित, ६ सुसंबंध, ७ सुप्रमेय, ८ सुराग, ९ सुरस, १० सुसंगित, ११ सुहर्ष, १२ सुग्रह, १३ श्लिष्य १४ क्रमव्य, १५ सुवर्ण, १६ सुगम, १७ सुरक्त, १८ संपूर्ण, १९ सालंकार, २० सुजाषाद्य, २१ सुसंधिष्ठ, २२ सव्युत्पन्न, २३ मधुर, २४ स्फुट, २५ अग्रास्य, २६ प्रसन्न, २७ कुंचितकंपित, २८ समयोचित, २९ विद्या, ३० संगत, ३१ प्रथम स्थित, ३२ स्वस्थ, ३३ एक, ३४ अद्भुत, ३५ विलंबितमध्य, ३६ उक्त प्रमाण.

५३ हवे त्रेपन्नमा नृत्यना वे प्रकार ठे, ते कहे ठे. १ लास्य, २ तांभव,

५४ चोपन्नमा काव्यना शोल प्रकार कहे ठे. १ समय, २ प्रतिज्ञा, ३ अच्यासविद्या, ४ जाति, ५ गीति, ६ रीति, ७ वृत्ति, ८ वाच्य, ९ वाचक, १० ठंद, ११ अलंकार, १२ गुण, १३ दोष, १४ रस, १५ जाव, १६ अजिनय.

५५ पच्चावन्नमा वत्कृत्वना दश प्रकार कहे ठे. १ परिजावित, २ सत्य, ३ मधुर, ४ सार्थक, ५ परिस्फुट, ६ परिमित, ७ मनोहर, ८ चित्र, ९ प्रसन्न, १० जावानुगत.

५६ ठपन्नमा जाषाना ठ प्रकारे ठे, ते कहे ठे. १ संस्कृत, २ प्राकृत, ३ अपत्रंशी, ४ पैशाची, ५ मागधी, ६ शौरसेनी.

५७ सत्तावन्नमा पांडित्यना पांच जेदो ठे, ते कहे ठे. १ वक्तृत्व, २ वादित्व, ३ कवित्व, ४ आयामत्व, ५ गमत्व.

५८ अष्टावन्नमा वादना चोविश जेद कहे ठे. १ उत्पत्ति, २ समा, ३ अयति, ४ सजा, ५ वाद, ६ पद्द, ७ प्रतिपद्द, ८ प्रमाण, ९ प्रजेद, १० प्रसन्न, ११ प्रत्युत्तर, १२

दूषण, १३ नूषण, १४ उपन्यास, १५ अनुमोद, १६ आदेश, १७ निर्णय, १८ ग्रंथनिश्चय, १९ निश्चय, २० स्थान, २१ अर्थांतर, २२ समता, २३ जय, २४ पराजय.

५ए ङगणशाठमा दर्शनना ठ जेदो ठे, ते कहे ठे. १ माहेश्वरदर्शन, २ ब्राह्मदर्शन, ३ सांख्यदर्शन, ४ बौधदर्शन, ५ जैनदर्शन, ६ चार्वाकदर्शन.

६० साठमा माहेश्वर दर्शनना पांच जेद ठे, ते कहे ठे. १ विशेष, २ शिवधर्म, ३ पाशुपत्त, ४ कालमुख, ५ महाव्रतिक पर्यंत,

हवे तेनाज बीजी रीते पांच जेदे कहे ठे. अयोविशेषशिवधर्म, १ शैव, २ पाशुपत्त, ३ फलमुख, ४ महाव्रत, ५ ब्रह्मचर्य.

६१ एकसठमा ब्राह्मणना लक्षण दश प्रकारे कहे ठे. १ प्रमाण, २ संस्कार, ३ कर्म, ४ वर्त्तन, ५ ब्रह्मचारी, ६ गृहस्थ, ७ वान, ८ प्रस्थ, ९ यति, १० ब्रह्मपर्यंत.

६२ वासठमा सांख्य शास्त्रना चार जेद कहे ठे. १ तत्त्व, २ प्रमाण, ३ प्रकार, ४ सर्वात्मा.

६३ त्रेसठमा बौधमतना दश जेद ठे, ते कहे ठे. १ सौगत, २ सर्वद, ३ परिगत, ४ विहार, ५ प्रमाण, ६ प्रजेद, ७ प्रमोद, ८ शौर्य, ९ त्रिकयोगाचार, १० आध्यात्मिकमोक्षपर्यंत.

६४ चोसठमा जैनमतना सात प्रकार ठे, ते कहे ठे. १ सर्वज्ञ, २ धर्म, ३ तत्त्वार्थ, ४ प्रमाण, ५ प्रतिज्ञा, ६ जेद, ७ सिद्धपर्यंत.

६५ पांसठमा चार्वाकना चार जेद ठे, ते कहे ठे. १ तत्त्वार्थ, २ प्रमाण, ३ प्रजेद, ४ प्रमोद.

६६ ढासठमा विचारना चोवीश जेद ठे, ते कहे ठे. १ विद्या, २ विज्ञान, ३ विनोद, ४ कला, ५ कवित्व, ६ वक्तृत्व, ७ गीत, ८ नृत्य, ९ वाद्य, १० देश, ११ काल, १२ पात्र, १३ प्रमेय, १४ पर्याय, १५ जय, १६ रस, १७ वाद, १८ अजिनय, १९ धर्म, २० अर्थ, २१ काम, २२ मोक्ष, २३ प्रमाण, २४ लोकवादपर्यंत.

६७ सरुसठमा गुरुत्वना दश जेद ठे, ते कहे ठे. १ वंश, २ ज्ञान, ३ पद, ४ शौर्य, ५ सत्त्व, ६ दान, ७ बल, ८ जय, ९ संतान, १० स्वगुण.

६८ अरुसठमा चरितना चार जेद कहे ठे. १ मानवचरित, २ दानवचरित, ३ वीरविलासचरित, ४ गुणप्रख्यापन चरित.

६९ ङगण्योत्तरमा राज्यपालनना पांच जेदो ठे, ते कहे ठे. १ धर्मपालन, २ राज्यपालन, ३ नूमिपालन, ४ प्रजापालन, ५ नीतिपालन.

७० सित्तरमा उत्तमपणाना सात जेदो ठे, ते कहे ठे. १ वय, २ कुल, ३ शील, ४ रूप, ५ पद, ६ ज्ञान, ७ प्रयोग.

७१ एकोत्तरमा शक्तिना नव जेद ठे, ते कहे ठे. १ ज्ञानशक्ति, २ धर्मशक्ति, ३ दान

शक्ति, ४मंत्रशक्ति, ५ कामशक्ति, ६ अर्थशक्ति, ७ युद्धशक्ति, ८ व्यायामशक्ति, ९ देशशक्ति.
७२ बहोतेरमा अहंकारना आठ प्रकार ठे, ते कहे ठे. १ ज्ञान अहंकार, २ दान अहंकार, ३ बल अहंकार, ४ धर्म अहंकार, ५ काम अहंकार, ६ द्रव्य अहंकार, ७ शत्रु मारण अहंकार, ८ समारंज अहंकार.

७३ त्रहोतेरमा वात्सल्यना चार जेद ठे, ते कहे ठे. १ देववात्सल्य, २ सज्जुवात्सल्य, ३ मित्रवात्सल्य, ४ वल्लज पुरुष वा पदाथनुं स्नेहनेदीधे वात्सल्य.

७४ चम्भोतेरमा प्राप्तिना आठ जेदो ठे, ते कहे ठे. १ ज्ञानप्राप्ति, २ धर्मप्राप्ति, ३ बलप्राप्ति, ४ कामप्राप्ति, ५ विज्ञानप्राप्ति, ६ पात्रसंग्रहप्राप्ति, ७ सर्वार्थ, ८ राज्यप्राप्ति.

७५ पंचोतेरमा शौर्यना चोवीश जेद ठे, ते कहे ठे. १ स्नानशौर्य, २ मनःशौर्य, ३ शब्दशौर्य, ४ प्रताप, ५ उदय, ६ प्रतिज्ञा, ७ तेज, ८ ज्ञान, ९ संग्राम, १० जय, ११ साहस, १२ प्रतिपन्न, १३ शरणागत, १४ प्रमोद, १५ प्रबोध, १६ आज्ञा, १७ उद्यम, १८ अर्थ, १९ आचार, २० बल, २१ कीर्ति, २२ लक्षण, २३ व्रत, २४ आपदाशौर्य.

७६ ठोतेरमा बलना दश प्रकार कहे ठे. १ वाग्बल, २ कायबल, ३ बुद्धिबल, ४ स्थान बल, ५ सुहृद्बल, ६ शकुनबल, ७ देवताबल, ८ धनबल, ९ मंत्रबल, १० सैन्यबल.

७७ सत्योतेरमा आज्ञाना दश जेद ठे, ते कहे ठे. १ ज्ञान, २ आगम, ३ प्रताप, ४ ऐश्वर्य, ५ वाक, ६ परिश्रम, ७ निद्रा, ८ रति.

७८ अठोतेरमा संग्रहना नव जेद ठे, ते कहे ठे. १ ज्ञानसंग्रह, २ पात्रसंग्रह, ३ मित्रसंग्रह, ४ पत्नियोगसंग्रह, ५ बलसंग्रह, ६ जयसंग्रह, ७ धर्मसंग्रह, ८ श्रुतसंग्रह, ९ गुणसंग्रह.

७९ उंगण्यांशीमा परिह्वेदना पांचजेद ठे, ते कहे ठे. १ अलक्षित, २ लक्षित, ३ मानसिक, ४ वाचक, ५ कार्मण.

८० एंशीमा प्रचुत्वना पांच जेद ठे, ते कहे ठे. १ ज्ञानप्रचुत्व, २ अक्षयप्रचुत्व, ३ शौर्यप्रचुत्व, ४ स्थापनाप्रचुत्व, ५ प्रदानप्रचुत्व.

८१ एक्याशीमा लब्धिना आठ जेद ठे ते कहे ठे. १ अणिमा, २ मणिमा, ३ गरिमा, ४ लघिमा, ५ ईशित्व, ६ वशित्व, ७ प्राप्ति, ८ प्राकाम्य.

८२ व्यासीमा दिव्यना दश जेद ठे, ते कहे ठे. १ जल, २ अग्नि, ३ घट, ४ कोश, ५ विष, ६ माष, ७ तांडुल, ८ फल, ९ तुल, १० सुतस्पर्श.

८३ त्र्याशीमा अपराधना दश जेद ठे, ते कहे ठे. १ अक्षरंग, २ नृपवध, ३ स्त्रीवध, ४ वर्ण संकर, ५ परस्त्रीगमन, ६ चौर्य, ७ पतिविनानो गर्ज, ८ दंडपारुष्य, ९ वाक्य, १० गर्जपातन,

७४ चोराशीमा उत्तमकारिगरना ठ जेद ठे, ते कहे ठे. १ आरामिक, २ मणिकार, ३ स्वर्णकार, ४ कांस्यघाटक, ५ दारुकृत, ६ कुंजकार.

७५ पंचाशीमा मध्यम कारिगर पुरुषोना ठ जेद ठे, ते कहे ठे. १ लूहरा, २ सलाट, ३ कमिया, ४ यंत्रवाहकशोमिक, ५ तंतुवायी, ६ हजाम.

७६ ढाशीमा अधम कारिगर पुरुषोना ठ जेद ठे, ते कहे ठे. १ धोबी, २ चमार, ३ नट, ४ चरट, ५ खारवा, ६ कैवर्त्तक ते ज़िद्ध.

७७ सत्याशीमा उत्तम प्रकृतिवाला कारिगरना ठ जेदो ठे ते कहे ठे. १ हजाम, २ सोनी, ३ खत्री, ४ कांस्यघरुनार, ५ सुतार, ६ कुंजार.

७८ अष्टयाशीमा मध्यम प्रकृतिवाला कारिगरना ठ जेद ठे, ते कहे ठे. १ आरामिक एटले माली, २ मणियार, ३ दरजी, ४ कृक, ५ चितारो, ६ पालखी उपाकरुनार जोई.

७९ नेवाशीमा अधमप्रकृतिवाला कारिगरना ठ जेद ठे, ते कहे ठे. १ चमार २ मधपाकरुनार, ३ नट, ४ ज़िद्ध, ५ लुहार, ६ पाराधि.

८० नेवुंमा नारुना नव जेद ठे, ते कहे ठे. १ घांची, २ मोची, ३ घांठा, ४ धोबी, ५ लुहार, ६ दरजी, ७ माठी, ८ ज़िद्ध, ९ गोवाल. ए नव नारुकना नाम जाणवा.

८१ एकाणुमा कारुना नव जेद ठे, ते कहे ठे. १ कांदविक, २ कौटुंबिक, ३ कुंजार ४ सोनी, ५ माली, ६ तंबोली, ७ हजाम, ८ काठिक, ९ गांधर्व घायक.

८२ बाणुमा शब्दना पांच जेदो ठे, ते कहे ठे. १ वीणानो शब्द, २ सतारनो शब्द, ३ वंशशब्द, ४ मादलनोशब्द, ५ करतालनो शब्द.

८३ त्र्याणुमा धान्यना त्रण जेद ठे. ते कहे. १ शीर्शक, २ शंवा, ३ घंटक.

८४ चोराणुमा शाकना चार जेद ठे, ते कहे ठे. १ कंद शाखा, २ पत्र, ३ पुष्प, ४ फल.

८५ पंचाणुमा मांसना त्रण जेद ठे, ते कहे ठे. १ जलचरमांस २ थलचरमांस, ३ खेचरमांस.

८६ ठडुमा रसना ठ जेद, ठे ते कहे ठे. १ आम्ल, २ मधुर, ३ तीक्ष्ण, ४ कषाय, ५ कटु.

गाथा प्रास्ताविक ठे. आहारनिमित्तेणं, वेसाए घर मागउं ॥ धम्मालाजंतु जा जाण ई, दवलाजं विमग्गियउं ॥ १ ॥ माणगणं मुणिया, पडिया तिणउं तहिं ॥ हिरणाणं तु कोलीउं, वेसाए अउं तथा ॥ इति माहानिशीथे ॥ साकादिवेसणासत्ती, नंदीसेणे मु णीसरे ॥ जीविण सागिहे आसी, दसणं पडिबोहिउं, इति शतरत्नसंग्रहः समाप्तः ॥

हवे वासुदेव, तीर्थकर अने चक्रवर्ती तथा बलदेव ए चार पदवीवाला जीवो देवता तथा नारकीश्री आठव्या उपजे पण मनुष्यमांशी आवे नही.

१ चक्रवर्ती तथा बलदेव, ए बेहु चारे निकायना देवोमांशी आवी उपजे.

- १ तीर्थकर तथा वासुदेव, ए बेहु वैमानिक देवोमांथी आवी उपजे.
 २ चक्रवर्तीना जे पांच मनुष्य रत्न ठे, ते सातमी नरक, तेजकाय, वायुकाय, तिर्यच अने मनुष्य तथा अनुत्तर विमान, एटला स्थानकथी आव्या न होय, शेषस्थानकथी आव्या होय.
 ४ तथा हाथी अने अश्व, ए बे तिर्यचपंचेंद्रिय रत्न ठे, अने सात एकेंद्रिय रत्न ठे एमनी उत्पत्ति यथासंजवपणे जाणवी.

| | | |
|---------------------------------|-----------------------------|------------------------------|
| कया जीव नरकें जाय ? | कयो जीव कयी नरकें जाय? | बाहुल्य आश्रयी विशेष कहे ठे. |
| संज्ञिपंचेंद्रिय पर्याता संख्या | १ असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यच | १ व्याल सर्प प्रमुख. |
| ता वर्षायुवाला एवा मनुष्य | पहेली नरक सुधी जाय. | २ दाढाल सिंह वाघ प्रमुख. |
| अने तिर्यच मरी नरकें जाय | २ गर्जजजुजपरिसर्प, गोह, नो | ३ गृध्र पक्षी प्रमुख. |
| तेना आचरण कहे ठे. | लीयादि वीजीसुधी जाय. | ४ जलचर मत्स्य प्रमुख. |
| १ मिथ्यात्वी जीव. | ३ गर्जजपंखीत्रीजीनरकें जाय | एटला जातिना जीव प्राय |
| २ महा आरंज करनार. | ४ सिंह प्रमुख चौपद जीव | घणुं करी नरकथी आवे अने |
| ३ घणा परिग्रहमां आसक्त. | चोथी नरक सुधी जाय. | पाठा पण मरीने नरकें जा |
| ४ घणो लोचनी होय | ५ गर्जजउरःपरिसर्प पांचमी | य, परंतु तेनो नियम नही. |
| ५ शुचक्रिया रहित होय. | नरक सुधी जाय. | केम के कोइ कोइ जीव नरक |
| ६ पापरुचि जीव होय. | ६ स्त्रीरत्न ठठी नरकें जाय. | थी आव्या पठी जातिस्मर |
| ७ रौद्रपरिणामी होय. | ७ गर्जजमनुष्य, गर्जजमत्स्य | णोदिसामंथीयें समकित पा |
| ८ कृतघ्नदुष्टपरिणाम वालो. | उत्कृष्ट सातमी नरकें जाय. | मीने शुचगतिमां पण जायठे. |

संख्याता आयु वाला मनुष्य मरीने चारे गतिमां जाय, परंतु वज्ररूपजनाराच संघय एवाला कोइ कोइ मनुष्य पांचमी सिद्धगतिमां पण जाय ठे, ते कहे ठे.

| | | |
|---------------------------------------|--------------------------------------|-----|
| १ मनुष्यजाति सामान्यथी जघन्य एक बे | २ तापसादिलिंगे एक समये. | १० |
| अने उत्कृष्टां १०० एक समयमां सीजे. | अ३ साधुलिंगे एकसमये. | १०० |
| ने विशेषथी वेद आश्रयी आ प्रमाणे सीजे. | हवे जघन्य मध्यम अने उत्कृष्ट अवगाहं | |
| २ स्त्रीलिंगे बीश सीजे. | ना आश्रयी मोक्ष जवातुं कहे ठे. | |
| ३ नपुंसलिंगे दस सीजे. | १ लघु बे हाथनी अवगाहनाये. | ४ |
| ४ पुरुषलिंगे १०० सीजे. | २ मध्यम अवगाहनाये. | १०० |
| हवे ग्रहस्थादिक लिंग आश्रयी एक सम | ३ उत्कृष्ट पांचशे धनुष्यनी अवगाहनाये | १ |
| यमां केटला सीजे ते ? कहे ठे. | १ ऊर्ध्वलोक मेरुचूलिका नंदनवन प्रमु | ४ |
| १ गृहस्थलिंगे एक समये. | ४ अधोलोक ते अधोग्रामादिकथी. | १२ |

| | | | |
|-----------------------------------|-----|------------------------------------|-----|
| ३ तिर्यक् लोकथी एक समये. | १०७ | १० अप्रकायथी आव्या. | ४ |
| १ समुद्रजलमांथी एक समये. | ११ | ११ वनस्पतिथी आव्या. | ६ |
| २ शेष ड्रह नदी प्रमुखमांथी: | ३ | १२ तिर्यचपंचेंद्रिय पुरुषथी आव्या. | १० |
| हवे कइ गतिमांथी आवेला मनुष्य एक स | ३ | १३ तिर्यच स्त्रीथी आव्या. | १० |
| मये केटला मोहें जाय ? ते कहे ठे. | १४ | १४ मनुष्य पुरुषथी आव्या. | १० |
| १ नरकगतिथी आव्या. | १० | १५ मनुष्य स्त्रीथी आव्या. | १० |
| २ तिर्यच गतिथी आव्या. | १० | १६ जुवनपतिनी प्रत्येक निकायथी. | १५ |
| ३ मनुष्यगतिथी आव्या. | २० | १७ जुवनपतिनी देवीथी आव्या. | ० |
| ४ देवगतिथी आव्या. | १०७ | १८ व्यंतर देवोथी आव्या. | १० |
| ५ रत्नप्रज्ञाथी आव्या. | १० | १९ व्यंतर देवीथी आव्या. | ५ |
| ६ शर्करप्रज्ञाथी आव्या. | १० | २० ज्योतिषी देवोथी आव्या. | १० |
| ७ वालुकाप्रज्ञाथी आव्या. | १० | २१ ज्योतिषी देवीथी आव्या. | २० |
| ८ पंकप्रज्ञाथी आव्या. | ४ | २२ वैमानिक देवोथी आव्या. | १०७ |
| ९ पृथ्वीकायथी आव्या. | ४ | २३ वैमानिक देवीथी आव्या. | २० |

चक्रवर्तीना चौद रत्ननां नाम तथा लंबाइ आदिक प्रमाण तथा तेनाथी यतां काम.

| | | | |
|------------------------|-------------------------|---------------------------|--------------------|
| एकेंद्रिय प्रमाण. | जे कार्य करे ते कहे ठे. | पंचेंद्रिय शुं कार्य करे. | वासुदेव. देहमान. |
| चक्ररत्न. वामप्रमाण. | वैरीनुंमस्तक छेदे. | पुरोहित. शांतिकर्मकरे | चक्ररत्न. साते जे |
| ठत्ररत्न. वामप्रमाण. | स्लेछनामेघनो निरोध. | अश्वरत्न. महापराक्रमी | धनुष्यरत्न. काले उ |
| दंरुत्न. वामप्रमाण. | वांकीजूमिने समीकरे, | गजरत्न. महापराक्रमी | खड्गरत्न. तपन्न थ |
| चर्मरत्न. वे हाथप्रमा | शाली प्रमुखने उत्पन्न | सेनापति चारखंडजिते | कौस्तुभ. या होय, |
| खड्गरत्न. बत्रीशअंगुल | संग्राममांशक्तिवंतहो | गृहपति. घरयोग्यकाम | गदारत्न. ते काल |
| कांगिणी. चारअं.लांबुं. | वैताढ्यनी जीतेमांडला | वार्त्तिक. नदीना पुल. | वनमाल ना पुरुष |
| मणिरत्न. चारअं.लांबुं. | बारयोजन उद्योत करे. | स्त्रीरत्न. महारूपवंत. | शंखरत्न. प्रमाण. |

ए एकेकुं रत्न एक हजार यद्देवोयें अधिष्ठित होय, अने बे हजार देवो चक्रवर्तीनी वे बाहुये अधिष्ठित होय सर्व मली शोल हजार देवो चक्रवर्तीनी सेवा करे. एमां च क्ररत्न, खड्गरत्न, ठत्ररत्न अने दंरुत्न. ए चार आयुधशालामां उपजे. तथा मणिरत्न, सुवर्णकांगिणीरत्न अने चर्मरत्न, ए त्रण अंगारमां उपजे. अने हस्ती तथा अश्व ए बे वैताढ्य पर्वतमां उपजे, जंबूद्वीपमां जघन्यथी चार चक्रवर्ती होय, तेवारें ठपन्न रत्न

होय अने उत्कृष्टथी अष्टावीश विजयना तथा एक चरतनो अने एक ऐरवतनो मली त्रीश चक्रवर्ती होय, तेवारे ४२० रत्न होय.

हवे सिद्धशिलानुं स्वरूप कहे ठे.

- १ सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन उंची.
- २ कोइक आचार्य कहे ठे, के सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन लोकनो ठेहमो.
- ३ पीस्तालीश लाख योजन लांवी पहोलीठे.
- ४ अढीद्वीपमां पिस्तालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यनी वस्ति ठे अने जे मो हू जाय ठे, ते पण मनुष्यज जाय ठे, ते सर्व समश्रेणीये जाय ठे, माटे जे स्थलथी जाय तेज स्थले जइ तिहां सिद्धशिलामां रहे.
- ५ वच्चमां आठ योजन जागी ठे.
- ६ ठेहडे माखीनी पांख सरखी पातली ठे.
- ७ वर्णे अर्जुन सोना सरखी ठे.
- ८ स्फटिक रत्ननी पेरे निर्मल उज्ज्वल ठे.
- ९ उत्तान तत्राकारे ठे. अथवा घृतथी जरे ली जेवी कचोली होय, तेवे आकारे ठे.
- १० सिद्धशिलानी ऊपर एक योजन ठेहडे लोकनो अंत ठे. तिहां एक कोशनो ठ ठो जाग ३३३ धनुष्यनी उपर वत्रीश अं गुलमां सर्व सिद्धना अनंताजीव रखा ठे.

हवे पूर्वनुं प्रमाण कहे ठे.

- चोराशी लाखने चोराशी लाखे गुणतां १०५६०००००००००००० एटलो आंक आवे ते टला वर्षनी एक पूर्वमां संख्या जाणवी.
- निगोदनुं स्वरूप कहे ठे.
- १ जे गोलाकारे निगोदनो समुदाय, तेने गोलो कहीये. तेवा असंख्याता गोला चौद राजलोकमां ठे.
- २ एकेक गोलामां असंख्याती निगोद ठे.
- ३ एकेका निगोदमां अनंता जीव जाणवा. हवे वनस्पतिने विषे अनंतकायनो सं जव कहे ठे.
- १ सर्व जातिनी वनस्पतिनो प्रथम ऊगतो अंकूरो अनंतकाय होय.
- २ पठी ते अंकूरो वधतो वधतो प्रत्येक रूपे अथवा साधारण रूपे थाय.
- हवे एकेंद्रियपणुं कोण जीव पामे? ते कहे ठे.
- १ जेने मैथुननी इडा घणी होय.
- २ जेमां अज्ञानपणुं होय.
- ३ जे घणो वीकण होय.
- ४ अशाता आवे अके घणो कायर होय.

अथ त्रेवीश पदवीनां नाम.

- | | | | |
|-------------|----------------|-------------------|--------------------|
| १ चक्ररत्न. | ५ खड्गरत्न. | ९ गाथापतिरत्न. | १३ गजरत्न. |
| २ तत्ररत्न. | ६ मणिरत्न. | १० वार्द्धिकरत्न. | १४ स्त्रीरत्न. |
| ३ दंभरत्न. | ७ कांगणीरत्न. | ११ पुरोहितरत्न. | १५ तीर्थकरपदवी. |
| ४ चर्मरत्न. | ८ सेनापतिरत्न. | १२ अश्वरत्न. | १६ चक्रवर्ती पदवी. |

१७ वासुदेव पदवी. १८ केवली पदवी. १९ श्रावक पदवी. २० मंडलीक पदवी.
 २१ बलदेव पदवी. २२ साधु पदवी. २३ समकित पदवी.

हवे कयीगतिथी निकट्या जीवो, ए त्रेवीश मांहेली कयी पदवी पामे? ते कहे ठे.

१ पहेली नरकना निकट्या जीव, एकेंद्री रत्ननी सात पदवी न पामे वाकी शोल पामे.

२ बीजा नरकना निकट्या जीव, एक चक्रवर्त्ति पदवी वर्जिने वाकी पन्नर पदवी पामे.

३ त्रीजा नरकना निकट्या जीव, वासुदेव बलदेव ए वे टाली वाकी तेर पदवी पामे.

४ चोथा नरकना निकट्या जीव, एक तीर्थकर वर्जी वाकी वार पदवी पामे.

५ पांचमा नरकना निकट्या जीव, केवली वर्जी वाकी अगीयार पदवी पामे.

६ षष्ठा नरकना निकट्या जीव एक साधु टाली वाकी दश पदवी पामे.

७ सातमा नरकना निकट्या जीव. हस्तिरत्न, अश्वरत्न, समकेत ए त्रण पदवी पामे.

८ ऋवनपति, बाणव्यंतर अने ज्योतिषी ए त्रण निकायमांशी निकलेला जीव, एक

वासुदेव वीजो तीर्थकर ए वे पदवी न पामे शेष एकवीश पदवी पामे.

९ पृथिवी, अप्, वनस्पति, पंचेंद्रियतिर्यच अने मनुष्य ए पांचमांशी निकट्या जीवो,

चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बलदेव अने तीर्थकर ए चार वर्जी शेष उंगणीश पदवी पामे.

१० बेंद्री, तेंद्री अने चौरिंद्री ए त्रण विकलेंद्री मांहेथी निकट्या जीवो चार उत्तम

पुरुष अने पांचमी केवलीनी पदवी टाली शेष अठार पदवी पामे.

११ अग्नि अने वायुकायमांशी निकट्या जीवो सात एकेंद्रीरत्न आठमो हस्तिरत्न अ

ने नवमो अश्वरत्न ए नव पदवी पामे.

१२ सौधर्म तथा ईशान देवलोकना निकट्या जीव सर्व त्रेवीश पदवी पामे.

१३ त्रीजाथी आठमा देवलोकना निकट्या जीव, सात एकेंद्री टाली शेष शोल पदवी पामे.

१४ नवमा देवलोकथी मांडी नवत्रैवेयक पर्यतना निकट्या जीवो, सात एकेंद्रीरत्न आ

ठमुं हस्तिरत्न अने नवमुं अश्वरत्न वर्जी शेष चौद पदवी पामे.

१५ पांच अनुत्तरथी आवेला जीवो चौदरत्न तथा वासुदेव टाली शेष आठ पदवी पामे.

हवे विमान प्रमुख पदार्थ जे आंगुले करी मवीये, ते कहे ठे.

१ घर, कूवा, तलाव प्रमुख जे वस्तु ठे ते सर्व आत्मांगुले करी मापीये.

२ पृथ्वी, पर्वत विमान प्रमुख जे ठे ते सर्व पदार्थो प्रमाणांगुले करी मापीये.

३ शरीरने उत्सेधांगुले करी मापीये. हवे ए आंगुलना प्रमाण कहे ठे.

१ सर्वथी पहेलां सूक्ष्म परमाणुं कहीये.

२ एवा अनंता सूक्ष्म परमाणुये एक वादर परमाणु कहीये.

३ आठ वादर परमाणुये जे सूर्यना तापे

जाली प्रमुखमां नजरे देखाय, एवा कणी याने ऊर्ध्वरेणु अथवा रथरेणु कहीये.

४ आठ ऊर्ध्वरेणुये एक त्रसरेणु थाय.

५ आठ त्रसरेणुये देवकुरु क्षेत्रना युगली या मनुष्य संबंधी एक मोवालाानी अणी थाय, तेने वालाग्र कहीये.

६ आठ वालाग्रे एक लीख थाय.

७ आठ लीखे एक यूका थाय.

८ आठ यूकाये एक यव थाय.

९ आठ यत्रे एक उत्सेधांगुल थाय.

१० ठ उत्सेधांगुले एक पग थाय.

११ बे पगे एक विलस एटखे वेत थाय.

१२ बे विलसे एक हाथ थाय.

१३ चार हाथे एक धनुष्य थाय.

१४ बे हजार धनुष्ये एक कोश थाय.

१५ चार कोशे एक योजन थाय.

हवे प्रमाणादि अंगुल कहे ठे.

१ चारशे उत्सेधांगुले एक प्रमाणांगुल थाय.

२ बे उत्सेधांगुले श्रीमहावीर जगवानतुं एक आत्मांगुल कहेवाय.

३ श्रीकृष्णदेवजीअनेजरतचक्रवर्तीतुंशरीर.

१२० प्रमाणांगुल प्रमाण जाणवुं.

हवे सर्व जीवोनें उपजवानी योनि चोराशी लाखठे, ते सर्व प्रथम पांत्रीश द्वारमांकहेली

ठे, अहीं तेतुं स्वरूप लखीये ठेये.

१ जे जीवोनी उपजती वखते वर्ण, गंध,

रस, स्पर्श एक धीजाना परस्पर सरखा

होय, तेवा सर्व जीवोनी एकज योनिठे.

२ उपजवाना स्थानकने पण योनि कहिये.

२८

३ गोबरना ठाणामां जेटली जातिना जीव आवी उपजे, ते सर्व एक योनिना जाणवा हवे पांत्रीश द्वारमां प्रत्येक दंभके जीवोना कुलनी संख्या कही ठे, तेनो शरवालो करीये, तेवारे १९९५०००००० थाय. यद्यपि उपजवानी योनि एकज ठे पण तेमां क्रमी क्रीडा प्रमुख घणां कुल आवी उपजे ठे.

हवे जूदी जूदी योनिनां स्वरूप कहे ठे.

१ देवता एकेंद्रिय, नारकीने संवृत योनिठे.

२ विकलेद्रिय, समूर्धिमपंचेंद्रियतिर्यच अने मनुष्यने विवृत योनि होय.

३ गर्जज पंचेंद्रिय तिर्यच तथा मनुष्यने मिश्र ते संवृत, निवृत, वेहु योनिहोय.

४ देवता, नारकीने अचित्त योनि होय.

५ गर्जज तिर्यच तथा मनुष्यने मिश्रयोनिठे दवाकी सर्व जीवने सचित्तादि त्रण योनिठे.

६ नारकीने शीत ऊष्ण ए त्रे योनि ठे.

७ देवता अने गर्जज तिर्यच पंचेंद्रिय तथा मनुष्यने मिश्र योनि होय.

८ पृथ्वी, अप्र, वायु, वनस्पति तथा समूर्धिम तिर्यच अने मनुष्यने त्रण योनिठे.

१० तेउकायने एकज ऊष्ण योनि होय.

हवे मनुष्यने योनि विशेष कहेठे.

१ शंखावर्त्ता योनिमां पुत्र मरण पामे.

२ शंखावर्त्ता योनि स्त्रीरत्ननेज होय.

३ कूर्मोन्नत योनि ते काचवाना पुंठनी पेटे

उंची होय पेट वधे नही, ए योनिमां अ

रिहंत, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, वलदेव उपजे.

४ वंशना पान बे जेलां करीये एवे आकारे

जे योनि होय ते त्रीजी वंसीपत्ता योनि कहीये. एमां शेष सामान्य मनुष्य उपजे.

हवे आयुसंबंधि विशेष कहे ठे.

१ बांधवानी वेलाये बंधकाल आयु कहीये.

२ आयु बांध्या पढी जेटलो काल वचमां उदय न आवे, तेने अबाधाकाल कहीये.

३ आयु पूर्ण आय ते अंतसमयायु कहीये.

४ घणो काल जोगववा योग्य आयुने सर्व प्रदेशो उदेरी स्वल्पकाल जोगववा योग्य करे समकाले जोगवे तेने अपवर्त्तन कहीये

५ जेटला कालनुं बांध्युं तेटलोज जोगवे तेने अनपवर्त्तन आयु कहीये.

६ जे कारणे करी आयु घटे, ते उपक्रम आयु ठे.

७ कोइ कारणे आयु न घटे ते निरुपक्रमायु. हवे बंधकाल जे जीवने जेटलो होय, ते कहे ठे

१ देवता, नारकी, असंख्याता वर्षायुवाला युगलीया मनुष्य तिर्यच ए सर्व ठ मास आयु रहे, तेवारे परजवनुं आयु बांधे.

२ संख्याता वर्षायु वाला एवा तिर्यच मनुष्य निरुपक्रमायु वाला ते त्रीजो जाग आयु बाकी रहे तेवारे परजवनुं आयु बांधे.

३ सोपक्रम आयु वाला मनुष्य तिर्यच त्रीजा जागशी उहुं शेषायु रहे थके अथवा नवमो जाग, अथवा सत्तावीशमो जाग अथवा अंतर्मुहूर्त्त आयु शेष रहे, तेवारे परजवनुं आयु बांधे.

४ आयुखानो जेटलो जाग बाकी रहे थके नवा आयुखानो बंध पडे, पढी जेटले

काले उदय आवे, तेनी वचमानो काल ते अबाधाकाल कहेवाय.

५ अंतसमये आयु पूर्ण थये जीव एक समय प्रमाण रुजुगति करे अथवा चार पांच समय प्रमाणनी वक्रगति करे.

हवे ए बेहु गतिमां निश्चय व्यवहारनये करी परजवनुं आयुखुं उदय आवे अने परजवनो आहार होय ते कहे ठे.

१ रुजुगतिमां पहेले समये परजवनुं आयुखुं अने परजवनो आहार उदय आवे.

२ वक्रगतिमां बीजे समये परजवनुं आयुखुं उदय आवे, अने एक समयनी वक्र गतिमां बीजे समये आहार करे.

३ बे समयनी वक्रगतिमां त्रीजे समये आहार करे. एक समय अणाहारी होय.

४ त्रण समयनी वक्रगतिमां चौथे समये आहार करे. बे समय अनाहारी होय.

५ चार समयनी वक्रगतिमां पांचमे समये आहार करे. त्रण समय अनाहारी होय.

६ एक समयनी वक्रगतिमां बेहु समय आहार लीये.

हवे आयु आश्रयी कहे ठे.

७ जे आयु बांधवा समये यथायोग्य ढीळुं बांध्यु, ते देशकाल अध्यवसाय आश्रयी घटे, तेने अपवर्त्तनायु कहीये.

८ जे आयुखुं पहेलुं घणुं निकाचितबंधे करी बांध्युं, ते अत्यंत जोगववुंज जोश्ये तेने अनपवर्त्तन आयु कहीये.

९ जे उत्तम पुरुष जेवा के चक्रवर्त्ती च

मेशरीरी तेज जवे मोह जावा वाला एवा मनुष्य, तेमज देवता तथा नारकी अने युगलीया मनुष्य तथा तिर्यच ए सर्वनुं निरुपक्रम आउखुं होय.

१० जे अध्यवसाये अथवा विष प्रमुखे करी आउखुं घटे, ते अध्यवसाय प्रमुख उपक्रम कह्ये, अने ए उपक्रमथी विपरीत ते अनुपक्रम कह्ये.

हवे सात प्रकारे आयु घटे, ते कारण कहे ठे.

१ राग द्वेषथी तथा स्त्रीना स्नेहथी मरे ते अध्यवसाय मरण कह्ये.

२ ताजणा प्रमुख शस्त्रथी मरे. अथवा फां

सी खाई मरे ते निमित्त मरण कह्ये
३ जुख तृषाथी मरे, अथवा घणो आहार करवाथी मरे ते आहार मरण कह्ये.

४ शूलथी, विषमवेदनाथी, पेट दुःखवाथी मरे ते वेदना मरण कह्ये.

५ पेटमां कटारीमारी मरे पाणीमांहे पडी मरे, ते पराघात मरण कह्ये.

६ विषकन्या फरसथी मरे, सर्प विडी प्रमुखना रुसवाथी मरे ते फरस मरण कह्ये.

७ घणा श्वासोद्वास आव्याथी मरे थोडा श्वासोद्वास आव्याथी मरे, ते आणपाण मरण कह्ये.

हवे कुबेरदत्ता साधवीये बालकनी आगल अठार नात्रां पोतानां गायां, तेनां नाम कहे ठे.

प्रथम बालकनी साथे ठ सगपण कहे ठे.

१ पोतानी माताना उदरमांथी ए बालकनो जन्म थयो ठे माटे जाइ थयो.

२ जाइनो दीकरो थाय माटे जत्रीजो थयो

३ धणीनो न्हानो जाइ थाय माटे देवर थयो.

४ शोकनो जण्यो ठे माटे दीकरो थयो.

५ बापनो जाइ थाय, माटे काको थयो.

६ शोकना दीकरानो दीकरो माटे पौत्रो थयो

हवे कुबेरदत्त जाइनी साथे ठ नात्रां थयांते कहे

१ बेहु जण एकज माताना उदरथी उपना ठैये ते माटे महारो जाइ कहेवाय.

२ फरी महारी मातानो ए धणी थयो ठे ते माटे महारो बाप कहेवाय.

३ एनी साथे हुं परणी माटे जर्तार थाय.

४ ए पालणांमां पोडेलो ठोकरो महारा धणीनो जाइ थाय ठे तेथी ते ठोकरो म

हारो काको थयो ते महारा काकानो वली ए बाप थाय माटे महारो दादो थयो.

५ वली पहेला महारी शोक्यनो ए दोकरो हतो माटे महारो दिकरो पण थाय.

६ महारी सासुनो धणी थाय ठे ते माटे महारो ससरो पण थाय.

हवे कुबेरदत्ता गणिकानी साथे ठ नातरां केवी रीते थाय ? ते लखीये ठैये.

१ एनी कुखे जन्मी हुं माटे माता थाय.

२ महारा धणीनी माता थाय माटे सा सूठे.

३ महारा जाइनी स्त्री थाय माटे जोजाइठे.

४ महारा जर्तारनी स्त्री थाय ते शोक्य कही.

५ महारा काकानी माता थाय ते दादी कहीये

६ महारी शोक्यनो दीकरो ते महारो पण दीकरो थयो, तेनी ए स्त्री ठे. ए सगपण

गणतां महारी वहु पण थाय.

ए अठार नात्रां कुबेरदत्ता साधवीये एकदा पोता आश्री पालाणमां पोहोडेला ठा करानी आगल गाइ संजलाव्यां एवा कुबेरसेना वेइया तथा ते साधवीनो जाइ जेने पोते परणी हती, ते तथा तेना वीर्यथी जे बालक उत्पन्न थयो ठे जेनी पासे साधवी पोते उर्जी रहीने हालरमा गाय ठे, ते मली चारे जणना प्रत्येके एकेकना अठार अठार नात्रां परस्पर एक बीजानी साथे संबंधे थाय, तेवारे सर्व मली बहोतेर नात्रां थाय.

॥ अथ अशुभध्यानना त्रेशठ स्थानक, दृष्टांत सहित कहे ठे. ॥

- १ अज्ञान ध्याननी ऊपर, मासतुषनो दृष्टांत जाणवो.
- २ अनाचार ध्याननी ऊपर, पुत्रने अर्थे चिंताना करनार कौंकण साधुनो दृष्टांत.
- ३ कुदर्शन ध्याननी ऊपर, नंदमणियार श्रेष्ठीनो तथा सोमिलब्राह्मणनो दृष्टांत.
- ४ क्रोधध्याननी ऊपर, कुलबालक, मंखलीपुत्र, पालक तथा नमुचिनो दृष्टांत.
- ५ मान ध्याने बाहुबलीनो दृष्टांत. ६ मायाध्याने मद्धिनाथनो दृष्टांत.
- ७ लोचध्याननी ऊपर केसरीया लाकु बहोरनार, साधुनो दृष्टांत.
- ८ राग ध्याननी ऊपर त्रण दृष्टांत कहे ठे. तेमां कामरागनी ऊपर मणिरथराजा जे मयणरेहा सतीनी ऊपर मोहित थयो तेनो दृष्टांत. तथा खेहरागनी ऊपर जानु मंत्री अने सरस्वतीनो दृष्टांत अने दृष्टिरागनी ऊपर गोष्ठामाहिलनो दृष्टांत.
- ९ द्वेषध्याननी ऊपर धर्मरुचि नंदनावरुनो दृष्टांत.
- १० मोहध्याननी ऊपर बलदेव, विष्णु, तथा सञ्जवसूरिनो दृष्टांत.
- ११ इहाध्याने कपिलकेवलीनो दृष्टांत. १२ मिथ्यात्वध्याने जमालीनो दृष्टांत.
- १३ मूर्खाध्याने कनककेतुनो दृष्टांत. १४ शंकाध्याने आषाढाचार्यनो दृष्टांत.
- १५ कांक्षा ध्याननी ऊपर मरीचि तथा कपिलादिकनो दृष्टांत.
- १६ गृहिध्याननी ऊपर महूरामंगू अने कंडरिकनो दृष्टांत.
- १७ आशाध्याननी ऊपर मूलदेव अने निर्धूणशर्म ब्राह्मणना संबलनो दृष्टांत.
- १८ तृष्णाध्याननी ऊपर अंगारदाहकनो दृष्टांत.
- १९ क्रुधाध्याननी ऊपर संप्रतिराजानो जीव कुमकनो दृष्टांत.
- २० पंथध्याननी ऊपर पोतनपुर मार्गगवेषक वढकचीरीनो दृष्टांत.
- २१ पंथे चालवाना ध्याननी ऊपर वरधणु तथा ब्रह्मदत्तनो दृष्टांत.
- २२ निद्रा ध्याने चौदपूर्वधर दृष्टांत. २३ नियाणाध्याने संजूतिकृषि ड्रौपदी दृष्टांत.
- २४ खेह ध्याननी ऊपर मरुदेवीमाता तथा अर्हन्नकजीनी मातानो दृष्टांत.
- २५ कामध्याननी ऊपर हासा, प्रहासा, लोजित कुमारनंदीनो दृष्टांत.

- ३६ क्लृपध्याननी ऊपर उदायिनराजा प्रति अजिची कुमारनो दृष्टांत.
- ३७ कलहध्याननी ऊपर महाशतक श्रावक तथा रेवती श्राविकानो दृष्टांत.
- ३८ युद्धध्यान उपर कूणिक अने चेटकना दृष्टांत. ३९ न्युद्धध्याने जरत बाहुबलीनो दृष्टांत
- ३० संगध्याने जवदेव नागिलानो दृष्टांत. ३१ संग्रहध्यान उपर मम्मण दृष्टांत.
- ३२ व्यवहारध्याननी ऊपर राज कुलिपुत्रने अर्थे बेहु शोक्योनो दृष्टांत.
- ३३ क्रयविक्रयध्याननी ऊपर लोचनंदनो दृष्टांत.
- ३४ अनर्थ दंभ ध्याननी ऊपर द्वैपायनऋषि प्रति साम्ब प्रद्युम्नादिकनो दृष्टांत.
- ३५ आचोग ध्याननी ऊपर प्रसन्नचंदनो दृष्टांत जेने जाणतां व्रत वीसखां.
- ३६ आणाईल ध्याने सणाविल साधुनी बहेने वधतुं तेलं लीधुं ते शण थयानो दृष्टांत.
- ३७ वैरध्यानी ऊपर फरशुराम तथा सुभ्रूमादिकनो दृष्टांत.
- ३८ वियक्रध्याननी ऊपर नंदराजानुं राज्यदेवा वांढनार चाणाक्यनो दृष्टांत जाणवो.
- ३९ हिंसाध्याननी ऊपर कूपनिकित कालसूरियानो दृष्टांत जाणवो.
- ४० हास्यध्याननी ऊपर चंद्ररौद्राचार्ये शिष्यने दीक्षा दीधी, तेनो दृष्टांत जाणवो.
- ४१ प्रहास्याध्याने चंद्रप्रद्योतने वारतङ्गरुषीश्वरने निमित्त कहीने वांव्यो, ते दृष्टांत.
- ४२ पर्जसंध्यानी ऊपर मरुचूति प्रत्ये कमठनी पेटें दृष्टांत जाणवो.
- ४३ फरुसध्याननी ऊपर ब्रह्मदत्त प्रते चुहणीनो अथवा युगबाहु प्रत्ये मणिरथनो दृष्टांत.
- ४४ जयध्याने गजसुकुमालनो विनाश करनार सोमिलने जय उपनो ए दृष्टांतजाणवो.
- ४५ अप्रशंसाध्याने सकलादना मुखथकी वररुचिये पोतानी अप्रशंसानुं ध्यान कीधुं ते दृष्टांत अथवा रथिके पोतानुं विज्ञान कोश्याने देखाड्युं ते दृष्टांत.
- ४६ परनिंदाना ध्यान ऊपर कुरंगु मुनि निंदाना करनारा चार रूपकनो दृष्टांत.
- ४७ परग्रह ध्यान ऊपर सजासमह गोष्टामाहिद्व दुर्बलिकापुष्पत्रें रह्यो, ए दृष्टांत.
- ४८ परिग्रह ध्याननी ऊपर मुनिपति प्रत्ये कुंचिक श्रावकनो दृष्टांत
- ४९ परपरिवादध्याननी ऊपर सुजडा सती प्रत्ये तेनी सासु नणंदनो दृष्टांत.
- ५० परदूषणध्याननी ऊपर दमयंतीने डाकिणीना कलंक चढाव्यानो दृष्टांत.
- ५१ आरंजध्याननी ऊपर ढंढणा कुमार पूर्वजव राजाधिकारीनो दृष्टांत.
- ५२ समारंजध्याने मनमांहे कीईक शोक्यना दीकरानुं मरण चितवनारा सुसढनो दृष्टांत.
- ५३ पापानुमोदनध्याननी ऊपर तंडुलमत्स्य अंतरमुहूर्त अनुमोदन करे ते दृष्टांत.
- ५४ अरिजाणध्यान ऊपर वापीनो उद्यान नंदमणियारे चितव्यो तेनो दृष्टांत.
- ५५ असमाधिमरणध्याननी ऊपर स्कंदसूरिनो दृष्टांत.

- ५६ कर्मोदय पञ्चयं ध्याननी ऊपर मरणवेलाये विष्णु श्रेणिकादिकनी पेरे दृष्टांत.
 ५७ रुद्रिगारवध्याननी ऊपर दशार्णचंद्र राजानो दृष्टांत.
 ५८ रसगारवध्याननी ऊपर सुबुधि प्रधान प्रत्ये जितशत्रु राजानी पेठे दृष्टांत.
 ५९ शांतागारव ध्याननी ऊपर शशीराजानी पेठे दृष्टांत.
 ६० अविरमणध्याननी ऊपर चतुष्टुपुरोहितना बेहुकुमर आश्रयी दृष्टांत जाणवो.
 ६१ अमुत्तिमरण ध्याननी ऊपर ब्रह्मदत्तनो पूर्वजव संभूत यतिनो दृष्टांत.
 ६२ रूपध्याननी ऊपर चंद्रप्रद्योते पटलित अंगारवतीना रूपनो दृष्टांत.

॥ उपदेश रत्नकोश प्रारंभः ॥

- १ सर्वदा जीवदया पालवी.
 २ इंद्रियोने कुमार्गे प्रवर्त्ताववी नही.
 ३ इंद्रियोने धर्ममार्गे प्रवर्त्ताववी.
 ४ निरंतर धर्मपूर्वक सत्यवचन बोलवुं.
 ५ शील खंडन करवुं नही.
 ६ कुशीलीयानो संसर्ग करवो नही केमके जेवी संगति होय तेवी बुद्धि पण आय.
 ७ गुरुनुं वचन लोपवुं नही.
 ८ जेम गुरु कहे, तेमज प्रवर्त्तवुं.
 ९ मार्गमां चपलपणे चालवुं नही.
 १० नीची दृष्टिराखी जीवयत्नकरतां चालवुं.
 ११ पोताने कुलयोग्यद्रव्यानुसारेवेशपहेरवो.
 १२ वांकीदृष्टिये कोशनी साहामुं जोवुं नही.
 १३ पोतानी जिह्वा संवरी राखवी.
 १४ आलपंपाल षट्त्वे यद्दत्त यद्दत्तनबोलवुं.
 १५ अविचारित कार्य न करवुं विचारीकरवुं
 १६ पोताना कुलनोरुको आचारलोपवो नही.
 १७ पारका मर्म बोलवा नही केमके ते रोष्यो थको पोते मरे अथवा आपणने मारे.
 १८ कोशने कूडुं आल देवुं नही.
 १९ कोशने आक्रोश वचन कही शाप न देवो

- २० गुणवंत पुरुषनो उपकार करवो.
 २१ उपकारकरी बीजाआगलप्रकाशवोनही.
 २२ दुःखमारूडा माणसनेआलंबन आपवुं.
 २३ महोदुं संकट आवी पडे तो पण कोश नी आगल हाथ मारवो नही.
 २४ क्रोड आपणने प्रार्थना करे तो ठति शक्तिये प्रार्थनानो जंग न करवो.
 २५ पोतामां घणा गुण होय तो पण पोता नी प्रशंसा स्वमुखे करवी नही.
 २६ दुर्जन माणसनी निंदा करवी नही.
 २७ जेनो जेवो स्वजाव होय ते मूके नही.
 २८ पोताना धर्ममार्गे चालीये.
 २९ घणी हास्य मस्करी न करवी.
 ३० हास्य न करवाथी गुरुता पामीये.
 ३१ वैरीनो विश्वास करवो नही.
 ३२ जे आपणा उपर विश्वास राखे, तेनी साथे कोशरीते विश्वासघात न करवो.
 ३३ कोशनो करेलो उपकार वीसारवो नही.
 ३४ गुणवंत उपर राचीये प्रशंसा करीये.
 ३५ निःस्नेही ऊपर स्नेह न करवो. परंतु मध्यस्थ पणे रहेवुं.
 ३६ पात्रनि परीक्षा करी सुपात्रने दान देवुं.

- सन्मान करवुं, केम के सत्पुरुषनो आ कलिकालयां त्रोटो ठे.
- ३९ लोक निंदा करे तेवुं काम न करवुं केम के जुतुं बोलवुं, चारी करवी, परदारा से ववी, एधी लोकमां कलंक चढे अने प रजवे नरके जवुं पढे. माटे तेन करवुं.
- ३७ पोतातुं साहस सत्त्व ठोरुवुं नही. जो पोतामां सत्त्व होय तो सर्व कारज आय.
- ३९ व्यसननी उपर मोहित न थावुं.
- ४० लक्ष्मीहय थाय तो पण थोडामांथी यथा योग्य दान आपवुं ए धीरपुरुषनुं खड्ग धारा समान व्रत जाणवुं.
- ४१ कोइनीसाथे घणो स्नेह न करवो जेटलो स्नेह करीये तेटलो दुःखदायी थाय.
- ४२ अजीष्ट उपर प्रति दिवस रोष न करवो.
- ४३ कोइ साथे क्लेश न करवो.
- ४४ अन्यायधी लक्ष्मी उपार्जवी नही.
- ४५ कुवास कुठाकुर वास न करवो.
- ४६ बालकने प्रियवचने बोलाववुं.
- ४७ वैरीने मधुरवचने बोलाववो जेथी ते सु ख पामे तो आपणी साथे कलह न करे.
- ४८ घणी लक्ष्मी होय तो पण ते बपोरनी डायी सरखी जाणी अहंकार न करवो.
- ४९ लक्ष्मी न होय तो विषवाद न करवो. सर्वदा समजावे रहेवाधी संताप न थाय.
- ५० सेवकनां वखाण तेनां मुख आगल करवां.
- ५१ पुत्रनां वखाण तेनी पाठल करवां पण तेनां मुख आगल न करवां.
- ५२ सर्वकोइ प्रत्ये सरस सकोमल अने थो डुं धर्मसंयुक्त वचन बोलवुं.
- ५३ पोताना शत्रु अने मित्रनो विनय करवो.
- ५४ पोतानी संपत्ति माफक दान देवुं.
- ५५ पारका गुण शील होय ते बोलवा. पण अवगुण न बोलवा. ए मंत्रविना पण महोदुं वशीकरण ठे एम जाणवुं.
- ५६ प्रस्तावे बोलवुं पण अप्रस्तावे न बो लवुं केमके प्रस्तावे बोलवुं सर्वने गमे.
- ५७ घणा माणसमाहे जे दुर्जन होय तेनुं बहुमान करवुं.
- ५८ पोताना प्रियनुं विशेष उपकार करवो.
- ५९ गुणवंतनी पूजा करवी.
- ६० बीजानी पासे मंत्र आलोच न करवो.
- ६१ पारके घेर एकला न जवुं.
- ६२ स्त्रीये पतिवता धर्म पालवो.
- ६३ जेनी साथे अत्यंत प्रीति करवां वांढी ये तो तेने घेर जमवुं.
- ६४ ते मित्रने आपणे घेर जमाववो.
- ६५ मित्रने वस्त्रादिकनुं दान आपवुं.
- ६६ मित्र जे वस्तु आपे, ते लेवी.
- ६७ पोतानी वात मित्र आगल कहेवी.
- ६८ मित्रनी वात पोते पण पूठवी; एम क रवाथी तेनी साथे प्रीति दृढ थाय.
- ६९ कोइनुं अपमान करवुं नही.
- ७० पोताना गुणनो गर्व न करवो.
- ७१ गर्व करवाथी गुणहीन अइये.
- ७२ बहुरत्ना वसुंधरा ठे माटे पृथ्वीमां वि चित्र आश्चर्य देखी विस्मय पामवुं नही.

- ३३ महोदुं कार्य आरंजीने पढी न्हानुं क रीये तो लोकमां हांसी थाय. ३५ सर्वजीवने पोता दुहवीये नही राग नही.
- ३४ न्हानुं कार्य आरंजीने पढी तेने महीदुं करीये तो लोकमांहे प्रशंसा थाय. ३६ ए प्रमाणे वर्त्तनारो पुरुष क्यारे दुःखी न थाय ठेवटे कर्म ठेदी मोक्ष जाय इति ॥

॥ अथ अष्टांगी प्रारंभः ॥

१. सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म, ए त्रण तत्त्वनुं स्वरूप न जाणे अने साधुधर्म तथा श्रावक धर्म ए बे मांहेलो कोइ धर्म न आदरे अने पञ्चस्काण जिनमत अनुष्ठान न पाळे ए प्रथम चांगो जाणवो एनो स्वामी सकल लोकवासी मिथ्यात्वी जाणवो.
२. जिनतत्व न जाणे अने साधु धर्म तथा श्रावक धर्म आदरे अने अज्ञानकष्ट मास क्षमणादिक पञ्चस्काण पाळे ए बीजो चांगो बाल तपस्वी तापसादिकनो जाणवो.
३. ज्ञानतत्व न जाणे अने बेहु धर्ममांहेलो एक धर्म आदरे पण यथास्थित साधुधर्म मार्ग न पाळे प्रतीत न आणे ए न जाणे, न आदरे अने न पाळे, एवो त्रीजो चांगो सर्व पासडा, कुशीलीया, संशक्त इत्यादिक जव्य तथा अज्ञानादिकनो जाणवो.
४. जिनमत स्वरूप न जाणे तथा वली साधु धर्म आदरे वली यथाबंद पणे साधु मार्गने पाळे ए न जाणे, आदरे अने पाळे एवो चौथो चांगो उत्सूत्र प्ररूपक अगीतार्थनो ठे.
५. धर्मना स्वरूपने जाणे, पण नियमना जयने लीधे बेहु धर्म मांहेलो एके धर्म न आदरे अने व्रत पञ्चस्काण पण पाळे नही ए जाणे, न आदरे, अने न पाळे एवो पांचमो चांगो श्रेणिक, सात्यकी अने श्रीकृष्ण प्रमुख सम्यक्दृष्टियोनो जाणवो
६. धर्मना स्वरूपने जाणे पण बेहुमांहेलो एके धर्म आदरे नही, परंतु नववारु सहित शील प्रमुख पाळे ए ठठो चांगो अनुत्तर विमानवासी देवादिकनो जाणवो.
७. जिनधर्मना स्वरूपने विशद रीते जाणे अने बेहु धर्ममांहेला एक धर्मने आदरे परंतु निडावरणीय कर्मोदये करी पाळी शके नही सातमो चांगो संविज्ञपद्दीनो जाणवो.
८. जिनधर्ममां अत्यंत कुशल थको धर्मस्वरूपने जाणे अने आदरे तेमज जिनोक्तधर्म यथास्थित पणे पाळे ए जाणे, आदरे अने पाळे एवो आठमो चांगो साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका रूप चतुर्विध श्रीसंघनो जाणवो.

ए आठजांगामां प्रथमना चार चांगा मिथ्यादृष्टीना जाणवा अने पाठला चार चांगा सम्यक्दृष्टिनां ठे तेमांपांचमो ठठो चांगो अविरति सम्यक्दृष्टीनो अने सातमो चांगो देश विरतिनो जाणवो तथा आठमो चांगो देशविरति अने सर्वविरति बेहुनो जाणवो ॥ इति ॥

